# आचार्य श्री प्रवचन

(25.11.2018 से 03.03.2019 तक)

भाग – 12

*गुरुवर की वाणी,*

*बने सबकी कल्याणी*

अन्य भाग हेतु : aagamdata.blogspot.in

संकलन :

मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

आचार्य पुष्पारोह
विशुद्ध (कोष)
KRITI GROUP

मसौरा - गौशाला - ललितपुर
हवजारोहण
[गर्भ कल्याणक पर्व]
25-11-18

रविवार
प्रातः

"रवि नहीं मनाता रविवार"

रेल के माध्यम से आप लोग यात्रा करते हैं, चूंकि बड़ी संख्या में यात्री लोग उसमें रहते हैं। कभी-कभी व्यवधान के कारण अथवा आवश्यकता पड़ने पर जंजीर / चेन खींचने की व्यवस्था रखी जाती है। लेकिन जो उस व्यवस्था का ज्ञान नहीं रखता, वह छोटी-छोटी बातों के लिए भी चेन खेंच लेता है। हर 4-5 किलोमीटर भी चले नहीं कि चेन खेंच ली तो फिर इन्दौर की यात्रा हो जायेगी।

एक बात और याद रखो भगवान की जब तौने में स्थापना कर ली उसके बाद जब तक पूजन पूर्ण न हो तब तक दूसरा कोई काम नहीं होना चाहिए। स्थापना हो गयी फिर पाद-प्रक्षालन कर लिया फिर कुछ पूजन फिर शास्त्र भेंट हो गया। [Short and sweet] संक्षेपीकरण बोलो फिर तो अर्घ्य ही चढ़ा लो तो ठीक होगा। अब आप यहाँ आ गये फिर बिच में कहो हमें ललितपुर जाना है, क्यों? घरे जाना है, तो फिर यहाँ मुनिम जी को बैठा दो आप दुकान संभाल लेना। 15-20 लोग ताली बजाने वाले भी बैठा देना।

"ये सब मोह को कम करने के हेतु हैं, मोह कम नहीं करने के कारण ये सब बातें होती हैं। "एकबार आपने जो भी ठान लिया फिर कुछ नहीं। जो कुछ भी सामग्री चाहिये रखलो फिर बीच में और कुछ नहीं होना चाहिए। यहाँ पर बहुत कमियाँ रहती हैं, कभी कबार होना तो अलग बात। आपको 10 बार कहना पड़ता है - इसमें रस भी नहीं आयेगा। व्यवस्था

के अनुसार व्यवस्थित होकर काम करेंगे तो ठीक है।

व्यवस्था की जरूरत ही नहीं है, स्वयं यदि व्यवस्थित हो जाये तो। स्वयं सेवकों की भी आवश्यकता नहीं होगी। स्वयं सेवक शब्द ही बता रहा कि पर की कोई जरूरत ही नहीं है। हम स्वयं सेठ जी बन जाते हैं बाकी सब सेवक हैं। स्वयं सेवक शब्द की क्या सार्थकता? दूसरा कोई है ही नहीं। दूसरी यह बात कहना चाहते हैं कि देव असंयमी होते हैं फिर भी बीच में कोई भी दूसरा काम नहीं करेंगे। काम तो आप करते हैं पर यदि व्यवस्थित नहीं तो कुछ नहीं।

दूसरी कोई आवाज आनी ही नहीं चाहिये। "शब्द का आनंद नहीं आता शब्द के अर्थ और उसके पीछे छिपे भाव में आनन्द आता है।" आनन्द आता है तो क्या पढ़ा जा रहा है, क्रियायें जो करते हैं, जीवन में घटित भी होता है। याद आते ही भीतर तक झकझोर देती है। इसी का नाम स्मरणिका है। अन्य और कोई भी स्मरणिका नहीं होनी चाहिए। जब समझ ही नहीं पा रहे हो तो क्या स्मरण में रखोगे।

स्मरण में वही आता है, जिसमें आपने विशेष रुचि रखी हो। दो प्रकार की रुचि स्मरण में आती है एक राग पूर्वक जो किया हो अथवा किसी से द्वेष रखा हो। द्वेष पूर्वक जो किया उसका स्मरण ज्यादा हो रहा है। अच्छी बातों का स्मरण बहुत कम, बुरी बातों का स्मरण ढेर सारा

हो जाता है।

द्वेष का संकलन ज्यादा - प्रीति का कम है। विषयों का स्मरण न हो। वेदी में जो बैठे हैं - यहाँ की क्रियायें याद करेंगे तो भावना अच्छी बनेगी। अब याद रखेंगे आप लोग। बाहर से भी बहुत लोग आये हैं। [इन्दौर से डाबस, मड़ावरा से 200 लोग, एवं कई स्थानों की भीड़] जहाँ-जहाँ से भी आये हैं बता देना। हम तो इसी प्रकार बिना पैसे का विज्ञापन भेजते रहते हैं। आप कृपा करके अब, हमारे ऊपर नहीं - स्वयं पर कृपा करके सबको भेज देना।

समय ज्यादा ले लिया। जिस पर होना था, उस पर नहीं हुआ। [रविवार है] इन्होंने ही ठेका ले रखा है, हम सोचते हैं, हमारा रविवार कब आयेगा? आप तो रविवार का आनन्द, हम नहीं ले सकते क्या? ऊपर का रवि भी यही करेगा, हम भी एक दिन आनन्द / छुट्टी मनाने के लिये चले जाये तो फिर बीजली की कटौती शुरु हो जायेगी। "जो श्रेष्ठ एवं बड़े व्यक्ति होते हैं, वे अवकाश की कभी भी चिन्ता न करें।"

यही एक मात्र दायित्व होता है। श्रमण कभी भी एक - आध दिन के लिये नहीं, जीवन पर्यन्त के लिये बनते हैं। इसी तरह श्रावक भी चाहे छोटा हो या बड़ा। सभी अपने दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं, उसमें कुछ कमी है वह दूर हो जाये। भोजन तो बहुत अच्छा बनाया किन्तु उसमें थोड़ा सा किरकिरा है तो अच्छा लगेगा? नहीं लगेगा। मध्याह्न में ध्यान रखेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

25-11-18 गर्भकल्याणक (प्रवे) प्रवचनांश। मध्याह्न

[श्री अरविन्द शर्मा - एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, सचिन शर्मा, रविजैन, प्रदीप अग्रवाल
एडवाइजर भारत सरकार - सुप्रीम कोर्ट CBI]

1. श्री चन्द्रप्रकाश - पुलिस महानिदेशक जेल (उ० प्र०)
2. श्री वी. के. जैन - अपर महानिरीक्षक लखनऊ
3. संजीव त्रिपाठी - डी. आई. जी. (जेल) आगरा
4. बालकृष्ण मिश्रा - जेल अधीक्षक - ललितपुर

○ आत्मा की प्राप्ति सत्य बिना नहीं - सत्य बिना श्रम के नहीं श्रम बिना विवेक के नहीं इसलिये सत्यप्रदाता श्रम हो।

○ सत् एवं चित् के साथ आनन्द आज नहीं है, तीनों हो तभी सच्चिदानन्द हो सकते हैं।

○ पास में आने पर ही काम हो ऐसा नहीं - सूर्य कोसों दूर है सारी धरती को प्रकाशित करता है यदि धरती पर आ जाये तो....।

○ ललितपुर - लालित्य (सुन्दरता) का पिटारा।

○ लालित्य के साथ श्रम का होना भी अनिवार्य है। जैसे - काव्य ख्याति में लालित्य हो तो पद में जान आ जाती है अन्यथा अनजान भी कहता है रहने दो।

○ अर्थ को पुरुषार्थ की संज्ञा हो जाये तो सच्चिदानन्द एवं लालित्य से कोई भी नहीं रोक सकता।

○ लालित्य - लावण्य दोनों एकार्थवाची है। लालित्य काव्य ख्याति में जैसे आवश्यक वैसे ही भोजन में लवण। लालित्य देखने की अपेक्षा है लावण्य स्वाद की अपेक्षा होता है।

○ मीठा एवं नमक दोनों ही मधुर रस के अन्तर्गत आते हैं।

- जब मीठा ही मीठा हो जाता है तो जीभ पर जमे लेमीनेशन टाइप पदार्थ को नमकीन (कचौड़ी-पकौड़ी) आर देती है। चटका लगना चाहिए। तभी पुनः स्वाद आयेगा।
- मीठे का पाचन भी लवण से होता है।
- जैन समाज में लालित्य एवं लावण्य दोनों भरपुर है।
- "स्वास्थ्य के लिए डकार अच्छी है लेकिन किसी वस्तु को डकारना अच्छा नहीं।"
- संख्या में अल्प हो तो काम नहीं होगा ऐसा है ही नहीं। अल्प-संख्यक समाज ने भी बड़े-बड़े इतिहास की रचना की है।
- जैनियों की संख्या आटा नमक के बराबर है। नमक में आटा नहीं होता- आटे में नमक हो तभी आनन्द आता है।
- मीठी खीर बनाते हैं। बुन्देलखण्ड में मनक सी नहीं लनक सी नमक की डली भी डाल देते हैं ताकि वह सुपाच्य बन जाये।
- ललितपुर तब तक न छोड़ियो-जब तक मिले उधार - यहाँ उधार का दो अर्थ होता है- उधार भी और उद्धार भी। व्यापक सूत्र है "आज नकद और कल उधार"।
- कार्यक्रमों में अपव्यय की मात्रा ज्यादा होने से वे मौलिकता को कम होने में कारण बन जाते हैं।
- शासन- प्रशासन- ज्युडीशियल (न्याय पालिका) - जनता एवं संघ सभी बैठे हैं। अपव्यय कहीं पर न हो।
- सरकार से मांगने पर सरकार का महत्त्व ही कम कर रहे हैं।
- श्रमण संस्कृति एवं श्रावकों की आधारशिला है- कर्त्तव्य।

o सरकार की नजर में सबसे बड़ी समस्या है तो वह है- गरीबी, परन्तु मेरी नजर में भारत की यदि सबसे बड़ी समस्या है तो वह "अपव्यय" है।

o जोश भी हो - कोश भी हो पर इन दोनों के साथ होश भी होना जरूरी है।

o होश समाप्त होते ही उत्तर प्रदेश उत्तम प्रदेश नहीं बन पायेगा।

o शब्द भले ही पलट जाये पर अर्थ कभी भी पलटता नहीं अर्थ तो शब्द का होगा ही होगा।

o एक हजार वर्ष पूर्व जिनसेन आचार्य ने कालिदास के मेघदूत पर पार्श्वाभ्युदय लिखा। काव्यख्याती में जो समस्या- पूर्ति होती है उसका उदाहरण है वह।

o आय का दरवाजा हो, खर्चा हो, मोरी से तो सभी समस्यायें दूर हो जायेगी।

o पंगत में दामाद के शुरु करने पर ही सब शुरु करेंगे किन्तु दामाद कभी भी जल्दी नहीं करता, जनता जल्दबाजी करती है।

o संस्कृति के लुप्त होने पर वह उन्नति - उन्नति नहीं पतन है। India के कारण यह हो रहा है।

o "जब से भारत में ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली आयी है तब से भारत का पतन प्रारम्भ हुआ है।" [ब्रिटिश संसद में]

o शिक्षा पद्धति में उन्नति नहीं पतन हुआ ब्रिटिश गवर्मेन्ट के आने से

o जिस राष्ट्र की अपनी स्वतन्त्र भाषा नहीं हो सकती वह राष्ट्र कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है।

o निर्भिक होकर बोलें- निष्पक्ष होकर निर्णय करें।

- उतना ही पढ़ना चाहिए, जितना जरूरी है। पढ़ने से नहीं - प्रयोग से अनुभव आता है - ज्ञान का विकास होता है।
- सरकारी काम जनता की भाषा में ही तभी उत्तर प्रदेश बन सकेगा उत्तम प्रदेश।
- हम भाषा से भी ज्यादा भावों को प्राथमिकता देते हैं। भाषा नहीं भी जानते पर अपना परिचित मिलते ही रोम-रोम पुलकित हो जाते हैं।
- अपनी भाषा होने पर विषय में पकड़ आती है। विचार अधिक आते हैं।
- एकजुट भी हों तथा एकमत भी हों।
- कदम उठाना तो कठिन है ही विश्वास जमाना भी कठिन है। हाँ, ठान लें तो फिर क्या? सभी सहयोग करने लग जायेंगे।
- बेजोड़ जोड़ी - थिगड़ा मत लगाओ। बेजोड़ जोड़ी तो अपने आप बरसता है, स्वर्ग भी नीचे आने को तरसता है।
- द्वितीय नहीं - अद्वितीय बनो। अपूर्व का मतलब पश्चिम नहीं।
- शब्दों के साहित्य के साथ भाव साहित्य भी हमें बल प्रदान कर देते हैं।
- संस्कृत भाषा से अपभ्रंश रूप में निकली है हिन्दी।
- मातृभाषा में दोनों (दांये-बांये) mind काम करता है, English में आधा मतलब Half mind काम करता है।
- यदि पूरे साल के लिए (हमेशा) आचार संहिता लग जाये तो हमें खुशी होगी।
- नौकर नहीं - नौकरी देने वाले बनो।

- बिमारी को उखाड़ फेंकना है तो ऐलोपैथी नहीं - आयुर्वेद को अपना लो। बिमारी जड़ से चली जायेगी।
- हमने कुछ आयुर्वेद की गोलियाँ, कुछ चूर्ण एवं कुछ क्वाथ का प्रयोग करके आपकी बिमारी को दूर करने का प्रयास किया है।
- हम सरस्वती को प्रणाम करेंगे लक्ष्मी को नहीं ये हमारा प्रण है।
- आप लक्ष्मी की पूजा कर सकते हो लेकिन सरस्वती को कभी भूलियो नहीं।
- सरस्वती को बुद्धि की देवी - बुद्धि/ज्ञान प्रदात्री कहा जाता है, उसी से होश में रह सकते हो।

□ □ □

## "क्रमबद्ध-पर्याय"

पूज्य समयसागर जी महाराज से प्रश्न पूछा कि जब सब कुछ निश्चित हो चुका/सब भगवान के ज्ञान में झलक चुका तो फिर जब जैसा होना है वैसा ही होगा।

मुनि श्री जी ने कहा - भगवान के ज्ञान में भूत - भविष्य - वर्तमान तीनों है किन्तु भविष्य का ज्ञान भविष्य के रूप में ही है, जैसे -

गर्म (उत्तरस्थ)

26-11-18 "श्रीफल नहीं भावना छोटी-बड़ी होती है" प्रातः

सागर वाले अपने परिचय न दें, हमें पहले से ही आप सब परिचित हैं। कितनी भी दूर क्यों न हो हम पहचान लेते हैं क्यों कि उनके श्रीफल की size बता देती है कि ये सागर के हैं। वह बड़ा तो रहता है किन्तु परवल की size से थोड़ा सा बड़ा रहता है। इससे ज्ञात हो जाता है कि ये सागर की है। 108 श्रीफल भी एक परात में आ जाते हैं। सागर तो सागर है।

अब ललितपुर में सागर आया है। समोशरण में क्या होता होगा इससे अनुमान लगाया जा सकता है। "मानेय अनुमानम्" मान के पीछे अथवा उसके अनुसार जो चलता है उसे अनुमान कहा जाता है। ये ध्यान रखो- एक अतिशय हम बता देते हैं। वृषभनाथ भगवान की काया 500 धनुष की थी तो उनके लिए समोशरण का प्रमाण 12 योजन था। धीरे-धीरे आधा-आधा योजन घटता हुआ अंत में भगवान महावीर स्वामी की काया के अनुरूप एक योजन का रह गया।

काम तो वही है। वृषभनाथ भगवान के समोशरण में भी 12 सभाओं में असंख्यात देवी-देवता थे तो महावीर भगवान के समोशरण में भी उतनी ही संख्या थी देवी-देवताओं और मनुष्य-तिर्यञ्चों की। पर इनकी काया उनसे छोटी थी। जो द्वादशांग की रचना वृषभनाथ भगवान ने की वही द्वादशांग एक अक्षर भी न्यून नहीं भगवान महावीर स्वामी

ने भी की।

इसलिये "अब काया को मत देखो, जो कायातीत हो गये उनको देखो।" इसका अर्थ यह है- ललितपुर वालों की संख्या बड़ी, सागर की छोटी ऐसा नहीं दोनों की तुलना एक है। सही है तो इसे रह दो। भगवान तो सारे के सारे वीतराग होते हैं। चाहे वृषभनाथ हो या महावीर अथवा बाहुबली भी क्यों न हो सब वीतराग मुद्रा वाले हैं। बाहर से हमें अलग-अलग लगते हैं पर भीतर से तो सब एक है।

इस वैचित्र्य से सब अनभिज्ञ हैं। इसलिए अपने अस्तित्व को ध्यान में रख करके जहाँ साक्षात् भगवान विराजमान है उनका दर्शन करें। हम साक्षात् तो नहीं किन्तु आगम से गुरुओं की कृपा से देखने में उपलब्ध हो रहा है। इन्हीं सब बातों से अपनी भूख को और बढ़ाओ, मंदाग्नि को भोजन करा दें तो क्या हाल होगा। परोसने वाले को भी आनन्द नहीं आयेगा। हमें और चाहिए- और चाहिए ऐसे में आनन्द नहीं आ पायेगा।

महाराज जी लोगों (6 महाराज + अन्य संघ) को पहले ही भेज दिया है। भूख तो रहती ही है- प्यास भी है या नहीं? भस्मक रोग ऐसा ही होता है। काया की ओर मत देखो। सबकी भूख-प्यास समान होती है। तिर्यञ्चों में भी भूख-प्यास मनुष्यों जैसी ही होती है। वे भले ही कह नहीं पा रहे हैं- कर नहीं पा रहे हैं। फिर भी आसन्न भव्य-निकट भव्य-

सन्निकट भव्य है। समोशरण में पहुँचते ही भीतर का द्रव्य बाहर आ जाता है। ऐसी ही भावना करो - प्रभावना करो ताकि सभी को धर्म का साक्षात्कार हो।

[समयसागर जी मिलन] अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

26-11-14 "धृत का लक्षण - आज्ञा पालने में" मध्याह्न

समय के अनुसार चलना पड़ता है। समय हमें बलात् चलाता नहीं, हम चलना चाहें तो सहयोग देता है। काल का स्वभाव काल के पास है और चेतन का स्वभाव चेतन के पास है, इन दोनों के माध्यम (मेल) से होनहार के रूप में हमारे सामने आ जाते हैं। आज तक कभी काल रुका नहीं - रुक भी नहीं सकता क्यों कि काल निष्क्रिय है। चेतन कभी भी निष्क्रिय नहीं हो सकता चाहे संसार दशा में रहे या मुक्त दशा में। वह वहाँ भी अपनी गति से चल रहा है।

गति का मतलब स्थान से स्थानान्तर जाना मात्र ही नहीं अपितु गति का अर्थ वह वहाँ भी प्रतिक्षण संवेदन कर रहा है। आज का यह कार्यक्रम गर्भकल्याणक के द्वितीय दिवस के रूप में है। अब कल क्या होने वाला है ये तो आप जानते ही हैं। गर्भ में आने के उपरान्त जन्म होता है। कल तीर्थंकर का जन्म होगा - चूंकि उनका अकाल मरण तो होता ही नहीं है। आपके उत्साह को देखकर ऐसा लगता है कि आप सब लोग इस कार्यक्रम को प्रसन्नता पूर्वक कर रहे हो। कल प्रातःकाल जो मुहूर्त है उसके

अनुसार आपलोगों के यहाँ एक सदस्य बढ़ेगा।

वह क्यों आया- क्या आया?

यह सब आपको बहुत जल्दी ही समझ में आ जायेगा। बिना इच्छा भी समझ में आ जायेगा। क्यों कि "पूत का लक्षण पालने में" गुरु जी इसकी व्याख्या बहुत ही अनूठी करते थे, उनका कहना था कि "पूत का लक्षण पालने में" का अर्थ है... आप पालना जो समझते हैं वैसा नहीं। पालने में मतलब आज्ञा पालने में। पूत का लक्षण आज्ञा पालने में ही है। सबको समझ में आ गया। हाँ तो कहो। आपको भी आपके अभिभावकों ने पाला-पोसा होगा।

ये होनहार हमारा सपूत अवश्य ही ऐसा काम करेगा जहाँ पर पूरा भारत ही आने को आतुर होगा। मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश ये सीमांकन यहाँ होता है, भीतर से सब एक हैं। कस जेल वाले और संविधान वाले तथा प्रशासन वाले सारे के सारे आये। सभी आपके इस दृश्य को देखकर गद्‌गद् हो गये। तो पूत का लक्षण आज्ञा पालने में है। ऐसे संस्कार डालो जो कालान्तर में सबके सामने आ जाये कि संस्कार क्या होते हैं।

अपढ़ लोगों को भी समझ में आ जाता है। वह स्वयं अपनी आत्मा का तो हित करेगा ही साथ ही साथ संसार का भी कल्याण करेगा। तीर्थंकर जो होते हैं वे जगत हित की मुख्यता को लेकर ही होते हैं। उनकी चर्या उनकी ही होती है और किसी की नहीं होती। जो कटिबद्ध रहते हैं, वे

ही आज्ञा पालन करते हैं।

"मुनि महाराज सब कुछ करने को तैयार रहते हैं किन्तु संकल्प को कभी गौण अथवा मौन नहीं कर सकते हैं।" अपने संकल्प पर दृढ़ रहते हैं। "अपने यहाँ संकल्प कठोर नहीं हुआ करता संकल्प दृढ़ होता है, सुदृढ़ हुआ करता है।" शरीर साथ दे या न दे शरीर को साथ देना पड़ता है, क्यों की वह अजङ्गम है हम जङ्गम हैं। जङ्गम के अनुसार अजङ्गम को साथ देना होता है। आज समय चुंकि ज्यादा हो गया है।

महाराज लोग (समयसागर जी आदि 5) चलकर आये हैं। उनका रास्ता अलग, हमारा रास्ता अलग था। हम ललितपुर होकर आये हैं, ये ललितपुर के पंचकल्याणक में आये हैं। आपने इन लोगों को निमन्त्रण तो दिया होगा? (हाँ) मतलब ये निमन्त्रण स्वीकार करते हैं? (नहीं) आप निमन्त्रण देते रहते हैं। कल से और अलग ही माहौल सामने आने वाला है, आज तो पूत का लक्षण आज्ञा पालने में ही है।

इसका रहस्य बहुत- बहुत बड़ा रहस्य है, उस रहस्य तक पहुँचने वाला व्यक्ति ही समझ सकता है क्या आदि है और क्या अन्त है। कठिनाई आदि हो सकती है, पर उसका मीठास सभी को प्राप्त हो सकता है। सब लोगों को उसका मीठास प्राप्त हो इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

जन्मकल्याणक

27-11-18 "गौशाला में चलेंगे हथकरघे" प्रातः

आज तो हम भूल से ही इधर आ गये। आज तो शोरका दिन है। शोर में हमारी आवाज कौन सुनेगा? भगवान के जन्म कल्याणक के दिन आज बहुत अच्छा सुने है - यहाँ पर 108 हथकरघा की स्थापना करने जा रहे हैं। गौशाला में ही कर रहे हैं, हमने सोचा कि कहीं स्थान कम न पड़ जाये। ब्रह्मचारीयों से कहकर - संभव है फेरी के पूर्व-पूर्व ही कुछ देखने को मिल जाये।

हथकरघा के ब्रह्मचारी जी भी खाली-खाली बैठे थे। 108 का उद्घाटन तो होना ही है पर इतना अवश्य है कि क्रम-क्रम से होता जायेगा। यह इस पावन अवसर का ही फल है कि तुरन्त निर्णय भी हो गया।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हैं

28- "लक्ष्य के प्रति सच्ची लगन हो ऐसी"

"ललितपुर में 10 दीक्षा में एक थे ब्र. मनीष भैया इन्दौर क्षयोपशम कमजोर था पर लक्ष्य पक्का इसलिए एक रात गुरुजी को अपनी मन की बात कहने हेतु पत्र लिखने बैठे- पत्र लिखा 20 पेज का, साथी ब्र. ने कहा गुरुजी इतना बड़ा पत्र नहीं पढ़ते छोटा किया रात के 2 बज गये 5 पेज, और छोटा किया 2 पेज का। गुरुजी की टेबल पर रखा गुरुजी ने कहा- मुख से बोलो। अब क्या बोलें? गुरुजी भावों को पढ़ लेते हैं। कृपा हो गयी बन गये मनीष से निरंजन सागर"

२१-११-१८ जन्मकल्याणक : प्रवचनांश महेश्वर

- बड़ा विचित्र लगता है जो अभी बोल भी नहीं सकता, जिसके कोई रिश्ते-नाते भी अभी नहीं बने ऐसे बालक का जन्म कल्याणक मनाया जा रहा है।
- न अनुभव है, न ही ज्ञान है, न ही संवाद है, न ही पहचान है किन्तु सामान्य व्यक्ति नहीं असामान्य व्यक्तित्व का धनी है वह।
- जैसे नदियाँ चारों तरफ से आकर समुद्र में मिलती है उसी प्रकार यहाँ भीड़ आ रही है। एक हाथ से आशीर्वाद पर्याप्त नहीं होता, दोनों हाथ से थुं-थुं करना होता है। लेकिन भीड़-भीड़ में रहती है और हम-हम में रहते हैं।
- तीर्थंकर बालक की नकल/प्रतिकृति कोई दूसरा है ही नहीं। सौधर्म इन्द्र का सामर्थ्य भी उसके सामने नतमस्तक रहता है।
- कर्मों के सामने कुछ चल नहीं सकता है।
- तीर्थंकर अपने माता-पिता के एक मात्र संतान होती है। माता-पिता तीर्थंकर के जन्म के बाद से ही सब भोग विलास को भूल जाते हैं। अध्यात्म छा जाता है।
- सोलह कारण भावना का चमत्कार है, उसके द्वारा कर्मों में ऐसा अनुभाग होता है, जो अन्य किसी कर्म के द्वारा संभव नहीं है।
- तीर्थंकर के संतान होती है पर तीर्थंकर की संतान तीर्थंकर नहीं होती।
- आज तक के सभी तीर्थंकर मिलकर भी तीर्थंकर प्रकृति का वर्णन करने में समर्थ नहीं हैं। वैर-वैमनस्य समाप्त हुये बिना रह ही नहीं सकता।

- तीर्थंकर का रक्त धवल होता है - दधिवत्। दूध से भी दही को ज्यादा धवल कहा। विज्ञान के बस की यह बात नहीं है।
- पांच अनुत्तर विमान में भी सर्वार्थसिद्धि का अनुभाग चार से भिन्न ही होगा, उसमें भी जो तीर्थंकर बनने वाले हैं हमारे विचार से अलग ही अनुभाग का सन्निकर्ष होता होगा। इसमें भी हुण्डावसर्पिणी काल के तीर्थंकर। जरूर फर्क होता होगा।
- मैं ये करूं - वो करूं छोड़ो। जो हो रहा है उसे मात्र देखो।
- जिनवाणी के आलोक में देखने पर ही अज्ञान अन्धकार दूर होगा।
- शोध छात्र घण्टों तक शोधकार्यशाला में प्रयोग करता रहता है, गाफिल नहीं होता। जो गुरु मुख से सुना उसी अनुसार प्रयोग करने में लग जाता है।
- हम आत्मा की परख नहीं, कर्म की परख कर सकते हैं।
- तीर्थंकर के माता-पिता तीर्थंकर को देखकर समस्त वैभव को भूल जाते हैं, संभव है भोजन करना भी भूल जाते हो जैसे - मुनि महाराज के आहारोपरान्त कहते हैं न - मेरा तो पेट भर गया है।
- प्रशस्त कर्म का अनुभाग जितना अधिक होगा उतना ही समझ में आ जाता है - संसार में कुछ नहीं है।
- कर्म-सिद्धान्त केवल पुद्गल की परिणति नहीं है - बन्धुओं भावों का परिपाक है।
- तीर्थंकर प्रकृति के बारे में सोचा करो, पंचकल्याणक की महिमा अपने आप समझ में आ जायेगी।
- अपने परिणामों को राग-द्वेष से बचाओ। ती. प्रकृति अमांगलिक नहीं।

o तीर्थंकर का विहार बादलों की तरह, हवा का झोंका जिधर ले जाये वहीं पहुँच कर वर्षा कर देते हैं। पुण्य की हवा जहाँ के भक्तों की वहीं विहार हो जाता है।

o तीर्थंकर प्रकृति का अभी उदय नहीं बंध रहा है, सत्ता में है उसका भी वैचित्र्य देखो। स्वर्ग ही खाली हो गया।

o वह सौधर्म पागल नहीं जो इतने बड़े वैभव को छोड़कर इन तीर्थंकर बालक के पीछे पागलों की तरह भक्ति करता है।

o मैंने किया कभी भी ऐसा नहीं सोचो। मैदा होली है। मैं को भूल जाओ और दा को दे दो।

o मद एवं मैदा दोनों ही मधुमेह का कारण है।

o बच्चों के बिस्किट तो त्याग कराते हो, बड़ों के बिस्किट कौन त्याग करायेगा? भगवान महावीर करायेंगे।

o एक-एक क्षण के परिणामों को रत्नत्रय में ही टिकावें रखें। शेष कुछ भी टिकाऊ है ही नहीं। भाव मात्र से ऐसे परिणाम होते हैं कि सिद्धत्व की भी प्राप्ति कर सकते हैं। करते हैं।

o पूर्व में बंधा कर्म उदय में आयेगा, उसे कोई भी रोकने में समर्थ नहीं है। रोकने में हो तो कर्म-सिद्धान्त का चिन्तन करो।

o कर्ता हमेशा अविनश्वर है कर्म बंधता है और छूटता है। कर्ता-कर्म के रहस्य को जानने वाला ही मोक्षमार्ग में स्थिर रहता है।

o "पुण्य फला अरहंता" औदयिक भाव कहने वालो - यह ऐसा कर्म है जो अन्य सभी (औदयिक) कर्मों को उखाड़कर फेंक देगा।

o सब बातें विज्ञान से सिद्ध होने वाली नहीं, जल्दी जल्दी हओ कह दो। विश्वास करना सीखो।

o o o

तप कल्याणक

28-11-18 "आग में चिराग से मिलता विराग" प्रातः

प्रत्येक साधक के जीवन में कल्याणक की प्राप्ति हो ये निश्चित नहीं, हाँ केवलज्ञान की प्राप्ति सभी के लिए निश्चित है। भरत-ऐरावत में तो पाँचों कल्याणक किन्तु विदेह में 2 या 3 कल्याणक वाले तीर्थंकर भी हो सकते हैं। कल्याणक देवों द्वारा मनुष्यों के साथ मनाया जाता है। भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के साथ यह कल्याणक मनाये जाते हैं, इससे जो रह गया उसे भी अच्छा हो जाती है. जिसे जिन महिम दर्शन कहा है।

जिन-दर्शन एवं जिन-महिम दर्शन में अन्तर है। कीचड़ के बीच में कमल खिलता है वैसे ही तीर्थंकर का संसार में जन्म होता है। कमल का दूसरा नाम पंकज है - पंक = किचड़, ज = उत्पन्न होना। कीचड़ लगने पर हाथ धोते हैं पर उसी कीचड़ से कमल उत्पन्न होता है। भ्रमर एवं कीच दोनों एक ही रंग के हैं। भ्रमर अपने काले रंग से बचने हेतु कमल पर जाकर बैठ जाता है। अब, कमल के कारण भ्रमर की शोभा कई गुना बढ़ जाती है और कीच से उत्पन्न कमल से भी मकरन्द लेता रहता है।

ऐसे ही पंचेन्द्रिय विषयों में रचने-पचने वाला वह इन्द्र तीर्थंकर प्रभु जो संसार कीच में कमल समान है, उनसे मकरन्द लेता रहता है। समोशरण में वह किसी से प्रभावित नहीं, मात्र तीर्थंकर प्रभु को देखकर - ये ही पूज्यों के भी पूज्य हैं। यही मात्र सार तत्त्व है। वैभव का त्याग करना

सीखना है तो समोशरण से सीखो।

संसार में आग ही आग है फिर भी इस आग में चिराग की ज्वलनशीलता रहती है। राग का वातावरण होने पर भी विराग का कमल खिला रहता है। धन्य है यह भेद विज्ञान। गुरुजी भेद विज्ञान को दो तरह से लेते थे- "भेदस्य ज्ञानं भेदविज्ञानं" भेद का ज्ञान विज्ञान परन्तु भेद करके ज्ञान करना - भेद विज्ञान यह अनुभुति परक होता है। जैसे वह भ्रमर उस कमल से मकरन्द को ग्रहण करता है, वैसे ही यह संसारी आत्मा इस आत्मा पर श्रद्धान करके बाहरी सब कुछ छोड़ने को तैयार हो जाता है।

मोह मार्ग जैसे अनंतकाल से है वैसे ही मोक्षमार्ग भी अनन्तकाल से है और अनंत काल तक रहेगा। संसार में कीच भी रहेगा, उस पंक में पंकज भी रहेगा। दोनों का स्वभाव पृथक है पर मोही जीव पंक की ओर ही जाता है, पंकज की ओर नहीं जा पाता। अनन्तकाल के संस्कार ऐसे ही हैं. वह सौधर्म इन्द्र भी छोड़ने के भाव होने पर भी छोड़ नहीं पाता। असंख्यात तिर्यन्च है- अप्रत्याख्यान का तो त्याग पर प्रत्याख्यान का त्याग नहीं कर सकते।

असंयम सर्वघाति प्रकृति है, छोड़ने के भाव पर छोड़ नही सकता। आवरणीय कर्म के कारण ऐसा ही है। ऐसा क्यों होता है? क्यों मत पुछो- अनुभव करने का प्रयास करो। अन्तराय कर्म यही

कहलाता है, इच्छा होते हुये भी कर नहीं सकते।

शुभ करना चाहता है, अशुभ ही हो जाता है। अच्छा बोलना चाहता है पर अच्छा बोल नहीं पाता। अनन्त का ऐसा ही अभ्यास हो गया है। विषाक्त वस्तु है इसलिए खा नहीं पा रहे हैं पर खाने का भाव तो करते ही रहते हैं। इतना ही पर्याप्त भूमिका तो बनाना पड़ता ही है। भूमि पर भवन बनाना है तो पहले भूमि खोदना पड़ता है। भूमिका बनाओ। आशीर्वाद के हाथ तो हैं हमारे किन्तु हमारे वश में कुछ नहीं है। इस विषय में वस्तुतः हम परवश हैं।

कभी-कभी हाथ न उठे अथवा मुस्कान भी न मिले तो उन क्षणों को याद कर लेना चाहिए जब कई बार मिला हो। हम चाहते तो बहुत हैं लेकिन होता वही है जो कर्म में लिखा हो। एक सौधर्म इन्द्र के जीवनकाल में ५० नील शची इन्द्राणी मुक्त हो जाती हैं परन्तु उसके अप्रत्याख्यान का तीव्र उदय कि संयमासंयम तक ग्रहण नहीं कर सकता है। जबरदस्त उदय रहा है। बाद में जब वह मुनि बनता है तब ज्ञात होता है- परिणामों की विचित्रता वज्र इर जाये पर कर्म तो कर्म है।

"नहीं मिला तो अफसोस नहीं, मिला है उसका उपयोग नहीं कर पाये तो अफसोस होता है।" प्रार्थना के हाथ हमेशा जोड़े रखो। प्रकृष्ट रूपेण अर्थी इति प्रार्थना। मांग के साथ अज्ञान नहीं होना चाहिए, ज्ञान

सहित मांग करो।

ग्राहक बनो इसमें कोई बाधा नहीं किन्तु वो ही चाहिए इसके लिए हुबत होगी तो वो भी मिल जायेगा। बच्चा - लड्डू चाहिए - लड्डू चाहिए। दे दिया। हमें आधा इन्हें पूरा क्यों? बेटा आधा भी खाया नहीं जा रहा है। अभी इतना खाओ आगे के लिए प्रार्थना करते जाओ। वस्तुतः संतोष भी एक वस्तु होती है। हमेशा - हमेशा प्रभु के सामने रोते ही रहोगे क्या? शोक क्यों करते हो अशोक वृक्ष के नीचे बैठे हैं प्रभु।

हमेशा - हमेशा प्रमुदित मन की ही गवेषणा करना चाहिए। वह दिन आपका अब हो रहा है, ये सब चमक - दमक आज दूर हो जायेगी, फीका - फीका लगने लगेगा। इतना सब होने के बाद भी, क्षायिक सम्यग्दर्शन होने पर भी सौधर्मेन्द्र को कभी वैराग्य नहीं होता। भेद विज्ञान के बिना कभी वैराग्य नहीं हो सकता। धन्य है परोक्ष में भी ऐसे परिणाम फिर मिलने पर क्या होगा। एक बार मिल तो जाये। ऐसे परिणामों के साथ अपन को भी क्षायिक सम्यग्दर्शन का अवसर प्राप्त हो जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

- मुनिपद पाना सरल है - मुनिपन पाना बहुत कठिन है। श्रमण बनना एवं श्रामण्य दोनों में अन्तर है।

भव्य जैनेश्वरी दीक्षा समारोह मार्गशीर्ष कृष्ण ६

तप कल्याणक

28-11-18 "प्राचीन परम्परा है निर्यापक श्रमण की" महापाल

58 बहनों की कर्त्तव्य दीक्षा (प्रतिभास्थली)

10 भाइयों की मुनि दीक्षा (निर्यापक मुनि/श्रमण)

पालकी - ध्यान रखो! ये राग की नहीं वीतराग की यात्रा है। देव आते-जाते रहते हैं ये कर्त्तव्य करने वाले हैं अतः जो सभी कर्त्तव्य कर सकते हैं ऐसे मनुष्य पालकी उठायेंगे।

संक्षेप प्रवचन - धर्म से बढ़कर कोई मित्र नहीं है। दया पर ही धर्म टिका है। दयोदय का मतलब भी यही है। पर हीतार्थ दया का पालन करने से ही धर्म का पालन होता है।

यह परम्परा (मुनि) आज से नहीं अनादि से चली आ रही है। तीर्थंकरों से हमें ये व्रत आदि मिले हैं। शान्ति-वीर-शिव-ज्ञानसागर जी से यह दुर्लभ परम्परा यहाँ तक चली आ रही है। ललितपुर वालों को दुर्लभ योग मिला है। अभी तक अलग-अलग नाम से परिचित थे लाडला नाम - विद्यालय का नाम - गुरु का नाम अब आज से नाम अलग होगा - निर्ग्रन्थ - निर्भ्रान्त - निरलस - निरास्रव - निराकार - निश्चिंत - निर्मोण - निशंक - निरंजन और निर्लेप सागर की जय।

प्रवचन 5.00 P.M.

प्रवचनसार में आचार्य कुन्दकुन्द ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में लिखा है जो आपको गरिमामय कर रखना है। पवित्र भावों से लिखा है। जो दीक्षित करते हैं वे आचार्य कहलाते हैं। जो नवदीक्षित मुनि हैं उनके निर्वाह के लिए वे

आचार्य एक श्रेष्ठ श्रमण को नियुक्त कर देते हैं, जिन्हें "निर्यापक श्रमण" कहा जाता है।

ये नया प्रयोग नहीं हैं। इन लोगों का ज्यादा आग्रह था। यह योग ललितपुर को मिला। ये नये श्रमण बने उसका श्रेय जिन्होंने इन्हें प्रशिक्षण किया ऐसे समयसागर मुनिमहाराज को जाता है। पहले प्रशिक्षण देना होता है। ऐसा नहीं कि पंगत में बैठ गया भोजन परोस दें। बच्चों को इस ढंग से नहीं दिया जाता उन्हें तो घुट्टी दी जाती है। यह समयसागर जी के माध्यम से हुआ, आगे भी इस प्रकार का होगा, सभी आज्ञाकारी बने रहेंगे।

ये हमारी परम्परा नहीं भगवान महावीर स्वामी से ही आ रही है। एक बात और कहना चाहता हूँ - आर्यिका दीक्षा को किन्तु यदि आचार्य आर्यिका को दीक्षित करेंगे तो संघ में कैसे होगा। वे समूह में विहार करें। किन्तु प्रायश्चित/दीक्षा आदि कौन दें। मूलाचार में स्पष्ट लिखा है - "अज्जाणाम् गणधरो" आचार्य ही इसके अधिकारी हैं। प्रायश्चित आदि का विधान हर व्यक्ति नहीं संभाल सकता है।

इसीलिये मुनियों में से ही गणधराचार्य, एलाचार्य, बालाचार्य, प्रवर्तकाचार्य आदि नाम से विशेष पद बांटे गये। आर्यिका के लिए अलग ही ढंग से कहा। बहुत गड़बड़ हो जाता है इसलिये सोच-समझकर करो। इसी तरह जो परम्परा से यहाँ तक आया है, आगे बढ़ाना है। यह धर्म

आत्मोथान में लाभ दे सकें।

संक्षेप में इतना ही कहना है।

निर्यापकों की संख्या बढ़ाई भी जा सकती है। संघ में भी कौन चाहता है जिम्मेदारी लेना किन्तु लेना तो होगा। समयसागर जी को भी तैयार करने में 40 साल लग गये। गुरुजी ने कहा था - बच्चों को ज्यादा बाध्य नहीं करना, बहुत कहो तो हओ हो जायेगा। ये इतना में, हम खजुराहो में थे। हमने विहार कर दिया और संकेत दे दिया आप पीछे - पीछे आ जाओ।

ये भी आ गये, हम भी आ गये 5 दिन पूर्व ही हम आये। पब्लिकसीटी करना ही नहीं चाहते फिर भी सारे के सारे Record Break होते जा रहे हैं। प्रश्न आता है तो उत्तर तो देना ही पड़ेगा। वाचना हेतु निवेदन किया हओ नहीं कहा था लगता है अब हओ हो ही जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"कैंसर बन गया केसर"

"नरसिंहपुर के नितेन्द्र भैया जिन्हें III. Stage का कैंसर था, डाक्टरों ने नागपुर से बम्बई भेज दिया। वहाँ भी हाथ खड़े कर दिये। आदर्शमती माताजी नरसिंहपुर में थी बोला- एक बार गुरुजी के पास आशीर्वाद हेतु लेकर जाओ। गुरुजी का ऐसा आशिर्वाद की कैंसर कहाँ गया पता नहीं। आज वह केसर सी सुगन्ध फैलाने वाले पूज्य मुनि निरास्रव सागर जी हो गये।"

ज्ञान कल्याणक

29-11-18 "आहार - चर्या" प्रातः

- तीर्थंकर हैं, दीर्घ संहनन है किन्तु छद्मस्थ अवस्था है काया होगी तो क्षुधा (भूख) लगेगी।
- अध्ययन होगा तो परीक्षा भी होगी। कर्म ही परीक्षा लेने वाला है और कर्म ही परीक्षा देने वाला है।
- "परीक्षा ली नहीं जाती परीक्षा दी जाती है, दीक्षा दी नहीं जाती दीक्षा ली जाती है।"
- सबकुछ सहन करने की साधना का नाम ही है- समता।
- पहले सोचते हैं ये तो बहुत आसान है, आसमान छूने जाओ तब पता लग जायेगा। एड़ी-चोटी लगा दो तब भी नहीं पा पाओगे, लगता है बहुत पास है। सब कर लूंगा। छूओ।
- एक बार लेना है- खड़े होकर - इशारा नहीं कर सकते - सेटलमेन्ट भी नहीं। समझो उस समय मानसिकता क्या होती है। दीक्षा की नहीं हम भिक्षा की बात कर रहे हैं।
- हर क्षेत्र में मात्रा काम करती है- हिमोग्लोबीन यदि गाढ़ा हो जाये तो भी गड़बड़ है।
- छद्मस्थ अवस्था में अस्थिरता ही स्वभाव है।
- दीपक की लौ एवं पीपल का पत्ता बिना हवा भी हिलते रहते हैं - ऐसा स्वभाव है। मन भी ऐसा ही चंचल बाबा है।
- हम विधी मिलाना चाहें तो नहीं मिल सकेगी। कर्म सिद्धान्त है। पराधीन है मुनि की चर्या।
- "मुनिमहाराज की चर्या (चारित्र) बिल्कुल स्वाधीन है, पर मुनिराज की चर्या (भिक्षा) बिल्कुल पराधीन।"

- कितनी भी व्यवस्था- अवधीज्ञानी दाता भी क्यों न हो, नहीं कर सकता है। बस एक-एक ग्रास लेते जाओ। मनःपर्यय ज्ञान का भी उपयोग नहीं कर सकते हैं।
- मन में कितने आकुल-व्याकुल परिणाम होते होंगे। 1000 हजार वर्ष में 2000 बार आहार पर उठे लेकिन नाभिराय के यहाँ आहार हुआ हो ये ज्ञात नहीं है।
- श्रावक सहन करता है परवश होकर, मुनिराज तो स्ववश होकर "परिसहाणं उरं देन्तो" समता से सहन करते हैं।
- विधान तो कर रहे हो विधी का पता ही नहीं कैसे करेंगे।
- "चौके में घुसना नहीं चाहिये प्रवेश करना चाहिए।"
- यहाँ तो बोल सकता हूँ किन्तु चौके में आपको क्या हो जाता है, पता नहीं हम ही निमित्त हैं इसमें।
- आज थाली दिखाने की परम्परा है, उस समय तो यथालब्ध होता ही था।
- अलौल्य व्रत का पालन करना चाहिए।
- विनय से काम ले, ज्यादा विनय भी ठीक नहीं।
- आहार ठीक से हो जाये, सामायिक के बाद जैसी निर्विकल्पता वैसी ही श्रावक को चौके में आहारोपरान्त होती है।
- कुछ लोगो का आहार में बहुत भाव लगता है, उन्हें इसी में बड़ा आनन्द आता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

ज्ञानकल्याणक

21-11-18 समवशरण-देशनांश महुआ

o प्रभु देशना बुद्धि की उपज मात्र नहीं, लक्ष्य के लिए अनिवार्य साधन है।

o कर्मों से मुक्त होने का साधन है- अहिंसा।

o स्वामी समन्तभद्र ने अहिंसा को परमब्रह्म कहा। पर एवं स्व के प्राणों को सातापहुंचाना ये बाह्य अहिंसा है तथा इन्द्रिय एवं मन का संयम भीतरी अहिंसा के अन्तर्गत आता है।

o अन्य जीवों को हम पाल नहीं रहे, उस पालने से हम अपना पालन करवा रहे हैं। इसीलिये रक्षा हि रक्षितः कहा।

o पांच इन्द्रिय एवं मन को वश में करने हेतु राग-द्वेष छोड़ना होगा। तत्त्वार्थसूत्र में- मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रिय.... अर्थात परिग्रह ही राग-द्वेष का मूल है।

o आपने अपनी अर्जित पूंजी लगाकर यह पुण्यार्जन की दुकान खोली है अब इसमें बार-बार सिंचन करना होगा।

o हिंसा रहिये धम्मे .... अन्तरङ्ग खोली तो आँखें खुल जायेगी। ज्ञान की अपेक्षा से कहा- 18 दोषों से रहित जिनेन्द्र भगवान की स्थापना करो।

o परिग्रह से दूर रहोगे तभी निर्ग्रन्थधारकों का भी समागम प्राप्त होगा।

o "धम्मो दया विशुद्धो" यह संक्षेप किन्तु पूर्ण सूत्र है। यहाँ दयोदय में तो दया का ही संरक्षण होगा।

- अपने लिए तो सोचते हो, पर के लिए भी सोचो। कांटा तो पांव में लगा किन्तु आँखो में पानी क्यों आया। इसी तरह पराये पैर में भी यदि लगे तो संवेदन होना चाहिए।
- गुरुजी - बहुत जल्दी में हूँ, संक्षेप में धर्म क्या है? आपको रोना आता है? जीवन ही निकल गया। अच्छी बात है - आप अभ्यस्त हैं। पर के लिए रोया करो। अपने लिये रोते-रोते तो ऊमर गुजर गयी।
- परम करुणा कहा - करुणा ही आत्मा का धर्म है।
- धन [परिग्रह] को गौण करते जाओ धर्म अपने आप ही मुख्य होता चला जायेगा। सामने आ जायेगा।
- जैसा मुझे भगवद् पद प्राप्त हो गया, वैसा सबको प्राप्त हो, ऐसी भावना सदैव करते रहो तभी आपकी कामना पूर्ण होगी नहीं तो नहीं।
- वाचना की याचना बार-बार करते रहो। वैसे अभी शीत आयी नहीं - गर्मी तो है ही नहीं - वर्षाकाल भी चला गया। देखो - देखो क्या होता है?

(अहिंसा परमो धर्म की जय)

"संतानोत्पत्ति"

"यदि आप संतान का अच्छे से लालन-पालन नहीं कर सकेंगे, अच्छे संस्कार सौंप कर नहीं जायेंगे तो हम पर कलंक लग जायेगा। फिर आप संतान के लिए भी तरसेंगे। अतः बच्चों का पालन-पोषण कैसे होता है इसे समझना अनिवार्य है।"

मोक्षकल्याणक

30-11-18 "पा लिया शुद्ध स्वरूप" प्रातः

यह अन्तिम कल्याणक है, समोशरण के त्याग के फलस्वरूप साधना के बल पर प्रभु को निर्वाण की प्राप्ति हुयी है। जब तक संसारी रहे तब तक शरीर के साथ रहे अब अशरीरी हो गये। यह ज्ञात हो गया कि दुनिया मेरी नहीं और मैं दुनिया का नहीं हो सकता। रहते यहीं हैं पर स्वभाव-निष्ठ होकर नहीं, विभावनिष्ठ होकर के, तो उन्होंने साधना प्रारम्भ कर दी।

जैसे पाषाण में स्वर्ण विद्यमान रहता है, प्रयोग से स्वर्ण अलग, पाषाण अलग हो जाता है उसी प्रकार साधना से शरीर और आत्मा पृथक-पृथक हो जाते हैं। आज वह अनंतकाल से कर्मक आत्मा शुद्ध हो गयी। यह भेदविज्ञान के बल पर ही संभव है। प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हम भी साधना के बल से आप जैसे स्वरूप को प्राप्त कर सकें। हममें भी वह शक्ति है किन्तु अन्तर इतना ही है कि हम राग-द्वेष से घिरे रहते हैं।

हम किसी दूसरे के समान नहीं बस आपके समान बनना चाहते हैं। दूसरे के समान तो तुलना हो सकती है पर आपकी किसी से तुलना नहीं। इसके लिए हमें उसी प्रकार की साधना करनी होगी। "वन्दे तद् गुण लब्धये"। पंचकल्याणक पूर्ण हो गया। महयाहु में विहार होगा। किसका? भगवान का। जब उनका विहार हो सकता है तो हमारा भी तो हो सकता है। हमसे उन्होंने यही कहा जिस प्रकार मैं बिना कहे

विहार कर जाता हूँ, तुम भी ऐसा ही करना।

इसी में स्वतंत्रता है, इसी में आनन्द है और उसी में धर्म है। दयामय यह धर्म हमें भी दया का मार्ग बताता है। सभी ने इस पंचकल्याणक से प्रेरणा ली है, आपने भी उत्साहपूर्वक सभी कार्यक्रम किये। मध्याह्न में भी शान्ति के साथ सभी कार्य सम्पन्न करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

गजरथ फेरी
30-11-18 "दंगल दूर हो मंगल आता दया से" मध्याह्न

- पानी भरते देव हैं - वैभव जिनका दास,
  मृग-मृगेन्द्र मिल बैठते, जहाँ दया का वास।
- दयोदय में परिवार से भी ज्यादा पशुओं की सेवा की जाती है, उन्हें गर्मी - सर्दी - वर्षा से बचाकर संरक्षण दिया जाता है।
- उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री ने चुनाव में ही यह घोषणा कर दी थी कि यदि मैं पद पर पहुँच जाऊँगा तो रात 12 बजे से ही अवैध कत्लखाने बंद कर दूंगा और उन्होंने अपने प्रण को पूरा भी किया। स्वतंत्रता के समय भी इसी प्रकार नेताओं ने प्रण किया था किन्तु बाद में पालन नहीं हुआ, जिसका गांधी जी को बहुत दुःख रहा। इतिहास के पन्ने देखो।
- ललितपुर में इतना बड़ा यह कार्य होना इस बात का प्रमाण है कि आज भी यहाँ अहिंसा का बिगुल बज रहा है। यहाँ पर पशुओं का भक्षण नहीं रक्षण होता है।
- दयामय धर्म ही दंगल को दूर कर मंगलमय वातावरण बना देता है।

o जहाँ संयम पलता है, जिस धरती पर तप होता है तो काले-काले बादल भी उस धरती को अभिषिक्त कर देते हैं।

o धरती का अभिषेक मेघराज करते हैं किन्तु समाज भी इस भावना को प्रतिदिन प्रातःकाल श्री जी पर धारा छोड़ते समय भाती है। "क्षेमं सर्व प्रजानां" वृक्ष - फल - पशु - पक्षी आदि के रोग दूर - ही - दूर हो ऐसा प्रतिदिन शान्तिधारा में यह समाज पढ़ती है। मंगलाचरण इसी से होता है।

o दयामय कार्यों में धन को लगाने वाला अपव्यय से बच जाता है। फिर तो दसों ऊँगलियाँ घी में और - - - खाने की अपेक्षा नहीं, परोसने की अपेक्षा।

o एक बार सुना हमने, सेठ जी ने कहा - अरे ढीले हाथ से परसो, क्या? घी। चम्मच से नहीं लोटे (रामसागर) से परसों।

o "सभी सुखी हो" इस भावना से किसी के भी जीवन में दुख आयेगा ही नहीं। इसी का नाम धर्म है।

o हमने सुना था क्रिकेट में क्रमशः रन बनते हैं किन्तु एक साथ छक्का भी मारा जाता है, इसी प्रकार यहाँ न ही सिंघई, न ही सवाई सिंघई, न ही डोडिया सीधे ही श्री मंत सेठ की उपमा मिली।

इसलिए ध्यान रखो! क्रमबद्ध पर्याय ही होती है, ऐसा आगम है ही नहीं। एक साथ भी किया जा सकता है। करते हैं।

o प्रशासन में कल ही यहाँ के नये अधिकारी की नियुक्ति हुयी, उन्होंने कहा पहले मांगलिक कार्य में शामिल होऊँगा, बाद में नियुक्ति।

○ कई लोगों की धारणा है - जैन लोग अपने लिये ही करते हैं। नहीं जन-जन के लिए समर्पित है यह समाज (इतिहास उठाकर देख लिजिये।

○ आज की पीढ़ी (बुद्धिजीवी) भी अपने पूर्वजों के उसी इतिहास को पुर्नजीवित कर रही है।

○ समय पर हम लोग आ गये और समय सागर जी भी आ गये। 10 ब्रह्मचारीयों का तेज पुण्य था आपके सामने है। और भी है, पर हम क्या करें। बारात बुलाने से पूर्व देखना पड़ता है। कहीं कोई कमी तो न रह जाये।

○ जिन्होंने कभी मंच का दर्शन भी नहीं किया, भोजन व्यवस्था वालों के लिए 3-3 बार आशिर्वाद पहुँचे आप के पास उसके बाद बचाखुचा है।

○ विघ्न की तो बात ही नहीं, सानन्द यह महोत्सव सम्पन्न हुआ।

○ जनता के पुण्य के साथ एक और जनता का भी पुण्य इस महोत्सव को सानन्द बनाने में काम देता रहा। वह था मुक पशुओं का पुण्य। प्रतिदिन हरिश्चन्द्र हवा चली, बदरें आयी किन्तु बूंदा-बूंदी भी नहीं हुयी, यह प्रकृति की ओर से भी बहुत बड़ा योगदान है।

अंत में गुरुदेव की कृपा से यह कार्य सम्पन्न हुआ उनके चरणों में तरणि ज्ञानसागर गुरु, तारो मुझे ऋषिब। कृपा कर कृपा करो - कर से दो आशीष।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

कलशारोहण

1-12-18 "दुर्लभ योग - भगवद् प्राप्ति" प्रातः

एक वह प्रसंग सुना देता हूं, जिससे समग्र महोत्सव का महत्त्व ज्ञात हो जायेगा। जब आदिनाथ भगवान को केवलज्ञान हो गया। चारों ओर विहार करते हुये धर्मामृत वर्षा करते हुये कैलाश पर्वत पर पहुंचे। वहाँ उन्होंने समवशरण का भी त्याग कर दिया। उसके बाद अब वहाँ कुछ नहीं देवी-देवता सब चुप। अब योग निग्रह कर कैलाश पर्वत से मुक्ति को पा लेते हैं। सम्मेद-शिखर से 20 तीर्थंकर मुक्त हुये उनमें आदिनाथ नहीं है, वे तो कैलाश पर्वत से मुक्त हुये।

उन्हें देख चक्रवर्ती की आँखों में पानी आ गया। शोक में डूबा है वह इधर लोग आनन्द मना रहे हैं। बाहुबली भी नहीं एवं पिताजी भी नहीं रहे, मुक्ति पा लिये। फिर भी शोक, स्पष्टीकरण दिया। इसलिये वह शोकमग्न है कि उसने अपने जीवन काल में/श्रावक पर्याय में इतने प्रश्न पूछे, समस्त जनता के आमोद-प्रमोद का कारण बने, अब किससे प्रश्न करूंगा। अब तीर्थंकर के चरणों में नहीं बैठ पाऊंगा। चक्रवर्ती भले ही मुक्त हो गया पर यह बहुत दुर्लभ है।

एक-आध बार ही सही, स्थापना निक्षेप से ही सही यह योग बहुत दुर्लभ है। भगवान अपने स्थान पर बैठ गये। आप भी भावना करो हे भगवन् हमारा भी नम्बर आ जाये। संसार तो फीका ही फीका है अंत भी फीका है उस फीका को छोड़ दो और बीज चर को पकड़ लो।

रात्रि - बदलापुर, आहार - जामखेड (प्रवचन नहीं) अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

देवगढ़ (उ०प्र०)

3-12-18 "हर पत्थर बन जाता है देव - देवगढ़ में" प्रातः

यहाँ पर योग से 30-32 वर्ष पूर्व में थुबोन जी में चातुर्मास सम्पन्न करके सर्दी के समय आये। गर्मी भी कुछ व्यतीत की। तीनों सामायिक ऊपर ही होती थी। रात्रि विश्राम भी। यहाँ के परिसर को देखकर अनुमान किया जा सकता है, यहाँ क्या था। यहाँ से मूर्ति निर्यात होती होगी। यहाँ का पाषाण ऐसा ही है, जो भी शिल्पी छैनी चलाता, श्री जी की प्रतिमा बन ही जाती। इस परिसर को देखने से ऐसा लगता है, यहाँ जरूर देवों का निवास होगा यह निश्चित है, इसीलिये इसका नाम देवगढ़ है।

ये बात अलग है आप शहरी हो गये हो। आप क्या रक्षा करेंगे? आप अपनी रक्षा कर लो इनके माध्यम से। जीवन को सानन्द सम्पन्न बनाना चाहते हो तो देव (वीतराग देव) की शक्ति कम नहीं। मन वचन काय से सेवा/शुद्धि पूर्वक आस्था से इनकी भक्ति करना चाहिए। संक्षेप में किन्तु पर्याप्त है। अभी पर्वत से उतर कर जाना है। चढ़ाव चढ़ गये तो उतर ही जायेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"विद्यासागर संत भवन (पाषाण) का शिलान्यास"

देवगढ़ में मध्याह्न में आ०श्री के सान्निध्य में पत्थर से निर्मित होने वाले संतभवन का शिलान्यास हुआ। आ० श्री ने कहा - यहाँ पत्थर के मन्दिर बहुत हैं इसलिये त्यागीयों हेतु भवन भी पत्थर का ही बने तो अच्छा होगा। हम सो ही दूर ले आये हैं चुटकी लेते हुये विहार कर दिया।

देवगढ़ घाट से नौका द्वारा विहार कर म०प्र० की भूमि पर
(रात्रि - मदऊखेड़ी)

किरोलबाग (म०प्र०)

प्र-१२-१8 "आ ही गये राम" प्रातः

कितने बार आप लोगों ने मांग की थी। किन्तु काल भी एक प्रत्यय होता है। "काल में काम होता है काल के द्वारा काम नहीं होता।" जिस समय कार्य होता है, उसी समय होता है। सुनते हैं पुराण ग्रन्थों में सबरी का आता है। राम के लिए कितनी सब्र रखी आप लोग उतावले हो जाते हैं। लेकिन आकुलता करने से होता कुछ नहीं। बहुत दिन का मतलब क्या है? चारों तरफ से मांग है। आप लोग अपनी-अपनी जगह के लिए प्रार्थना करते जाओ। जब होगा तभी होगा।

भावना करने में कभी कंजुसी नहीं करना चाहिए। प्रार्थना करते रहो। पिपरई - चन्देरी - शहराई - रुडोरा - अशोकनगर भी गये हैं। अब हम का करें? बताओ? पंचकल्याणक में सिरोंज गये थे, सीधा ही आरोन था लेकिन कोई रास्ता बताने वाले नहीं बताये तो हम क्या करें? भावनाओं के माध्यम से ही कर्मों की निर्जरा होती है। आपने यही किया है न? हम भी यही कर रहे हैं। हम भी प्रतिक्षारत हैं। कहाँ के लिए? आप बुलाते हैं, हम जाना चाहते हैं। सभी प्रतिक्षारत हैं। इन्हीं भावनाओं के साथ।

आप प्रतिक्षा करते रहियो। बड़े-बड़े आचार्यों/तीर्थंकरों ने भी उसकी प्रतिक्षा की। उन्हीं के माध्यम से हमारा उद्धार होगा। थुबोन जी से पीपरई गये थे। इतनी धूल ही धूल उड़ रही थी की कहाँ जाना है मालुम ही नहीं। रविवार की भीड़ थी। ध्यान रखो! पीपरई ही शहराई ही था। अन्य ये सब हमेशा-हमेशा रहने वाले नहीं हैं। तात्कालिक के पीछे त्रैकालिक को मत भूलो। सोचा करो - एक ही एक नहीं पकड़ते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

मुंगावली
5-12-18 "पंचमकाल में आ गया चतुर्थकाल" प्रातः

आप लोगों को क्या-क्या कहना है वह कह तो दिया ही आपने। मंजुरी होना न होना बात अलग है। कहने से क्या होता है कुछ हल्का हो जाता है। रही बात यहाँ आने की तो पिपरई/शहराई तक तो हम आये लेकिन इधर का योग नहीं था अथवा नियोग वैसा ही था। कुछ भी कह दो, हुआ नहीं तो हम क्या कर सकते है? जिधर हवा का झोंका लग जाये बादल भी उधर ही चले जाते हैं। बादलों के पास पानी तो है पर हवा का नियन्त्रण नहीं है।

यह बात तो भूल जाओ कि हमारे पास कुछ है। जो व्यक्ति ज्यादा प्रतिक्षा करता है, उसे सबसे ज्यादा पुण्य मिलता है। आकुलता से पुण्य घटता है। आकुलता करने से नहीं होगा जब नसीब में होगा तभी मिलेगा। आते रहे-कहते रहे-निवेदन करते रहे, हमें याद ही नहीं है, ऐसी बात भी नहीं है। हम सोनागिर गये कुछ ब्रह्मचारीयों को लेकर, योग से दीक्षा हो गयी, वाचना भी हुयी ग्रीष्मकाल में, फिर देवगढ़ और ललितपुर में भी एक नहीं दो वाचना हो गयी।

पाप के प्रक्षालन का एक ही रास्ता है वह है पुण्य करते जाओ। जैसे-जैसे पुण्य बढ़ेगा पाप का प्रक्षालन होता जायेगा किन्तु पुण्य की गठरी वैसी ही बनी रहे। तो खाओगे कब? यहाँ पुण्य बढ़त क्रम में नहीं-गुणित क्रम में बढ़ना चाहिए/गुणा होना चाहिये। बहुत प्रतिक्षावान है। कुछ लोग

कह रहे थे - भूल से ही सही, आ गये।

हमारे यहाँ भी भूल से ही आ जाओ। क्यों नहीं आ सकते। आप लोग कहते हैं न - सपने में ही पूजा हो जाती, जब नींद ही नहीं आयी तो स्वप्न कहाँ से आ गया। झोंके लेते रहते हैं, उसी में ही स्वप्न भी आ जाते होंगे। आपकी भावना तो रहती है - हमें भी थोड़ा मिल जाये, पर हम क्या करें? हम भी यही चाहते हैं कि सबकी भावना पूर्ण हो जाये। आप भी ये भावना भायें हमें मिल जाये ऐसा नहीं सबको मिल जाये, ये बड़ा धर्म है।

सब में हम आ ही जाते हैं। आप भी आ जायेंगे। सब पास हो जाये। सबका कल्याण हो जाये, सन्तो ने इसी को धर्मध्यान कहा है। इससे भी कर्मों की निर्जरा होती है। आप लोगों की कर्मठता - लगनशीलता को देखकर लगता है पंचमकाल में भी चतुर्थ काल आ सकता है। और कौनसा पंचम काल - चतुर्थकाल होता है। एकमाटी में आया सतयुग एवं कलयुग काल में क्या अन्तर है? हमने कहा - जिस काल में अच्छी बात भी बुरी लग जाय वह पंचम काल है इसमें वह बुरा - बुरा ही सोचता रहता है तथा बुरा भी बुरा सा लगता है वह चतुर्थकाल / सतयुग है।

ऐसी भावना से ही धर्मध्यान होता है। प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आप सब लोगों को जल्दी-जल्दी मुक्त होने का भाव प्राप्त हो जाये। समष्टि से ही करो, एक व्यक्ति का नाम नहीं लेओ। लोकतंत्र में भी मिलकर ही कार्य

किया जाता है।

आप तो पुद्गल की बात करते हो हम तो चेतन की बात करते हैं। ऐसे जो आत्म तत्त्व के विकारों को भी उखाड़कर फेंक दें। जो पिछड़ा है उसे भी आगे लाना है। जो क्षण मिले हैं उनका प्रयोग करके धर्म-ध्यान करना है। अभी इतना ही कहना है। (सागर के पात्रों पर) अभी सौधर्म इन्द्र की बोली जिन्होंने ली बड़ा भैया कहता है हम छोटे को बनाना चाहते हैं, छोटा भैया कहता है हम बड़े को बनाकर ही रहेंगे।

ये चतुर्थकाल नहीं तो क्या है। यहाँ पर कोई भी पद चाहता नहीं - दूर भागता है फिर भी उसे बिठाया जाता है। इसलिए मैं को भूल जाओ - हम में सबकुछ आ जाता है। मैं-मैं तो रावण करता था, राम ने कभी भी मैं नहीं कहा। आप राम बनना चाहते हो या रावण? बोलो? हाँ। जय श्री राम बोलो। वितरागी राम भगवान की कथा कहें - पढ़ने से सब ज्ञात होता है।

सामान्य बलदेव होते भी महावीर से पूर्व हुये थे राम फिर भी हरमुख से आज भी जय श्री राम ही निकलता है। इतना तेज पुण्य था उनका। इस मंच का नाम भी राममंच, ताली बजाने वालों के भीतर भी राम है। आत्मा का नाम ही राम है। ऐसे आतमराम में रमण करो, इसी में राम है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

6-12-18 "सबसे बड़ी बिमारी- गलती को गलती नहीं मानना" प्रात:

बचपन में ही एक माँ का पुत्र घुम गया। कहाँ चला गया, इसका कोई पता न चल सका। वह माँ इस सदमा के कारण पागल जैसी हो जाती थी। उसके मस्तिष्क में खून के थक्के जम जाते। ढूंढने के लिए जंगल-जंगल भी भटकती रहती। वर्षों बीत गये। एक दिन वह माँ जंगल में किसी पत्थर से टकराकर गिर गयी, मस्तिष्क से खून निकल गया। खून क्या मानो पागलपन ही निकल गया। योग से वही लड़का भी जो आवारा जैसे घुम रहा था, सामने आ गया।

वैसे उसकी शकल बदल गयी थी। किन्तु माँ ने गले में बंधे ताबीज से पहचान लिया कि यह वही ताबीज है। अब ज्यादा कुछ कहने की आवश्यकता नहीं, दोनों को एक-दुसरे का स्मरण हो आया। ये मेरी माँ है- ये मेरा लड़का है। ये छोटी सी कहानी पढ़ी थी, आपने भी पढ़ी होगी। सबकी कहानी यही है। कहानी का उद्देश्य यही है कि जिसको पहचानना है, उसे इससे जान सकते है।

आप लोग भटके हैं, संसार में घुम रहे हैं, इसी से संसार में अटके हैं। "सही दिशा में रुकना ठीक है, लेकिन भटकना ठीक नहीं।" अभी तक आप भटके हो कि नहीं? हमारे कहने से हओ कह रहे हैं। "कोई भी व्यक्ति अपने आपको भटका हुआ नहीं मानता, आज ये सबसे

बड़ी बीमारी है।"

अभी तक भटके हुये हैं इस कारण अटके हैं। जानते हैं ये भटका हुआ है फिर भटके हुये व्यक्तियों के साथ क्यों रह रहे हो? सबसे ज्यादा भटकना तो यही है। समझ में आने के उपरान्त भी रास्ता नहीं बदलना चाहते। हमारी इस कहानी को दूसरों के लिए नहीं - अपने लिए मानना है। किन्तु क्या करें? भ्रम के कारण जो अपनाना चाहिये वह नहीं अपना रहा तथा जो नहीं अपनाना चाहिये उसे अपना रहा है, यही बहुत बड़ी बिमारी है।

एक बार जो देव-गुरु-शास्त्र की देहरी से टकरा जाये, बहुत दिन का जमा विकार बाहर निकल जायेगा। एक बार निकलना प्रारम्भ तो सब बाहर निकल जायेगा। उस सीढ़ी पर माथा टेक दो तो फिर बताने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यह टकराना भी रोशनी का काम करेगा। "स्वयं की पहचान ही सही पहचान मानी जाती है अथवा जिन्होंने अपने को पहचान लिया उनको पहचान लो तो भी संसार से किनारा पा जाओगे।"

"वह दर्पण तभी तक दर्पण है जब आप उसमें अपने आप को देख लें नहीं तो वह काँच का टुकड़ा है। यदि दर्पण हाथ में है तो वह और कुछ नहीं अपना ही चित्र दिखायेगा। वह भी उलटा नहीं सीधा दिखायेगा। दर्पण आपको पीठ नहीं दिखाता, आपको अपना मुख

दिखाता है। यही वीतरागता की बात है।

हम वीतरागता की पहचान कर ले तो भविष्य निश्चित हो जायेगा। वैसे भविष्य निश्चित नहीं पर काल की अपेक्षा निश्चित है। इतना ही पर्याप्त है। बहुत-बहुत कहने से क्या लाभ? एक ही बार कहना चाहिये था। प्यास बुझाना ठीक नहीं माना जाता। भोजन कर लिया तो अब 3-4 घण्टे पानी नहीं पीना चाहिये, ऐसा सिद्धान्त है। क्यों की भोजन के बीच में पानी पीयेंगे तो कम खा पायेंगे। छोटा बच्चा कहता है- पानी पी लें? तो आप-नहीं, अभी खा ले बाद में पीना।

आप बिमारी को बिमारी मान ही नहीं रहे। पहले भोजन कर लो बाद में प्यास बुझाने की बात करना। देव गुरु शास्त्र हमें यही सीखाते हैं। गलती को समझना अनिवार्य है। आप तो गलती पर गलती करते ही जा रहे हैं। सही समझ रहे हैं- हम तो नहीं कहेंगे। हाँ, समझने की ओर हैं। जो नहीं समझा वही तो समझने की ओर होता है। एक तरफा निर्णय नहीं लेना। एक तरफा निर्णय तो कोर्ट में होता है, दूसरे को समझ में आ जाता है। वकील निर्णय करता है या जज, बोलो? आपने किसे नियुक्त किया है। वकील तो दोनों तरफ से लेता रहता है। सही को सही कहना आवश्यक है। बहुत बड़ी कृपा हमारे आचार्यों/संतों की हम सब पर है। प्यास को पहले मत बुझाना, ये याद रखेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

7-12-18 "कीजे कूबत प्रमाण" प्रातः

अभी एक व्यक्ति एक भजन में अपने भावों को अभिव्यक्त कर रहा था। एक नजर तो उठा दइयो .... इतना ही पर्याप्त है। हम यह कहना चाहते हैं कि भगवान तो नजर उठाते ही नहीं हैं, किन्तु हमारे लिए कह रखा है कभी-कभी आप उठा सकते हैं। क्यों कि थोक दुकान वाले ^यहाँ^ फुटकर दुकान वाली भीड़ आ जाती है तो नजर तो उठाना ही पड़ता है। थोक व्यापार से अपना काम तो हो जाता है। फुटकर व्यापारी आये हैं उनके माध्यम से उपभोक्ता जहाँ-जहाँ हैं वहाँ पर भी महत्त्व-उपयोगिता को बढ़ायेंगे।

अभी आपके सामने 4-5 सज्जन राजधानी से आये। राजधानी मतलब भोपाल वाले अपना समझ रहे हो, नहीं। भारत की राजधानी से आये हैं। अभी तो एक-एक मोहल्ला सर्वे हो रहा है। वो (दिल्लीवाले) कहते हैं हमें बहुत कम अवसर प्राप्त होता है। कितनी कालोनीयाँ हैं पता नहीं। सुनते हैं 1008 मॉडने मॉडकर कागज के नहीं महाअर्चना करेंगे। लगता है देहली पुरी की पुरी वहीं होगी। आपकी अच्छी धारणा है, अच्छी कल्पना है, अच्छी योजना है। जो मौका मिला है उसे टालो नहीं। बताते है महाराज भी बहुत प्रसन्न है।

कौन दुकानदार ऐसा होगा जो अपनी दुकान को चलता देखकर प्रसन्न ^नहीं^ होगा। देहली वालो! यहाँ की दुकान भी देख लेना। [दिल्ली अभी प्यासी है] जमुना तो खूब चल रही है न? गंगा हो या न हो। गंगा से मिलन/संबंध

रखने वाली जमुना तो है ही।

आप सभी को अखण्ड भारत को अपनी नजर में रखना चाहिए। एक नजर उठाओ की अपेक्षा प्रत्येक व्यक्ति की नजर उस अखण्ड भारत की ओर जाना चाहिए। जिस भारत की सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्धि है। सभी देशों के यह केन्द्र में है, जहाँ हमेशा धर्म-ध्वजा लहराती रहती है। जो इस देश में प्रान्त/राज्य है उनकी ओर भी नजर रखना चाहिए। अनेक जिला - तहसील - उपतहसील (Block) इत्यादि हो जाते हैं किन्तु केन्द्र में तो वह राज्य ही होता है। सभी राज्यों से राष्ट्र का निर्माण होता है।

राज्यों की कोई समस्यायें आती है तो सर्वोच्च न्यायालय की निगाह हो जाती है। प्रत्येक जनता भारतीय जनता मानी जाती है। भारतीय हैं आप। एक-दूसरे का ध्यान रखा जाता है। वो क्या सोचते होंगे? पुरी जनता के साथ अपनत्व रखते हैं तभी भारत का इतिहास ताजा हो पायेगा। प्राचीनता/मौलिकता तभी दिखेगी। यह त्याग/तपस्या की भूमी है। यहाँ राग में रहते हुये भी दृष्टि वीतराग की ओर ही जाती है। परिग्रह को निकालते जाते है।

ऐसा नहीं कि एक गाँठ खोलने के चक्कर में 10 गांठ और लगा दी। समझ रहे हो न? [हओ] ये बुन्देलखण्ड की बहुत महत्वपूर्ण ध्वनि है - हओ। हमने भी बुन्देलखण्ड में प्रायकर सभी आर्यिका संघ एवं महाराज जी को भेजा। इस बार देहली में भी भेजा। उन्होने लिखा, हम लोगो की धारणा दूसरी

थी। अब बदल गयी है।

देहली में भी कूप जल प्रासुकता के साथ एवं प्रासुक जमीन होना अलग ही बात है। अपनी-अपनी कॉलोनी में प्रासुक जमीन लेकर रखी है। जैसे बुन्देलखण्ड में प्रत्येक दो-तीन किलोमीटर में गाँव है- ऐसे देहली में कॉलोनीयाँ है। कई चातुर्मास निकाल सकते हैं। देखते हैं देहली वाले कहाँ तक निभाते है। क्यों की शेर को रखना बहुत कठिन होता है, शहर वाले हैं। शेयर बाजार वालो! जनता की सेवा के लिये हमेशा-हमेशा तैयार रहेंगे तभी अहिंसा धर्म की स्थापना सम्भव है।

संकल्प ले लेना चाहिए, दूसरो को भी संकल्पित कराना चाहिए। "कूवत से बाहर नहीं जाना, कूवत को छिपाना भी नहीं चाहिए।" दोबारा बोलूं? आप इशारा करते है। जब कोई संसार का काम करते हो तो कूवत से बाहर करते हो और धार्मिक काम करते हो तो महाराज! अभी बाजार में बहुत मंदी चल रही है। इसलिए अपने द्रव्य का सही विभाजन करके उपयोग करो- संग्रहित मत करो। दुरुपयोग तो करना ही नहीं। इस प्रकार अल्प धन से भी अच्छा काम हो सकता है/होता है। जैसा इतिहास सुनते है वैसा पुनः आपके सामने आ जायेगा। पूर्वजो ने स्वर्णाक्षरों से इतिहास लिखा है, पढ़ने वाला चाहिए। हम वज्र की लकीर से भी लिख सकते है। ऐसे धार्मिक भावों से ही रथ आगे तक चलेगा। श्रावक एवं मुनि दोनो मिलकर ही इस रथ को आगे बढ़ा सकते है। कोई यंत्र की जरूरत नहीं। मानव रथ हैं ये चलाते रहें और जय-जयकार करते रहे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

४-१२-१४ "नाचता कौन? जीव या कर्म" प्रातः

आप बताओ हम नही बता सकते। आप ही बतायेन्गे। कभी-कभी तो आप लोग मुस्कान लेते हो और कभी-कभी तो एकदम क्या पता क्या हो गया हो? आजकल कोई भी उदासिन आश्रम में भरती नहीं होना चाहता। ऐसे ही जाते है कि उदासिन आश्रम भी आपको देख उदासिन हो जाये। ऐसा क्यों होता है? जैसा तो ऊपर से डाल दिया हो। "जीव और पुद्गल नाचे यामें, कर्म उपाधि है" यह उपाधी अपने आप ही पेट्रोल का काम करती है।

आप जैसे गाडी चलाते है - कई बार एकदम ही रुक जाती है। गाडी ठीक है, रोड अच्छी है, ड्राइवर भी है फिर भी रुक क्यों गयी। खरीदी भी है फिर भी रुकी। यदि चलायेंगे तो सुबह-शाम तेल तो डालना ही होगा। नहीं तो वह गाडी जहाँ कहीं भी उदासिन होकर रुक जायेगी। कोई भी उसको हिला नहीं सकता। कितना महत्वपूर्ण दर्शन दिया है जो विद्वानों को भी सोचने के लिए बाध्य करता है। मैं चला रहा हूँ? क्या चलायेंगे आप।

उस कर्म रूपी उपाधि में हमी लोगो द्वारा जो प्रतिपल तेल डाला जा रहा है उसी के माध्यम से वह आगे बढ़ती जाती है। यदि नही भी डाले तो भी वह यंत्र चालु रहता है। आवाज करता रहता है। ज्यों ही तेल समाप्त हो जाता है त्यों ही उदासी छा जाती है। अभी तो यहाँ काँफी उद्धार है। कहते हो ना नदी आ गयी - नदी आ गयी तो गयी कहाँ थी। वो ही नदी है, उसमें पानी की मात्रा बढ़ गयी। पानी बढ़ने से हम

कहते हैं नदी में पानी उफान पर है/पूर आ गया।

नदी में बाढ़ आ गयी, ऐसे ही अभी मूंगावली में बाढ़ आ गयी। ऐसी बाढ़ आ गयी, कौन-कौन बह गये पता नहीं। ऐसी धर्मामृत वर्षा हो गयी। महाराज हम बहना चाहते हैं। जाकर सागर में मिलना चाहते हैं। हम भी चाहते हैं हमेशा ऐसी बाढ़ तो आ जाये। जिस कुलिया में जाओ बस एक ही बाढ़। मूंगावली में तो वैसे ही कुलिया ही कुलिया हैं। कौनसी कुलिया में से जाते हैं, पता ही नहीं चलता है, कहते हैं - मन्दिर आ गया। हम सोचते हैं इतनी जल्दी ही।

ये यहाँ का चमत्कार है। कोई भी जल्दी नहीं कर सकते। अगर कुलिया में फंस जायेंगे तो 8 वहीं की वहीं परिक्रमा लगाते रहेंगे। मैं तो पहले सागर में ही कुलियाँ मानता था पर वहाँ यदि 100 है तो यहाँ पर हजार हैं। शुरुआत में प्रवेश तो राजपथ था। यहाँ आये तो कहा महाराज - ये पुराना है वो नया है। स्टेशन रोड होते हुये ही हम आये। इस प्रकार यहाँ का वातावरण परिवर्तन हो गया। इधर कह रहे हैं किसी भी प्रकार महाराज को बाँध लो तो कुलिया में महाराज को कहाँ रखोगे।

फिर भी भावना रखो, भावना से सब ठीक-ठाक हो जाता है। एक-एक दिन यूं ही निकलते जाते हैं। इसी में व्यस्त नहीं हो जाना है। कभी पानी कम रहता है तो कभी बाढ़ आ जाती है किन्तु रहती तो नदी में ही

रहकर हमेशा स्वस्थ रहती है।

नदी कभी नहीं कहती कि मैं बह गयी, वह तो अपने प्रवाह से निकलती चली जाती है। जीवन का प्रवाह भी ऐसा ही है। रुका जैसा लगता है पर नदी की तरह रुकता नहीं। पानी भी कभी रुकता नहीं। बांध बना भी लो तो वह ऊपर की ओर बढ़ता जाता है और पुनः बहने लग जाता है। हमारा जीवन भी ऐसा ही है। हम मूंगावली में रुके से लगते हैं, परन्तु हम रुके नहीं हैं।

प्रवाह तो चलता ही रहता है, रुक नहीं सकता। कुछ आयेंगे - कुछ चले जायेंगे। जब देव बन जायेंगे तब ज्ञात होगा कलाने चल ... कहाँ पर है। तो जीव और पुद्गल नाचे याने, कर्म उपाधि है। मैं इसमें कुछ सुधार करना चाहता हूँ। जीव ही नाचता है - कर्म नहीं नाचता। जैसे आप ऊंगलीयों से चुटकी बजाते हैं। भीतर से उर्जा तब चुटकी लेते रहते हैं, मुझे तभी चुटकी लेता है। आत्मा दिखती नहीं पर बाहर करामात देखने को मिलते रहते हैं। आप से यही कहना है।

बच्चों में भी ऐसे संस्कार डाले, जैसे आप यात्रा शुरु कर आये वैसे ही ये भी सत्कार्य पूर्वक आगे बढ़ते जायें। पंचम काल में भी जब साधु समागम मिलता रहता है तो बदलाव अवश्य आता है। अच्छी शैली लेकर आये हो। एक स्थान पर रहते हुये भी दौड़ धूप कर सकते हो। ये सब भूमिका का काम करते हैं। आगे भी जीवन के विकास के लिए अच्छे कार्य करने की भावना भाते रहें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

हायकू एक अर्थ तीन

"उन्हें न भूलो, जिनसे बचना है, वक्त वक्त पे"

आचार्य श्री ने अपने इस हायकू से संश्लेष द्वारा अर्थ निकाला जो बड़ा ही लाजवाब था। पहला अर्थ तो सामान्य से है, पाप से बचना है इसलिए उन्हें कभी भी मत भूलो। दूसरा अर्थ जिनसे हम बचे हैं/लाभ प्राप्त किये हैं/संसार से बचाया उनको कभी भी मत भूलो तथा तीसरा अर्थ है अध्यात्म-दृष्टि से - निश्चय नय की अपेक्षा सबको भूलना है मात्र आत्मा को नहीं भूलना है / वक्त-वक्त पे / ये तीन अर्थ ललितपुर में गुरुजी ने बताये।"

"सफल जीवन हेतु इन पांच को डालो Dustbin(कचरे) में"

1. लोग क्या कहेंगे?
2. मुझसे नहीं होगा।
3. मेरा मूड नहीं है।
4. मेरी किस्मत खराब है।
5. मेरे पास टाइम नहीं है।

कुछ हटकर -

- "लोग अच्छी बातें पैन ड्राइव में रखते हैं, और बुरी बातें दिल में।"
- यदि व्यक्ति ठान ले तो आसान होगा और मान ले तो उससे भी आसान।
- टाइम के पंच्युवल थे पन्नालाल जी- सुनते हैं- लोग उन्हे देखकर घड़ी मिलाते थे। [कटरा से मोराजी]

रविवार

9-12-18 "महेरी खाकर खीर की ड़कार कैसे?" प्रातः

यह तो समय ही बतायेगा कि ...जब बतायेगा उस समय बहुत प्रकार की जिज्ञासायें अथवा उदासतायें मन में उठेगी। ये ऐसा क्यों हो रहा है - ऐसा तो होना ही नहीं चाहिए आदि-आदि। दो मित्र आपस में मिले, वार्ता हुयी, पुछताछ हो गयी। एक-दुसरे के भाव सामने आये। उसी समय दोनों को एक साथ ड़कार आ गयी। एक मित्र ने दुसरे से पुछा क्यों ड़कार कैसी आयी? उसने कहा-तुम्हे भी तो आयी है। आप पहले बता दो! एक ने कहा - ऐसा लगता है - कैसा लगता है? ड़कार का स्वाद थोड़ा सा खट्य-खट्टा सा लगता है।

उन्होनें पुछा तुम्हारी कैसी आयी? बात ऐसी है...। यद्यपि दोनों का खाद्य एक भले ही हो जैसे गाय के दुध को जमाकर दही बनाकर। उस मठ्ठे से महेरी बनाकर खा लिया; दुसरा खीर बनाकर खाया। आप ही बताओ "महेरी खानेवाला खीर की ड़कार कैसे ले सकता है? नहीं आयेगी।" सुबह जो खाया शाम को ड़कार वैसी ही आती है। यह तो प्रतिपल की बात है। यदि खीर की ड़कार लेना चाहते हो तो महेरी तो नहीं चलेगी। उसी प्रकार अपनी गतिविधियों के बारे में सोचे तो ये भाव स्पष्ट हो जाता है।

"अतित का इतिहास वर्तमान बनकर आता है।"

हमारी अपनी ही करनी का फल मिलता है। जब फल मिलता है उस समय हमें ज्ञात नहीं होता अज्ञान रहते हैं। इसीलिए रोना-धोना चालु हो जाता है। सीधा-सीधा यही है, अपनी गतिविधियों में

भाव लाने का प्रयास हो।

पुराण ग्रन्थों अथवा संतो के उद्‌बोधन को भी मात्र पढ़कर या सुनकर हम ग्रहण नहीं कर सकते है, हमारी गतिविधियों में वह अंश आ जाये। जो जितना करेगा उतना ही पायेगा। भावों में कभी भी कमी न रखो। हम भावों की तरफ कम ध्यान बाकी सब गतिविधियों में विशेष रुचि लेते हैं। जैन धर्म भावप्रधान धर्म है। आप भी बाजार में देखते है कि नहीं - क्या भाव चल रहा है, तो कोई कहता है - किमत तो आसमान छु रही है।

भाव आसमान को छुने पर यदि माल कम भी हो तो मालामाल हो जाता है। यदि माल बहुत है पर बाजार में मंदी तो क्या होता है? मंदी तो सकरी गलीयो में भी घुस जाती है (व्यंग्य)। अतः भाव से ही मतलब है, माल से मतलब नहीं रहता है। भाव अच्छे रहे तो माल जहाँ भी जायेगा भाव देगा इसलिए मोह को त्याग करके उज्जवल भावों को बढ़ायें। "भावों के पवित्र होने पर नहीं चाहते हुये भी सारे समागम प्राप्त हो जाते हैं।" यद्यपि अभी साक्षात् प्रभु नहीं फिर भी हमें उनके बताये उपदेश/ग्रन्थ प्राप्त हो रहे है। (जैसे दादा जी नहीं है तो भी पिताजी द्वारा उन दादा जी के सूत्रों का ज्ञान होता रहता है) इसीलिए परम्परा का अवलोकन करना चाहिए। अतित में यदि मेहरी खाई तो स्वाद वही आयेगा। दूध से दही नहीं बना पा रहे कोई बात नहीं पर फट न जाये अन्यथा कोई खाना पसन्द नहीं करेगा। बल्कि जो खाया है उसे भी बिगाड़ देगा। मोह, मात्सर्य, मद, ईर्ष्या, अहंकार ये सब के सब भावों को फाड़ने में कारण होते हैं। भावों को संभाल लिजिये तभी महत्त्व बढ़ेगा, बढ़े इन्ही भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

10-12-18 "आपत्तिकाल [मीसा] हमेशा रहे" प्रात:

अभी कवि जी आये थे। उन्होंने कहा - हमारे लिए भी कुछ मिल जाये। हमने कहा हम प्रवचन पूर्ण करके निकल जायेंगे फिर आप ही आप है। मंगलाचरण हो चुका है, अब बैठ जाओ। वे काम नहीं कर पाये। हरेक व्यक्ति की अभिव्यक्ति भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न हुआ करती है। जब अभिव्यक्ति चाहते है तो द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव तो कभी भी कर सकते हैं। भावों में ऐसा उछाल आता है। कभी भी पेन्टर/वादक/गायक आदि कोई अनुबन्ध नहीं रखा करते।

आज के आधुनिक कवि ही इन सबसे सम्पर्क रखते हैं। बटन दबाते ही काम होता है। भले ही किसीका भी दब जाये ऐसा सिग्नल है। अब एक बात और कहना चाहता हूँ। लगभग 40-45 वर्ष पूर्व में (आपत्तिकाल) 1977 में। हम उसे दुषम काल कहते हैं। काल तीन होते है - वर्तमान, भूत, भविष्य। हम उसे चतुर्थ काल (आपत्ति) बोलते हैं। जैसे चतुर्थ काल में मन-वचन-का प्रवृत्तियाँ स्तब्ध रह जाती हैं। यह अनियतकाल तक लागु हो जाता है।

कब तक? जब तक अनुबन्ध नहीं होगा। इस काल में जिन के बारे में भी संदेह होता है, उससे कोई पुछताछ नहीं, सीधे जेल में बंद कर दिया जाता है। वहाँ भी कोई फोन नं० या मोबाइल नं० नहीं। आप किसी से मिल नहीं सकते, कोई News Paper (समाचार पत्र) भी नहीं। आप बोल भी नहीं सकते। समय पर थाली आयेगी। किसने रखी

यह भी पता नहीं, मात्र हाथ दिखते हैं।

इसे मौन बंधन बोलते हैं। ऐसे एकान्त के लिए तो हम तरसते हैं। हमारे यहाँ साधना होती है वह किसी पर आधारित नहीं होती। जैसे-जैसे एकान्त की मात्रा बढ़ती जाती है, साधना भी बढ़ती जाती है।" आपके यहाँ प्रकाश की कटौती होती है। अंधकार की कटौती कभी नहीं सुनी होगी। किन्तु सच है कि अंधकार में तो सब दिखता है, प्रकाश में दिखना ही बंद हो जाता है। भीतर की आँखें खुल जाती हैं।

आप कविता बोलना बंद कर दो; आपके पीछे-पीछे आयेगी। आपकी मौलिकता दिन-दुनी एवं रात चौगुनी बढ़ती जायेगी। आपके पास मौलिक पदार्थ है फिर क्यों नाराज करना। राजी होकर देखो। कविता का भी मान बढ़ जाता है। एक ही कविता ऐसी बोलो की सुनने वाला 10 बार भी सुन ले तो फिर से कहे Once more। एक ही व्यक्ति द्वारा भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति से भिन्न-भिन्न रस निकलने लगते हैं।

स्वयं ही निरस हो तो क्या रस आयेगा? हमसे पूछ रहे हैं (माइक के लिए) हमें ही मात्र 10 मिनिट मिलता है। ध्यान रखो उस कविता में इतना रस नहीं जितना रस मैं बोल रहा हूँ उसमें आ रहा है। पूछ कर देख लो। ये 17 महिने का मौन रहा। इसे कोई भी नहीं चाहता कि ये कब हटे - कब हटे। मुनि महाराज तो हमेशा-हमेशा मौन

में ही रहते हैं।

उनकी मनीषा में एकान्त - सन्नाटा ही सब कुछ है। और आप? रेडियो चलाओ। टेशन नहीं भी लग रही तो लगाओ। कुछ न कुछ तो सुनना चाहिये। कोई व्यक्ति मिले उससे बोलना चाहिये, प्रकाश चाहिए, समाचार पत्रिका चाहिये। यदि नहीं मिले तो जीवन कुछ ही नहीं। "इन आँखो से देखते रहोगे तब तक प्रभु के दर्शन नहीं होंगे, प्रभु को देखने के लिए बाहर की आँखे बंद कर दो।"

भीतर के प्रकाश को देखने हेतु बाहरी प्रकाश को सावधान करो। जैसे दूर का देखते हुये सबरी राम की प्रतिक्षा करती है। ऐसा चित्र कई स्थानों पर मिलता है देखने को। प्रकाश बाधक होता है ज्ञाता-दृष्टा बनने में। इसलिये हट जाओ। महाराज हमारी उपेक्षा क्यों कर रहे हो? अपेक्षा ही नहीं है। हमारी रील ऐसी नहीं है-जहाँ कहीं भी छाप दें। इसमें चित्र बहुत विचित्र है। इसका मूल्य बहुत है। ये तो बहुत दिन हो गया। बिल्कुल नया लगता है।

(आपकी कविता (चन्द्रसेन से) वो ही लाइन इधर-उधर करके सुना देते हो। तुकबंदी मिलाकर, हमने भी कई बार सोचा। ऐसी दिखती है जैसे - जैसे ताजी-ताजी, बाजार में भाजी बिकती है, हरा रंग चढ़ा दिया। हरा रंग मत चढ़ाओ अंतरंग से बोलो। हमें तो देखना नहीं आप ही देखो। मुनि महाराज दूसरो के मुख की प्रशंसा के आदि नहीं होते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

11-12-14 "परिग्रही के पीछे लगा, ग्रहों का भूत" प्रातः

एक व्यक्ति बार-बार पुरुषार्थ-प्रयास करता है, साहस करता है कि एक दिन महाराज से कुछ पूछ ले। क्या पूछेगा? अपनी-अपनी बातें ही पूछी जायेगी और क्या? एक दिन पूछ ही लिया, महाराज-बहुत संकट में हूँ। संकट में हो तो कोई बाधा नहीं। निकट में ही संकट का निवारण करने वाले भी हैं। उनके पास जाकर कहो। महाराज- वो बोलते नहीं हैं। सुनते हैं भगवान देर से सुनते है।

मतलब सुनते तो है। परीक्षा भी करते हैं। वे यही कहते है तुम तो पुरुषार्थ करते रहो सब ठीक हो जायेगा। हम आप सब से पूछना चाहते हैं- ये शनि देवता क्या होते है? महाराज बहुत परेशानी में है। तो ऐसा करो शनिवार के बाद कौनसा वार आता है रविवार। शनिवार से न ही उजाला मिलता है। यहाँ तो बहुत दिन से चल रहा है महाराज! कोई उपाय बताओ। देखो शनि का वार हनुमान जी का वार होता है लोकोक्ति के अनुसार। वे साहस के प्रतिक है।

डरने से शनि लग जाता है, इसलिए साहस बढ़ाओ। जो भाग्य में होना होगा वही होगा, ऐसा कहीं भी नहीं कहा शनि के भाग्य में जो होगा वही होगा। प्रायकर संसारी प्राणी थोड़ी सी प्रतिकूल परिस्थिति आने पर भी डर जाता है। डर के कारण असफलता ही हाथ लगती है। डरो नहीं - पुरुषार्थ करो। फिर उसने धीरे से- महाराज एक बात और पूछलें? आप लोगों को भी कभी शनि लगती है? अब

हम का बतायें ?

इतना अवश्य है गृहस्थों को भी सब लोगों को शनि नहीं लगती, कुछेक को ही शनि लगती है। आप लोगों को भी साढ़े साती वगैरह सताती है। हमने कहा जो व्यक्ति परिग्रह रखता है, परिग्रह के साथ जुड़ा हुआ रहता है, उसे ही ग्रहों का योग होता है। "यदि आप परिग्रह को सीमित कर देंगे तो शनि को शनि लग जायेगा। साढ़े साती तथा साढ़ेसाती जोड़ लो तो 15 होते हैं। हम तो यह लिखकर देने को तैयार है - "हमारे पास कभी भी शनि आ ही नहीं सकता है।"

देखो! बिजली भी घबराहट से डर गयी (लाइट जाने पर), वह सोची हमारी सब लोग पूजा/आराधना करते हैं, कहीं बाबा विघ्न डाल देंगे तो क्या होगा? बिल्कुल. हम यही कहते हैं - शनि भी एक ग्रह है जो परिग्रह वालों के ही आगे - पीछे लगा रहता है। हमारे पास क्या है। ये पीछी - कमण्डलु हैं जो भी चाहो तो लेलो। ये तो देने की ही चीज है। जो वीतराग प्रभु की आराधना करता है, परिग्रह तो उसके पास आना चाहता है, भागना नहीं चाहता।

सारे के सारे दल घबरा गये थे, जब सुप्रीम कोर्ट ने कहा था - आरक्षण के विषय में। सभी दलों ने कहा - इस विषय पर हम सब एक हैं। आज हरेक व्यक्ति वोट के लिये ही सब युद्ध कर रहा है। आपको कैसा लगता है, बताओ? एक चुनाव होता नहीं की दूसरे की तैयारी शुरु हो जाती है। पाँच साल तैयारी के

लिये ही होते हैं।

काम तो सब भगवान् के भरोसे वैसे ही हो जाते हैं। मालिक की मर्जी से होते हैं। पढ़े-लिखे होने के बाद भी भारत को सोचना चाहिये। पहले बुलाकर उसे चुना जाता था - बैठना नहीं चाहता था फिर भी अपने कर्त्तव्य को करता था। आज की दशा ऐसी हो रही है जैसे-नाई की दुकान पर जाकर बैठे- दाढ़ी बनायी। अब उठिये-उठिये। वह कहता है पाँच साल के बाद तो सबको उठना ही है। क्या गोंद/चुम्बक लगी है पता नहीं।

ये कुर्सी काम करने के लिये है, बैठने के लिये नहीं। इसके माध्यम से थोड़ा सा ऊपर उठ जाते है ताकि सब को देख सके। यदि आप खड़े हो जायेंगे तो पैरों में झुनझुनी, बैठ जाने पर भी पांवों में झुनझुनी आने लगती है, इधर-उधर काम करते रहोगे तो शारीरिक मजबूती आती है। यदि बात अच्छी लग रही है तो...।

यदि परिग्रह के पीछे भागोगे तो वह कभी भी हाथ नहीं आयेगा, दूर से दूर भागता ही जायेगा जैसे सूर्यनारायण की छाया - पकड़ नहीं सकते। हाँ! यदि परिग्रह को चाहते हैं तो उसके पीछे न चलो, विपरित चलना शुरु कर दो वह पीछे-पीछे आ जायेगा। गुरुजी कहते थे- धन तो हाथ का मैल है। किन्तु आज हाथ की मुट्ठी ही नहीं खुल रही। इसलिये "धनाढ्य नहीं बनो - धर्मार्थी बनो।" धर्म के पीछे ही

रहो - नेताओं के पीछे नहीं। ये सभी से कहना है।

आप नेता के पीछे नहीं, नेता को बनाने वाले है। ऐसे नेता को ही चुने जो पांच साल अच्छे से काम करें। सुनते है आज कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हैं। इसलिये सब एक ही, भगवान के मन्दिर में अगर मैं आ जाऊंगा, तो अगरबत्ती जलाऊँगा। ये भारत है। ये ही सबसे बड़ा भूत है। आप परिग्रह के पीछे पड़ोगे तो भूत जरूर आपके पीछे पड़ेगा।

निश्चिंत होकर काम करना है तो निःस्वार्थ होकर काम करते जाओ। जनता की सेवा करने से ही सबकुछ होने वाला है। उन्हें समझ में आ गया परिग्रह नहीं तो सादी सोती - वाती कुछ नहीं। आप भी चाहते हो कि नहीं। [हाँ] परिग्रह परिमाण व्रत बना लो। जैसे भोजन जितना खाना होता है उतना ही खाते हो, वैसे ही जो आपके काम नहीं आ रहा है, उसे दूसरे के लिये दे दो। परम्परा के अनुसार बोलीयाँ आदि में देते हो, कोई बाधा नहीं है, उसी निमित्त से निकालते जाओ।

श्रमण पूर्णतः निष्परिग्रही होते है। श्रावकों के लिये कहा जो अतिरिक्त है उसे दूसरों को भी देते रहो। भावना यही रखता है। दान के प्रति उसकी आस्था रहती है। इसी परम्परा को आगे भी निभाते जायें ताकि जनता की सेवा अच्छे ढंग से करते जायें। परोपकार को याद रखेंगे तो अच्छे से धर्म चलता जायेगा। लोभ करेंगे तो नहीं होगा - त्याग से ही आगे

बह सकते हैं।

जहाँ खर्च नहीं करना चाहिये, वहाँ यदि खर्च हो तो आप मोह की चपेट में हैं। आपको तो मोह-विजेता बनना है, चुनाव विजेता नहीं। प्रभु तो निर्मोही रहते हैं। ज्यादा कुछ नहीं भी छोड़ पा रहे है तो कोई बात नहीं - निर्मोही प्रभु भर को अपने पास रखो। इस प्रकार "कोई भी ग्रह जो परिग्रह नहीं रखते हैं, उनपर असर डालते ही नहीं।" महाराज आपने तो अच्छा बता दिया। हमें ज्यादा कुछ नहीं चाहिये। जो मुक्त होने की सोचता है उसी के जीवन की सार्थकता है।

बड़े-बड़े सेठ साहूकार हैं उनकी दशा भीतर से ठीक नहीं है। किसी से कहियो नहीं। मैं बड़ा हूँ, लेकिन पड़ा हूँ। कह भी नहीं सकते किन्तु चहरे से सब समझ में आ ही जाता है। क्यों दद्दा? (हओ) विशेष कुछ नहीं करना जितना कर सके उतना करते जाओ और आगे की भूमिका भी बनाते चले जाओ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

## "मैं कभी थकता नहीं"

"नये मुनिराजों की प्रतिक्रमण की कक्षा का प्रथम दिन था। आ.श्री ने लगभग 1½ घण्टे से अधिक class ली। हम लोगों ने कहा आज तो आप थक गये होंगे। गुरुजी ने कहा - मैं (तत्त्व) चर्चा में कभी भी थकता नहीं हूँ। एक ब्र. जी ने कहा - 1½ घण्टे हो गये। आ.श्री - 1½ घण्टे भोजन करने में थकते हो क्या? आ.श्री घण्टों तत्त्व चिंतन एवं चर्चा में निकाल देते हैं, फिर भी तरोताजा और महसूस करते हैं।"

१२-१२-१४ "गरीबों को नहीं - गरीबी को दूर करो" प्रातः

बैठना चाहते हो तो बैठ जाओ नहीं तो स्वर्ग में भी खड़ा होना पड़ेगा ही। सुनो! एक स्थान की बात मैं कर रहा हूँ। एक व्यक्ति गर्मी के दिनों में पानी की खोज जो भी मरुभूमी में करते हुये चला है। मरुदेवी नहीं मरुभूमी है। मरुभूमी मतलब रेत ही रेत, राजस्थान। अब उसे ऐसा लगने लगा मैं जो चाहता हूँ, मिलने की पूरी उम्मीद है। वहाँ जाते-जाते देखने पर ऐसा लगा, वाह क्या वैचित्र्य है।

पुराण ग्रन्थों में जैसा सुना-पढ़ा था वैसा ही यह कल्पवृक्ष-कामधेनु-चिंतामणी आदि जैसा है। कल्पवृक्ष जैसा बड़ा सा वृक्ष दिखा। वृक्ष मरुभूमि के बहुत बड़े हिस्से पर फैला हुआ है, विशाल है। नाम ही उसका बड़ (वटवृक्ष) है। जटायें लटकी हुयी है। वृक्ष अकेला ही नहीं है। सेकड़ों की संख्या में गाय-बैल-बछड़े तृप्त अवस्था में शान्ति के साथ बैठे हैं। वृक्ष को देखते ही सोचता है- किस महामना ने इसका रोपण किया है क्या सोचकर किया होगा।

इतना बड़ा वह वृक्ष यदि लू भी चले तो वृक्ष के परिसर में शीतलहर में परिवर्तित हो जाती है। सभी पशु-पक्षी बहुत ही शान्ति का अनुभव करते हैं। यही सब सोचकर उसने वृक्ष लगाया होगा। इतना बड़ा पेड़ है तो बीज भी इतना ही बड़ा होगा। बीच बड़ा होगा तभी तो पेड़ बड़ा प्राप्त होगा। यही विचार करता रहता है तभी उसे उस वृक्ष के नीचे एक व्यक्ति जो मालिक

अथवा सेवक हो, दिखा।

उससे पूछा ये कौनसा वृक्ष है- उसने कहा वृषभनाथ का चिन्ह यह वृक्ष ज्ञान अथवा वैराग्य के दिन संस्कार करते हैं इसके नीचे बैठकर, इसी को बड़ कहते हैं। यह इतना बड़ा कैसे हो गया, वृक्ष इतना बड़ा तो बीज कितना बड़ा होगा? तुम गलत सोच रहे हो। बीज के बड़े होने से मतलब नहीं, ये तो फल है। बीज-बीज के रूप में फल-फल के रूप में होता है।

इस बीज में इस प्रकार की क्षमता विद्यमान है, जो खसखस के दाने से भी छोटा होता है। एक ही पर्याप्त होता है। ऐसा नहीं 10-20 मिलकर के करें। गठबंधन वाली बात नहीं, कलम पद्धति भी नहीं। आज ये ही चल रहे हैं। चुनाव के बाद भी गठबंधन करते रहते हैं। उसे बीज दिखाया - अरे! यह तो इतना छोटा है कि दिख भी नहीं रहा है। जब फलता है तो हजारों के लिये शान्ति प्रदान कर देता है। आप लोग बोली लेते हैं- फलती है तो ऐसे ही फलती है।

चाहे छोटी हो या बड़ी बोली हो। कई लोगों के कुल ही वृक्ष की तरह बड़कुल होते हैं। नागपुर में भी प्रसिद्ध हैं न बड़कुल। दान के लिए छोटा-बड़ा आगे-पीछे कुछ नहीं। मन भर बड़ा होना चाहिये, बाकी सब तो अच्छा है। मन बड़ा कैसे? आप दे रहे हैं तो यह सोचें इससे औरों का भी भला हो जाये। बांटकर अहो भाग्य माने। अहो-अहो कह रहे हैं। अहो मतलब दिन। रात हो ही नहीं। धन्य घड़ी-

धन्य भाग है।

तो वह वृक्ष जो एकेन्द्रिय है छोय होता हुआ, संज्ञी पंचेन्द्रिय तक का उपकार करता है। घण्टों तक उसकी छाया में बैठकर शान्ति का अनुभव कर सकते हैं। उदारता के साथ वह वृक्ष देता ही रहता है, उस व्यक्ति ने सोचा ऐसा ही अवसर प्राप्त हो। ध्यान रखना- परिसर पर बीज का [illegible]र करता है, जहाँ कहीं भी डाल देंगे तो वह नहीं उगेगा। योग्य परिसर अथवा योग्य वातावरण मिलने पर ही वह बड़ा होगा।

इसीलिए वह मरुभूमि में भी कहाँ से आ गया? पता नहीं। आप लोग भी प्रभु से ऐसी ही प्रार्थना करो, मांगना न पड़े। एक बार बीज पड़ जाये तो युगों-युगों तक फलता ही रहता है। स्व-पर के कल्याण के लिये अब वह काम आता है। ऐसी भावना करने में क्या लगता है? इसमें गरीबी (दरिद्रता) मत रखो। ऐसे -ऐसे नाम भी हैं-गरीबदास। नाम है गरीब पर देवता भी उनसे पलते हैं इसलिये "गरीबों को नहीं गरीबी को दूर करो।" चुनावों में पांच साल में वह गरीबदास से अमीरदास बन जाता है।

रात दिन बस एक ही चिंतन। घोर आर्तध्यान है यह। आगे के लिये ऐसा ही चिन्तन करेंगे/परिश्रम करेंगे। जिसे आवश्यकता है उसे देकर के संतुष्ट होकर काम करेंगे। ऐसे महान् बनने के काम करो फिर मांगने की कोई भी आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

13-12-18 "शुद्ध लोकतंत्र है - निगोद" प्रातः

आप लोग कहाँ - कहाँ से आये, कौन - कौन सी गति से आये ये कोई पता नहीं हैं। कहाँ जाना है इसका भी पता नहीं हैं। फिर तो आप अपने स्वयं का ना पता लिख दो। लापता। क्या है ये। फिर भी आपाधापी चल रही है। दुसरी एक वह पर्याय जिसको निगोद बोलते हैं। अनंत है यह, बाकी सब सीमित है। इस पर्याय के बारे में जानना बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। एक जीव के भोजन करने पर अनंत का भोजन हो जाता है, एक के द्वारा श्वासोच्छ्वास, जनम, मरण से अनंत का हो जाता है। ऐसा क्यों होता है?

लो सुनो! आपको पसंद आये या न आये सुन तो लेना ही चाहिये। एक जीव के आश्रित अनंत जीव रहते हैं, वे साधारण जीव कहलाते हैं। आप सबके घर स्वतंत्र घर है। नहीं भी है तो किराया लेकर स्वतंत्र रहना पसन्द करते हो। Combined (संयुक्त) नहीं रहना चाहते। जब निगोद में चले जाओगे तो क्या दशा होगी, एक में ही सबको रहना पड़ेगा। बचना चाहो तो बच जाओ। इस एक में रहने के बाद भी सबको एक ही काम करना पड़े ऐसा नहीं है।

जनम - मरण - श्वासोच्छ्वास - भोजन एक साथ तो बंधन ही रहेगा ऐसा नहीं। आयु कर्म की विशेषता अपने परिणामों पर आधारित होती है। एक जीव पुनः वहीं जन्म ले लेता है पर दुसरा वहाँ से निकलकर मनुष्य भी हो सकता है। क्या हुआ? टिकिट बदल गया। यहाँ मनुष्य भी यदि ऐसा कोई काम करे तो

निगोद में चला जाता है।

हमसे आकर कहते हो टिकिट दे दो महाराज। हम अपने परिणामों को संभालें। परिणाम संभालोगे तो भविष्य संभल जायेगा। मनुष्य कब होता है? अल्प आरम्भ एवं अल्प परिग्रह के भाव से, बहुत आरम्भ एवं बहुत परिग्रह रखने वाला तो नरकायु का बंध करेगा। न नाम रहेगा - न धाम रहेगा, पक्का है। जो पक्का / नक्की है उसी की ओर अपनी दृष्टि रखो। हमने साथ कुछ नहीं ले जा सकते। इसीलिये परिग्रह का परिमाण कर लो।

सरकार ने भी कहा - जैनियों के यहाँ सभी नियम सोच समझकर बनाये हैं। परिग्रह परिमाण कर लोगे विदेश भेजने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। सुनते हैं - यहाँ से भागकर विदेश में रहने लगे (माल्या). भागने वालों को वे भी शरण नहीं दे सकते। भोगोपभोग की सामग्री एवं तत् संबंधी बंध को समझो। छोटा बच्चा है 1000 का नोट दे दिया, वह सब पैसों की चॉकलेट लेने चला गया। दुकानदार को सोचना चाहिए - यह इतना छोटा बच्चा, किसका है। आपको देखना चाहिए कौनसी दुकान से यह लाया है।

इसलिए अज्ञान में बंध अलग और जानबूझकर करने में अलग बंध होता है। यदि आप पुनः निगोद जाना चाहते हैं तो अलग बात है, परन्तु त्रस पर्याय को पाना बहुत ही दुर्लभ है। शुद्ध लोकतंत्र है - निगोद। सबकी एक सी आवासीय व्यवस्था है। कोई लड़ाई - झगड़ा नहीं - शुद्ध है। कोई अपना नाम नहीं लिख सकता,

क्या लिखे? सरकार।

भोपाल में 1100 क्वार्टर गये थे। वहाँ इसी तरह की आवासीय व्यवस्था है। अपना नहीं बना सकते। दशा बहुत खराब - न पानी, न बिजली, न ही दरवाजा। अपनी बिल्डिंग तो Tax दे दो खरीदो। इन सब बातों के बारे में। कर्म-सिद्धान्त के बारे में सोच नहीं रहे हो। "जब तक त्रस पर्याय है उन्नति कर सकते हो अन्यथा अवनति तो निश्चित है ही।" एक बार गेंद को दीवार पर फेकेंगे, उसी वेग से आपकी ओर अथवा जिस दिशा से फेंकी उस ओर आयेगी।

मोह को कम करें। "राजा आदि जबरदस्ती कर्म करवाते हैं, सिद्धान्त कभी जबरदस्ती नहीं करता।" सोचना आपको है। स्वतन्त्र आवासीय व्यवस्था में रहना चाहते हो, जो अविनश्वर भी है तो मार्ग बदल दो। रास्ता दुरूह सा लगता है, पर है नहीं। प्रत्येक व्यक्ति यही कहता है - सरकार ठीक नहीं है।[3] कभी यह भी पूछा कि - सरकार है कौन? हम ही - तुम ही नहीं हैं। Government को बनाने वाले ठीक नहीं तो गवर्नमेन्ट ठीक कहाँ से आयेगी?

बड़े-बड़े दार्शनिक - चिंतक - लेखक भी लिख रहे हैं। सभी कह रहे हैं - करेगा कौन? कठिन कार्य है तो सरल कब होगा? सरकार ठीक नहीं है - पहले दिमाग को ठीक कर लो। जैसे सबने ताली बजायी वैसे ही सबको यह बात कह दो। 70 साल में भी नहीं सीख पाये क्या रहे!

सीखा है - ताली बजाना।

आपकी इस ताली से हम खुश नहीं हैं। क्या आज तक एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं आया? लोकतंत्र में सरकार की वे नीतियाँ कहाँ चली गयी? भारतीय नीति तो यही है - ऐसा राजा चुना जाता था - राजा जितना चाहता, प्रजा 10 गुना देती थी। राजा कभी उसको छुता भी नहीं था। आज ऐसा कोई भी नहीं दिख रहा है। यहाँ का धन यहीं पर रहे। किन्तु बैंकिंग व्यवस्था सीखायी जा रही है। नेताओं द्वारा ही विद्यालय खोले जा रहे हैं। क्या हो रहा है?

जिस राष्ट्र में हो - उसी पर खर्च कीजिये। जो आपके घर के अड़ोस - पड़ोस में हैं वे भी आपके ही साथी हैं। यहाँ तो खुब बरसता था - क्या? सोना। आज आँखो से पानी बरसता है। वो दिन कहाँ गये। अब बोलते भले ही हैं - अच्छे दिन आने वाले हैं। मांगकर नहीं - पुरुषार्थ से कमाकर खाओ। भगवान से प्रार्थना करता हूँ इनकी बुद्धि ठीक हो जाये। ऐसी टेबलेट दे दो। भारत में गोली का महत्व है। इतना बड़ा लड्डू खाया था बस इतनी सी गोली खा लो सब ठीक ठाक हो जायेगा। कौन की है। मीठा खुब खा लिया अब तो कड़वी गोली ही मिलेगी। ऐसी गोली खाकर ही अच्छी सरकार बनायेंगे। अभी तो बस 2019 ही दिख रहा है। (व्यंग्य)

अहिंसा परमो धर्म की जय हो।

Notes -

- मोक्षमार्ग में आहार ही औषधी है।

15-12-18 "जबरदस्ती नहीं, कार्य करो जबरदस्त" प्रातः

विलम्ब तो नहीं हुआ? समय पर ही काम हुआ करते हैं। समय पर योजना बनती है, उस पर ऊहा-पोह तो होती ही है। सामाजिक कार्य होने के नाते सब को पूछकर ही काम आगे जाते हैं। आजकल तो वैसे ही जल्दी-जल्दी चुनाव होते हैं। कोई पार्टी योजना बनाती है, दूसरी पार्टी आते ही उसे निरस्त कर देती है। हमारे पास कागज आये थे, हमने 'ना' तो नहीं कहा था, 'हाँ' कहना हमारे लिए बहुत कठिन होता है।

उसी के अनुसार कल शाम को हमने आशीर्वाद दे दिया। ये ध्यान रखो - ये तो अभी प्रारम्भ है, अन्तिम मंजिल तक पहुँचना खेल नहीं होता। हाँ, खेल के लिए भी तो पहले योजना बनानी पड़ती है। इस कार्य के लिए हरेक व्यक्ति संकल्प लेकर करना है। स्वयं करता है - बहुत अच्छा, कराता है तो भी अच्छा, करता-कराता नहीं पर अनुमती देना भी कम नहीं है। बहुत बड़े वर्ग/समाज के द्वारा मन-वचन काय पूर्वक मानना भी महत्त्वपूर्ण है।

एक महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि हजारों व्यक्ति इस महान यज्ञ में आहुति देने को तैयार हो गये हैं। मंदिर तो कितने ही बनते हैं किन्तु यहाँ पहले से ही पूजा-अभिषेक, रख-रखाव हेतु तैयार हैं। ऐसे में उद्धार निश्चित है। आगे की पीढ़ी ने इसी प्रकार की नींव रखी। आप इनके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते, पर यह भी जबरदस्त बन सकती है। प्रभु से प्रार्थना/भावना भाता हूँ कि सबका यह कार्य जल्दी पूर्ण हो। अब शिकायत नहीं करना, महाराज हमारे इतै आये नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

15-12-18 "दीपक बुझने न पाए" प्रातः

पहले लाइट की व्यवस्था नहीं थी, उस समय दीपक से काम निकाला जाता था। आप जानते हैं दिपक कब जलता है? मुख्य रूप से दिपक तो जलता ही नहीं है। बाती भी नहीं जलती, जलता तो तेल है जो बाती को जलने नहीं देता। यदि बाती जलने लग जाये तो एक-एक दिन में दस-दस बाती लगानी पड़ेगी। बाती तेल का साथ देती है। जलता तेल है पर आरोप ये आता है दीपक जल रहा है।

मान लो यदि तुफान आ जाये तो क्या हो? तुरन्त युं हाथ करते हैं, क्यों कि हवा कभी ऊपर से नहीं आजु-बाजु से आती है। फिर भी वह इसे अपने हाथ से युं बचाकर ले आता है। आगे चलता है तो उसका मित्र मण्डल मिल गया। वे कहते हैं, वाह तुने तो कमाल कर दिया, तुफां में भी दीपक को जलाकर ले आये। इतना कहा ही था कि दिपक उसी समय बुझ गया। सावधानी नहीं रखी। तुफां से ही दीपक बुझता है, ऐसा नहीं है। यहाँ (दोनों नासिका) से भी दिपक बुझता है, Pipe line है।

दीपक अपने श्वांसो से भी बुझता है, इसलिये आप कभी भी अति विश्वास में न आइयो। हमारा काम हो ही जायेगा, भावना रखना बुरा नहीं है। भगवान साथ रहे यह आवश्यक नहीं, हमें क्या-क्या आवश्यक है, कब-कब आवश्यक है, उसे ध्यान में रखकर काम करना चाहिए। हमारा कहना है- सारे के सारे दानदाता आपके पास आ रहे हैं, आप उनके पास नहीं जा रहे हैं।

घर-घर जाकर लेना पड़ता है।

ऐसा नहीं है कि अब तो हम कर ही लेंगे। दद्दा। दद्दा कहकर काम निकालना पड़ता है। ये 108 नहीं 1008 गुना है। इसके लिए जैसा कर संकेत किया था शांतिनाथ विधान मण्डल का दो साल के लिए तो तैयार हो गये, एक साल और हो जाये तो अच्छा होगा 1008 विधान तो हो ही जायेंगे। इसमें मंगलाचरण भी बहुत अच्छा हुआ है, अपने परिवार की ओर से [5। दिन] 5-5 दिन कर लो पूरी संख्या हो जायेगी।

परिवार का नहीं आप सबको भी शामिल होना है। फोकट में लाभ मिल रहा है। कमाने वाला चाहिये, करते जाओ। एक-दिन कार्य करते जाओ। मुख्य रूप से कार्यकर्ताओं से कहना है- ये अध्यक्ष है, ये मंत्री है, ये कुछ नहीं, हम तो चन्द्रप्रभु भगवान के सेवक है, नियुक्ति हो गयी। सौधर्म इन्द्र भी तरसता है, आपके लिए तो ऊपर से बरस रहा है। इतना दिया - इतना दिया, ये नहीं बोलो। दिया अच्छी रखो। सब होता जायेगा। समय पर और तेल भी आता जायेगा इसलिए दिया भर अच्छी बनाये रखो।

दिया भी है, तेल भी है, बाती भी है, विशेष रूप से ये सब सेवकों (कार्यकर्ताओं) पर आधारित है। बाती पुरानी हो जाती है। तेल - दिया की ओर तो ध्यान है। बाती प्रतिदिन नहीं डलती, तेल के साथ वह काम करती रहती है। ये ध्यान रखना सेवकों द्वारा भी कभी-कभी

गड़बड़ी होती रहती है।

बीच-बीच मे उनके ऊपर भी एक्सन होता रहेगा। समझ रहे हो ना? कालीकिट्टिमा जो अभी है बाद में तो चमकने लग जाता है। इसलिये प्रमाद न करें। समाज वालो से मंगाते रहे। समाज वाले भी और क्या चाहिये - और क्या चाहिये पूछते रहें। पंगत में बैठाने पर दायित्व बढ़ जाता है। कुलत्वा के बाद चलुत्वा भी चाहिये।

इस प्रकार से कम समय में भी आप अच्छे से कर सकते हैं। प्रभु से प्रार्थना करता हूँ आप सभी समय पर इस कार्य को कर सके। जल्दी न करियो। समय पर ही होगा। समय एवं धन का पूर्ण सदुपयोग हो।

रात्रि = कंजिया)

अहिंसा परमो धर्म की जय हो।

"नेत्र रोग विशेषज्ञ भी नतमस्तक हो गये"

"आचार्य श्री खुरई में थे। सर्दी तेज पड़ रही थी। आँखो की पुतलियों पर सूजन आ गयी थी। डा॰ अशोक सिंघई सागर से जो आँखो के स्पेशलिस्ट है वे आ॰ श्री को देखने आये। उन्होंने सब जाँच कर ली सभी Normal थी। आ॰ श्री को देखने में कोई दिक्कत नहीं थी बस आँख सूजी हुयी दिखती थी। आ॰ श्री ने डा॰ साहब से कहा आप लोग तो आज के ३०-४० वर्ष पूर्व ही चश्मा के लिए बार-बार जोर दे रहे थे। डा॰ साहब ने कहा - आ॰ श्री आपका आत्म विश्वास इतना तेज है कि अब मैं दावे से कह सकता हूँ आपको आयु पर्यन्त कभी भी चश्मा नहीं लगेगा।"

बिलधव (त.- बीना)

16-8-18 बादल कहाँ बरसते हैं? प्रातः

जैसे बादलों की घटायें उठती हैं आसमान में, बरसने का इरादा भी है लेकिन बरसे तो कहाँ बरसे! फिर ये भी ख्याल रखना पड़ता है ज्यादा बरस गये बाढ़ आ जावे तो क्या होगा। स्थिति ऐसी ही है पानी रुकने को ही नहीं मानता। खुब पानी हो गया है-सोचो। एक तरफ नहीं बहेगी या चारों तरफ नदी बहेगी। [सब अपने-अपने स्थान हेतु निवेदन]। हाँ-हाँ सब ठीक है।

पहले से ही सबको देखा हुआ है। फिर भी प्यास तो प्यास होती है। यदि प्यास नहीं है तो उसका प्रबन्धन तो होना ही चाहिये। प्यास बुझने की उम्मीद रखी जाती है। तभी काम होगा। चुंकि बादलों का बरसना सीमित होता है। कहाँ जाये? कभी-कभी तुफान सा आ जाता है। तुफान का रुख जिधर का होता है उधर ही बादल चले जाते हैं। पर कभी-कभी चारों तरफ से तुफान होता है तो घटायें वहीं रुक जाती हैं।

आज ऐसा ही करो तो बतायें...। हमें नाम भी याद है-स्थान भी सब याद है, जनता को भी देखा है। कई बार आना-जाना हुआ। लेकिन जहाँ पर कभी भी वर्षा नहीं हुई है मुंगावली जहाँ अभी तक जा नहीं पाये उसको थोड़ा सा सांत्वना दे दिया। इन सब बातों को देखने-सुनने से लगता है, यह चीज ऐसी ही है, क्यों कि यह दुर्लभ

की कोटी में आता है।

इसकी कीमत नहीं। मांग बहुत है, पर माल है ही नहीं। भावना रखो। जैसे आप अभी आये हो, वैसे बीच में तो... आते ही हो। नयी दुकान नहीं है। दो तरह की दुकान होती है- एक स्थिर दुसरी चलती- फिरती भी होती है। आजकल इसी का जमाना है। ठेले लेकर जो लगाता है, सबसे ज्यादा कमाते है। ठेले के जमाने को भूलो नहीं। दुकान चालु रखो। दुकान आपके यहाँ ही आ गयी- तलाशने की भी जरुरत नहीं है।

भगवान ने कहा- इतना समय किसी भी प्रकार से गुजार लो, व्यवस्थित मिल जायेगा। उतने काल तक आस्था बनाये रखना है, पुरुषार्थ भी करना है। अपरिग्रह के सिद्धान्त को भी बनाये रखना है। इतना ही कहना है- मूल सिद्धान्त को विस्मरण करेंगे तो संगति नहीं मिल पायेगी। संगति तभी मिलती है जब आदर्श सिद्धान्त होते है। तभी हमारा एवं जनता का कार्य चलता है। आपको भी तृप्ति होती है।

ये कौनसा गांव है- "बिल्धव"। हाँ-हाँ। यहाँ चारों तरफ से रास्ता है। नये सिरे से बन भी रहे है। (Four-Lane)। हमारे लिए तो सभी रास्ते है। आपको रास्ता ढूंढना पड़ता है। इसमें परेशानी भी होती है, लेकिन क्या करें। हमारी गाड़ी तो दौड़ रही है, आपकी आप जाने।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

रात्रि विश्राम - भानगढ़ (बीना)

भानगढ़ (त. बीना)

17-2-18 "भान भी नहीं होने देते भानगढ़ वाले" प्रातः

प्रायःकरके सब लोग अपने-अपने प्रदेश का परिचय दे देते हैं फिर संभाग का परिचय देते हैं, फिर जिला, फिर शहर की बात करते हैं, फिर बाजार जहाँ हाट लगती है उसका नाम लेते हैं। उसी में ही इस भानगढ़ का नाम आता है। बीना के पास का यह ग्राम है। प्रायःकर मुनिमहाराज आते हैं और मुकाम करके चले जाते हैं, ऐसा हमारा भी होना था। कल तो हम लोगों का आहार पिछले ग्राम (बिल्धव) में हुआ।

इस गाँव का नाम भानगढ़ मतलब किसी को बताते नहीं और काम कर लेते हैं। अब देखो- रात में ही सब चर्चा कर ली। तभी तो काम हो गया। पाँच शिखर तो दूर एक शिखर भी कठिन होता है। पूर्वजों ने यह प्रबन्ध कर रखा है। कुछ तो यहीं हैं, कुछ यहाँ से जाकर फैल गये हैं। सबने दिगम्बर ईमानदारी की बात है, कम खर्च पर काम कर रहे हो।

ध्यान रखना - इसी में बाहर वाले भी कूद रहे थे, अभी चुनाव दूर है। सभी को जोड़ लिया गया है। अब मुनिमहाराज भी आ जाये तो लगना चाहिये न ये भानगढ़ है। अल्प समय में इतना करना ये आप लोगों के भीतरी भावों एवं उत्साह का परिणाम है। यहाँ कल मुकाम भी हो गया - चर्या भी हो जायेगी, शिलान्यास भी हो गया। बाहर वाले भी जुड़ गये, भले ही मना कर दिया हो। बड़े-बड़े शहर वाले ध्यान रखें - गाँव

वाले भी खबर रखते हैं। इनके पवित्र भावों के कारण ऐसा होता है। बच्चों के संस्कार हेतु शुद्ध धर्म ध्यान है। आगे भी ऐसा करते रहें, इन्हीं भावों के साथ।

रात्रि - निवारी — अहिंसा परमो धर्म की जय।

खिमलासा "लालसा कम हो खिमलासा की" प्रातः

18-12-18 खिमलासा तो एक तरह से चारों ओर से जंक्शन जैसे है। एक बार खुरई वाचना के बाद, एक बार गंजबासौदा पंचकल्याणक के उपरान्त, एक बार मालथौन से आये हैं। आप लोग याद ही नहीं रखते हो। इस बार जो आये हैं वह मुंगावली होकर आये हैं। क्या करें। लालसा तो छूटती नहीं, खिमलासा में आकर क्या होगा? सांसारिक विषयों से लालसा छूट जाये तो प्रभु की लालसा लग जायेगी। अभी आते समय त्रिमूर्ति मन्दिर के दर्शन किये - अब सजायेंगे। जल्दी नहीं करियो।

वेदी आदि बनना अभी शेष है। उस समय ब्रह्मचारी जी को बुला कर करा दिया था। इस प्रकार अब काफी परिवर्तन भी हो गये हैं। [इतने वर्ष बाद] वर्ष तो हम नहीं गिनते। हाँ! आने एवं जाने के दिनों को तो गिन लेते हैं। घर भी काफी बढ़ गये हैं, भक्ति भी बढ़े।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

गुरुवाणी "दूसरों को देखने पर विकल्प उठे बिना रह नहीं सकते, अपने को देखेंगे तो कमियाँ जरूर दूर होगी। आ. श्री जान-बूझकर पर से दृष्टि हटाकर ही रखते हैं ताकि संकल्प-विकल्प होंगे ही नहीं। शिष्यों को भी ज्यादा टोकाटोकी करना ही नहीं।"

19-12-18 "तीन तरह के आम" प्रातः

देखो! आप लोग आम के वृक्ष के नीचे बैठे हैं। ऐसा समझ लो। अभी ताली मत बजाओ - बहुत ऊपर आम लगे हैं। उसी बीच में एक व्यक्ति आया, वह भी उसी समूह में शामिल हो गया। वह सोचता है - ये लोग तो बैठे-बैठे यूं ही समय गुजार रहे हैं। उसने एक पत्थर निकाला। निशाना साधकर लगाई, वह निशाना बिल्कुल ठीक लगी, पर पड़ोसी के ऊपर लग गयी है।

वह हिलडोल रहा है, पर गिरा नहीं। उसने दूसरा Attempt लिया, अबकी बार उस पड़ोस में लग गयी। उसने सोचा एक-आध बार अभ्यास करना करके देखो। इस बार डंठल पर लग गया। डंठल पर पका आम था वह स्वतः ही गिर गया। वह सोचता है मेरा प्रयास तो विफल था, फिर भी पका होने से गिर गया। शेष आजु-बाजु के दोनों मजबूत थे। उनका छिलका तो उतर गया पर गिरे नहीं।

उसको पत्थर भी नहीं मारा फिर भी गिर गया। वह पीला और पका हुआ था। ये उदाहरण हमने इसलिये दिया कि समय बहुत कम बचा है, हमारे पास तो और कम है। हम कम समय में काम शुरू कर जाते हैं। ज्यादः हम घोषणा नहीं करते। इन तीनों में से आप कौनसे वाले हैं, जरा देख लेना।

विश्राम - तेवरा अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

खुरई

20-12-18 "आओ जाने वीतरागता के गुणों को" प्रातः

कोई भी ग्रन्थ हो जो ये बता दे कितनी बार खुरई आये। पक्का। [तीसरी बार आये] ध्यान में हैं। ये विषय आपका है। बीच में दो बार ज्यादा भी आये हो तो... । यहाँ पर एक प्रसंग वह भी था - वाचना का। प्रातःकाल भी और मध्याह्न खूब चलता था। वेतन भी उच्च क्वालिटी का होता था। रविवार का प्रवचन अलग से सार्वजनिक स्थान पर होता था। शेष श्री पार्श्वनाथ के प्रांगण में सारे के सारे लोग श्रवण करके सुख का अनुभव करते थे।

एक प्रसंग उसी समय का है - महावीर जयन्ती के बाद हनुमान जयन्ती का। प्रायकर जैनेतर लोगों की धारणा है कि जैन लोग महावीर भगवान को ही मानते हैं, हनुमान के बारे में कुछ नहीं है। हमारे पास सेठ जी उस समय वे थे निवेदन करने आये, जैनेतर लोगों का भी निवेदन आया। हमने भी सोचा जाना तो होगा। समोशरण में सब जीव आते हैं, चतुर्मुखी जिनबिम्ब - वह प्रसंग भी याद होगा। तो जैन-जैनेतर सबको ज्ञात हो गया। हनुमान का जो स्वरूप है वह आस्था का विषय है।

पद्म पुराण है जिस पर कई शोध-प्रबंध भी हुये हैं। रामायण के कई उल्लेख मिलते हैं। हनुमान जयन्ती का वातावरण बहुत अच्छा बना था। लोगों को चाहिये चाहे महावीर हो या हनुमान हो। सब परम्पराओं के आधार पर ही हुआ करते हैं। फूल में खुशबु है तो वह।

आदर योग्य है।

गुणों का श्रेय तो प्रभु को ही जाता है। वीतरागता के गुणों में सबको बनाने की योग्यता रहती है। उनको श्रेय जाता है, गणमान्य (प्रतिष्ठित व्यक्ति थे) आज हैं या नहीं? पता नहीं। उस समय अलग रूप से हमने उपनिषद् ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। उनमें काफी मटेरियल मिला। उससे भी अधिक कहा तो लगा कि हनुमान भी किसी न किसी के शिष्य होंगे।

रविवार है हनुमान जयन्ती के पहले महावीर जयन्ती आती है। चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को महावीर जयन्ती एवं पूर्णिमा को हनुमान जयन्ती आती है। ज्यादा तो नहीं कहना है। सभी इस आँगन से परिचित हैं। वहाँ (गुरुकुल) भी पार्श्वनाथ हैं - यहाँ भी पार्श्वनाथ हैं। ज्यादा मत सोचो। पुरानी चीजें अच्छी मानी जाती हैं, वर्तमान पर जल्दी विश्वास बैठता नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"एकाग्रता"

"म० प्र०, राजस्थान, छ. ग. के चुनावों का परिणाम आना था। प्रातः काल से ही मोबाइल पर सब अपनी नजरें लगाये हुये थे। ब्रह्मचारी जी आ० श्री को भी ताजा जानकारी बता रहे थे। उसमें एक-दूसरे पार्टी वाले प्रवक्ता तेज-तेज जवाब-सवाल कर रहे थे। आ० श्री ने उसमें भी अध्यात्म निकाल लिया - इतनी एकाग्रता यदि अध्यात्म के क्षेत्र में लगाते तो केवलज्ञान हो जाये।"

21-12-18 "भावों का कमाल" प्रात:

संक्षेप क्यों कि समय बहुत कम है, और थोड़े से समय में भी बहुत कुछ पाठ ले सकते हैं। पाठ का मतलब ये है जो भी संकेत दिये है वो शब्द हो सकते हैं, जिस ओर को ध्यान में रखकर संकेत दिये हैं वह महत्वपूर्ण है। जैसे आपके कान तक मेरे शब्द पहुँच रहे है पर आपका ध्यान उस ओर चले जाये बहुत कठिन है। हम पकड़ के तो नहीं डाल सकते, ये तो आपका काम है। हम कोशिश ही कर सकते हैं।

उठ जाओ। पाठ चालु करो। एक महाराज के शरीर में बहुत दिनों से व्याधि थी। उस व्याधि का किसी को मालुम नहीं चल पा रहा था। सभी तरह के उपचार करके देख लिये थे। ध्यान रखें - औषधि के साथ बाहरी पुट का होना भी आवश्यक है। एक दिन की बात है - महाराज आहारचर्या हेतु निकले। एक बुढ़िया अपने द्वार पर खड़ी थी। उसने उनको स्वीकार कर लिया। मतलब प्रदक्षिणा लगाकर विधिवत् आंगन में ले गयी। सभी भक्तियाँ पूर्ण की।

गंधोधक आदि लेना, पूजा करना, आहार-जल शुद्ध होना कहा। वे श्रमण जो दस भक्तियों को करते हैं उनको नवधा भक्ति वाली बुढ़िया ने आहार कराया। श्रावक भी भक्ति करता है - श्रमण भी भक्ति करता है। आप भी भाव करते हैं - हम भी भाव करते हैं। आहार निर्विघ्न (निरन्तराय) पूर्ण हो गया। बुढ़िया ही समझती है कि आज तो

मेरे घर में ---(बोली) भगवान आये हैं।

अभी भगवान बने कहाँ है, होनहार है। हाँ इसमें आप लोगों की भावना / शान्ति की एक धारा अपेक्षित है। ऐसी धारा एक ही ग्रास में रत्नों की वर्षा हो गयी। अड़ोस-पड़ोस में नहीं - उसी के यहाँ हुयी। अभी गा रहे थे न - झिलमिला उठा चमन --- हम तो आपके भजनों की पंक्तियों को लेकर ही बोलते हैं। अब रत्नों की वर्षा होने लगी - अन्य होते तो बटोरने में लग जाते पर उस बुढ़िया की भावना। उन मुनिराज के पेट की व्याधि एक मिनिट भी नहीं हुआ दूर हो गयी।

वैद्य जी भी नहीं कर पा रहे थे वह काम उस बुढ़िया ने कर दिया। एक ने पूछा - आपने महाराज को क्या दिया। कुछ भी तो नहीं दिया था। घर में मात्र सरसों के दाने थे - वे ही आहार में दे दिये। सरसों जानते हो? खाने-पीने की बातों के बारे में ज्यादा बताने की आपको जरूरत नहीं है। दो तरह के सरसों होते हैं। एक तो पीले जो गजरथ आदि में स्वास्तिक पाठ में पढ़कर क्षेपित किये जाते हैं। दूसरे काले रंग के सरसों के दाने होते हैं।

वह बुढ़िया कितनी खुश होगी? भावों के माध्यम से उसने दिये थे। भावों से देने पर विष भी अमृत तुल्य हो जाता है। इन भावों के माध्यम से ही अनन्तकाल का जो मोह है, उसे भी क्षण में दूर कर सकते हैं। दूर

किया है।

महराज जी का कष्ट दूर होना अलग बात एवं मोहनीय कर्म का दूर हो जाना श्रावकों का अलग वस्तु है। कुछ भी दे दें ऐसा भी नहीं है। पूर्ण भावभक्ति से जब नवधा भक्ति करते हो तब आकर देश भक्ति करने वाले को स्वीकार करते है। ऐसे ही नहीं कर सकते। सबका अपना-अपना पुण्य है। देने वाले के साथ लेने वाले का भी कर्म योग होता है। इसलिए जिनवाणी पर विश्वास होना चाहिये।

निमित्त-नैमित्तिक संबंध है। बंधुओ! "हम सब कुछ संयोजित कर सकते हैं- भावों की संयोजन बहुत महत्त्वपूर्ण है।" अनेक भव इन उपास्य देवता के पास रहते हुये हो गये। इनकी उपासना से हमें भी अपने जीवन में उस शान्त स्वरूप को प्राप्त करना है। उपासना का उद्देश्य भी यही होता है। जल्दी-जल्दी सभी के लिए वह घटित हो इन्हीं भावों के साथ...। उस

उस पड़ौसी को भी ज्ञात हो गया कि चाहने से नहीं मिलता। चाह तो हो ही पर भीतरी विशाक्तता भी दूर होनी चाहिये। ज्ञान के साथ करेंगे तभी आपकी भावना प्रभावना में बदल पायेगी। इसी से आगे तक धर्म की प्रभावना कर पायेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

स्थान-
[जैन युवा संघ JYS द्वारा संचालित अस्पताल का निर्माण]

२२-१२-१४ "पोषण हो - कुपोषण नहीं" प्रातः

रोग होता बाद में पहले स्वास्थ्य का अनुभव करता है, उसमें कारण एक प्रकार से रहन-सहन, खान-पान आदि की कमीयों के कारण है। कुपोषण होता है। आप तो समझते है - "बच्चों का पोषण तभी होता है, जब कुपोषण से उन्हें बचाये।" कुपोषण का अर्थ यह है - क्षेत्र की अपेक्षा से एवं काल की अपेक्षा से भी। एक भोजन करने वाला है, एक कराने वाला।

करने वाला क्षुधा निवारण के साथ-साथ स्वाद भी लेता है परन्तु परोसने वाला स्वाद को नहीं लेकर यह ध्यान रखता है कि जो परोसा जा रहा है, कहाँ तक लाभप्रद है। समय के अनुसार भी ध्यान रखना होता है। अविवेक/अज्ञान के कारण ही रोग फैलते है। इसलिये जो भी रोग कुपोषण के कारण हो रहे हैं, इसकी जानकारी परम आवश्यक है। भाग्योदय आपके सामने खड़ा है।

जैन समाज का ध्यान थोड़ा कम है फिर भी बहुत व्यवस्थित हो गया। आपके ही जिले में आता है - भाग्योदय। उसका अनुकरण करते हुये कदम से कदम रखते हुये चलेंगे। (जनता तैयार है) जनता बहुत होशियार है। मतदान देती है, सहयोग भी देती है - नहीं तो हओ कहकर टाल देती है। यहाँ तो पहले से ही तैयार है। हम आये तो एक बहुत

बड़ा कलश लेकर खड़े थे।

[भाग्योदय का ही छोटा रूप है] छोटा काम नहीं बड़ा काम करना है। आपको देखना भी है, सुनना भी है, करना भी है, अनुभव भी लेना है। फिर देखो ऽ मांगोगे - ऽ० मिलेगी। लेने वाला चाहिये। उत्साहवर्धन होना चाहिए। समूह में हतोत्साहित काम न करें। युवा वर्ग से काम होता है। बूढ़े-बाढ़ों को टीम में लगाओगे तो काम नहीं होगा।

कर्मठता चाहिये। संख्या ज्यादा बढ़ाइये नहीं। गति तो आये पर वह प्रगति की ओर ले जाने वाली हो अन्यथा गति तो होगी प्रगति से दूर होगी। इस जवान उम्र में आप धीरे-धीरे चल रहे हो। संख्या भी 72 अच्छी है। नौ का अखण्ड अंक के साथ सेवा करते रहो।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो।

मन्दिर जी
22-12-18 "भावाभिव्यक्ति हो तात्कालिक एवं तलस्पर्शी" प्रातः

जब आपको पूछा जाता है, उस समय आप बोल नहीं सकते। तो जो पूछा गया उसका कैसे उत्तर देंगे? आपको महसूस हो गया कि मैं गलत कर रहा हूं, बोलता हूं तो और गलत हो जायेगा। ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए-क्या नहीं? ये पढ़े-लिखों का काम नहीं है कि प्रश्न आया और उत्तर दे दें। "तात्कालिक एवं तलस्पर्शी भावाभिव्यक्ति होनी चाहिए।"

आपको बोलना नहीं है, मैं बोल रहा हूं। आप बोलने लगेंगे तो न ही मैं आप तक तथा आप भी

मेरे तक नहीं पहुंच पायेंगे।

पंगत बैठी है, मिष्ठान्न परोसा गया है। रसोईया अथवा पंगत बुलाने वाला पूछता है- आप हाँ या ना में मुझे उत्तर दे दें। जिससे संतुष्ट हो सकूं अथवा आगे के लिए सुधार कर सकें। क्यों / कैसा लग रहा है? इसके दो अर्थ निकलते हैं- एक तो वह पकवान देखने में कैसा लग रहा है दूसरा बोल नहीं सकते पर उत्तर भी देना है। कैसा लग रहा है? क्रांति आयी है- मालिक का भी एक ही काम। आप उत्तर भी नहीं दे पा रहे हो।

दूसरा व्यक्ति आँखे बंद करता है, उत्तर की जरूरत ही नहीं, नू-नच करने की आवश्यकता नहीं। वह उसका आनंद ले रहा है चहरे से ही पता लग रहा है। एक तीसरा व्यक्ति और है। वह सुनता नहीं- बोलता तो है ही नहीं किन्तु उसका उत्तर बोलने वाले के समान समझ में आ रहा है। अनुभव के क्षेत्र में असमानता नहीं है। पूरा का पूरा युग आज बैठा हुआ है- उस बैठे की क्या तो ऊँचाई नापे और क्या गहराई।

पढ़ने-लिखने के साथ युग की उन बातो को भी (इतिहास को) याद रखो नहीं तो हाथ कुछ भी लगने वाला नहीं। उतने ही ले आये- उतने ही रह जाना है; तथा उतने ही पुन: चले जाना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

गुरुवाणी- कर्म का उदय है-कर्म का उदय है ऐसा दिन भर कहता है, ये क्यों नहीं सोचता की कर्म की उदीरणा के निमित्त से पहले बचूं।"

धन्य भाग है।

तो वह वृक्ष जो एकेन्द्रिय है छोय होता हुआ, संज्ञी पंचेन्द्रिय तक का उपकार करता है। घण्टों तक उसकी छाया में बैठकर शान्ति का अनुभव कर सकते हैं। उदारता के साथ वह वृक्ष देता ही रहता है। उस व्यक्ति ने सोचा ऐसा ही अवसर प्राप्त हो। ध्यान रखना- परिसर पर बीज का [illegible]र करता है, जहाँ कहीं भी डाल देंगे तो वह नहीं उगेगा। योग्य परिसर अथवा योग्य वातावरण मिलने पर ही वह बड़ा होगा।

इसीलिए वह मरुभूमि में भी कहाँ से आ गया? पता नहीं। आप लोग भी प्रभु से ऐसी ही प्रार्थना करो, मांगना न पड़े। एक बार बीज पड़ जाये तो युगों-युगों तक फलता ही रहता है। स्व-पर के कल्याण के लिये अब वह काम आता रहै। ऐसी भावना करने में क्या लगता है? इसमें गरीबी (दरिद्रता) मत रखो। ऐसे ऐसे नाम भी हैं- गरीबदास। नाम है गरीब पर देवता भी इनसे पलते हैं इसीलिये "गरीबों को नहीं गरीबी को दूर करो।" चुनावों में पांच साल में वह गरीबदास से अमीरदास बन जाता है।

रात दिन बस एक ही चिंतन। धीर आर्तध्यान है यह। आगे के लिये ऐसा ही चिन्तन करेंगे/परिश्रम करेंगे। जिसे आवश्यकता है उसे देकर के संतुष्ट होकर कामकरेंगे। ऐसे महान् बनने के काम करो फिर मांगने की कोई भी आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

रविवार
23-12-18 "विकृति से बचाता पिन" प्रातः

इस प्रकृति का आत्मा के साथ बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसमें कारण यह है कि शरीर और प्रकृति दोनों का विज्ञान एक जैसा है। आज का विज्ञान इस रहस्य से अनभिज्ञ है। इसलिए "हमें सदैव प्रकृति में रहकर के विकृति से बचकर संस्कृति में जीना चाहिए।" यहाँ पर ये जितनी भी आकृति बनी है उनका सम्बन्ध इस प्रकृति से है।

हम जल्दी में अथवा भाववेश में अथवा ऐसा ही अभ्यास हो जाने से भूल जाते हैं। इसलिए शरीर के साथ प्रकृति के इस सिद्धान्त को अच्छे से समझना है। हमारा प्रत्येक दृष्टिकोण प्रकृति के साथ लगाकर हो किन्तु भीतरी कर्म सिद्धान्त के साथ भी लगाकर चलना है। इसी प्रकार आज जो विज्ञान का अंधाधुंध प्रयोग हो रहा है उस पर Control किया जा सकता है। नहीं तो इस हाथी को वश में नहीं किया जा सकता।

अन्य बातों को गौण करें इसे मुख्य मानकर पालें अन्यथा समय तो है ही नहीं, वैसे भी आज रविवार है - मध्याह्न में रखा है। सर्वप्रथम वर्षा ऋतु से प्रारम्भ करते हैं। चार महिने वर्षाकाल में शीतांश नहीं पर आर्द्रता होती है, इसके शरीर के साथ कैसा संबंध होता है? पैर एवं हाथ की अंगुलियों से

आत्मा शोषित हो जाती है।

ऐसे में शरीर की रक्षा हेतु, पोषित करने में माँ की भांति हमारा पालन करने वाला पित्त पांवों में आ जाता है। इसे विज्ञान नहीं मानता क्यों कि "विज्ञान के पास संस्कृति की आँखे नहीं है।" आप अब उसे आँखे दे दो। संस्कृति का दिल ही परोपकार की बात कर सकता है। प्रकृति कहती है जब भी चलना-फिरना होता है वह पित्त पैरों में आ जाता है।

वात-पित्त-कफ ये तीन आयुर्वेद में मूल तत्व है। पहले इन्हें देखा जाता है फिर कोई भी चिकित्सा में आगे बढ़ा जाता है। मानव कल्याण की बात कर रहे हैं, पहले स्वयं का तो कल्याण कर लो। वह पित्त पांवों में रक्षक बन जाता है और पानी से शरीर के अंगोपांग की रक्षा करता है। हमारा काम हो गया अब 8 माह बाद आयेंगे। फिर शीतकालीन आ जाता है तो वह पित्त 4 महीने के लिए शीतावकाश हेतु छाती में आ जाता है।

सुन रहे हो। (हाँ) दूसरों को मत सुनाना। शीतलहर का प्रभाव मुनिमहाराज भी नये-नये है अथवा बूढ़े हैं तो यह पित्त कहता है छाती पर मैं बैठा हूँ, हमेशा उष्मा पहुँचाता रहूँगा। वह पित्त शीत को ही पीता जा रहा है - आप जो भी भोजन करते हैं - पाचन व्यवस्थित होता रहता है। अब 4 माह हो गया और गर्मी आ गयी।

आपलोग वाचना की याचना करते हो।

खुरई में तो एक धुलाराधना गर्मी में हुई है। अब वह पित्त कहता है हमारा भी कर्तव्य है। सुनते हैं गर्मी गर्मी को मारता है। वह छाती से मस्तिष्क में आ जाता है। लू आ नहीं सकती, गर्मी लग नहीं सकती। गर्मी भी शान्त हो जाती है। प्रशासन संबंधी परीक्षा अथवा अन्तिम (वार्षिक) परीक्षा गर्मी में ही होती है। हमसे आशीर्वाद मांगते हैं- हम भी सहर्ष आशीर्वाद दे देते हैं। चार महिने कोई आपत्ति नहीं।

इस प्रकार प्रकृतिकृत दोषों से यह पित्त रक्षा करता है। वात- पित्त- कफ इन तीनों द्वारा शरीर की रक्षा होती रहती है। कर्म-सिद्धान्त को समझने वाला ही इन्हें समझ सकता है, विज्ञान को लेकर इनको नहीं समझा जा सकता। आगे और कुछ कहना है तो मेडिकल में देखेंगे। इसे अन्य लोगों तक भी पहुँचा देना।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"समय-दान"

"किसी दिन आचार्य श्री जी अपने आवश्यक समय पर करके शेष समय परोपकार की भावना से किसी न किसी के लिए दे देते हैं। एक दिन बहुत लम्बी चर्चा हुयी तो हम लोगो ने कहा आप तो काफी समय की सेविंग हो गयी। आ. श्री ने कहा- मेरे पास समय रूपी धन ही तो है, मैं उसे Invest करता रहता हूँ।"

२५-१२-१४ "उदरपात्री बनें" प्रात:

हम ये सोच रहे थे कि कल तो आप लोगों को विशेष, गरिष्ट, इष्ट भोजन कराया ही था, अब आज क्या खिलायें? फिर भी आप भूखे जैसे लगते है। भूख लगना स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा माना जाता है। ताली मत बजाओ ज्यादा भूख का लगना भी अच्छा नहीं माना जाता है। जितना इष्ट है उतना ही खाना चाहिए। संग्रह नहीं होना चाहिए। जिस समय हनुमान जयन्ती पर यहाँ बोलना था तब की बात है।

जाबाली उपदेशक को देखा। जबलपुर से सम्बन्ध होगा इसलिए जाबाली कहते हैं। जो भी हो उसमें एक बहुत अच्छा सूत्र लिखा मिला। "संत जो होता है वह उदरपात्री होता है।" अभी तक हमने कर-पात्री, पाणिपात्री आदि कई नाम सुने थे पर उदरपात्री सुनते ही मन गद्गद् हो गया। हमारे यहाँ स्थितिभोजन, एक भुक्तिभोजन को मूलगुण में रखा। अपने हाथ में लेकर करेगा। लेकिन उदर में जितना आयेगा उतना ही करेगा। जो उदरपात्री होता है वही ध्यान के योग्य हो सकता है।

सीमा से ज्यादा कभी भी वह भोजन नहीं करेगा, यह निष्परिग्रह का प्रतीक है। हमारे आचार्यों ने भोजन का मना नहीं किया किन्तु दिन में एक बार, अपना घर नहीं-बार नहीं, जो अपने घर के बाहर खड़ा रहता है/प्रतीक्षा करता है, उसके यहाँ जाना, दूसरे

के यहाँ नहीं जाना।

ये सब के लिए नियम बताया। आप कर (हाथ) से भोजन तो करते हैं पर थाली लेकर यहाँ से वहाँ घुमते रहते हैं। आप पात्र नहीं खाता है। यह उदरपात्री शब्द हम लोगो के मन एवं पंचेन्द्रिय हेतु नियन्त्रण में सुखकारक हो गया। लेकिन आप लोग - जब भोजन करने बैठ जाते हो तो सबको भूल जाते हैं। थाली भी निकट (पास) खेंच लेते है ताकि दूसरा उसमें हाथ ही नहीं मार सकता है।

इसीलिए संतो ने उदरपात्री कहा - तभी हम निस्तारक कहलायेंगे। फिर विस्तार की बात ही नहीं। निस्तार में समेटता जाता है जब कि विस्तार में तो और - और फैलाता ही जाता है। विस्तार को कम करके उस चित् चमत्कार की ओर दृष्टि देखो, तब ठीकठाक हो जायेगा। यदि विस्तार की ही देखोगे तो मात्र आकाश ही आकाश दिखेगा जिसका न आदि है न अन्त है। उसमें जो देख सकने योग्य है वह देख सकते हैं।

अब विस्तार को बंद कर दो। पहले के लोगो ने इतना विस्तार कर दिया है कि उसमें बाल मात्र भी गुंजाइश नहीं हैं, हाथ - पैर मारने की अपेक्षा भी नहीं हैं। द्रव्य हो या जाति हो। सब सीमित है, आप बढ़ा नहीं सकते। एक बार जो खिंच गयी है। उदर पात्री को याद रखेंगे तो राष्ट्र का भी एवं राष्ट्र में रहने वालों का भी

ध्यान आ जायेगा।

शब्द में रखा साहित्य है वह भी सामने आयेगा। मार्ग, मार्गी, मार्ग की गवेषणा के साथ विस्तार से इसमें वर्णन किया गया है। न भूतो - न भविष्यति। मांगो मत - मांगने वाला क्या कहलाता है - मुर्गा। आज वह परम्परा टूटती सी लगती है। कभी भी मैं उठूँ, एक - दो घण्टे बाद मुर्गा बोलता है। प्रतिदिन ये समय पर ही बोलता है। इसके पास घड़ी कहाँ से आयी? आजकल की घड़ी में भी आवाज भर दी जाती है। वह चुप ही नहीं होता, बोलता ही जाता है। टस से मस भी नहीं होता।

इसी प्रकार उदर पात्र को नहीं पहचाना था तो भरते गये - भरते गये और ... भीतर का भरता बन गया। जाबाली का यह उदरपात्र का सूत्र बहुत महत्वपूर्ण है। अध्यात्मक में जो शब्द का प्रयोग होता है वह व्यापक होता है। कई लोगों की कई तरह से मांग होती है। हमने कहा - सागर में तो कोई जा नहीं सकता, सागर तो हमेशा भरा हुआ ही रहता है। हाँ! ये कह सकते थे - सागर की ओर पधारो।

"सागर तल को ध्यान का सबसे उपयुक्त स्थान बताया है सागर को नहीं।" ज्ञान - ध्यान से जो बंधित है, वोही - वोही खाना चाहते हो तो पहलवान भी बिमार हो जायेगो।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

२५-१२-१८ "पंचांग मानो - कलेण्डर नहीं" प्रातः

अभी आप लोगो ने एक बात सुनी कि आज बड़ा दिन है। भारतवासी ये भूल गये हैं किसको बड़ा और किसको छोटा कहना है, फिर भी यह आज प्रचलन में आ चुका है। कोई मंगल कार्य हो- उसको बड़ा कहना तो ठीक अथवा जिसके निमित्त से मंगल कार्य हो जावे या कोई भविष्य में मंगल कार्य करना है तो आज ही स्वप्न देखने लग जाते हैं। कार्य होने के उपरान्त अब स्वप्न नहीं, क्योंकि जो मंगल /शुभ सोचा था वह पुरा हो गया।

इस प्रकार कुछ तो समीक्षा किया करो। कल नहीं परसो रविवार को भी कहा था। हर बात में हओ नहीं कहा करो। सोच- विचार कर हओ कहना चाहिए। तो कोई भी मुहूर्त निकालते है उसमें बहुत सारी बातों का ताल-मेल आदि देखा जाता है। कार्य होता तो अन्त-मुहूर्त में परन्तु मुहूर्त निकालने में वर्षों लग जाते हैं। अन्तः का मतलब भीतर होता है। वह मुहूर्त भीतर से ही बाहर निकाला जाता है।

आज बड़ा दिन है, इससे कौनसा मुहूर्त निकलता है। क्यों नहीं सोच रहा भारत। हाँ भारत नहीं India सोच रही है। अब तो स्थिति यह है कि नंगाड़ो की आवाज में बाँसुरी कौन सुने? नंगाड़े में उधम सुनाई देता है किन्तु बाँसुरी जब बजती है तो बड़ी मधुर लगती है। बाँसुरी सुनते ही कन्हैया की ओर ध्यान चला जाता है, जो एक

महापुरुष है।

"महापुरुषों की ओर ध्यान चला जाये उसका नाम है- बड़ा दिन।" यहाँ मुहूर्त के बिना कोई काम नहीं होता, भारत में तो नहीं होता। 25 तारीख को कौनसा मुहूर्त है- मुझे बता दो। ध्यान रखो- पंचांग को फैल किया जा रहा है- नापास किया जा रहा है। जो पंचांग भी देखे, 25 दिसम्बर उसमें आ सकती है, पर दिसम्बर भारतीय माह है ही नहीं। चैत्र कहने से विचित्रता सामने आती है।

आधुनिक 12 महिने के नामों से कुछ भी अर्थ नहीं निकलता, कोई भी घटना से संबंध नहीं। फरवरी - फ्री में ही गयी। मार्च → मार्च कर रहे हैं किधर? फास्ट फूड की ओर। ये सब उठाकर देखते हैं तो फिर पंचकल्याणक क्या? पंचकल्याणक को करवाने वाले क्या है सब मालूम पड़ जाता है। तारीख के माध्यम से कोई भी मुहूर्त नहीं निकलता है। हाँ! विदेश में चाहे तो यहाँ से निकालकर भेज सकते हैं। वहाँ पर नहीं निकाल सकते हैं।

बड़े दिन ऐसी प्रतिज्ञा की जा रही है, अब तो अच्छे दिन का मतलब बड़े दिन है। "महापुरुषों को साष्टांग करो - पंचांग भी बदल जायेगा।" नसीब को भी आप बदलने की ताकत रखते हैं। यहाँ तिथियाँ चलती हैं। अतिथी आ जाते है तो तिथीयाँ प्रचलन में आ जाती

है। मुख्य अतिथी आदि भी होते हैं।

अतिथी कौन? जिसके आने की न कोई तिथी हो तथा न ही जाने की तिथी हो उसे अतिथी कहते है। जो कालजयी बनने जा रहा है, उसकी क्या तिथी? कुछ लोग बार-बार पुछते हैं- महाराज- तिथी घोषित कर दे? हम कहते हैं- अभी कुछ नहीं- शांत बैठ रहो। फिर भी न जाने अखबार में छाप ही देते हैं। आज मुहूर्त हेतु पंचांग गाइप, तिथी हेतु व्यवस्था है ही नहीं। एक मास में कितने पक्ष होते है? पक्ष होते ही नहीं। पंख ही निकाल दिये। बिना पंख के उड़ने वाली पंखी। सोचो।

जब पक्ष ही नहीं तो मास कहाँ से आयेगा? अब दो पंख नहीं, ऊपर पंखा घुम रहा है। उसमें तीन-चार पंखी होते/होती है। वह उड़ नहीं सकता। बिना पक्ष के-बिना मुहूर्त के फिर भी बड़ा दिन आ गया। वह पक्ष भी दो प्रकार के होते है- एक कृ०० पक्ष दूसरा शुक्ल पक्ष। और भी गडबडियाँ होती है। पंचांग में एक वर्ष में एक मल मास होता है, सुना आपने निर्मल मास नहीं, मलमास है।

इस मास में शुभ कार्य नहीं होते, शादियाँ नहीं होती। लवमेरीज र लवमेरिज पंचांग के अनुसार नहीं होती। २१ तो यही मानते है। अपवाद को हम भी स्वीकार करते हैं, पर बड़े दिन के रूप में नहीं। इसलिये तिथी, मुहूर्त, पंचांग, मलमास,

गुरु का उदय/अस्त अब कुछ भी नहीं रहा।

सबको बांदबूंद कर रख दिया है। इस प्रकार से तो फिर मुहूर्त आदि भी नहीं मानोगे। भारत कहता है- यह काल आपत्ति का सूचक होता है, मुख में पानी भी नहीं लिया जाता। कहाँ जा रहे हो? बन्धुओ! भेड़चाल वाले मत बनो। गैय्या चराने वाले फिर भी अच्छे भेड़चाल से तो। रात में गैय्या अपनी सार में आ जाती है। योग है खुरई वालों का पुण्य है, बड़ा दिन आ गया।

केशलोंच भी हो गये बड़े दिन में। कल थोड़ा सा गये थे- कई लोग पीछे लग गये। आये थे तब भी तो पुछताछ करके ही आये होंगे फिर जाना भी तो है। ये बताओ कौनसी तिथी मान रहे हो। तीन वर्ष में एक अधिमास भी आता है। एक पक्ष पहले एवं एक पक्ष बाद को ही मानते हैं, बीच वाला मास छोड़ देते हैं। इसे कोई नहीं जानता। क्यों की ये आपकी कुण्डली में नहीं- भारत में होता है India में नहीं। बब्बा की भी नहीं, दद्दा की भी नहीं।

इतना ही कहना चाहता हूँ, भारत के भविष्य के बारे में कोई छानबीन नहीं- भविष्य वैसा भी नहीं कर रहे। महाराज. आशिर्वाद दे दें- भविष्य है ही नहीं तो आशिर्वाद कैसा? कौन बतायेगा कोई नीति-सिद्धान्त नहीं। परसों बड़ा फिक्चर दिया था। भारत की खीचड़ी है तो इसे मांझ भूंजकर, सुखाकर रख दो फिर परोसो तभी काम बन सकता है। समय तो हम भूल ही गये, उपवास है न।

अहिंसा परमोधर्म की जय हो

२६-१२-१८ "नमोऽस्तु जैसा - आशीर्वाद वैसा" प्रातः

अभी आप लोगों ने कुछ मिनिटों तक यहाँ की भावना को केवल सुना ही नहीं, देखा भी है। देखने का कार्य आँखों से होता है और सुनने का काम कानों से/दुकानों से। हम दुकानदार हैं तो कानों से सुनें। महाराज आशीर्वाद दे दो। काहे के लाने? मांगने से आशीर्वाद नहीं मिलता, नमोऽस्तु करने से आशीर्वाद मिलता है। नमोऽस्तु के लिए भी सोचना पड़ता है। काहे के लाने नमोऽस्तु किया? दुकान खोलने या फेक्ट्री खोलना तो नहीं चाह रहे हैं।

इसलिये जैसा आपका नमोऽस्तु रहता है हमारा आशीर्वाद भी वैसा ही रहता है। नमोऽस्तु सामान्य है तो आशीर्वाद भी सामान्य, विशेष नमोऽस्तु पर आशीर्वाद भी विशेष, अच्छे से नमोऽस्तु का आशीर्वाद अच्छे से एवं बार-बार नमोऽस्तु का आशीर्वाद भी बार-बार मिलता है। पहले इन्होंने एक स्थान बताया, हमने देख तो लिया पर कुछ भी नहीं कहा - हम उत्साह भंग नहीं करते। ग्राहक को बनाये रखना भी जरूरी है। यहाँ वाला स्थान भी दिखाया, इस उत्साह को देखकर लगा कि अब तो आशीर्वाद दे ही देना चाहिए।

आप बार - बार आशीर्वाद मांगते हैं, किन्तु हमारे एक ही आशीर्वाद से काम हो जाता है। आपके यहाँ कई भाव चलते हैं, हमारे यहाँ तो एक ही भाव चलते हैं। आपके यहाँ कोई ग्राहक आया हजार से चालु किया सैकड़ा तक आ गये उससे भी नीचे ८० में मिलेगी क्या? ऐसा हमारे यहाँ नहीं, एक ही भाव, अच्छा

लगे तो ले लो नहीं तो घूमकर आना तो इसे ही पड़ेगा।

हमने भी समझ लिया था।

खिचड़ी पकी है या नहीं? खाकर नहीं - युं-युं करके देख लेते हैं। भारत राष्ट्र कृषि प्रधान है, उसमें कई प्रसिद्ध भाग हैं उन्हीं में से खुरई एक नाम है। ये सब किसान हैं। आदिनाथ भगवान ने भी "कृष्यादिषु कर्मसु प्रजाः" युग के आदि में कहा कि यदि शाकाहार को जीवित रखना है तो किसान बनें। ऐसा किसान ही उन वितरागी संतो के अपने घर पर आने पर आहार कराता है, जो केवलज्ञान का भी कारण होता है।

प्राणीयों के लिए अन्न पैदा करता है। बीज पैदा करता है ऐसा नहीं कहा। खुरई में और भी भोग है, वे उन किसानों को कृषि आदि में जो उपकरण आवश्यक होते है, उपलब्ध कराते हैं। उन्हीं में से ढूककर आ रहे हैं, अभी हमने हाँ-ना कुछ नहीं कहा। महाराज - आप तो हमें आशीर्वाद दे दो। यदि जमीन वाला तैयार नहीं हुआ तो क्या करोगे, कहाँ बनाओगे? आसमान में? या फिर खुरई के किसी कोने में/कुलिया में जा भी नहीं सकोगे।

यहाँ धाम तो बना है, पर बहुत सकड़ी गलियाँ हैं यदि बाहर से कोई आयेगा तो उसे कहाँ बैठाओगे? जो दूसरा स्थान बताया वह तो मुख्य मार्ग पर है, इधर जाओ तो बीना, इधर जाओ तो सागर सब तरफ से उपयुक्त है। कार से आने वाला हो या बस से या रेल से या फिर हम जैसे पैदल हो, सब आ सकते हैं। रास्ते के ऊपर

ही वह जमीन हमें दिखायी।

हमने हाँ तो नहीं कहाँ। आज वास्तुविद् भी आ गये हैं, वो भी देख लेंगे। ना भी नहीं कहा हैं। मोटे तौर वाली दुकान है- फूटकर तो है नहीं- थोक चलता है। हमने तो कल से ही आरम्भ कर दिया था। बिना बताये ही यह आवश्यक है। तीन लोक के नाथ सबसे बड़े है, वे जैसा संकेत करते जायें, वैसा ही करते जाओ।

अपने यहाँ हर पदार्थ का मूल्य नहीं, कुछ स्थानों पर न्यौछावर कहा है,-इसे जीवन में उतारते जाओ। पूर्वजों को याद करते हुये कार्य करते जाओ। आज वास्तु की क्या बात कहें- सीमेन्ट- लोहा ने स्थान ले लिया। 50 वर्ष भी नहीं होते कि उसमें थेगड़ा लगाना पड़ता है, लोहा जंग खा जाता है। अब श्री जी को कहाँ ले जाओगे। इसलिये शिला (पत्थर) आदि के मन्दिर बनाना ही उचित है, वास्तु के अनुसार है।

चूना आदि से भी बनता था पर कम मात्रा में होने से ऐसा अब नहीं होता। यहाँ के लोगों ने विचार कर लिया है। अपने भवनों को तो खूब ऊँचा-ऊँचा बना लिया, अब भगवान का घर बनाना है। एक से एक गुदड़ी के लाल है। शुभस्य शीघ्र को चरितार्थ करें। एक बार फिर याद दिला देता हूँ। आप हमारे ऊपर पूरा भरोसा रखो लेकिन हमारे आने-जाने पर कभी भी भरोसा मत करना।

अहिंसा परमो धर्म की जय। मुं

27-12-18 "बंद करो, खरीदना - बेचना" प्रातः

अभी क्या गयी थी? [लाइट] अभी क्या आ गयी? [लाइट] कहाँ गयी थी और आई क्यों? इसका मतलब आपके अधीन वह नहीं है। आपने माइक खरीद रखा है, स्पीकर्स खरीद लिया, वायर आदि खरीद लिये, इन सबको व्यवस्थित करने वाले व्यक्तियों को भी आपने नियुक्त कर रखा है। इन सब बातों के उपरान्त भी जिसके द्वारा उपयोग होना है, वह कहता है मुझको स्वतंत्र रखो।

मैं स्वतंत्र था और स्वतंत्र ही रहना चाहता हूँ। आप भी परतंत्र मत बनो। इसके लिए न ही क्रय करो तथा न ही विक्रय। अपने आपको बेचो नहीं। दूसरों को खरीदने का भाव भी मत रखो, खरीदने का भाव ही महान पीड़ादायक है। स्वाश्रित होने का नाम ही मोक्षमार्ग है / सम्यग्दर्शन है।" लाइट गोल होने के कारण इतना बता दिया।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"चतुर्थ-काल"

"तीन काल तो आप सभी जानते हैं- भूत-भविष्य-वर्तमान काल। किन्तु मैं इनके अतिरिक्त जो चतुर्थ काल है उसे बहुत पसन्द करता हूँ। वह है- आपत्तिकाल (Emergency) जब आपत्तिकाल लागु हो जाता है तो सर्वत्र शान्ति का माहौल रहता है, सभी अनुशासन में रहते हैं। कोई चुं-चपट नहीं होती। मिलट्री शासन होता है। साधना के लिये ऐसा ही काल वरदान होता है।"

24-12-18 "कैसे सुने ढोल-धमाके में बांसुरी?" प्रातः

एक व्यक्ति की दशा यह है कि उसने उसको देखा तो था किन्तु उसके स्पर्श होने मात्र से उसका होश-हवाश समाप्त हो गया। वैसे वह बोल रहा है आदि-आदि सब कर रहा है, किन्तु होश में नहीं। मैं बोल रहा - आप जो पूछना चाह रहे हैं, उसका स्पष्टीकरण नहीं कर पा रहा हूँ। इतना बोल रहे हैं, ये तो और सोचकर बोल रहे हैं।

अब वैद्यो के पास ले कर के गये। वैद्य ने कहा - सब ठीक हो जायेगा। इनको नीम की पत्ती (कोंपले) खिलाओ। वो कैसे खायेगा? खा लेगा। आप सुन रहे हैं, आपके सामने भी यही आ रहा है। वह खाने लगा और ऐसे खा रहा है, जैसे मिठाई खा रहा हो। वही जिव्हा, व्यक्ति वही, वही नीम है फिर भी मजे से खा रहा है। आप देखते ही नाक मरोड़ते हैं। वह लोलुपित है, खाता ही जा रहा है। एक भी पत्ता छोड़ ही नहीं रहा है। यह कैसे हो गया?

इसको नींद आकर सो जाना था, पर शुभ लक्षण होने से बेहोश नहीं हुआ। नीम को इतने चाव से खाता जा रहा है कि इसे किसी महान विषैले सर्प ने डसा है। उस सर्प ने इसे छुआ है, पर विष कब प्रविष्ट हुआ ज्ञान नहीं। इसीलिए अधकचरा स्थिति बेहोश भी नहीं - होश भी नहीं बनी हुयी है। सर्प के काटने पर नीम भी मीठी लगने लगती है। अब इसके लिए यह करना है कि ये सो न पाये, इसके लिए इसके चारों ओर नगारा

बजाना प्रारम्भ कर दो।

नीम भी विष माना जाता है, विष इसलिये कि वह धीरे-धीरे असर करता है। विष का प्रभाव एकदम नहीं पड़ पाता। विषाक्त नहीं हुआ था। दिन में भी रात, रात में भी दिन ऐसी स्थिति में 24 घण्टे में वह पूर्ववत् होश-हवाश में आ गया। हर वस्तु का प्रभाव हम लोगों पर पड़ सकता है। किन्तु उस अनंत काल के प्रभाव को अल्प समय (अन्तःमुहूर्त) में भी शून्य कर सकते हो। आचार्यों ने कहा - इसे समझो।

इस संसारी प्राणी को मोह रूपी सर्प ने डसा है, इसीलिये इसे पंचेन्द्रिय के विषय विष रूप न लगकर मीठे लगते हैं। कोई भी इन्द्रिय का विषय कड़वा नहीं। बच्चों का झुकाव भी इसी ओर है, अनंत काल हो गये। पंचेन्द्रिय के विषय इस प्रकार हावी हो गये कि कोई औषध ही काम नहीं कर रही है। मात्र जिनवाणी और गुरुओं का उपदेश ही शेष रह गये हैं, आपको लेना है कि नहीं? सोच लो। महाराज! पंचेन्द्रिय के विषय बहुत मीठे लगते हैं और आपके वचन कड़वे, हम क्या करें? ठीक होना है तो कड़वी औषधी लेनी होगी।

आजकल के वैद्य एवं डॉक्टरों को और नशा चढ़ गया है। ज्यादा तो नहीं कहना। आप जिनवाणी की बात थोड़ी-थोड़ी मानते आओ। पर क्या करें पंचेन्द्रिय के विषयों का ढोल-धमाका इतनी तेज है कि बाँसुरी की सुरीली आवाज कानों तक नहीं आ पाती। यदि विश्वास भर आभूत हो जाये तो फिर

ढोल - धमाके में भी सुरीली आवाज आने लग जाती है।

यहाँ अभी 4-5 दिन में ही क्या हो गया? [मन्दिर - सहकार की भूमिका] माहौल बनाये रखो। हमने कह रखा है, जिसका भाग्य खुलता है उसी को मिलता है। ले-लो कहने से भी नहीं एवं लाओ-लाओ कहने से भी नहीं। लाओ कहने से मूल्य आसमान छुने लगता है। (छुने दो- हमें तो लेना ही है। क्यों कि फिर आप कितने भी देओ- मिलने वाला नहीं है। जब रात में नींद नहीं आयी तो पता लग गया। ये वस्तुस्थिति है या नहीं?

हमने निषेध कहाँ किया? जबरदस्ती हम करते ही नहीं। वह ढूंढता हुआ यहाँ तक आयेगा। अभी भी हम विभाजन कर सकते हैं। इस प्रकार हम जहर को छोड़ने एवं मीठे को ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाते हैं। शास्त्रों में ये दोनों मार्ग है एक निषेध करता है - दूसरा विधेय। इसी आधार पर अनन्तकालीन भी क्यों न हो अन्तर्मुहूर्त में पार हो जाता है।

इसके लिए क्या चुकाना होगा? हम लेते कुछ भी नहीं देते ही आ रहे हैं। जो बुराई पड़ी है उसे देते जाओ। अर्घ्य के साथ इनका भी त्याग करें। उन पर असर पड़ता? वे लेंगे तो असर पड़ेगा। जादू है ये। वे इनसे दूर ही रहते हैं। ये ही औषध है जो स्वस्थ कर सकती है। वक्त के अनुसार करते जाओ। हमारा आग्रह तो गुणों के ग्रहण का रहेगा ही। आज तक गुण अच्छे नहीं लगे दोष ही अच्छे लगे। अतः नीम खाना प्रारम्भ कर देना चाहिए। अहिंसा परमो धर्म की जय हो

२9-12-18 "सोने को पहचानो" प्रातः

स्वर्ण को यदि पहचानना चाहते हैं तो उसकी कई विधाये हैं। इन विधाओं से वह स्वर्ण पकड़ में आ सकता है। एक तो यह है कि उसको हाथ से मोड़ना चाहे तो वह मुड़ता चला जाता है। मार्दव धर्म उसके पास विद्यमान है। दूसरा आप अग्नि-परीक्षा के माध्यम से भी पहचान कर सकते हो। एक कसौटी का पाषाण आता है, उस पर लकीरें खेंचते चले जाओ तो ज्ञात हो जाता है।

यह निश्चित है, इन तीन से पहचान कर सकते हैं; किन्तु जब अभ्यास हो जाता है तो स्वर्णकार स्वर्णपाषाण को हाथ में लेते ही बता देता है। यदि एक किलो स्वर्ण पाषाण है और आधा किलो उसमें स्वर्ण है तो यूं करके बता देगा इसमें इतना स्वर्ण है। आपको लगेगा इसके हाथ में तराजु है। तराजु है तो पुरे पाषाण का वजन आना चाहिये था, किन्तु स्वर्ण का ही रेट करता है। पुरा वजन एक किलो है ये उस धातु की विशेषता है। जब स्वर्णकार ने उस स्वर्ण पाषाण को तपाया 1-2 बार नहीं 16 बार तपाया, जिसे 100 टंच / शत-प्रतिशत सोना बोलते हैं।

16 बार तपाया ये बहुत महत्वपूर्ण बिन्दु है। एक बार में क्यों नहीं? नहीं कर सकते, 16 बार तपाना आवश्यक है। अच्छी क्वालिटी की अग्नि हो तो भी 16 बार तो अग्नि में जाना होगा। तब आकर एक अंश में भी बट्टा नहीं रहता है। अब दूसरी पहचान क्या? केवल स्वर्ण ही पीला हो ऐसा तो है नहीं, पीतल अथवा अन्य धातु भी पीली होती है। तो लोहा एवं

सोना इन दोनों की सिल्ली है।

दोनों को कीचड़ में रख दिया। कुछ दिनों बाद निकाला तो लोहा जो था वह जंग खा गया। जंग समझते हो? (हओ) थोड़ा सा भी धक्का लग जाये तो सीधे इंजेक्शन लगवाना होता है। उसका रंग-लाल नहीं गेरुआ हो गया। वह विषाक्त हो जाता है, उसके द्वारा हाथ-पैर में धक्का लगते ही विष फैल जाता है। वहीं पर सोने की सिल्ली भी रखी हुयी है। उसे कीचड़ से बाहर निकाला और धो लिया, वह चमकने लगा।

ये दोनों धातु पौद्‌गलिक होते हुये भी गुणधर्म भिन्न-भिन्न रखते हैं। बहुत दिनों से यह आत्म तत्त्व भिन्न-भिन्न रूप से परिणति कर रहा है। इसमें दूसरों का दोष कुछ भी नहीं - स्वयं का ही दोष है। शरीर दिख रहा है- आत्मा दिखती नहीं। आत्मा भीतर बैठा है पर चमत्कार हमें बाहर दिखाया करता है, हम उस भीतरी तत्त्व की पहचान नहीं कर पाते।

गुरुदेव एवं जिनवाणी की कृपा से औपचारिक ही सही इस भीतरी तत्त्व का ज्ञान हो जाता है। जिस प्रकार स्वर्ण को विधि-विशेष द्वारा पाषाण से अलग किया, यद्वा-तद्वा करने पर नहीं होता, नहीं तो भस्म हो जायेगा, उसी तरह विधिवत् आत्मा को भी शरीर से पृथक कर सकते हैं/करते हैं। इसके लिये शरीर के साथ मोह का त्याग सर्वप्रथम चाहिये। जैसे

आहार देना है तो फास्ट-फूड का त्याग पहले चाहिये।

बच्चों को Fast food का अर्थ बताया। Food तो है पर first के स्थान पर fast आ गया। एक से एक व्यंजन घर पर भी बनते है। अब प्रसरी घी के बिस्किट। "जब तक बाहरी वातावरण से आकृष्ट रहेंगे तो घर की कोई वस्तु अच्छी नहीं लगेगी।" इसी प्रकार बेघर हो जाने से घरूला स्वाद नहीं ले पा रहे हैं। बोलो क्या चाहिए?

जितनी आवाज फास्ट-फूड के लिए निकलती है उतनी नहीं निकल रही। बच्चे भी होशियार होते हैं। एक से पूछा क्यों Fast Food का त्याग है- 15 दिन, एक महिने, यहाँ निलामी नहीं हो रही। महाराज नियम टूट गया तो? इसलिए ब्रह्मचारी लोग भी जबरदस्ती न करें) "नियम तब टूट सकता है जब घर की वस्तुओं की ओर आकृष्ट नहीं होते।" एक बार नियम लेने के बाद तो वह पकड़-पकड़कर आता है, तुम भी लोओ-तुम भी लोओ। अपनी संख्या बढ़ा लेता है।

ये सब केवल आस्था पर आधारित है। आप शरीर को ही आपा मान रहे है- मोह के कारण। पंचेन्द्रिय विषयों के प्रति आकृष्ट हो रहे है। एक-एक करके छोड़ सकते है- अपने आप ही कुछ ही समय में निर्धारण हो जायेगा, क्या सही है और क्या गलत। चाहेंगे तो यह सूक्ष्म प्रक्रिया अपने भीतर बैठा

कर सकते हैं।

एक ही बार यह प्रक्रिया करनी है। एकबार शुरु हो जाये तो फिर कहना ही क्या? शरीर से अलग होने पर पुनः आत्मा शरीर धारण नहीं करती। संकल्प की आवश्यकता है। संकल्प लेते ही कर्मों को पसीना अवश्य आ जाता है। जैसे-कभी-कभी जीव में भी कोई समस्या में उलझ जाने पर पसीना आने लगता है। एक बार आत्मा का चिंतन प्रारम्भ कर दो। देवगुरु, शास्त्र पर विश्वास करें। इन्होंने पाया हम भी पा सकते है।

उसी क्षण से कर्मों को पसीना प्रारम्भ हो जायेगा। पसीना आने का मतलब बुखार उतर रहा है। बुखार आने पर अच्छा गरम पानी पीकर सो जाओ ओढ़कर (हिलना-डुलना नहीं। कर्मों के कारण कंपकंपी चढ़ रही है। वहीं पर नग्न अवस्था वाले मुनिराज भी हैं, कर्म उनसे कांप रहे हैं। "समस्याओं से उलझने पर विपरित वातावरण का अहसास करने लगता है।"

देह से अलग होने का भाव तो कर ही सकते है। संकल्प लेने पर सब आसान हो जाता है। संकल्प का फल अगले भव में भी मिलता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नें

(मध्याह्न में आर्यिका ज्ञानमती जी ससंघ (आर्यि. आ. क्षु. रविन्द्र 1+6+1+1 = 9) का पूज्य गुरुवर के चरणों में अद्भुत मिलन। लगभग 45 वर्ष बाद मिली)

(प्रवचन-चर्चा अखण्डायरी में)

30-12-18 "मांगलिक हैं प्रसन्नता का वाइपर" प्रातः

आज गाड़ी आने में ही विलम्ब हो गयी। आपने पूजन कर ही ली है। एक ही बात कहना है- जैसे आपको यात्रा करना है- गाड़ी में बैठ गये। गाड़ी चलते ही वर्षा भी प्रारम्भ हो जाती है। गाड़ी तेजी से आगे जा सकती है किन्तु जो सामने देखने का स्थान (शीशा) होता है, ड्राइवर सोचता है क्या करूं? कैसे करूं? पानी भी रुक नहीं रहा। सामने ध्यान गया अरे! इसमें एक व्यवस्था है।

उसने बटन दबा दिया। बटन दबाते ही वह सहयोग प्रारम्भ कर देता है। जैसे आप चंवर ढोरते हैं वैसे वह चलना प्रारम्भ कर दिया- वाइपर बोलते हैं। अब देखने का कार्य प्रारम्भ हो गया। ज्यादा गति तो नहीं बढ़ा सकते पर गाड़ी चलती रही। यह वाइपर हमारी देखने में मदद किया। इसी प्रकार हम भी अपने पास ऐसा साधन रखें जो तात्कालिक आयी बाधा को दूर कर सके उस वाइपर की तरह।

संतों ने मोक्षमार्ग में भी इसी तरह की सुविधा दी है। मोक्षमार्ग में 22 परिषह एवं उपसर्ग रूपी बाधायें आती हैं, उन्हें सहना होता है। आप तैयार हैं? [हओ] हर बात में आप हओ कह देते हैं। जब How (हाउ) होता है तो कठिन हो जाता है। हमने थोड़ी आपको जबरदस्ती किया था। आपने जो निवेदन बार-बार किया,

उसके लिए आशीर्वाद दे दिया/समर्थन कर दिया।

जैसे दीक्षा के समय लौकान्तिक देव आकर करते हैं। हमें पहले बताना चाहिए था - वह प्रश्न करता है? हमें क्या मालुम की आपको ज्ञात नहीं हैं। ध्यान रखो - ऐशो-आराम में मोक्षमार्ग नहीं चलता है। यहाँ तो कांटे वे भी नुकिले-नुकिले चुभते ही रहते हैं। मोक्षमार्गी इन पर चलकर भी कभी क्लेश नहीं करता। इन पर चलने पर ही उसे अपने लक्ष्य (मोक्ष) की प्राप्ति होती है, यही मोक्षमार्ग का स्वरूप है।

"आप लोग अनुकूलता - अनुकूलता ही जीवन में चाहोगे प्रतिकूलता को देखकर रोओगे तो यह अमंगल कर रहे हो।" रोते रहना तो सबसे बड़ा अमांगलिक है। मंगल में दंगल मत करो। मैं ऐसे अमंगल को पीछे ही छोड़ देता हूँ। हमारे सामने सदैव मंगलमय वातावरण रहे। हर हाल में प्रसन्न रहो यही मंगलाचरण है। इसलिये प्रतिकूलता में भी मुस्कान लेते रहना चाहिए, भूल गये हो तो हमारे पास आ जाना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

"Old is Gold"

पाँव में मोच आ गयी थी। आ.श्रीजी ने स्पष्ट कहा - कोई हाथ नहीं लगायेगा चोहसजी एवं आमीहल्दी का लेप केवल लगाना है। अन्य कुछ भी नहीं लगाना। बस 3 दिन में ही पाँव पूर्ववत् हो गया।" [ये है गुरु वचनों का प्रभाव]

3-12-18 "संघर्ष कैसे समाप्त करें?" प्रातः

आपने कई पक्षीयों को देखा होगा और उनकी दो आँखो को भी देखा - सुना एवं पढ़ा होगा किन्तु एक पक्षी ऐसा भी है जो इसका अपवाद है। आपने कौआ को तो देखा होगा। आजकल कौआ दिखते ही नहीं, संख्या बहुत कम होगयी मोबाइल टॉवर के कारण। तो कौआ एवं नव्वा (नौआ) दोनों ही बहुत होशियार होते हैं। एक पक्षी प्राणी है तो दूसरा मनुष्य प्राणी। कौआ के पास आँखे तो दो है पर भीतर में जो काली-काली रहती है (पुतली) वह एक ही होती है।

हमारे पास आँखे दो हैं, दोनों के भीतर अलग 2 पुतली है। दोनो में कोई सम्पर्क सूत्र नहीं। कौआ के दोनो आँखो के बीच विकार नहीं। वह गर्दन को इतनी तेजी से हिलाता है कि वह गोला कभी इधर तो कभी उधर होता रहता है। जैसे - हथकरघा कि शटल होती है। एक ही हाथ से एक बार इधर तो दूसरी बार उधर चली जाती है। अन्य पक्षीयों अथवा हम में यह व्यवस्था नहीं है। मतलब थोड़े से भी एक प्राणी लाभ ले सकता है / लेता है।

ये समझ लो इस आँख की वस्तु अलग एवं दूसरी आँख की वस्तु अलग। मतलब एक समय में एक ही आँख से देखते है। फिर भी दूसरी आँख की गतिविधी (स्क्रीनिंग) बताती है कि मैं पहली (इस ओर की) आँख का साथ दे रही हूं। एक आँख - दूसरे आँख के लिए बाधा नहीं पहुंचाती अपितु सहयोग करती है। जीवन में जो बल / धन मिला

उसका उपयोग सही दिमाग से नहीं कर पाते।

इसीलिए कह रहा हूँ। एक आँख देखती है - दूसरी सहयोग देती है तो संघर्ष सब समाप्त हो जाते हैं। इसको इधर भेज दो - उसको (आँख) उधर भेज दो इससे कॉफी काम हो जायेगा - नहीं होगा। बल्कि डॉक्टर के पास जाना होगा। टेंशन हो जायेगा। उपनयन (चश्मा) और लगाना होगा। चश्मा में कारण क्या? इस ओर ध्यान ही नहीं दे रहे। जब स्वयं ही संघर्ष में घिरे हैं तो फिर समाज की बात ही क्या?

आप जो भी अर्जन करते हो, उसे अपव्यय की कोटि में डालते रहते हो। कितना उपयोग करना, कहाँ उपयोग करना, कब उपयोग करना इन सबको सोचकर करोगे तो फिर देखो। गरीबी की परिभाषा ही बदल गयी। सरकार के सामने भी यह गरीबी की समस्या सिरदर्द बन गयी। "जबकि गरीबी की समस्या है ही नहीं - अपव्यय की गंभीर समस्या है। अपव्यय दूर हो जाये - गरीबी रह नहीं सकती।"

गरीबी के नीचे बार-बार कहा जाता है, अमीरी के नीचे कभी नहीं कहा जाता। यही सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की गड़बड़ी है। गरीबी के नीचे कुछ दिखता नहीं - अमीरी के नीचे सब चश्मा लगाने लग जाते हैं। फिर कहते हैं - किसी से कहियो नहीं। प्रश्न है - कहाँ रखें? जहाँ पर आवश्यक है, वहाँ रख दो यह संघर्ष ही समाप्त हो जायेगा। फिर मैं ही - मैं ही नहीं आप ही - आप ही कहने लग जाओगे। प्रत्येक क्षण

ये दोनों आँखे समन्वय बनायें रखती हैं।

इसमें चश्मे की कोई आवश्यकता नहीं। कोई भी इस रहस्य को समझ ही नहीं पा रहा है। पहले के लोग अनर्थदण्ड व्रत का शत-प्रतिशत पालन करते थे। ये कौनसा व्रत है? ये व्रत नहीं सब व्रतों का बाबा है। जो प्रयोजनभूत नहीं है वह कभी नहीं करना, अनर्थ से बचना है। यदि दूसरों के पास रख दोगे तो वह भी अनर्थ ही करेगा। वहाँ रखा जा रहा है तो उसके लिए इतना पैसा भी देना होगा। (स्विस बैंक)

क्या नाम है ये आप ही जानो? वह ब्याज देता नहीं - ब्याज लेता है। छुपछुप कर रख रहे हैं, उसकी सुरक्षा की तो कोई गारन्टी ही नहीं है। जैसे - बिहार में माइल स्टोन होता है देखा ।। किमी॰ लिखा है कुछ ही समय बाद कुछ शरारती लड़कों ने अपना काम किया देखा । किमी॰। हमने सोचा - स्पीड बढ़ गयी क्या? आप उपयोग ही नहीं कर पाते हैं। उपयोग करने वाला उपयोग कर लेता है। काम ऐसा करो जिससे आपके हार्ट की गति को धक्का न लगे।

अन्यथा फिर हमारे पास आकर कहते हैं - महाराज! आशीर्वाद दे दो। काम तो आपने हार्ट को धक्का लगने का किया। हम भी सामुहिक आशीर्वाद दे देते हैं - दिसम्बर महिने की Last तारीख को आओ (व्यंग्य)। अनर्थ को पहले बचाओ - फिर ज्यादा कमाने की आवश्यकता नहीं है। आज घरों का खर्चा इसी में ज्यादा हो रहा है। प्रसाधन सामग्री

में, जिसका कोई प्रयोजन नहीं।

पेट तो पीठ से चिपक गया है। इसीलिये हमने लिखा- "पेट ने जब से पीठ से दोस्ती कर ली तभी से ये जिव्हा दुखी है।" स्वाद कहाँ से आयेगा। जिव्हा के लिए अनर्थ कर रहे हो, पेट के लिए कटौती कर रहे हो। यह तो स्वयं के साथ बहुत बड़ा छल है। फिर सरकार से कह रहे हो चिकित्सा नहीं कराती - ये उससे भी बड़ा अनर्थ है। स्वयं। रोगी बन रहे हो, सरकार क्या करेगी।

बैठे-बैठे आप दूसरे के अहित के बारें में सोचते रहते हैं, सामने वाला भी आपके अहित के बारें में सोचेगा क्यों की वर्गणायें तो वैसी ही भेजी थी। बस संघर्ष बढ़ता चला जाता है। ऐसे संघर्ष मय जीवन में हर्ष रहता ही नहीं। दुसरों के लिए सदैव अच्छा ही सोचें - इसी भावना से हम महान बनने की ओर हो जाते हैं। यदि ऐसा नहीं करते तो ये आपके लिए, मित्र मण्डली के लिए, समाज-राष्ट्र के लिए ठीक नहीं होगा।

वर्तमान बुद्धि का उपयोग दूसरों के हित में करेंगे तो मित्र भी बनाओगे तो भी सब बनना चाहेंगे। पैसे खर्च करके मित्र नहीं बनाये जाते मित्र हेतु इसी प्रकार के विचार होना जरूरी है। इतना ही पर्याप्त है। कौआ की एक आँख से ही पाठ ले लो, आपके पास तो दो ही नहीं ५ आँख भी है, ४-४ खाने भी हो रहे हैं, फिर भी भगवान जाने कैसी दृष्टि है आपकी?

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

2019

1-1-19 "अशुभ से बचाता खगोलशास्त्र" प्रातः

पुराने वर्ष को भूलने वालो! नये वर्ष कहाँ से लायें। गत रविवार (30 दिसम्बर) के दिन कुछ बातें रखी थी, उसी में आज और कुछ बातें रखना चाहूँगा। भारतीय इतिहास में खगोलशास्त्र का बहुत बड़ा योगदान है। हमारे संतों ने अमूर्त आकाश को भी नाम दिया है। उस अमूर्त आकाश को भी नापने का श्रेय संतों को जाता है। ऐसे भी योग जो कई वर्षों के बाद आते हैं। सुना है आज भी 169 वर्षों के बाद कुमार मंगल नाम का योग आया है।

हालांकि शास्त्रों में इस प्रकार का नाम कहीं देखने में नहीं आया क्योंकि ये शताब्दी के बाद ही आता है। ऐसे योग को पहले से ही निकालकर रख लेते हैं ताकि उस मुहूर्त का लाभ उठाकर अशुभ से बचकर शुभ में अपना कार्य कर लें। यह ऐसे ही ज्ञात नहीं होता, इसका भी गणित होता है। कुमार मंगल योग इसके लिए 150-175 वर्ष निकल गये तब जाकर यह योग प्राप्त हुआ। जो इस गणित को समझते हैं, वे ही इसका महत्त्व जानते हैं।

हमारे यहाँ चिकित्सा पद्धति होती है, उसमें भी सबसे प्राचीन आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति है। उस चिकित्सा पद्धति के शास्त्रों में भी लिखा है, कोई न कोई योग होता है, जिसके कारण शरीर में रोग होता है। "मृत्यु से नहीं बचा जा सकता किन्तु रोग से बचा जा सकता है।" आयु कर्म की उदीरणा

को आप रोक सकते हैं।

आयु कर्म एक दिन पूरा तो होना है किन्तु उसकी उदीरणा रोकने में आप सक्षम हैं। जैसे एक दीपक जलाया वह सामान्य से जलेगा तो 4 घण्टे की ड्यूटी दे देगा परन्तु यदि बाती भभक आये तो 10 मिनिट में भी पूरा जल जायेगा। दोनों अवस्था हैं, एक में भ्रष्ट हो जाता है, दूसरा यथावत् चल रहा है। जिस प्रकार विस्फोट से दिपक को बाती-तेल के माध्यम से बचाया जा सकता है, उसी प्रकार मृत्युयोग आदि अशुभयोग से इस शरीर को बचा सकते हैं।

मृत्यु से कोई भी, कभी भी नहीं बच सकता है किन्तु असमय मृत्यु से बचा जा सकता है। इसीलिए खगोलशास्त्र पढ़ते हैं, पढ़ना भी चाहिए। हाँ! उनका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। दुरुपयोग तो नहीं करते फिर भी भावों से दुरुपयोग हो जाता है। आचार्य भद्रबाहु अन्तिम श्रुतकेवली माने जाते हैं, उन्होंने अपने ज्ञान से जान लिया भविष्य में यहाँ 12 साल का अकाल पड़ने वाला है। 12 साल बाद का आज ही जान लिया और उन्होंने दक्षिण की ओर विहार कर लेना चाहिए ऐसा ठान लिया।

श्रावकों ने कहा - हम सब कर लेंगे, फलस्वरूप आधा संघ यहीं रुक गया और आधा संघ दक्षिण की ओर चला गया। इस भेद से साधुत्व में भी दोष आ गया / आँच आ गयी। साधु मात्र रह गये उनमें शिथिलाचार आ गया। अकाल तो टला नहीं। टल क्या गया? धर्म का पालन टल गया। काल का इस प्रकार योग रहता है,

उसे टाला नहीं जा सकता।

सर्दियों में इस प्रकार का वातावरण बनता है। सामूहिक कर्म का भी उदय रहता है। चारित्रमोहनीय कर्म का उदय है- ऐसा कहते हैं किन्तु द्रव्य- क्षेत्र- काल- भाव को भी कभी नहीं भूलना चाहिए। मात्र काल को लेकर बैठेंगे तो भी कुछ नहीं होगा। काल तो उदासीन प्रेरक है। उदासीन से आप प्रेरणा ले भी नहीं सकते हैं। प्रेरक कारण तो - पंचपरमेष्ठी, उनकी भक्ति, पुद्गल आदि हैं।

इस प्रकार भद्रबाहु ने जैन धर्म में बहुत बड़ा योगदान दिया/काम किया। धर्म बच गया (पुरातत्व की बातें करने वालो! इस प्रकार धर्म को बचाना अति आवश्यक है। बचने के उपक्रम तो बहुत सारे हो सकते हैं। ग्रन्थ लिखे हैं- पढ़ो तो। जैसे सर्दी में कहा जाता है- खटाई से बचो और दाना मेथी से [मत बचो] काल से बच ही नहीं सकते। दाना मेथी का प्रयोग किसी के योग के साथ भी होता है- मुनक्का, किशमिश अथवा छिवारा की कलियाँ डाल देते हैं।

ये सब काल में नहीं आते। आज से अवधारणा बनाओ, इस प्रकार की घटनायें हुई तो इनसे बचा जा सकता है। इतना ही कहना है - जो व्यक्ति एक तारीख की अवधारणा से आये हैं, वे याद करें कि पहले की एक तारीख में क्या-क्या घटित हुआ है। पहले भी इसका

उपयोग किया गया।

तभी तो 12000 मुनियों को दक्षिण की ओर लेकर गये। भगवान महावीर के बाद दो बार अकाल पड़ा। प्रथम की बात कर रहा हूँ। प्रथम अकाल जो पड़ा उसी के कारण धर्मों में परिवर्तन/शैथिल्य के कारण मन के अनुरूप लगा लिया था। इसी से धर्म का स्वरूप विकृत होता आ रहा है। घड़ी देखते हैं, काल के लिये नहीं, आपकी उम्र- घड़ी की उम्र क्या है? इस प्रकार के वातावरण में घट जाता है।

और भी बहुत सी बातें हैं एक-आध बोलकर पूरी कर लेता हूँ। ग्रह- नक्षत्र ये स्थायी रहते हैं, पृथ्वी घूमती है ये अवधारणा गलत है। विज्ञान भी यही मानता है कि पृथ्वी घूमकर सूर्य की परिक्रमा करती है। जब की सूर्य-चन्द्रमा परिक्रमा करते हैं इसके बिना मुहूर्त आदि बनेगा ही नहीं। विवाह बिना मुहूर्त के कैसे होगा? बोलो? अनिष्ट से बचना चाहते हो तो योग्य परिणाम/योग्य साधन अपनायें।

धर्म ध्यान की सामग्री है, उसे अपनाकर ही सक्षम हो पायेंगे। मुहूर्त निकालने में पृथ्वी को घूमना कभी भी आगम सम्मत नहीं है। तीन- चार बिन्दु और हैं, यदि समय मिल जायेगा तो फिर कभी देख लेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

-1-19 "गतिशील कौन? काल या आप" मझोल

इस काल तक आप अपने कर्मों के द्वारा चलते हुये आ चुके है। काल नहीं आया, काल गतिशील नहीं, प्रगतिशील तो हो ही नहीं सकता। मनुष्य गतिशील तो है ही प्रगतिशील भी है, विकास करना चाहे तो उन्नतिशील होकर चरम को पा सकता है। अभी आप सभी ने उत्साह से प्रतिमायें ली, भावनायें तो अटूट भरी हुयी है। भरत चक्रवर्ती ने भी कैलाश पर्वत पर स्वर्ण के 72 जिनालय बनवायें।

आज भी आप चक्रवर्ती तो नहीं है, पर चक्रवर्ती की तरह भावना तो कर ही सकते हैं। पहले एक ही व्यक्ति मंदिर बनवाता आदि से अन्त तक निर्माण कराता। अन्तोगत्वा पंच-कल्याणक हेतु सभी लोगो को निमन्त्रण देता। एक-एक सप्ताह तक किसी भी घर में चूल्हा नहीं जलेंगो। पंचकल्याणक मेरे बस की बात नहीं है, पुरा कार्य आप ही लोगो को सम्पन्न करना है, ऐसे-ऐसे भी दानदाता होते थे।

आज लोकतंत्र का युग है, इसी आधार पर सभी जनता को लाभ देते हुये यहाँ सब लोग हिलमिलकर यह कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है। केवल कार्यकर्ताओं का ही दायित्व नहीं हैं, भावों से सबको जुड़ना है। सभी एक स्वर में चलें, आप कार्य करते जाओ हम आपके साथ हैं। खुरई नगर के लोगो के लिये यह हनहोनी नहीं है। एक से एक लाल है- गुदड़ी के लाल है। पुरे के पुरे परिसर को ही लाल-लालमय

बना देते हैं।

खिमलासा से निकले थे तो एक-आध दिन रुकई रुककर देख लेंगे। परन्तु यहाँ के बड़े बाबा तो...। जहाँ पर पार्श्वनाथ भगवान विराजमान हैं, जिनके दर्शन श्रमण-श्रमणी-श्रावक देखने आते हैं। वितरागता से भरी प्रतिमा का दर्शन करके अपने आपको कृत-कृत मानते हैं। सभी पूजन-अभिषेक-जाप इत्यादि करसकें, यहाँ पर 750 घर हैं, इसीलिए एक-दो नहीं तीन मंजीला यह भव्य जिनालय आप बनाने जा रहे हैं।

पात्रों का भी चयन बहुत ही उत्साह के साथ हुआ। त्रिकाल चौबीसी एवं सहस्त्रकूट जिनालय का यह अनुष्ठान पूर्ण नहीं होगा, पंचकल्याणक नहीं होगा तब तक चुनाव की बात नहीं आयेगी। कार्यकर्ता इसमें पूर्ण योगदान देंगे। जबरदस्ती कुछ भी नहीं किया गया है। जबतक आपके होठों पर मुस्कान नहीं देखी-हमने कभी भी आशिर्वाद नहीं दिया है। बहुत ही प्रफुल्लित मन से इन्होंने अवसर का लाभ लिया है। ज्यादा समय नहीं है। अभी और भी कार्य शेष है, ब्रह्मचारी जी सम्पन्न करायेंगे।

जो निर्माण कमेटी बनायी गयी है, उसमें सभी ऐसे व्यक्ति है जो तन-मन-धन से सहयोग करेंगे। दानदाता भी समय देंगे। दो लाख का बोल रहे हैं, उत्साह तो सदैव बढ़ता ही रहे, मुठ्ठी बंधी रहे इसका ध्यान रखना। खाली पंजा अलग होता है और बंद मुठ्ठी...। लाख की खुली तो खाक की। सभी संकल्पित होकर कर्मठता से करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

2-1-2019 "धरती घूमती नहीं" प्रातः

देखो ज्योतिष मण्डल के माध्यमे भविष्य के विषय में अथवा निमित्त के विषय में जो धरती और आकाश में हलचलीयाँ होती है, वह ग्रहो-उपग्रहो के कारण होती है। प्राचीन काल से यह इतिहास भारत में तो आज तक अनवरत चला आ रहा है किन्तु विदेशो में इस प्रकार का अध्ययन किया ही नहीं। अध्ययन करें या न करें परन्तु वैपरित्य देखने को मिलता है तो गड़बड़ीयाँ नजर आती है।

4-5 वर्ष पूर्व की यह घटना है, जापान की घटना है। इसका सुनामी नाम दिया। एक बहुत बड़ा चक्रवात था जिसका नाम सुनामी दिया। नाम तो अच्छा दे दिया पर कार्य अच्छा नहीं था। फिर भी सुनामी क्यों रखा पता नहीं। इतना बड़ा चक्रवात आने वाला है, यह उन वैज्ञानिको की दृष्टि में नहीं आया। यह पुछ सकते है जो खगोल / धरती के बारे जानकारी रखते हैं।

धरती स्थिर रहती है, समुद्र में ज्वालामुखी आदि आते है तो धरती फट जाती है। धरती घुमती तो उसमें दरार नहीं आती। धरती के नीचे जल ही जल है। भूकम्प आदि आने से पूर्व कोसो दूर रहने वाले पशु-पक्षीयों को यह पूर्वाभास हो जाता है। जंगल में रहने वाले हाथी भी एक-एक रात में 100-100 किमी. की दूरी नाप कर अन्यत्र दूर भाग जाते हैं। उस जलरेखा से दूर हो जाते हैं, आने

को सुरक्षित कर लेते हैं।

ऊँट तो भाग ही लेता है, उसे रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। मरुभूमि का जहाज। मरुभूमि शुद्ध पाठ्यक्रम का शब्द है, रेत के स्थान पर हमने अपने कोश में मरुभूमि रखा। [मरुदेवी राजस्थान में नहीं रहती।] तो पशु-पक्षी तक ने उस स्थान को छोड़ दिया, इसे बोलते हैं निमित्तज्ञान। आप कहते हो पशु-पक्षी में ज्ञान नहीं, ऐसा नहीं हैं।

वे धरती में - आसमान में क्या परिवर्तन होने वाले हैं, पहले से ही नाप लेते हैं। यह उनके पास रक्षा-कवच है, नहीं तो बच ही नहीं पायेंगे। पहले वह ज्ञान किया होगा वह ज्ञान उन्हे हो जाता है। मैं छोटा था तो एक दृश्य मैंने देखा। कुछ समय तो देख लिया, पूछा नहीं बाद में ज्ञात हो गया उसका रहस्य। एक चिड़िया थी - मिट्टी में स्नान कर रही थी। जल में नहीं मिट्टी (धूल) में स्नान। मतलब वर्षा आने वाली है।

मिट्टी से स्नान नहीं होता? होता है। आप भी तो मुलतानी मिट्टी से स्नान करते हैं। मुनि महाराज को भी मिट्टी पर सोने के लिए कहा गया है। मतलब अब जल आना है। पूरा स्नान हो जाता है। यह पक्षियों को जो घटना घटने वाली है उसका पूर्व में ही ज्ञान हो जाता है। जब सुनामी आयी थी तब धरती में ऐसी दरार पड़ी कि जिसमें हिमालय भी समाहित हो जाये। क्या समझते

है आप? उसमें कितना पानी होगा?

पूर्वाभास, पूर्वज्ञान, निमित्तों को लेकर धरती को परिक्रमा करने वाला मानना गलत सिद्ध हो जायेगा। भारतीय खगोलशास्त्रीयो का भी मानना है धरती तो निस्पंद रहती है। आप भी सोचो कि कोई घूमती हुयी चीज पर आप खड़े कैसे हो पायेगे। बहते हुये पानी मे तो अच्छे-अच्छे तैराक भी तैर नहीं सकते।

माथा घूम जायेगा। चिड़िया और पशु-पक्षी एक समूह में रहते हैं, धरती पर इस प्रकार को परिवर्तन का आभास होने पर वे सभी अन्यत्र चले जाते हैं, यदि धरती घूमती रहती है तो फिर अन्यत्र भी ऐसा ही होगा, उनका रक्षण कैसे होगा? इसलिये यह स्पष्ट है कि धरती घूमती नहीं। भूकंप का अर्थ भी यही है, भू जो स्थायी रहती है उसमें हलचल होना उसी को कम्प कहते है।

जैसे कहने में आता है वे तो बिल्कुल भी बोलते नहीं है, बुलवाने पर भी नहीं बोलते। अरे भैया! उनके एक-आध शब्द बोलने से ही भूकम्प आ जाता है। सभी उसका उल्टा ही अर्थ निकालते हैं। इससे भी सिद्ध है कि भूकम्प शब्द स्वयं बता रहा है कि पृथ्वी स्थिर है वह परिक्रमा नहीं लगाती। ऐसे सैकड़ों बिन्दु हम मुहूर्त (नक्षत्र/ग्रह-उपग्रहों

से निकाल सकते हैं।

एक धूमकेतु होता है। वह अपने स्थान से स्थानान्तर होता रहता है। अपने-अपने अयन होते हैं, उसी में चलते रहते हैं। अपने अयन को छोड़ देने से ही आपस में उपग्रह टकरा जाते हैं। उस टकराहट से धूमकेतु ध्वजा होती है। इसे भी निमित्त में मानते हैं। उस राजा पर, राज्य पर कैसा प्रभाव पड़ेगा, दुर्भिक्ष आदि का भी ज्ञान हो जाता है। ये सब बिन्दु आपके सामने रखें।

द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव के अनुसार भी चलना होता है। धरती घूम नहीं रही, ज्योतिष्क मण्डल स्थिर नहीं है। इन सबका प्रभाव धरती पर किस-किस प्रकार से पड़ता है ये सब उल्लेख हमारे आचार्यों/संतों ने किया। कर्म अपनी सत्ता में स्थिर रहता है, किन्तु जब स्थिति पूर्ण हो जावे अथवा भावों का धक्का लग जावे तो "अकाले पक्के उदीरणा" कर्म का फल मिल जाता है।

अभी धरती कम्प नहीं रही है, शांति से माला फेर लो। मिलना कर लूं-इसीलिए मुहूर्त भी अच्छा शोधकर निकाला पर देखते क्या हैं अभी मण्डप भी गिरा नहीं पर घटनायें घट जाती हैं। सभी भयभीत हो रहे हैं पर ये असल सिद्धान्त हैं। इसका वेग इतना कि सैंकड़ों मील से भी खनिज पदार्थ फिक जाते हैं। लावा आदि सामुद्रिक अग्नि फैलती रहती है। मोह का तूफान भी उस लावा की तरह ही होता है। भगवान ही जाने। भूकम्प फटने से केवलज्ञान नहीं पर मोह रूपी भूकम्प आने पर जिनको केवलज्ञान हुआ उनको प्रणाम करते हुये।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

3-1-19 "कोई छोटा-बड़ा नहीं" प्रातः

कहीं भी जाकर देख लो दुनिया में एक से एक सेठ-साहुकार घुमते हैं, स्वर्गों में भी जहाँ तक पुराण ग्रन्थों से ज्ञात होता है सभी के घर अच्छे से बने हुये होते हैं। गरीब भी अपनी कुटिया बना लेता है। अमीर का महल होता है जिसमें चारों तरफ से आने के बहुत बड़े-बड़े दरवाजे होते हैं। उसमें गरीब की अपेक्षा सुख-सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जाता है।

लेकिन ध्यान रखना सेठ-साहुकार के यहाँ आने-जाने के द्वार अलग-अलग हो सकते हैं/अनेक द्वार हो सकते हैं, ऐसे गरीब से गरीब की कुटिया भी क्यों न हो, छोटी भी होगी तो भी उसमें एक दरवाजा तो जरूर लटका होगा। कहते हैं न: थोड़ा दरवाजा लटका दो। इसका यह अर्थ हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति/वस्तु में एक न एक प्रशंसा के योग्य गुण जरूर होते हैं। किसी मनुष्य के पास ज्यादा गुण नहीं हैं किन्तु वह एक-एक गुण का संग्रह तो कर ही सकता है।

एक दिन वह आता है कि वह व्यक्ति गुणों का धाम बन जाता है। आचार्यों ने कहा कि अपने गुण नहीं भी दिखते मतलब गुण नहीं भी है तो भी दूसरों को गुण बताने का साहस करते रहते हैं, सामने वाले के पास गुण हैं तो भी (आनाकानी) अनदेखा कर देते हैं। किन्तु सिद्धों के गुणों में कभी हेरफेर देखने को नहीं मिलता। उनके गुणों में हमेशा समानता पाई जाती है, विषमता तीन काल में

नहीं होती।

जैसे कोई पानी की नालिका है, उसके माध्यम से वाटर-लैवल नापते हैं। एक तरफ जो लैवल होगा, दूसरे छोर पर भी वही लैवल होगा। समानता रहती है। इसी प्रकार चाहे आज के सिद्ध बने हो उनका जो लैवल है वही पहले जो सिद्धपरमेष्ठी बने हैं उनका है। समझ रहे हैं न आप? ऐसे मत समझना कि हम देर से सिद्ध हुये तो हमारी गिनती नहीं होगी। दुनिया जिनकी विनती करती है तो उनकी गिनती में कैसा प्रश्न? छोटा-बड़ा, आगे-पीछे क्यों सोचते हो? इसी का नाम तो संसार है।

आपने देखा होगा जलीय स्तर सदैव समान होता है। हाँ! प्रवाह है तो संभव है ऊपर-नीचे हो सकता है परन्तु जब समुद्र में पहुँच जाये तो एक ही लैवल देखने को उपलब्ध होता है। गुणों को यदि अपनाना चाहते हो तो सर्वत्र मिल जायेंगे। ग्रन्थों में कई प्रकार से पदार्थ के भेद बताये। स्थूल एवं स्थूल-स्थूल भी उसमें भेद किये। स्थूल-स्थूल को तोड़ने पर वह पुनः जुड़ता नहीं जैसे-पत्थर आदि पर स्थूल में पता ही नहीं चलता है और जुड़ा हुआ ही दिखता है। जैसे-जल।

जल में से एक कटोरा बाहर निकाला, वहाँ गड्ढा नहीं हुआ समानता ही रही, कितना भी पानी निकालो वह समान ही बना रहेगा। ऐसा हम सब भी अपने जीवन को कर सकते हैं। सब ठीक-ठाक हो जायेगा। जैसे दीवार बनाते हैं, वह कैसी भी

रहे, लेबल एक सा कर देते हैं।

उसी को सब देखते हैं। गुणों में ही समानता हो, अच्छे-अच्छे व्यक्ति भी उन गुणों से आकृष्ट होते हैं। गुणों की उपासना नहीं की है तो प्रशंसा नहीं कभी मिलेगा। जैन-दर्शन गुणों का ही समर्थन करता है। द्रव्य की पहचान भी गुणों से ही होती है। कर्म भी इसी पर आधारित होते हैं। सुन रहे हैं आप (हिओ) मैं सुन्दर/रूपवान हूँ ये शरीर का गुण धर्म है, आत्मा का नहीं। इसे स(मझना) होगा। आत्म तत्त्व का चिन्तन करो।

ये तो पुद्गल की परिणति है, ये भी चिन्तन नहीं तो मुक्ति कैसे मिलेगी। खरीद लेंगे। नहीं कर सकते। खूब दान दे देंगे तो भी नहीं। त्याग करना पड़ेगा, ऐसा त्याग दोबारा रखेंगे ही नहीं। आजकल त्याग भी अलग हिसाब से होता है, एक व्यक्ति ने कहा - दे-दो - अंगूठी दे दी। घर पर जाकर-नयी मंगवा दो। ऐसे में दान नहीं किया अपना जुगाड़ कर लिया। पहले पतली थी अबके बार मोटी बनवाली। अभी भी यह मोहभाव होता है।

दान में अवश्य ही आदान की बात नहीं सोचना चाहिए। दे दिया अब सोचना नहीं, अपना था ही नहीं। इसी विश्वास को सदृढ़ रखकर दान की परम्परा चल रही है। ये से. जी का मन्दिर नहीं तीन लोक के से. का मन्दिर है। सही बात है- सभी ने समर्थन कर दिया। मनवचनकाय कृत कारित अनुमोदना से किया तभी मुक्तिधाम मिलेगा। राजस्थान में भगवान को ठाकुर जी भी बोलते हैं ठाकुर साब को नमोऽस्तु। गुणों के ऐसे श्रेष्ठ धारक हम सभी का मार्ग प्रशस्त करें। अहिंसा परमो धर्म की जय। हैं

5-1-19 "उत्साह में होता आनन्द" प्रातः

देखो! कोई व्यक्ति बहुत ही अच्छे मीठे रसदार फल वाले वृक्ष जिसको आम बोलते है। उसको लगाना चाहता है, लेकर आया स्थान भी चयनित करके रोपता है ऊपर से प्रकाश आदि आता रहे, सूर्यनारायण की कृपा बनी रहे, खाद भी डालता रहा, निगरानी भी करता, भावों से भी यह पौधा जल्दी-जल्दी बड़ा हो जाये। फिर भी अनुकूल साधन सामग्री जुटाना अलग है, इसके साथ ही प्रतिकूलताओं से बचाना भी जरूरी है।

पौधा लगाया उसके साथ एक लकड़ी को भी रस्सी से बाँध दिया, सपोर्ट के लिए। वह पौधा तो धीरे-धीरे ऊपर जा रहा है, लेकिन लकड़ी अथवा रस्सी तो ऊपर नहीं जाता है। इसी के साथ लकड़ी एवं रस्सी को इस प्रकार से बाँधते है ताकि वह पेड़ के विकास में किसी भी तरह से बाधक न हो। फिर जब वह पौधा और बड़ा हो जाता है तो उसके चारो ओर जाली (बाड़ी) इत्यादी बांधते हैं ताकि पशु आदि गाय-भैंस उसे हानि न पहुँचाये।

इस प्रकार जब वह वृक्ष 8-10 फीट का हो जाता है, तो ये सब दुर हो जाते है। अब वह दूसरो को छाया देने लायक भी हो जाता है। अब पशुओं द्वारा उसको खाने की बात नहीं - छाया की ओर दृष्टि रहती है। इस प्रकार आपने बाग-बगीचे में अथवा किसी नियत में देखा होगा। समय पर सब कुछ करते हैं। मोक्षमार्ग में भी भावों का ध्यान रखा जाता है उसी के लिये शरीर को

योग्य/अनुकूल साधन जुटाना आवश्यक होता है।

कसकर बांध दोगे तो पौधा कभी भी ऊपर नहीं उठ पायेगा। मोक्षमार्ग में भी उत्साह नहीं बन पायेगा। उत्साह नहीं है तो फिर या तो पीछे मुड़ो या वहीं पर बैठे रहो। बैठा-बैठा ही कहेगा - मैं भी आ रहा हूँ। हम कह देते हैं - हाँ! आ जाओ, हम धीरे-धीरे चलते हैं। आप आ जाना। हमारी चाल धीमी है, हम आगे बढ़ते हैं। आवाज लगाते रहो। हम रुककर साथ नहीं दे सकते। रुकने के बाद तो रुकना ही होता है।

ऐसे में कितने स्टेशन बनाओगे। अनंतकाल से तो रुकना ही लगा हुआ है। "जिस प्रकार उस पौधे के लिए (देव गुरु, शास्त्र) लकड़ी-रस्सी का आलम्बन जरूरी होता है उसी प्रकार जीवन को आगे बढ़ाने में हमें देव गुरु शास्त्र का आलम्बन लेना आवश्यक है।" किन्तु वह लकड़ी-रस्सी कब तक.. उसी प्रकार इसी को पकड़कर बैठना ठीक नहीं है।

जैसे जिनवाणी को रखने वाला पुस्तकालय खोलकर बैठा है पर अपने लिए नहीं - दूसरों के लिए। मुनिमहाराज हैं वे एक-आध घण्टे भी पढ़ लिये और वहीं पर शास्त्र को दूसरों के लिए छोड़ दिये। इसलिए स्वयं स्वाध्याय न करके पुस्तकालय खोल ले तो बात समझ में नहीं आती। सुन रहे हो कि नहीं? (हाँ) (पढ़ने योग्य है, भाव समझने योग्य है। साथ ही रखें ये कोई आवश्यक नहीं। अन्यथा अम्बार

ही लग जायेगा।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने प्रवचनसार में कहा शास्त्र उपकरण है। किन्तु कुछ ऐसे भी साधक हैं जो शास्त्र के बिना भी अपना काम चला लेते हैं। इस उपकरण को रखते ही नहीं। जिनका क्षयोपशम कमजोर है अथवा जिनकी विस्मरण शक्ति तेज है उनके लिए इसका आलम्बन लेने योग्य है, पर कितना? इसका ध्यान रखना चाहिए। देव गुरु शास्त्र इनके द्वारा आत्मा का बोध दृढ़ होता है।

शास्त्र की तरह देव को देखने मात्र से हमें आत्मबोध होता है। चित्रकार पेन्टींग करता है, पेन्टींग की अनेक पद्धतियाँ होती हैं, एक तो out line (Border) के माध्यम से दूसरा सीधे ही रंगो के माध्यम से बिना पेन्सील चित्र बनाता जाता है। कुछ समय के लिए आँखों को बंद भी कर लेता है फिर भी नाप-तोल से करता जाता है। यह स्वालम्बन क्रिया है जो बाद में आती है। किसी को क्षयोपशम ज्यादा शुरुआत से ही होता है, किसी को कम होता है।

इसलिए कभी भी संदेह नहीं करना चाहिए। कितना समय देना? कब तक करना? दीर्घ संहनन वाले भी होते हैं, नग्न काया पिच्छी कमण्डलु मात्र रखते हैं। वर्धमान चारित्री अथवा कुछ ऋद्धिधारी मुनिमहाराज को तो पिच्छी-कमण्डलु की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि उनको आहार की जरूरत नहीं, आहार हो तो मल-मूत्र नहीं होता। आदिकाल से यह परम्परा यहाँ तक आयी है, यही मोक्षमार्ग का रहस्य है। इसी से जिनबिम्ब स्थापना

का रहस्य / स्वरूप समझ में आ जाता है।

जैसे चित्र देखने पर सब समझ में आ जाता है, वैसे ही जिनबिम्ब देखने पर फिर बताने की आवश्यकता नहीं। वीतरागता समझ में आ जाती है, तिल-तुष मात्र परिग्रह भी नहीं रखते। इनका कोई परिवार नहीं, कोई रिश्ते-नाते नहीं हैं। ये सब देखकर ही स्वयं चिन्तन में आने लग जाता है। इसलिये हमने कई बार देखा - भीड़ आयी है इनको दर्शन करने दो। हमने तो आँखों को बंद कर लिया और दर्शन पा लिये।

घर वाले याद रखते हैं, जब चित्र दिखता है तो उसी आधार पर काम करते चले जाते हैं। (मन्दिर-निर्माण) धीरे-धीरे ठान लिया है, हमारे पास आ रहे हैं उत्साह बढ़ता ही जा रहा है, कायोत्सर्ग पूर्ण करते जा रहे हैं। निवेदन कर रहे हैं- नामकरण भी होना चाहिए। आप ही रख लो कोई नाम। दुकान का - मकान का नाम नहीं रखते क्या? गाड़ियों पर भी नाम लिखे रहते हैं। [आपके मुख से] हमने सोचा है - "आनन्द धाम" धूमधाम है - आनंद धाम है।

आनंद क्या है? आनंद के लिए ही तो प्रभु ने साधना की। शास्त्रों में हमें भी यही उपदेश मिलता है- आनंद कैसे मिले। सुख कहो- आनंद कहो एकार्थ है। यही मोक्षमार्ग का उद्देश्य है। इस आनन्द को देखकर भीतर के आनन्द को जगाते रहो। वहाँ भरा हुआ रहना चाहिए। पसंद आया यह नाम? तो जयजयकार करो। आनंद धाम की जय!

अहिंसा परमो धर्म की जय है

5-1-19 ## चंचल कौन? प्रातः

प्रायः यह कहा जाता है कि बंदर बहुत चंचल होता है। सुना है आपने? महाराज सुना ही नहीं पढ़ा भी है। तो सुना है वह भी गलत है, पढ़ा है वह भी गलत है और देखा है वह भी गलत है। ये कैसे? चंचलता उसकी किसमें है, ये देखना पहले आवश्यक [होता] है। बच्चे जितने चंचल होंगे आगामी काल में उतनी ही स्थिरता से काम करेगा। उस उम्र में आप उसे बांधना चाहते है। छोटी उम्र में ही जल्दी-जल्दी ज्ञान भरना चाहते हैं।

अपने ज्ञान को तो खाली करना चाहते है और उसमें भरना चाहते हैं। आप सोचते हैं अब हम बूढ़े हो गये काम में तो आयेगा नहीं इसलिये उसमें भर दें- यह बिल्कुल गलत हैं। चंचलता किसमें हैं उसकी बुद्धि में है या शारीरिक गतिविधियों में है, ये देखना पहले जरूरी है। "शारीरिक गति विधियों में चंचलता का होना हानिप्रद नहीं, लाभप्रद है।" वह सुनता है, बोलता है कि नहीं? एक ही बार में पूरा पाठ सुना देगा।

'बस्ता-स्लेट की जरूरत तो विद्यालय में होती हैं, माँ के विद्यालय में इनकी कोई जरूरत नहीं।" माँ ऐसी गुरु होती है जो भी सीख देती है वह जीवन के अन्तिम समय, मरण तक याद रहती है। इसलिए बंदर के विषय में चंचलता मानी है- ये सोचना है। "किसान एवं बंदर" "आषाढ़ का चूका किसान - एवं डाल से चूका बंदर" दोनों ही

कोई काम के नहीं होते।

बंदर को चंचल कहने वालो! वह डाल से कभी फिसलता नहीं। और आपके जीवन में मात्र फिसलन ही फिसलन है। पैरों से फिसल जाये तो फिर भी ठीक आप तो दिमाग से भी फिसले हैं, हाथों से भी फिसले है। मन-वचन-काय सबमें फिसलन है। बंदर आपकी क्या समीक्षा करता होगा, आप ही सोच लो। आजकल के किसान तो ज्येष्ठ से भी चूक गये, आषाढ़ से भी चूक गये फिर श्रावण में आँखो में पानी लाते हैं। सरकार के सामने कहते हैं- हमारा करजा माफ कर दो।

अरे! मरना है तो मरजा, जीते जी कुछ कर जा वरना करजा तो मत कर जा। सिर पर लेकर जा रहे हो। इसलिये बंदर अचूक कूदता है। जहाँ कूदना है वहीं कूदता है। क्षणभर में कूदकर दूर हो जाता है मतलब सुरक्षित हो जाता है। वह अपनी सुरक्षा हेतु किसी को बुलाता नहीं हैं। चाहे वृद्ध हो या प्रौढ़ हो, एक-दो दिन का जन्मा भी क्यों न हो। बंदरिया (माँ) से वह चिपका रहता है, कितनी भी छलांग ले वह घबराता नहीं है।

वह बच्चा अकेला भी कूदता रहता है, अपने को सुरक्षित रखता है। आप चंचल बोल रहे हो, एक क्षण भी चूकता नहीं। बहुत जल्दी सीख लेता है फिर तो बड़े बंदर डाल-डाल तो ये नन्हा सा पात-पात चलना शुरु कर देता है। हम अभी

तक समझ नहीं पा रहे हैं।

इसलिए चंचलता कई प्रकार की होती है। सिद्धान्त की दृष्टि से भी समझ ले। वे मुनि महाराज वचन में सबसे ज्यादा चंचल रहते हैं। किन्तु वे ही एक अन्तर्मुहूर्त में द्वादशांग का पाठ भी कर लेते हैं। एक अन्तर्मुहूर्त में पुरे द्वादशांग का पाठ करने वाले को चंचल कैसे कह रहे हो? वचन से चंचल नहीं वे तो संयमी हैं। इरादा कर लेते हैं- असफल नहीं रहते, बंदर की तरह।

एक बात और है- यदि बंदर थोड़ा सा भी असफल हो जाये तो --: पुरी बिरादरी/समाज से ही उसे/वंश में कलंक मानकर बाहर कर दिया जाता है। सुन रहे हो कि नहीं? इसमें तो चंचलता नहीं है न? बंदर की मानसिक शुद्धि- वचन की शुद्धि और काय की शुद्धि तो ठीक है ही। एक क्षण में कहाँ का कहाँ चला जाता है। विमान की तरह गतिशील रहता है परन्तु बिल्कुल Balance रहता है/ संतुलित रहता है।

जब वह कूदता है तो उसकी पूंछ की आकृति कैसी होती है? [चाय की केटली] शांतिधारा की झारी नहीं बोल सकते हैं? ये ही तो चंचलता कहलाती है। वह बंदर सीधी पूंछ से कभी छलांग नहीं लेता- मुडी (ᔑ) रहती है। Yes (ऐस) की तरह। इसलिए सदैव अपने हाथों-पैरों की अपेक्षा मन को स्थिर रखें। एक अंश का भी हेर-फेर नहीं

होना चाहिए, जीवन सफल हो जायेगा।

मन-वचन-काय तीनों की शुद्धि अनिवार्य है। ये तभी सम्भव है जब अचंचल होंगे। अब आगे से नहीं कहना कि बंदर चंचल है। अपने को बंदर के समान बनालो। बुद्धि को स्थिर रखने वाला ही मन-वचन-काय को स्थिर रख सकता है। मन-वचन-काय यदि स्थिर हो गये तो जीवन में फिर कुछ भी असंभव नहीं है। ऐसे संस्कार हमें बार-बार डालना चाहिए।

इसी से हम असि-मसि-कृषि आदि षट्कर्म हो या धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ हो, सभी में सफल हो सकते हैं "जो कम्मे सूरा-सो धम्मे सूरा" आज क्या कर्म है-क्या धर्म है? इसे भूल चुके हैं। धर्म भाववाचक है। कर्म के माध्यम से हम उसे पा सकेंगे। पर कर्म को शुद्ध रखना भी आवश्यक है तभी परिणाम भी शुद्ध आयेगा। Result शुद्ध चाहते है तो कार्य शुद्ध हो। फिर देखो-हर क्षेत्र में सफल होंगे विफलता की बात ही नहीं।

फल तो लगा पर गिर गया, यह विफल है। जितना अपेक्षित है उतना समय डालपर दे दिया, वह पुष्ट भी हो जाता है, पक भी जाता है। तभी संभव है जब सर्दी-गर्मी-वर्षा से वह बचना नहीं चाहता है। तभी सुगंधी फूटती है। आप उसको खरीदना चाहते हैं। मनुष्य भी यदि कष्ट सहिष्णु हो जाता है तो अवश्य ही उसे सफलता का फल मिल जाता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रविवार
6-1-19 "प्रवचनांश" प्रातः

- चलना जब भी होता है एक पैर से होता है, दुसरा जमीन पर स्थिर रहता है। दोनों पैर से चलना नहीं होता कूदना होता है।
- आत्म चिंतन कम होता है और पढ़ाई-लिखाई ज्यादा।
- पैरो से चलते है पर संतुलन तो हाथों से ही बनता है। उदाहरण- सर्कस में तार पर चलना किन्तु हाथ से पुरा संतुलन रखा जाता है। सेना में भी Left- Right, दांये-बांये हाथों से संतुलन रखा जाता है।
- बंदर के पास दो ही पॉव है किन्तु हाथों को भी वह पांवो की तरह काम में लेता है, इसीलिए मनुष्य का सबसे निकटवर्ती है- बंदर। आप नर है तो वह वानर कहलाता है।
- सर्दी से बचने के लिए हाथ जेब में मत रखो अन्यथा असंतुलित होने में समय नहीं लगेगा फिर केले के छिलके पर पॉव चले जाये तो कहना ही क्या?
- चलने में केवल पाँव अथवा हाथ ही काम में नहीं लिए जाते अपितु दिमाग भी काम करता है। दिमाग ही नहीं अन्य अंगो का भी सहारा लेना होता है। श्वांस भी लेना एवं छोड़ना होता है।
- श्वांस भी नाक से लेना होता है। मुख से श्वांस लेने पर जीव-जन्तु आदि का प्रवेश हो सकता है। अन्य सभी अंग सहयोग करते हैं। भोजन करते समय यदि गलती से भोजन श्वांस-

नलिका में चला जाये तो क्या होगा? ठस्का लग जायेगा, जीवन से हाथ धोना पड़ सकता है।

o आपकी थोड़ी सी असावधानी आपके जीवन को दुःखमय बना देती है।

o उत्तर सही देने पर ही नम्बर मिलते हैं, ऐसे नहीं। हमारे यहाँ माँगने से नम्बर नहीं मिलते।

o गुरुत्वाकर्षण शक्ति का भी संतुलन बनाने में बहुत बड़ी भूमिका है।

o व्यवधान आने पर ध्वनि देते हैं, पर आज समस्या यह है कि ध्वनि कहाँ से आ रही है, ये ही पता नहीं होता। मोबाइल अपना बज रहा है या दूसरे का पता नहीं। इतना ही नहीं ऊपर की जेब में बज रहा है या नीचे की जेब में। इसी प्रकार पीछे से ध्वनि आ रही है या आगे से कोई मतलब नहीं।

o व्यस्त कार्यक्रम होने से सावधानी लुप्त हो चुकी है।

o आज अनिवार्य प्रश्न को तो छोड़ रहे हैं, शेष प्रश्न को हल करने में लगे हैं। अनिवार्य तो अनिवार्य होता है।

o भयानक रोगों को आमन्त्रण दे रहा है Fast food। विदेश में आयुर्वेद को अपना रहे हैं क्यों कि ऐलोपैथी के दुष्परिणाम जान चुके हैं।

o चौके में - Fast food का त्याग है क्या? - 15 दिन, बाहर जाओ। बाहर मत भेजो, उसके भावों को बढ़ाओ। समझ में आते ही जीवन पर्यन्त के लिए त्याग कर देता है।

o 2025 तक हर घर में एक सदस्य होगा भयानक बिमारी से ग्रसित।

- जर्सी गाय का दूध होता है बिमारी का कारण (कैंसर), विदेशी नस्ल है, भारत की उपज नहीं। "क्वालिटी देखो - क्वांटिटी नहीं।"
- पैसा कमाने में भी सावधानी नहीं रखोगे तो वह अभिशाप सिद्ध होगा।
- सब्जीयाँ पर हरा रंग, इंजेक्शन से लौकी का बढ़ना जरा सोचो तो लौकिक प्राणीयों!
- आपको निरीक्षण भी करना है और परीक्षण भी तभी इन जहरो से बच सकते हो।
- आज पढ़-लिखकर भी निर्णय लेने में सक्षम नहीं हैं - क्या करें हम 8वीं class भी नहीं पढ़े। हमारा आशीर्वाद तभी काम करेगा जब विद्यालय को छोड़ दोगे। आधुनिक शिक्षा प्रणाली बिल्कुल ही गलत है।
- विदेशी खान-पान, विदेशी पठन-पाठन, विदेशी रहन-सहन, विदेशी चिंतन ने सबकुछ खोखला कर दिया है।
- संयम का संतुलन ज्ञान के बिना नहीं पर ज्ञान के संतुलन के लिए भी संयम का होना बहुत आवश्यक है।
- संतुलन पैंफर प्रत्येक दुकान पर लटके रहने चाहिए। "सम समीचिनम् तुलायां निक्षिप्तं इति संतुलनम्"
- हॉफ माइन्ड नहीं - फुल माइन्ड से काम लो।
- उत्तर अध्ययन की उपज है, प्रश्न से उत्तर नहीं होता।
- यदि अभी भी नहीं सुधर पायेंगे तो अंधकार में भटकोगे। संतान पर ही धिक्कार लग जायेगा।

०००

7-1-19 "रहस्य जानें अर्थ बोध का" प्रातः

सुनो! पढ़े-लिखे लोगों सुनो! पहले पढ़ते-लिखते नहीं हैं सुनना सबसे पहले प्रारम्भ करते [होते] हैं। क्या सुनते हैं? पहले जिस पदार्थ से प्रयोजन रहता है उसका परिचय कराया जाता है। ताकि उसी ओर ध्यान जा सके, वही सही पहचान मानी जाती है, अन्य और कोई भी शब्दों की ओर ध्यान न जाये। जैसे- 'अ' अनार का, 'आ' आम का। लिखना-पढ़ना-देखना-सुनना कुछ नहीं, इसी को प्रत्यक्ष ज्ञान बोलते हैं।

जैसे ही अनार कहा बस अब आँखों के भीतर वही रूप आ गया है, अनार लाल-लाल होती है उसमें दाने होते हैं आदि-आदि। इससे अबोध बालक भी बोध पा जाता है। किन्तु आज ऐसा नहीं हो रहा है, अब तो Note-book, स्लेट-बस्ता चाहिए, ट्यूशन चाहिये, वो भी एक बार नहीं 4-4 बार ट्यूशन। इन सबके बाद भी अर्थ बोध नहीं हो रहा है, जिसकी आवश्यकता है वह नहीं हो रहा है।

ऐसी पढ़ाई का क्या प्रयोजन? करोड़ों-अरबों रुपये व्यय हो रहे हैं, किन्तु जिसकी पहचान होनी चाहिए वही नहीं हो पा रही। इसलिये भी नहीं किया जा रहा कि उस ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना ही नहीं चाहते। प्राचीन पद्धति ऐसी नहीं थी। वे समझदार थे, आप पढ़े-लिखे होकर भी मझधार में हैं। लोगो! वह बच्चा अनार का नाम लेते ही उसको पहचानता है इसीलिए

उसका ध्यान उस ओर चला जाता है।

आज की शिक्षा प्रणाली में वस्तु का बोध न करने से वह विमुख होता जा रहा है। पहले कम समय में भी ऐसा बोध दिया जाता था कि स्वयं तो खड़ा होता ही था दूसरों को भी खड़ा कर देता था, आज स्वयं ही लड़खड़ा रहा है, दूसरों की क्या बात करेगा। अब स्वाश्रित नहीं - पराश्रित होते जा रहे हैं। मूलवस्तु से प्रयोजन नहीं रहा।

दिख रहा है पर बिना स्वाद का। आम से उसका प्रयोजन रहा ही नहीं। वस्तु से यदि परिचय हो जाये तो फिर गूंगा हो या बहरा हो, भले ही बोल नहीं पा रहा पर वह जान/देख रहा है। अतः वस्तु से परिचय प्राप्त कर लीजिये। जो फोटो ले रहे हैं उससे परिचय भी मिले। ऐसे ही सत्कार्य करने चाहिए। यहाँ जिन बिम्ब की स्थापना करने जा रहे हो, ये कौन है? मनुष्य जैसे लगते हैं, पर ये मनुष्य नहीं, ये तो महात्मा ही हैं।

हम जैसे हैं पर हम से ऊपर उठे हुये हैं। इन्हें कभी किसी पदार्थ की आवश्यकता नहीं है, हमें रात-दिन सिर दर्द ही लगा रहता है। यदि मिल भी जाता है तो दूसरी इच्छा और खड़ी हो जाती है। आप लोग यहाँ जिनालय की स्थापना करने जा रहे हैं। नामकरण हेतु निवेदन कर रहे थे। हमें बहुत सोचना पड़ा। आपलोगों के पुण्य से आ ही गया। धूमधाम से घोषणा हुई सानंद

धाम की।

क्यों कैसा लगा? कार्यकर्ताओं को भी अच्छा लगा? बातों से नहीं कह रहे हो? कार्य करना है-बातें नहीं। अपनी-अपनी कुव्वत के अनुसार अपनी इस आस्था को मूर्त रूप देना है। समय को बचाते हुये काम करना है। सर्दी में अपने आप ही पैर दौड़ने लग जाते हैं, और गर्मी में पाँव उठते ही नहीं।

इसलिये मैं हमेशा कहता हूँ कि सर्दी बूढ़ों को भी भगा देती है और गर्मी जवान भी क्यों न हो उसे भी रोक देती है। कौनसी गर्मी? पैसों की गर्मी मत समझना। धार्मिक क्षेत्र में वैराग्य का होना भी जरूरी है। संसार से वैराग्य हो। सर्दी में भी भागने लग जाता है। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जल्दी-जल्दी भागकर भगवान तक पहुँच जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जयतु

"घी का कॉलेस्ट्रॉल से सम्बन्ध नहीं"

"विज्ञान पहले भारतीय संस्कृति के विरोध में बोलता है फिर दुष्परिणाम आने पर अपनी ही बात को गलत कहने लगता है। हार्ट की बिमारी का प्रबल कारण घी को मानकर तेल खिलाना शुरु कर दिया फिर अब तेल के अनेक दुष्परिणाम विज्ञान बताने लगा। आप भी कहते हैं- घी कभी भी नुकसानदायक नहीं हो सकता। पुण्यवान ही घी, दूध, दही का सेवन करता है। घी तो अन्य दोषों को भी गुण में बदल देता है। अर्थात गुणवृत है घी।"

8-1-19 "अहित का विसर्जन करता हित का सर्जन" प्रातः

आप लोगों को ज्ञात होगा कि जल से यदि मछली थोड़ी देर के लिये भी बाहर आ जाती है या कर दिया जाता है तो वह तड़पने लग जाती है। सुना है आपने? मतलब सब लोगों ने सुना भी है, देखा भी है। तो वह बाहर आने पर क्यों तड़पती है? जल के अभाव में? या प्राणवायु के अभाव में तड़पती है? एक बात बताओ। जल के अभाव में तड़पती है, ये भ्रम:कर धारणा है।

हवा की अति होने से प्राणवायु की मात्रा ज्यादा हो जाने से मछली तड़पती है। अनुपात से होना जरूरी है। जल में उसके लिए प्राणवायु ठीक मिलती है, बाहर में अधिक इसी के विपरीत यदि मनुष्य को जल में डाल दे तो तड़पने लग जाता है, क्यों? क्यों कि जल में हवा (प्राणवायु) तो है किन्तु मनुष्य के लिए ज्यादा मात्रा में प्राणवायु चाहिए, वह जल में नहीं है।

इससे स्पष्ट है कि जिसको जितना आवश्यक है उतना ही ले लेना चाहिए। सही कह रहा हूँ ना मैं? ज्यादा लोभ के कारण ही सब गड़बड़ हो जाता है। कुछ ऐसे भी जीव-जन्तु (प्राणी) होते है जिन्हें जल में भी, थल में भी प्राणवायु की जितनी जरूरत होती है, उतनी लेकर काम चलाते रहते है। आप लोगों को इस उदाहरण से यह बताना चाहता

है कि ज्यादा परिग्रह मछली की भाँति हानिकारक है।

कम होगा तो फिर भी चल जायेगा पर अतिमात्रा में नहीं होना चाहिए। सुनते हैं ऐसे लोगों को रात में नींद भी नहीं आती। इसलिए कि कहीं कोई लूट न ले जाये। रात भर कृत्रिम खाँसी खाँसते रहते हैं। चोर वगैरह भी जाने कि ये जाग रहे हैं। इस प्रकार करने की अपेक्षा ज्यादा क्यों रखो। ये समझ में नहीं आता कि परिग्रह की मात्रा ज्यादा रखने से क्या होता है? क्या मिलता है?

एक बार देख लिया / कर लिया फिर भी ये धारणा है। इसी के पीछे वह रौद्रध्यान करता है। धर्मध्यान कर नहीं पा रहे और रौद्रध्यान सहज में हो रहा है। पहचान जरूरी है तभी धर्मध्यान कर पाओगे। अभी आपने पूजन में जल चढ़ाया, बदले में क्या चाहा? जन्म जरा मृत्यु का नाश चाहा तो ठीक परन्तु अन्य कुछ चाह रखी तो रौद्रध्यान / आर्तध्यान की श्रेणी में आयेगा।

यही अज्ञान कहलाता है। ये सब भी साता वेदनीय का उदय होगा तभी मिलेगा। माँगने से नहीं मिलता है। जो धर्मध्यान करना चाहता है, वह सोचे - मुझे किससे दुख मिल रहा है? सुख किसके अभाव से नहीं मिल रहा? किसकी अति है? किसकी न्यूनता?

ये सब बातें धर्मध्यान वालो को सोचना चाहिये।

तभी हम जिसको चाहते है उसे बहुत जल्दी प्राप्त कर सकते है। नहीं चाहते है उसे दूर कर सकते हैं। मछली - मानव के इस उदाहरण को याद रखना। बाधक कारण को हटाना है। हित का सम्पादन एवं अहित को रोकना जरूरी है। हम जैसा चाहते है, वैसा दूसरो को भी मिले। ऐसे भाव कम हो पाते हैं। अपने अहित को दूर करने में लगे, दूसरों के भी दूर हो ऐसी भावना करने में क्या जावेगा? कुछ नहीं।

समझदार के तो होते है, नासमझ के नहीं होते। स्वार्थ के कारण अज्ञान आड़े आ जाता है। आचार्यो ने कहा जो दूसरों के लिए सोचना चाहता है उसे हमेशा अच्छी सोच रखना चाहिए। जैसे मैं जीना चाहता हूँ, वैसे ही अन्य भी चाहते है। सहनशीलता अथवा स्वार्थ त्याग के भाव के बिना यह संभव नहीं है। बहुत कम लोगो में ऐसे भाव हो पाते हैं।

स्वार्थ की भावना ठीक नहीं, यह अहंकार की ओर ले जाने वाला होता है। हित सम्पादन एवं अहित से बचने का बार - बार पुरुषार्थ करो। यही इस पुरे वक्तव्य का सार है। मछली एवं मनुष्य के इस उदाहरण को याद रखेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

9-1-19 "अस्तित्व आत्मा का" प्रातः

हमारे पास प्रतिमा की बात आयी, हमने भी सोचा हमारा मुहूर्त आ गया है। कोई तीसरी कोई चौथी तो कोई पाँचवी प्रतिमा लेगा, दुकान चल जायेगी (बाद में समझ में आया ये हमारी दुकान नहीं आनन्द धाम की दुकान चल रही है। सुनो!

अग्नि धधक रही है, सोचा गया इसे बुझाना है। बुझाने का तरीका एक व्यक्ति ने बता दिया जैसे करना) वैसा ही किया देखते-देखते अग्नि गायब हो गयी। किन्तु जिसमें आग लगी वह अभी भी भीतर में जल रहा है, दिख नहीं रहा) कुछ ही समय बाद धुँआ उठना प्रारम्भ हुआ। धूमकेतु की तरह वह धुँआ। जिसकी ध्वजा धूम के समान हो वह धूमकेतु कहलाता है। राख से अग्नि ढक दी गयी पर अपना वह परिचय दे रही है।

इस धूम्र (धुऐं) को कोई भी दबा नहीं सकता। अग्नि पूर्ण रूप से बुझ जाये तो भीतर से धुँआ उठ नहीं सकता। धुँआ उठ रहा है तो वह संकेत है कि अग्नि जीवित है। दूर से देखने पर भी अग्नि नहीं दिखें पर धुँआ तो दिख ही जाता है। न्याय के ग्रन्थों में यह उदाहरण खूब आता है। अस्मिन पर्वते अग्निं.... इस पर्वत पर अग्नि है क्यों कि वहाँ धुँआ है। रसोईघर की तरह। अग्नि प्रत्यक्ष नहीं है, दिख नहीं रही है फिर भी परोक्ष ज्ञान से अनुमान) हेतु के द्वारा उस अग्नि को प्रत्यक्ष किया जा रहा है। वह

विद्यमान सिद्ध हो रहा है।

सिद्धान्त ग्रन्थों में अनुमान बताकर आचार्य महोदय ने ये बता दिया ज्ञानावरण कर्म के ५-५ भेद है। उसके द्वारा ज्ञान गुण ढक जाता है जो आत्मा का स्वभाव है। किन्तु ज्ञान को पूर्णतः समाप्त करने वाली संसार में कोई वस्तु नहीं है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो आत्मा को समाप्त कर दें। सुन रहे हो? हाँ इसी माध्यम से उस आत्मा को खोज निकालोगे आप। आगे है कि नहीं? रात-दिन विकल्प कर रहे हो। यह ठोस उदाहरण ग्रन्थों में दिया है।

यदि आत्मा ही समाप्त हो जायेगी तो फिर जीव का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा, ऐसे में संसार का अस्तित्व भी समाप्त, संसार का अस्तित्व नहीं है तो फिर मोक्ष का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। मोक्ष चाहिए या नहीं? क्या चाहिए? [मोक्ष] बहुत सरल है। मोह के अंदर जो है उसे निकालकर क्षय कर लगा दो (रख दो)। ज्यादा परिश्रम करना ही नहीं, इतना आसान है। आपको दिक्कत न हो इसीलिये बता दिया। आत्मा का ज्ञान आज तक समाप्त नहीं हुआ, यह उसके अस्तित्व को बता रहा है।

उसके बिना बोलना-चलना, उठना-बैठना संभव ही नहीं होगा। सुला दो। किसको? उठा दो। किसको? जो सो रहा है उसे उठा दो। हओ तो बोलो। इतनी सर्दी थोड़े ही है। इतनी सारी मूर्तियाँ बैठी हैं। यहाँ इतनी मूर्तियों की स्थापना इन्हीं मूर्तियों के लिए तो की जा रही है। जो मूर्त है वह मूर्ति। तो ज्ञान कभी

भी समाप्त नहीं होता।

चाहे सोते रहो अथवा जागते रहो। कभी-कभी कोई मुर्छित हो जाता है किन्तु उसकी कोई अंगुली को जोरसे दबा दे तो वह मुर्छित भी जाग्रत हो जाता है। जैसे- पुलिस सामने भर खड़ी हो जाये सब ठीक-ठाक हो जाता है। आत्मा मुर्छित जैसी है पर ज्ञान के द्वारा वह मुर्छित नहीं। एकबार एक ब्रह्मचारी जी को लाये, कोमा जैसी हालत।। बज गये, शुद्धि करा दो। सब मालुम पड़ जायेगा। ग्रास हाथ में दे दिया। इधर-उधर नहीं मुख में ही जाता है। इससे सिद्ध है मुर्छा में भी आहार संज्ञा प्रखर है।

कुछ लोग आत्मा तो स्वावत नहीं है। अब शरीर को तो देना ही पड़ेगा। फिर भोजन के बाद माला हाथ में दे दी वे उससे जाप करने लगे। इस प्रकार ज्ञान के माध्यम से संकेत मिलता है। एक उदाहरण देकर बात पूर्ण करता हूँ। दद्दा वगैरह है- होश में लाना है, बुलवाना है। इतना आने है- 2, जाना है ये कोई नहीं देखता। दद्दा- हमें ही जाना है। औषधी के माध्यम से बुलवा सकते हैं। कोमा में है तो भी बुलवा सकते हैं। इस प्रकार आप सुख चाहते हो तो देख लो। सुख की इच्छा होगी तभी प्राप्त करेंगे। भोजन कर लिया अब माला फेरना आरम्भ करो। मोह की माला नहीं मोक्ष की माला फेरो" मोक्ष मुख से बोलो तभी मिलेगा। कौन दुकान पर? ह को हटाकर क्ष को लगा दो पक्का है मोक्ष। कब? अन्तर्मुहूर्त में। किसे कहते है अन्तर्मुहूर्त? "जिसके भीतर मोक्ष जाने का मुहूर्त है, उसका नाम अन्तर्मुहूर्त है।"

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ
आनंद धाम की जय।

10-1-19 "तपस्या का फल है धन का सदुपयोग" प्रातः

कहीं पर पंचकल्याणक हो गया है, कहीं पर हो रहा है, कहीं पात्रों का चयन हो रहा है, कोई अभूतपूर्व सौधर्म इन्द्र बनने जा रहे हैं तो कोई भूतपूर्व सौधर्म इन्द्र हो गये हैं। [बांदरी के पात्र आये थे]। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अपने जीवन में धर्म-अर्थ-काम पुरुषार्थ को अच्छे से जीते हुये धर्म पुरुषार्थ हेतु तन-मन-धन न्यौछावर कर देते हैं। चढ़ावा बोलते हैं, एक प्रकार से जो संचित किया चढ़ा देते हैं।

एक सज्जन ने कहा - ये आपका धन नहीं समाज का धन है। मुझे ये पंक्तियाँ बहुत अच्छी लगी। जीवन भर मैं तीनों पुरुषार्थों का पालन करते हुये जो भी बचाया या बच गया (भूल से) उसे यह मेरा नहीं समाज का है। समाज को बाद में दिया पहले तो यह कि ये सब कर्म के उदय ने कराया। असंयम से कमाया था, वैधानिक - अवैधानिक कमाया था पर अब सत् कार्य में लगा रहा हूँ। सोचा भगवान तो नहीं भगवान के माता-पिता तो बन जायें।

भूमिका तो बना ही रहे हैं। [लक्ष्य बांदरी की ओर]। यह सब तभी प्राप्त होता है जब तीनों पुरुषार्थ करते हुये उदासिनता को प्राप्त हो जाता है। अब सामाजिक कार्य की ओर आ जाना चाहिए। माता-पिता तो सामाजिक काम ही करते हैं फिर घर की बात नहीं करते। ये सब कार्य भीतर से मोह गल रहा है तो बहुत जल्दी होता है। हमने एक बार सुना था - कोई भी प्रतिमा आदि ढालना है तो एक पितल आदि का

सांचा बनाया जाता है।

उस सांचे में धातु को गरम करके डाल दिया जाता है। कुछ ईंटें रह गयी। अब फिर से गरम करो। नहीं ऐसे ही हो जायेगा। कैसे? जो पिघल गया है, इसी रस में 4-5 ईंटें भी डाल दो। उनको डालते ही देखते ही देखते वो भी पिघल गयी। इसी प्रकार एक-आध साल में जो कुछ भी बचा है उसे भी डाल दो। फिर मेरा-तेरा कुछ नहीं। सारे पास आते हैं आशीर्वाद हेतु।

अच्छे काम के लिए हम क्यों मना करें। बैठे-बैठे हो रहा है, हाथ भर उठाना है। इस प्रकार विवेक से सत्पात्र का चयन करके जहाँ आवश्यक हो वहाँ पर धन का उपयोग होना चाहिए। धन का अपव्यय भी नहीं करना चाहिए और धन का संग्रह भी न हो। यदि संग्रहित हो गया हो तो...। महाराज कहाँ उपयोग करें? हमारे आशीर्वाद में ही तो सब कुछ होता है। वही तो हम कह रहे हैं। हम ऐसे आशीर्वाद नहीं देते, हम तो सोचकर ही आशीर्वाद देते हैं। आपने सोचकर धन निकाला है तो हम भी सोचकर ही पात्र को आशीर्वाद देते हैं। कहीं बाद में ढोंग न आये।

वैर दिखा जाते हैं। पिघल गया-पिघल गया, जल्दी-जल्दी नहीं डाल सकते क्योंकि एक बार यदि हाथ से छूट गया तो गया। अब हाथ डालकर नहीं निकाल सकते। उसमें जाते ही ईंटें अब ईंटें नहीं रहती। अब तो साँचे में ढल गयी और पार्श्वनाथ के रूप में ऊपर

आ गये।

सांसारिक कार्य के सांचे में यदि आपने डाल दिया तो उसी अनुरूप होगा और यदि परमार्थ के सांचे में डाल दिया तो परिणाम उसी अनुसार आयेगा। एक स्थान पर लिखा था - " धन का सदुपयोग पुण्य का उदय नहीं, महान तपस्या का फल है।" फिर उसके बदले कुछ भी चाह न रखना। ऐसा व्यक्ति तो एक-दो भव में ही पार हो जाता है।

इसलिये धन के दुरुपयोग से बचना चाहिए। सदुपयोग करेंगे तो पुण्य का बंध होगा। यदि अज्ञान के कारण दुरुपयोग करते हो तो पाप का ही बंध होता है। धन का सदुपयोग करने से आगे का भी मार्ग प्रशस्त होता है। कोई बात नहीं है कुछ बिखर रह भी गये हैं तो वह भी हंसते चले जायेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय

" विद्या धाम क्यों नहीं - आनंद धाम नाम क्यों रखा "

खुरई में नया मन्दिर बनना था। पूर्णमती जी के समय समाज ने एक जमीन भी ले ली और विद्याधाम के नाम से शिलान्यास भी हुआ था। किन्तु जगह छोटी होने से आ. श्री ने सागर रोड पर पर्याप्त जगह हेतु आशीर्वाद दिया और सहस्त्रकूट एवं त्रिकाल चौबीसी मन्दिर का शिलान्यास भी करवा दिया। समाज ने आ. श्री को इस क्षेत्र के नामकरण हेतु निवेदन किया। कमेटी वही थी जो विद्याधाम में बनी थी। फिर भी गुरु मुख से नामकरण होना परम सौभाग्य

है। आचार्य भगवन् ने सोचसमझकर उसका नाम "आनंद धाम" रख दिया।

एक दिन कक्ष में कुछ ब्रह्मचारी लोगो ने प्रश्न किया कि महाराज उसका नामभी यदि विद्याधाम ही रख देते तो ठीक रहता, सभी वे ही तो लोग है। फिर आनंद धाम क्यों। गुरुजी का उत्तर गजब का था। इन्होंने कहा- दुसरा यदि राम का नाम लिखकर पानी में पत्थर डालेगा वह तैरेगा पर यदि स्वयं राम अपने हाथ से पत्थर पानी में डालेंगे तो वह डूब जायेगा। आ॰ श्री की निस्पृहता और उनकी सोच के आगे हम सब बहुत बौने है।

"मैं रोगी हूं - कैदी नहीं"

डा॰ सम्पूर्णानन्द जी बनारस के प्रसिद्ध विद्वान थे। इनको बहुमूत्र रोग ने घेर लिया था। उनके चाहने वालो ने उनकी खुब सेवा की भावना रखी इसीलिए चिकित्सक एवं परिचारक हर समय उनकी सेवा में रहते। बार-बार जाँच आदि कराना, जबरदस्ती कुछ भी करना उनको बंधन जैसा लगा तब उन्होंने कहा- "मैं रोगी हूं - कैदी नहीं।"

आचार्य श्री जी ने ये उदाहरण हम लोगो को सुनाया। वे कहना चाहते है कि मेरे साथ भी कुछ वैसा ही हो रहा है। रोग है - कुछ दिन में ठीक हो जायेगा। दर्शन एवं स्पर्शन से पहले चिकित्सा होती थी मशीनो/यंत्रो के माध्यम से जब निदान ही सही नहीं तो चिकित्सा क्या ठीक होगी। (खुरई - प्रवास)

11-8-19 "रास्ता आनंद धाम का" प्रातः

आप लोगों को ये तो ज्ञात हो गया होगा कि अष्टमी-चतुर्दशी अथवा अन्य दिनों में भी संकल्प पूर्वक उपवास, एकासन या नीरस करते हैं। इन तीन प्रकार से आहार सम्बन्धी त्याग करके तप करते हैं। अब कल की अष्टमी है- मान लो। तो आज एकासन करके उसी समय कायोत्सर्ग कर लेता है। प्रसन्नतापूर्वक, संकल्प कर लेता है। मनवचनकाय से धारणा कि मैं अब आज शाम को भी और कल अष्टमी को कुछ भी ग्रहण न करके उपवास करूंगा। यह अधारणा उत्कृष्ट तपकी है।

कुछ लोग अष्टमी को उपवास तो सप्तमी को शाम को क्या करना है अभी से सोचते हैं। उसने प्रतिज्ञा नहीं की और शाम तक टालम-टूल करता रहा तो निर्जरा नहीं होगी क्यों कि संकल्प पूर्वक नहीं किया, उदीरणा नहीं एवं निर्जरा भी नहीं। इस प्रकार शाम का भी त्याग करने का फल तो इसे नहीं मिलेगा। एक व्यक्ति ऐसा है शाम को भी लेगा और अष्टमी को भी लेगा। अब उसकी निर्जरा एवं इसकी निर्जरा में अन्तर आ गया। इस प्रकार अनेक भंग बनते हैं।

कोई बात नहीं नए-नए अभ्यास कर रहे हैं, इसीलिए अवधारणा में भी शैथिल्य नजर आ रहा है। कर्म की निर्जरा जो होती है वह भावों के द्वारा होती है। इस मुख्य बिन्दु को पकड़कर रखना चाहिए। इसमें हमें अच्छे लोगों/आप का भी कभी समर्थन प्राप्त होता रहता है। परभव (विवशता) होकर नहीं करना चाहिए। जैसे - उपवास तो ले लिया पर

मौसम बदल गया, अब ?

मान लो बादल थे - वे छंट गये, वर्षा होनी थी - गर्मी पड़ने लगी। फिर तो तापमान बढ़ने लग जाता है। सुई का बढ़े या न बढ़े, अपना तो बढ़ ही जाता है। "दूसरे को न तौलकर अपने मन को अच्छे ढंग से तोल लो।" मन को यदि वश में कर लिया तो फिर शारीरिक शक्ति भी आ जाती है। एक साथ नहीं ले पाते, उतना संहनन भी नहीं है।

इसलिए आचार्यों ने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के अनुसार ही त्याग/दान आदि करने को कहा है। फिर भी दूसरे को देखकर वे भाव तो होते ही हैं। अनेक समस्यायें हैं, कोई चिंता नहीं एक-एक रन प्रारम्भ करता है, एक साथ छक्का न सही तो कोई बात नहीं। किन्तु एक रन भी नहीं बनाया और आऊट हो गया तो क्या होगा। English में प्रायः करके Runing कहते हैं, ये अद्भुत शब्द है। Runing याने Continuity मानते हैं, Run का अर्थ चलना भी और दौड़ना भी होता है। मैं चल रहा हूँ।

जीवन का भी एवं प्रत्येक नियम का भी ऐसा ही खेल रहता है। इसको बीच-बीच में संभालकर / साहस लेकर किया जाता है। आज तक जितने भी विमान बने, उन्नति तो की पर बीच में उनको भी पैट्रोल लेना जरूरी है, विमान की खुराक बहुत होती है, इसलिए पट्रोल खतम होते ही,

अब मैं कुछ नहीं कर सकता, उतरना जरूरी है।

इसी प्रकार गृहस्थ में भी कई प्रकार से विकल्प होते हैं, कर्म निर्जरा भी उसी अनुरूप होती है। देखा-देखी में करना चाहिए पर पूरा ही छूट जाये ऐसा भी नहीं करना चाहिए। घर का मालिक कुछ बोल देता है - गृहमंत्री कहती हैं ये घर भी देखना होता है। (हँसी) गृहमंत्री आपके हैं? [ब्र. नितिन / ब्र. सुनील ] पूछताछ तो किया करो, कल के आने का है। सूर्य नहीं उगा / बादल हो गये तो क्या करेंगे।

श्रावकों को इस एकदेशव्रत के साथ त्याग-दान आदि करना होता है। कभी-कभी यात्रा पर निकल जाता है, बीच में ही मोबाइल आ जाये तो -- इसलिये घर के बाहर निकलें तो मोबाइल का संबंध नहीं। फिर तो 8 दिन, 10 दिन अथवा पक्ष भर 16 दिन का भी त्याग कर देते हैं, घर में रहते हुये। इसी को कहते हैं कर्म निर्जरा की विधी। 8 दिन के लिए त्याग कर दिया अब करोड़ का लाख हो या लाख का करोड़ हो जाये हमें कोई मतलब नहीं।

महाराज कैसे रहते हैं? उसी का वह गृहस्थ भी अभ्यास अपनी कूबत के अनुसार करता रहता है। परीक्षा भी होती है। जब विद्यालय में आये हैं तो परीक्षा तो होगी ही। आपने आकर पूछा तो हम आपकी चाल के अनुसार ही गति बतायेंगे। आपकी चाल कीड़ी के अनुसार है तो हम वैसा ही कहेंगे। कर्म की निर्जरा हो किन्तु यदि कर्म निर्जरा

के साथ शरीर की भी हो गयी तो क्या करेगी?

इससे भी बड़ा बाबा है - त्याग तो कर दिया, दान भी दे दिया। महाराज इसका फल क्या मिलेगा? आप पक्का कर दो। ताकि हम भर सकें। आप कुछ बताते ही नहीं महाराज? जैसा कर्म उदय में होगा वैसा ही फल मिलेगा। ये पक्का विश्वास रखो। गुरु-महाराज एवं जिनवाणी पर विश्वास रखो। महाराज आप आशीर्वाद दें, उसकी कमी तो है नहीं? आपके पास भूख भी तो होना चाहिए। पेट भर गया तो क्या मतलब।

जिस प्रकार अनिवार्य प्रश्न के बिना अन्य प्रश्न हल करने पर भी नम्बर नहीं उसी प्रकार निदान का होता है। मुझे ये चाहिए ऐसा कभी न सोचे। नारायण - रुद्र आदि पद निदान से ही प्राप्त होते हैं। जिन्हें परम्परा से मुक्ति पाना है, वो सब रुक गया। धर्म ध्यान ही समाप्त, कुगति का पात्र बन जाता है। इसलिये कभी भी मांग मत रखो। बदले में कुछ नहीं चाहिए। चाहिए तो बस कर्म की निर्जरा चाहिए। सुन रहे हो? (हाँ)

जो कुछ भी उदय में आयेगा - भोगना तो है ही। चाहे रोग हो या अन्य आपत्ति हो। बड़ी - बड़ी विभूतियाँ उन्होंने भी सहन किया तो हम क्यों नहीं कर सकते? शक्ति आ जाती है। महापुरुषों की कथाओं को याद करो। ये भैया ही कर्म है। दूसरों के ऊपर डाल देना - ये और एक बड़ी

बिमारी आ गयी।

आप लोग बिमारीयों का ध्यान नहीं रखते। यदि बिमारीयों के बारे में जान लोगे तो फिर औषध तो अपने आप आ जायेगा। कहीं भी रहो - साता का उदय आता ही है। बस ट्रीटमेन्ट चालु हो जाता है। हमारे सामने सब रोते ही रहते हैं। का हो गओ? हम का बतायें? ये भी करुनाई है सारे के सारे रोते हुये आ जाते है, हमारे लिए कोई हँसते हुये आता ही नहीं।

भोजन कर रहा है तो भी रोता है, नहीं मिला तो भी रोता है, अच्छा है तो भी रोता है दुनिया इसी का नाम है। दूसरो पर लादो नहीं। कमजोरियाँ हैं इन्हें दूर करो। कभी भी निदान मत करो- दूसरो पर आरोप मत करो। जो किया उसी का फल मिल रहा है। संतोष भी बहुत बड़ा गुण है। चलो अब वहाँ नही भोगना पड़ेगा। "परदेश के माइने नरेश को भी क्लेश होता है।" राजा भी कष्ट पाता है।

कष्ट सहिष्णु बनो। दूसरों के ऊपर हूर नहीं पड़ना। भविष्य के लिए कुछ नहीं चाहना, महापुरुषो को याद करना। इस प्रकार करने से कर्म निर्जरा को प्राप्त होते हैं। कर्म निर्जरित हो संसार कट जाता है फिर क्या मिलता है - आनंद धाम मिलता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

संस्मरण।

## "कर्म-बंध उदाहरण"

"आस्ट्रेलिया के एक जिज्ञासु आ० श्री से तत्त्व-चर्चा कर रहे थे। बातों में उन्होंने प्रश्न किया- आत्मा के साथ कर्मों का बंध कैसे होता है? आ० श्री ने उदाहरण दिया- हल्दी और चूने को मिलाने पर एक तीसरा ही रंग दिखता है वह लाल होता है। इसी तरह कर्म का आत्मा के साथ एकाकार होने पर तीसरी ही अवस्था बन जाती है। कर्म बंध ऐसा नहीं कि किसी एक हिस्से में बंध हो जाये शेष हिस्सा अबंध रहे। बंध होने पर हल्दी-हल्दी नहीं रहती चूना-चूना नहीं दोनों मिलकर जो लाल हो गये यही बंध कहलाता है।"

## जो अधूरा है उस पर पूर्ण निर्णय कैसे?

"प्रश्न पूछा हस्तरेखा अथवा ज्योतिष को मानना क्या मिथ्यात्व है? आ० श्री ने उत्तर दिया- सूर्य दिख रहा है- हाँ। वह चल रहा है यह दिखता है- नहीं। बस यही हमें सब जगह लगाना है। ज्योतिष- भूगोल- ब्रह्माण्ड- प्रकृति आदि बहुत दूर हैं और उनकी प्राप्त जानकारी अधूरी है। उस अधूरी जानकारी से हम जो भी निर्णय लेंगे वह भी अधूरा ही होगा। इसीलिए विज्ञान को बार-बार अपने निर्णय बदलने पड़ते हैं। जो जिस रूप में है उसे उसी रूप में स्वीकारना मिथ्यात्व नहीं है।"

12-1-19 . "ज्ञान हो रत्नदीपक जैसा" प्रातः

आप लोग दीपक जलाते हैं, सुनने में आता है दिया तले अंधेरा। मतलब ये है वर्तमान का दीपक है पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं रहता। कुछ अंश में ही वह प्रकाश प्रदान कर सकता है, पुरे रूप से वह किसी भी पदार्थ को अभिव्यक्त नहीं कर सकता है। हम लोगों का ज्ञान ऐसा ही है- अधकचरा। कचरा कहें तो और अच्छा होगा। कचरा एवं अधकचरा में अन्तर होता है।

हमारा ज्ञान अंधेरे के साथ नहीं रहता है। अंधेरे में तो हम मान लेते हैं। अंधों में काना मामा वाली स्थिति होती है। वस्तु स्थिति कुछ और ही होती है। मानना अभिशाप है। इसीलिए जो सम्यग्दृष्टि होता है उसे जो सम्यग्दर्शन मिला है उसमें संतुष्ट नहीं होता। ज्यादा मुल्य नहीं दे सकते, कोई बात नहीं, हमारा काम तो हो रहा है। वह हमारा स्वभाव है।

एक दीपक वह होता है जो दीपक तो है पर उसके तल में अंधेरा नहीं होता, रत्नदीपक है वह। रत्नदीपक की लौ हवा के झोंके से बुझती भी नहीं। इधर-उधर भी नहीं, अकम्प बनी रहती है। तत्त्वार्थ सूत्रकार ने... तथागतिपरिणामाच्च" कहा- यह स्वभाव है रत्नदीपक की लौ ऊपर की ओर ही जाती है, इसलिए रत्नदीपक से कोई आरती उतारे, इसमें कोई घाटा तो है नहीं। स्वभाविक आलोक होता है। उसका प्रकाश किसी से आहत नहीं होता, मन्द नहीं पड़ता, छुपता नहीं। इसलिये सुजन-

आरती आदि में भी आप गाते हैं - रत्नों के थाल सजायें.. ।

इस प्रकार हम ध्यान कर सकते हैं, हम अपने उपयोग को समता में रखने का प्रयास करें। इसे श्रद्धान के साथ स्वीकार करने से वरदान सिद्ध हो जाता है। "दुनिया के काम में तो वरदान भी अभिशाप सिद्ध होता है।" इसलिए अपने ज्ञान का सदुपयोग करें, जो मिला है उसका सही उपयोग करें - लोभ नहीं करें। केवलज्ञान कहाँ और ये हमारा ज्ञान कहाँ ?

जिस प्रकार रत्नदीपक कहाँ और ये (सामान्य) दीपक कहाँ? हाँ! उसका प्रतीक मानकर हम इस दीपक को जलाते हैं। सामान्य ज्ञान, केवलज्ञान के सामने कहाँ? किन्तु इसी ज्ञान के माध्यम से हम उसकी प्राप्ति की अवधारणा बनाते हैं। इसका सदुपयोग करना चाहते हैं ताकि आगे का मार्ग जो रुका हुआ है वह खुल जाये। क्षायोपशमिक ज्ञान से क्षायिक ज्ञान की आराधना करो। एक घड़ी ऐसी आयेगी क्षायोपशमिक ज्ञान का पूर्ण नाश हो जाता है।

क्षायोपशमिक मतलब ज्ञानावरणी कर्म का नाश करना है इसलिए ज्ञान का क्षायिक ज्ञान बना लो। इसी से क्षायोपशमिक ज्ञान का गौरव बढ़ेगा। इसलिए क्षायोपशमिक ज्ञान को हेयत्व भी सामने रखो। हेयत्व न मानकर ज्ञेयत्व मानना तो बहुत बड़ी भूल है। हमारे पास इतना ज्ञान है। रुको। प्राण उड़ेंगे तब मालूम पड़ेगा। जितना ज्ञान का उपयोग करना चाहिए उतना

नहीं कर पा रहे हैं।

जो पा रहे हैं उतने में ही संतुष्ट हो रहे हैं। आप का लड़का 4-5 हजार मिल जाये बस पर्याप्त है। पढ़ाई काहे को करा रहे हैं? बाबू बनाने के लिए। ऐसे अभिभावक अभी भावुक हो रहे हैं। अपनी भाषा, अपनी संस्कृति, अपने विषय से हाथ धो बैठे हैं। "मोक्षमार्ग में वर्तमान क्षायोपशमिक ज्ञान से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हाँ! विकास की बात भी करना है। क्षायोपशमिक ज्ञान के विकास का मतलब ही उसका विनाश है।

क्षायोपशमिक ज्ञान का पूर्ण विनाश होगा तभी केवलज्ञान मिलेगा अन्यथा तीनकाल में केवलज्ञान नहीं मिलेगा। सूक्ष्म विषय है परंफिर भी ज्ञान का ही विषय है। इस विषय को जोखिम के साथ अपने पास रखीयो। दीपक का स्वभाव क्षायोपशमिक है पर रत्नदीपक का क्षायिक। ऐसा क्षायिक ज्ञान हम-आप सभी को प्राप्त हो, इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।ॐ

Note8- वैयावृत्ति में -

"सुबह से लेकर शाम तक हमें बहुत कमाई करने का साधन मिला है। बस कर्मोदय में जो भी होता है उसमें हर्ष- विषाद न करें।"

13-1-19 "मारक को बना दो तारक" प्रातः

आप लोग तुम्बी से परिचित होंगे। तुम्बी जानते हो? तुम भी तुम्बी। तो क्या परिचित है? कभी-कभी वह तुम्बी.. ज्ञात नहीं हो पाता अथवा ज्ञात कर नहीं पाते और लौकी के स्थान पर परोस दी जाती है। परोस दिया तो खा लिया। जब भीतर पहुँच जाता है, वैसे लौकी को तो शास्त्रों में अमृत कहा है, डाक्टर साहब से पूछ लेना तो ज्ञात हो जायेगा। प्रायःकर लोग उसे हल्की मानकर, अपने को तो वजनदार मानते हैं।

तो वह भीतर चला गया और उसका प्रभाव फैल गया। जी मचलने लगा, उल्टी होने से कारण सामने आ गया / ज्ञात हो गया। डाक्टर साहब के पास पहुँच गया। उन्होंने कहा- भीतर पहुँच गया तो अपना काम करेगा ही। औषध भी दिया जा रहा है, जो भीतर खाया है उसी के माध्यम से चिकित्सा करना है। मतलब जो भीतर में विषाक्त तुम्बी है, वही विषाक्त तुम्बी ले आओ। उसे जलाकर उसकी राख में तेल मिलाकर पेट पर लेप लगा देओ। सोचना है जिसके सेवन से ये हरकत हो रही है, वही बाहर लेप भी कर दो।

मतलब भीतर भी-बाहर भी हो गया। डकार भी उसी की आ रही है। वह कहता है वैद्य जी महाराज बताओ जिसके कारण ये सब हुआ, हमारी हालत ऐसी हुई अब आप कह रहे हो पेट पर भी लगा दो। विश्वास नहीं हो रहा है, आँखें

बंद करता हूँ तो तुम्बी ही तुम्बी दिखती है।

वैद्य जी कहते हैं, सुनो! "जो वस्तु जिस समय काम में आती है वही उस समय अमृत मानी जाती है।" सुन रहे हो? (हाँ) ये ही मात्र विज्ञान है / सम्यग्ज्ञान है। "जो मारक होता है वही कारक भी होता है।" लेकिन वैद्यों को बिना पूछे काम न करियो। वो जो कहे वही ठीक है। आप लोगों का अभ्यास हो चुका है- मोह के कारण। फिर भी आप जीवित रहते हो। मोह महामद पियो अनादि... ये मद है, शराब है, नशा है। परन्तु पीते जा रहे हैं।

एक हाथ में सफेद बोतल (शीशी) है, एक हाथ में काली बोतल है। एक हाथ में अमृत है- एक में हलाहल है। कैसे जीवित रह रहे हैं, ये आश्चर्य है? दोनों मित्र बन गये हैं। आप पर मोह का नशा नहीं हो रहा है। ये तो अब रोजमर्रा की बात/आदत में आ गया। ध्यान रखो, जो आदत में आ जाता है उसे छोड़ना बहुत कठिन होता है। इसीलिये कुछ का प्रभाव नहीं पड़ रहा है। एक-आध घण्टा में जो कुछ भी कमाते हैं, एक सैकेण्ड में साफ हो जाता है।

द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव को देखकर भी वस्तु का प्रभाव पड़ता है। वही वस्तु लाभप्रद है तो वही हानिकारक भी। हम कहते हैं- मोह रखते हो कोई बात नहीं, मोह के त्याग का उपक्रम तो करो, तभी

आनन्दधाम का लाभ मिलेगा।

आनंद आयेगा तो धूमधाम-धूम-धाम तो फीकर में ही आ जायेगा। आनंद तो आनन्द है। वहाँ तक पहुँचने के लिए प्रतिज्ञा करना होगा, जो कुछ भी इकट्ठा हो गया, कर्मयोग/पुण्ययोग से, वर्तमान के धर्म-कर्म से उसे निकाल दो। व्रतों में भी एक व्रत कहा- अतिथी- संविभाग। "प्रतिदिन निकालते हैं तो एक चौबीसी नहीं, एक ही दिन में चौबीसी हो जायेगी।" ज्यादा तकलीफ भी नहीं होगी। बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है।

आप शिक्षा लो बच्चों से- जो डाल रहे हैं, निकाल नहीं रहे (गुल्लक में) वे भी इस कार्य में पूरी गुल्लक ही दे रहे हैं। यदि आप मोह को तोड़ते हो तो वह आपका रास्ता प्रशस्त करता जायेगा। ये अनहोनी नहीं- होने वाली बात है। कोई एक दिन में करता है, कोई रोज करता है। रोज की आदत डाल लो। अतिथी- संविभाग का भी पालन हो जायेगा और दान के लिए तो टीरमेन्ट चालु हो ही जायेगा, भारी भी नहीं पड़ेगा।

बस मोह की जगह मोक्ष को देखना शुरू कर दो। ह को हटाकर क्ष को लगाते ही आनंद धाम मिल जायेगा। इस प्रकार हमने रोग भी बताया और निरोग होने के लिए औषध भी बता दी। निकालते चले जाओ, फिर तो सब ठीक है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

15-1-19 "हम ने किया अहं का सफाया" प्रातः
(सांगानेर के हस्तलिखित) आप बताओ मैं तो सुनाता ही रहता हूं, +बैनाड़ा जी
एक-आध बार सुन भी तो लूं। हमारे भगवान 24 हुये हैं
अन्तिम महावीर स्वामी का तीर्थकाल चल रहा है। सुन रहे हो।
(हाँ) ऋषभनाथ भगवान का समोशरण 12 योजन का था जो
पुण्य कम होने से धीरे-धीरे ½-½ योजन घटता गया
और भगवान महावीर स्वामी का एक योजन रह गया। यूं
कहना चाहिए वृषभनाथ भगवान बड़े बाबा तो महावीर भगवान
हमारे छोटे बाबा हैं।

अनेक प्रकार की भक्तियाँ होती हैं, ये हमारी
भावुकता है। हमेशा-हमेशा भावुकता में अलग प्रकार का
स्वाद आ जाता है। स्वाद आना चाहिए ये शास्त्रोक्त है। शास्त्रों
में आता है लौकिकता का प्रतिकार नहीं करना। लोक भी
यही कहता है-हमारे सामने-सामने कई आये और चले गये।
एकदम भावुकता के लिए रुकाव आ जाता है। ये क्या है?
लोक पुराना है या परम्परा पुरानी है या लोक को चलाने वाले
पुराने हैं?

समोशरण ½-½ योजन कम होता चला गया। आपही
के मुख से सुनना है। ये बताओ वृषभनाथ भगवान के
समोशरण की रचना हुयी, प्रवचन दिया। प्राचीन गाथा में
आता है- अरहंत भासियत्थं....। सभी तीर्थंकरों की देशना
हुयी। वृषभनाथ से प्रारम्भ हुआ। अर्थरूप शब्द की देशना दी।
शब्द के लिए अर्थ नहीं हुआ करते हैं, अर्थ के लिए शब्द हुआ।

करते हैं।

शब्द प्रयोजन नहीं लेकिन अर्थ प्रयोजन हुआ करता है। शब्द जड़ होता है। संकेत के लिए काम आता है शब्द। संकेत गौण कैसा? जो इष्ट होता है उसे प्राप्त करना होता है। प्राप्ति हेतु साधन जुटाये जाते हैं, जैसे वैद्य रोगी को तलाशते हैं। साधन अपने आप ही नहीं मिल जाते। किन्तु इतना अवश्य है कि जब प्रयोजन को सामने देखते हैं तो बाकी सभी गायब हो जाते हैं। वृषभनाथ एवं महावीर का रास्ता भी शब्द की अपेक्षा पृथक-पृथक हो गये।

रह गया केवल इष्ट को जाने वाला, मैं ही-मैं ही करने वाला। मैं ही करने वाला न ही भगवान में लीन होता है, न ही लोक में लीन होता है। भगवान सामने है वह व्यवहार है, उसमें हम अपने को खोज नहीं सकते। उसमें देखने से यहाँ का वैभव दिखने लग जाता है। इतना ही नहीं उसमें देखने से अड़ोस-पड़ोस, ऊपर-नीचे सब गायब हो जाता है।

हम दो ही शब्द को लेकर बताना चाहेंगे। एक स्थान है, एक समय है। इनका कोई आदि नहीं और अंत भी नहीं। फिर भी हम इन दोनों में उलझे हुये हैं। ये दोनों अनंत हैं फिर भी क्या हम सांत हैं। गाफिल न हो। "हम शान्त ही नहीं प्रशान्त हैं।" इन दोनों को समझ लो सबकुछ अपने आप शान्त हो जायेगा। काल-स्थान को गौण करते ही हम ही-2 नहीं तुम ही-तुम ही

सामने आ जायेगा।

बुंदेलखण्ड में हमही-हमही, तुमही-तुमही कहते हैं। अब देखो ज्ञान तो आत्मा का स्वभाव है। "जो प्रयोजन है उसे प्राप्त करा दे वह ज्ञान है। जो प्रयोजन है उसे प्राप्त न कराये तो उसे ज्ञान नहीं कहा जा सकता।" एक प्राचीन गाथा है मूलाचार की - "जेणरागा विरज्जेज्ज ...... तं णाणं जिण-सासणे" जिसके माध्यम से विषयराग सब समाप्त हो जाये, जिसके माध्यम से उपादेय (हित) में बुद्धि लग जाये, जिसके माध्यम से सभी जीवों के प्रति मैत्री का विस्तार हो जाये, कोई दूसरा न दिखे। मैं ही नहीं, उसमें भी मैं ही दिखे इसी का नाम ज्ञान है।

आचार्यों ने मैत्री को चुना। संघर्ष जहाँ भी होता है, वह मेरा-तेरा से होता है। इसलिए कभी-कभी यह भी प्रयोग हमने किया। एक व्यक्ति के लिए कह दिया तो गड़बड़ भी हो सकता है, महाराज ने उसी ओर क्यों देखा? हमने सोचा इसका प्रयोग न करके दूसरी तरफ से चलें तो दोनों बच जायेंगे। और हम का प्रयोग किया। हममें दोनों आ जाते हैं। हममें बोलने से मैं छूटता भी नहीं। हममें मैं सुरक्षित है। सरकार भी चिन्ता कर रही है - गरीब सवर्णों की। ये संख्या कितनी पता ही नहीं। ऐसी चिन्ता करो जिससे सबका उद्धार हो जाये। इसीलिए "मेत्ती मे सव्वभूदेसु" कहा। मुनिराज

के लिए भी, ग्रन्थकार ने कहा - जितने भी इस जगत में जीव हैं सभी से मेरा मैत्री भाव रहे।

ये पढ़ा-लिखा युग किधर जा रहा है - पता नहीं। आजादी के 70 वर्ष हो गये बस ये सूत्र आ जाये। "सबके प्रति पक्ष - विपक्ष इन दोनों को गौण कर दिया जाये, राष्ट्रीय पक्ष हो जाये फिर तो सभ्यता आ जायेगी। सभ्यता में सब कुछ आ जाता है। अब देखो - समझ में भर आ जाये बुरा लग सकता है पर ये बुरा भी बुरा जैसा लगेगा - "हम अधिक - पढ़े लिखे हैं कम - समझदार" इसमें भी हम आ गया। किसी को दोष नहीं।

मैंने कहा था बुरा नहीं लगेगा। कैसा लग रहा है? दूसरा कहते तो चिनमिनाने लग जाता (हम की जगह) भीतर ही भीतर। मतलब हम समझदारी का काम नहीं कर रहे हैं - पढ़े - लिखे तो हैं। पढ़े-लिखे का मायना क्या? समझदार का मायना क्या? आपको ही ढूंढना होगा। हर बात में आपकी दुनिया में परही-परही है और कुछ है ही नहीं। आप अपने को आप नहीं कह सकते। देखो वाक्य जाल।

ये आप दूसरों के लिए हैं, स्वयं के लिए नहीं। ये संकेत किसके लिए? किसका है? आपको ही जानना होगा। लोकाचार है। अनादि- अनिधन है, आज तक चला आ रहा है। वृषभनाथ भगवान 500 धनुष और भगवान महावीर 7 हाथ, उम्र के हिसाब से भी वे

84 लाख पूर्व तो ये 72 वर्ष के थे।

कई लोग तो महावीर स्वामी की सीमा रेखा को भी लांघ गये हैं। (व्यंग्य) आपही बताओ। लम्बी-लम्बी आयु अच्छी नहीं। छोटा होता है तो ठीक है, बड़े हो तो अकेले रह जाओगे। बहुत कठिन होता है। इससे स्पष्ट है "हम को लेकर के चले और अहं को समाप्त कर दे।" "जो हम को समाप्त कर रहा है वह अहं को ही समाप्त कर रहा है।" अहम् मतलब मैं होता है, मैं के कारण टकराव पैदा होता है। हम अहम् को समाप्त करें।

इसमें शास्त्र का भी सर्वांगीण सार आ गया। जो देशना युग के आदि में भगवान आदिनाथ ने दी वह भगवान महावीर ने दी। इसलिए द्वादशांग की रचना में एक अक्षर का भी अन्तर नहीं है। प्रश्न उठ सकता है वृषभनाथ के गणधर ने बड़े द्वादशांग एवं महावीर के गणधर ने छोटे द्वादशांग की रचना की होगी? ऐसा नहीं जितने पद इसमें है- उतने ही पद इनके द्वादशांग में हैं।

वृषभनाथ तीर्थंकर की काया 500 धनुष की और इनकी काया छोटी किन्तु केवलज्ञान दोनों का समान है। इसलिये छोटा और बड़ा को बुद्धि से ओझल कर दो। इससे कोई प्रयोजन नहीं। तुलनात्मक शब्द हमें भेद की ओर ले जाते हैं, इसलिए हम तुलना न करें, सब

ही एक ही मात्र है। आप ही देख लो।

हम ही ठीक हैं या आप ही ठीक हैं। अब देखो हम ही तो गड़बड़ हो जायेगा। बुन्देलखण्डी शब्दों की विशेषता है, मैं ही- मैं ही को हटा दो। मैं-ही की अपेक्षा हम ही कह दो तो सब आ जायेंगे। ये बहुत ही रोचक विषय है। प्रयोजन को चाहते हो तो सब ठीक है। अप्रयोजन को छोड़ने की आवश्यकता है। न जाने कितनों का हित हो गया शरण में आने से। ये हमारा है, ऐसा नहीं, हम ले नहीं जा रहे हैं हम और अधिक उदारता अपना रहे हैं/अपनाना चाह रहे हैं। इससे बड़ी कौनसी उदारता?

काल और स्थान दो ऐसे हैं जिनका कोई ओर-छोर नहीं दिखता। सबकी सीमा बन जाती है, इनकी सीमा नहीं बन पाती। चक्र चलता रहता है। चक्कर है ये, परिक्रमा बन जाती है। तुम कौन के चक्कर में आ गये, ऐसा कहते हैं न? सभी इस चक्कर में आ गये, कोई नहीं बचा। इसी को बोलते हैं, हम अधिक-पढ़े लिखे हैं पर- समझदार नहीं हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो।

[नया हायकू = "तरण नहीं, वितरण बिना हो, चिरमरण"
या तरण नहीं वितरण के बिना, श्रेयो मरण"
अथवा चिरमरण / चिरस्मरण ]

15-1-19 "तरण नहीं वितरण हो" प्रात:

तरण शब्द तैरने या पार होने के अर्थ में आता है। तो तरण नहीं याने तैरना/पार होना संभव नहीं, वितरण के बिना, भूयोमरण - भूयोमरण - भूयोमरण मतलब बार-बार मरण करना पड़ता है। बार-बार मरण का मतलब बार-बार जनम लेना होता है। (नया हायकू) इस रहस्य को तत्त्वज्ञान के माध्यम से ही जाना जा सकता है। वह तत्त्व भी बार-बार अभ्यास करने से ही पकड़ में आता है। तत्त्व पकड़ में तभी आता है जब उसे भाव धर्म के साथ जोड़ लेते हैं। त्व का मतलब ही यही है।

तत्त्व (पदार्थ) दिखता है - भाव नहीं दिखते। भाव जल्दी-जल्दी परिवर्तित हो जाते हैं। तत्त्व को हमने बार-बार जिस रूप में देखने का अभ्यास किया वही दिखता है। कई लोग आकर के कहते हैं, महाराज! जिसको छोड़ना चाहते हैं वह एक सेकण्ड भी भूलने में नहीं आता है। वही-वही स्मरण में आता है। भूयोमरण - भूयोमरण - भूयोमरण, मरण के बाद मरण। इसलिए तरण नहीं - वितरण के बिना। बड़ा अद्भुत है यह आनंद धाम का है ये हायकू। वितरण - तरण में तुकबंदी भी हो गयी।

बहुत बार गोता लगाया, कौनसी शब्द उपयुक्त है। क्योंकी उपयुक्त होना महत्त्वपूर्ण है। हमें क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए इसका ज्ञान होना जरूरी है। दोनों एक-दूसरे के पूरक शब्द हैं। तत्त्व तो दिखता है - त्व नहीं। "तस्य भावं इति तत्त्वम्" दिखने

से दिखता है नहीं तो गौण हो जाता है।

इसीलिए वह हमेशा-हमेशा घूम रहा है, भाव घूम रहा है। जिसके प्रति लगाव है, वह छूट नहीं रहा है, अतः जो जानना / देखना चाहते हैं वह नहीं आ पाता। किसको छोड़े? जिसे भूलना चाहते हैं, उसे भूल नहीं पाते। ये भाव है इस भाव को समझने का प्रयास करो। भूयोमरण- भूयोमरण, बार-बार मरण हो रहा है। दूसरा भी शब्द रखा पर समझने में कठिनाई हो सकती है। वैसे ही हमारी बात समझ नहीं पाते/समझने में कठिनाई होती है। दूसरा है-

"तरण नहीं - वितरण के बिना - चिरमरण/चिरस्मरण" इस प्रकार चिंतन करने वालों को यह भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। उस गोलाई से बाहर आयें तब शब्द पकड़ में आते हैं। शब्द यात्रा कर रहा है क्या? नहीं, पर कौनसा शब्द कहाँ पर उपयुक्त है, इसके लिए सोचना पड़ता है। तत्त्व-ज्ञान से जब चाहे- जैसा चाहे शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं।" ये स्वतंत्रता तत्त्वज्ञान से ही आती है। आज इतना ही- काफी गरिष्ठ है। महाराज! समझ में तो आ जाता है पर उससे आगे नहीं बढ़ पाते। समझ में आ जाये ये भी काफी है। जिस किसी को भी होता होगा, ऐसा ही होता होगा। सबको समझ में आ रहा होगा ऐसा भी नहीं है। तीर्थंकर भी ऐसे ही होते होंगे। आज इतना ही तीर्थंकर के बारे में बाद में देखेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

16-1-19 "आनन्द सहज का" प्रातः

कर्मों के सामने सभी लोग घुटने टेकते हैं। क्यों नहीं टेकते? हाँ, जो कर्मों को काटने के लिए निकले हैं, वो किसके सामने घुटने टेकेंगे? जो करना चाहते हैं, वही तो हो रहा है। इसलिए देखकर के काम करना चाहिए। एक दम्पत्ति (पत्नी) अकाल में ही रुग्ण अवस्था होने के कारण मरणासन्न हो जाती है। उसे अपने जीवन की चिंता नहीं जितनी की पति के लिए थी। जब पति की मानसिकता का अध्ययन किया तो, ये कैसी बात है?

ये तो सहज दिख रहे हैं। उसने पूछा आप सहज कैसे दिख रहे हैं? "सह साकम् जायते इति सहज" इसके साथ उत्पन्न होता है उसका नाम सहज है। समझ में नहीं आया रहस्य खोलकर बता दो। तुम तो जा रही हो इसमें कोई बाधा नहीं बीच में आई और बीच में ही जा रही हो। हमारी नाड़ी (नारी) वो ही जा रही है तो सभी कुछ छूटना है। सोचो! दो प्रकार बल्कि तीन प्रकार की नाड़ी है।

आचार्यों ने कहा है जो हमारे लिए हितु है, वह न अरि नारि है। उसके बारे में सोचो। वही सही सुख-शान्ति देने वाली है। अगले जीवन में जिसके साथ तालमेल उसके साथ आगे बढ़ना चाहिए। इस प्रकार के संबंध पहले भी थे, आगे भी होना चाहिए। आप इस सहजानंद को याद रखेंगे। जो बीच में होते हैं, जुड़ती है उससे क्या करना? फिर भी संसारी प्राणी गाफिल होता है। गाफिल न होने का पुरुषार्थ करना चाहिए। अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

17-1-19 "वजनदारी शब्दो की" प्रातः

आप लोग वर्तमान आधुनिक ऐलोपैथी को माने अथवा प्राकृतिक चिकित्सा को मानो अथवा आयुर्वेदिक मानो, जितनी भी पैथी है, जितनी भी पद्धतियाँ है उन सबमें ये स्वीकारा है कि आत्मा के गुण इस शरीर में नहीं है। लेकिन फिर भी आत्मा के सबसे निकट यदि कोई तत्त्व रहता है तो वह शरीर है। शरीर के पास चेतना नहीं इसलिए आत्मा की पहचान नहीं कर सकते। शरीर ने आत्मा से कहा तुम ही मुक्त हो सकते हो, दुसरे के बस की बात नहीं।

ये कैसी बात है, दुनिया से हटकर ही चिकित्सा पद्धति है। तो पाँचो ऊँगलियों में एक-एक नाखून है। पहले ही कहा था चिकित्सा पद्धति भिन्न है। जिसमें खून ना हो उसे नाखून कहते हैं। फिर भी नाखून के माध्यम से खून की की पहचान एवं खून की पहचान से आत्माराम पकड़ में आता है। चाहे आयुर्वेद हो या फिर एलोपैथी हो। ऊँगली को हाथ में लेते ही मालुम पड़ जाता है। हमने सुना था-कुछ लोगो के मुख से- प्रo रुo।

नाड़ी की क्या पहचान है। प्रo रुo वाले भी इस पहचान के बिना आगे नहीं बढ़ सकते है। खून अलग है नाखून अलग है। नाखून का खून के साथ संबंध रहता है। अपने यहाँ मनोबल-

कायबल- वचनबल के बारे में बताया है। कायबल में ये सब रसायन आ जाता है।

जो जीवत्व का लक्षण देखना चाहे तो इससे पकड़ सकता है। पकड़ने में देरी नहीं लगती किन्तु अंधेरा इतना कि पकड़ में नहीं आता। "इस शरीर के बिना साधना भी नहीं, साधना के बिना शरीर से मुक्ति भी नहीं मिलती।" दोनों बातें हैं। अब कोई व्यक्ति पैसे का बल दिखाकर मुक्ति की बात... ९०।२५ वही बल है। [सक्रीय कार्यकर्ता है] आत्मा निष्क्रिय होती जा रही है।

अथवा सक्रिय कार्यकर्ताओं की संख्या ज्यादा हो जाये तो और उधम होने लग जाता है। इसलिये शरीर से मुक्त होना चाहते हो तो मनुष्य बनना अनिवार्य है। मनुष्य बनने के उपरान्त भी ९० के ऊपर चले जाये और उपयोग न हो तो क्या होगा? विद्यार्थी जीवन में भी उपयोग कर ले तो कल्याण हो जाता है। दो प्रकार के वेट (वजन) होते हैं। एक तो गेट के बाहर जाना भी मुश्किल है, एक व्यक्ति दुबला-पतला है।

फिर भी आप कहते है- कोई न कोई वजनदारी होती है। हम भी सोचते हैं, सब वजनदारी में लगे हैं, हम भी लग जाये। काहे में लगे? आज के जो शब्द निकले हैं जैसे- वजनदार

हो।

आपके बहुत शब्दों में भी कुछ सार नहीं और हम एक-आध शब्द में ही पुरा कर देते हैं। रोचक है ये। साहित्य में आता है, अच्छे-अच्छे कलाकार भी बह जाते हैं। किनके लिए? (शब्दों के लिए) महाराज! उसके कारण अर्थ को मूल्य मिल जाता है, नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। तो हम शब्द को नहीं पकड़ पा रहे हैं। मनुष्य होकर भी शब्दों मे वजन नहीं तो क्या? वजन होना अनिवार्य है तभी सक्रियता, मौलिकता, जागरूकता आती है।

"वजनदार बाद में होता है पहले तो जानदार होता है।" सार्थकता को देखो! आत्मा है या नहीं? तो आचार्य कहते हैं रक्त का संचार जब तक चलता रहता है। रक्त का संचार रुक जाता है तो क्या होता है? गये, जा चुके हैं। कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है। तो शरीर की पहचान से ही आत्मा की पहचान कर सकते हैं। ज्यादा संचार भी ठीक नहीं (B.P.) कम संचार भी ठीक नहीं, कम मतलब धीरे संचार। मनुष्य ऐसा प्राणी है जो सबमे प्राण डाल देता है, ऐसा दुर्लभ मनुष्य जीवन आपको मिला है।

नाखुन से प्रारम्भ किया था, उसके माध्यम से देख सकते हो। वैद्यो को ही दिखायें जरुरी नहीं ये सामान्य बात है। इसी प्रकार और आगे बढ़ जाते हैं तो

आँखो के माध्यम से भी...।

आँखे लाल-लाल दिख रही थी। लाल दिखना ठीक नहीं। कषाय का प्रतीक है। आँखे सफेद हो गयी यह भी ठीक नहीं। एक पद्म लेश्या है तो एक शुक्ल लेश्या जैसी। सफेद हो गयी रक्त की कमी हो गयी, लाल-लाल कषाय के कारण है। प्रभु की आँखे इन दोनो अवस्था में नहीं। उनकी आँखे नील कमल वाली है, न ही सफेद है न ही लाल है फिर भी शुक्ल लेश्या के धनी है।

इसलिये अपनी पहचान हेतु दुसरे के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। आज तो उदाहरणो की बाढ़ आ गयी - पु०रत्न से प्रारम्भ किया, प्राण, शुक्ल लेश्या, नारायन, आँखे, जानदार वजनदार हो गया। इस प्रकार दुसरे से अपने आपको मत पहचानो। आपके वचन (शब्द) ही बता देते है कि आप कितने वजनदार है। भिन्न-भिन्न क्षेत्र में भिन्न-भिन्न प्राणी होते हैं।

मुक्ति पाने के अधिकारी तो मनुष्य ही है। आप मनुष्य है, जैन कुल मिला है, बुद्धि मिली है। इस अवस्था मे (पु०रत्न) ज्यादा बुद्धि बढ़ जाना भी ठीक नहीं, कम हो जाना भी ठीक नही है। इसलिए आपने जो धुमधाम से आनन्द धाम का संकल्प लिया है, प्रारम्भ किया है, अन्तिम रूप भी

आप ही देने वाले हैं।

इस प्रकार खुरई नगर में 2019 का यह ईनाम मिल गया। पहले व्यैक्तिक मन्दिर होते थे अब सामाजिक, पुरी समाज मिलकर चलती है। अब राजनीति न होकर प्रजानीति आ गयी। एकता की बात आ गयी। अच्छी बात है। इसलिये ताजगी आ गयी। एकता-जगी, एक ताजगी। बहुत अच्छा संस्कारित नगरी है।

सब लोगो ने मिलकर सोचा। मन्दिरों को लेकर भी वहाँ-वहाँ तक क्यारियां बन जाती है। पानी घुमता रहे। शुरुआत में किसान बिना क्यारी के भी पानी छोड़ देता है। उस समय बीज नीचे रहता है चल जायेगा। पौधा उगने के बाद तो क्यारी बनाना अनिवार्य है। उतना पानी देंगे जितना जरूरी है, उसका अनुपात - वेग - पौधे की उम्र सब देखना अनिवार्य है। आनंद धाम के ये संस्कार जीवित रहें इन्ही भावनाओं के साथ -

अहिंसा परमो धर्म की जय।

काला - अधिक गुणवाला

° काले तील, काले मुनक्का, काले चने स्वास्थ्य हेतु अधिक लाभप्रद है।

° "काले अंगुर - गोरे से भी अधिक - महंगे - मीठे" आ. श्री योगसागर जी

° कालीगाय का दूध, कालीमिर्च, काली मिट्टी इत्यादि।

जरुआखेड़ा
21-1-19

"मूल सुधारो - चूल सुधरेगा"

जरुआखेड़ा यह तीसरी बार हमारा आना हुआ है। प्रायकरके यहाँ पर रुकना सम्भव नहीं हो पाता फिर भी गाड़ीयों के लिए पेट्रोल की आवश्यकता तो हो ही जाती है। गृहस्थों का कार्य अपना मर्यादित रहता है, मर्यादित तो हमारा भी है किन्तु विस्तृत हो जाता है। गृहस्थो द्वारा बीच-बीच में जो समागम होता है, समागम मतलब उन्हें हमारी भी जरूरत है। जरुआखेड़ा - जरूरत है खेड़ा को। इस प्रकार जरुआखेड़ा नाम सार्थक करता है।

कस्बा होकर भी इसे खेड़ा कहा जाता है। इसके चारो ओर ग्राम बिखरे हुये रहते है। आवश्यकता की पूर्ति हेतु खेड़े में भी हाट लगाकरके एक-आध सप्ताह के कार्य पूर्ण कर लेते हैं। गांवो में किसानियत रहती है। बिखराव रहता है तो उन्हे जरुआखेड़ा जैसे कस्बों की आवश्य पड़ती है। जितने भी गाँव है उनको यहाँ से आपूर्ति करते रहते हैं, इसलिए इसे खेड़ा कहा जाता है। पगडंडीयों के माध्यम से ऐसा जाल बिछा रहता है। मेड़ पर से ही खेड़े में आने-जाने का रास्ता बना रहता है। मेड़ पर गाड़ी तो चल नहीं सकती।

उसी मेड़ पर किसान खड़ा होकर फसल कैसी है इसका सिंहावलोकन करता रहता है। किसान की बात आयी तो एक उदाहरण आप सभी के सामने रखना चाहता हूँ। एक किसान मेड़ पर खड़ा होकर सुदूर तक

निगाह ले जाता है।

उसको सुदूर में कुछ दिखता है। पास में जाने पर स्पष्ट हो जाता है कि ये बात है। इस पेड़ के लिए क्या आवश्यक है? यह कुम्हलाहट क्यों आयी? पानी दें-ये देवी दें, क्या कमी हो गयी इत्यादि? प्रायकर आप लोग ऊपर-ऊपर ही सोचते हैं, किसान मूल को पकड़ता है। मूल पकड़ में आ जाने पर चूल पकड़ में आ ही जाता है। बहुत हिसाब (तब्दीली) से उसे खोदता है। उस पौधे की जड़ में एक बहुत बड़ा कीड़ा लगा था, जो उस किसान की पकड़ में आ जाता है।

कीड़ा मूल पर ही लगा हुआ था, जो पुरा रस चूस लेता था अतः पौधा कुम्हलाने लगा था। यहाँ तक की मरणासन्न था। एक-आध दिन में गिर ही जाता। उस कीड़े को निकाला और पौधे को दूसरे स्थान पर सुरक्षित किया। अब कहने की क्या आवश्यकता है? प्रतिकूल जो था उस कारण को दूर कर दिया अब खाद-पानी आदि न भी डालो तो भी वह स्वस्थ था।

यह उदाहरण इसलिये दिया क्यों कि जीवन जीने के लिए सत्य-अहिंसा-स्वामित्व होने की बड़ी आवश्यकता है। इन तीनों के माध्यम से ही आप सही धन की प्राप्ति कर सकते हैं। इन तीनों में से भी अहिंसा देवी जब से गयी तब से शहरों में अशान्ति ही अशान्ति है। ये बिखरे हुये गाँव शहर से सम्बन्ध रखते हैं। कल हम एक गांव (बनहट/

वेन्ट) में थे।

वहाँ नित्य क्रिया हेतु एक खेत में गये। साथ वालों ने पूछा होगा। पूछने की क्या जरूरत- हमारे यहाँ तो देवता आ रहे हैं। वहाँ तरह-तरह की तरकारियाँ लगी हुयी थी। ध्यान रखो! शहरो में साग- सब्जियाँ खेत से ही पहुँच रही हैं। वहाँ पर तो मोल है- तोल है और खेतें तरह-तरह की तरकारीयों है वो भी ताजा-ताजा; वहाँ पहुँचते - पहुँचते थोडा बहुत सूख हो जाती है।

इसलिए उन किसानों से भी संबंध अच्छा बनाकर रखना चाहिए। आपके जीवन एवं किसानों के जीवन में गहरा तालमेल है/होना चाहिए। अहिंसा तत्व जब तक रहेगा अवश्य ही सुख- शान्ति मिलेगी; इसके लिए ध्यान रखो, बाहर के नहीं भीतर के कीड़े को निकालने का प्रयास करो। आप लोग ऐसे कीटनाशकों का प्रयोग कर रहें हैं। जीव-जन्तुओं को मारकर जिन्दा रहने की कामना करना ही मूर्खता है। महाबिमारी है। ये पगडंडीयाँ जीवित रहे।

कुयें का स्त्रोत जीवित तो दूर- दूर तक पानी पहुँच जाता है। आज जो तरकारियाँ मिल रही है, वह विषाक्त रोगों को पैदा कर रही है। आप कम- ज्यादा तौल रहे हैं, यही किसानों को भी सीखा रहे हैं। तरकारी (सब्जी) की मांग बहुत है। लौकी है- करेला है इंजेक्शन लगा दिया, अंगुर को पानी (केमिकल युक्त) में डूबो दिया (एक रात में

इतने बड़े - बड़े हो जाते हैं।

ये दवाइयाँ किसान के यहाँ नहीं थी, उन्हें बेचकर क्या सीख रहे हो। शुद्ध भाजी रोटी भी नहीं मिल पा रही है, अलौकिक बात कर रहे हो (व्यंग्य)। मैं यह कहना चाहता हूँ कि इन सबके माध्यम से जिंदगी ही दाव पर लगा रहे हो। आज तमाम खानपान की चीजों में मिलावट हो रही है. किसी को भी जीवन से कोई मतलब नहीं रहा। Fast-Food का निर्माण एवं विक्रय धड़ल्ले से हो रहा है। क्या है ये, कोई पता नहीं।

बस पॉकिट में आ जाता है, आप तुरन्त खोल देते हैं, आँखे खोलने की जरूरत ही नहीं समझी। क्यों बना है? कब बना है? क्या प्रयोजन है? जीवन का सवाल है। यह ज्यादा दिन रहने वाला नहीं। "अहिंसा कीड़े को जब तक दूर नहीं करेंगे तब तक आत्मिक कल्याण तो दूर शारीरिक-मानसिक संतुलन भी बिगड़ने वाला है।" ऐसी-ऐसी दवाइयाँ पैदा हो रही हैं परन्तु ऐसे रोग हो रहे हैं जिनका इलाज ही नहीं है।" लाखों रुपये व्यय कर रहे हैं, घर पर आने पर भी कोई काम का नहीं रह जाता (कैंसर पिड़ित)।

अहिंसा तभी जब तामसिकता दूर हो। खेड़े को गांवों से जोड़ने वाली ये पगडंडीयाँ हैं, जिन पर से लोग आते हैं। अपना जीवनयापन करते हैं। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि हिंसा रुपी कीड़े को अपनी आत्मा एवं जिन्दगी से दूर करने का प्रयास करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

२२-१-१९ "देहरी की बात है देहली वालों" प्रातः

गाँव वालों आपके यहाँ आज शहर वाले आये हैं। इतना ही नहीं विचित्र बात तो ये है, जहाँ पर पुलिस बन्दीबनाकर रखती है ऐसे दिल्ली तिहाड़ जेल के अधिकारी आये हैं। इन बन्दीयों को अकेले तो रहना ही नहीं कई प्रकार के बन्दी होते हैं। मानसिकता में टकराहट होना भी स्वभाविक है। तभी तो वह बन्दी बना है। भावों के पतन से उसकी यह दशा हो जाती है। बाकी सब विद्यालय तो चलते है/चलते रहेंगे किन्तु इनके पास जो कैदी आते हैं, उनमें परिवर्तन कैसे हो?

यूं कह दूं "रक्षक वही होता है जो भक्षण नहीं करता।" वही रक्षक होता है, सामने वाला नहीं चाहता फिर भी यह उसका हित चाहता है। आज यहाँ पर देहली तिहाड़ जेल से ये लोग आये हैं। वहाँ तो ऐसे कैदी दहाड़ते है (होंगे) किन्तु उस दहाड़ में भी संकेत करने वाले यहाँ बैठे हैं जरुआ खेड़ा में। सागर में एक विशाल कार्यक्रम होने जा रहा है। बड़ी-बड़ी जेलों के संरक्षक इसमें आ रहे हैं, उद्देश्य यही है आज जो बंधन में है, उसका आगे का जीवनयापन कैसा हो?

वैसे यहाँ पर जितने भी लोग है वे सारे के सारे कैदी ही हैं/शरीर रूपी कारागृह में बंद है। इसमें से भाग भी नहीं सकते हाँ! जाग गये तो इस शरीर में जो आत्म तत्व है उसका अनुभव कर सकते

है, वही अनुभव सबको करना है।

इनमें और आपमें कोई अन्तर नहीं कुछ थोड़ी बहुत गलती हो जाती है। घर के बच्चे उद्दंडता कर भी देते हैं तो कहते हो - ये तो अपने ही घर का बच्चा है। ऐसी गलती ही तो करते - करते वहाँ तक पहुँच जाता है। देहली के अकेले तिहाड़ जेल में 15000 बन्दी हैं, मतलब एक शहर ही बस गया। बहुत साहस का काम ये लोग कर रहे हैं। दहाड़ते हुये शेर के पिंजरे में उसे आँखों के इशारे से / आत्मीयता की वर्षा द्वारा उसे लाइन पर लाना है। एक चुनौती भी है और कर्त्तव्य भी है।

जो पीछे है उसे मुड़कर बुलाना है, जो नीचे है उसे झुककर उठाना है। आवाज देकर भी बुला सकते हैं। आप सब डरे हुये हैं। उस देहरी पर कोई पैर भी रखना नहीं चाहता। ऐसा महाप्राणा बना है, वहाँ पर कैसे जायें। दो शब्द हैं - देहरी और देहली। "भीतर के दिल को जीत लोगे तो देहरी पर सब कुछ कर लोगे।" बस पुनः उन्हें आत्मीयता से कर्त्तव्य बोध कराना है। वे पश्चाताप से झुलस रहे हैं।

पाषाण से भी स्वर्ण निकालने की क्षमता अग्नि के पास रहती है। आज पाषाण से स्वर्ण बनाने वाले यहाँ आये हैं। सबसे वात्सल्य रखने वाले ही इस प्रकार का कार्य कर सकते हैं। हम तो सोचते मात्र हैं। कुछ विद्यालय में ऐसे भी शिक्षक होते हैं, जो उदारमना होते हैं। बच्चों के न आने

पर उनके घर तक चले जाते हैं।

आज जो बिगड़ा है वही तो सुधरता है। पापी ही पुण्यात्मा बनता है। यह सिद्धान्त है। एक उदाहरण पौराणिक ग्रन्थों मे मिलता है। एक वस्त्र जो बहुत गन्दा था, उसे साधन-सामग्री लगाकर धो दिया जाये तो हर कोई रखना चाहता है। इसी प्रकार जो हर ओर से तिरस्कृत है उसे उठाकर अच्छा बनाने की जरूरत है। इससे स्पष्ट है अपने हाथ से गन्दगी साफ कर रहे है। यह गन्दगी दूर होते ही उजलापन आ जायेगा। अपने भीतर भी वैसा ही उजलापन है।

बहुत अच्छा काम है, सर्दी में देहली वाले यहाँ तक प्रवास करते हुये आये, वो कह रहे है हमारे लिए कर दो। उत्साह-उमंग-समर्पण भाव होने पर ही कार्य होता है। इस कर्तव्य को पुरा करने के लिए समाज को मंगलाचरण कर कर्त्तव्य करना है। इससे रास्ते खुल जाते हैं। उ० प्र० एवं छ० ग० के जेलो से भी आग्रह आ रहा है। पहले इसकी रूपरेखा देख ले तभी आगे बढ़ सकेंगे। देहली वाले तो आतिथ्य मे कभी पीछे नहीं रहेंगे। प्रतिदिन के कार्य तो होते ही रहेंगे, जो भी आवश्यकता होगी उसे पुरा करेंगे। इस कार्य को अच्छे से पुरा करीये ताकि आगे के लिए प्रेरणा बन सके। जेल को जेल न समझ पुनर्वास हो सके। यह ऐतिहासिक के साथ-2 सामाजिक-धार्मिक भी है। भारत पुनः वही सोने की चिड़िया बन जाये। सबका भाग्य चमक जाये यही भावना भाते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

ईशुरवारा
23-1-19 "अभी बहुत कुछ बचाना है" प्रातः

बहुत पुरानी बात है। पुराने लोग सहस्त्र चले गये होंगे, नये-नये और आये होंगे। क्षेत्र वहीं की वहीं है। क्यों ऐसा ही है न? कई लोग यहाँ से अर्थोपार्जन के लिए बाहर निकल गये। इसीलिए संख्या यहाँ कम हो गयी। भगवान भर स्थायी है, ये सब अस्थायी है। 8 घर बचे हैं। ये संसार की लीला है। हम भी यहाँ 30-35 वर्ष पूर्व में आये थे और यहीं से वाचना वगैरह के लिए चले गये थे। आप लोग अपने-अपने पूर्वजों को याद करते हुये, यहाँ जो कुछ भी स्वरूप है उसके लिए समय देना चाहिए।

यहाँ बहुत परिवर्तन हुआ, वह सब शोभित हुआ और होना चाहिए। एक बात सामने आयी यहाँ श्री जी तो बड़े-बड़े हैं और भी विराजमान करना चाहते हैं पर पूजन-अभिषेक के लिए पानी की व्यवस्था ही नहीं है। शुद्ध पानी के अभाव में अभिषेक इत्यादि करने से दोष आता है। जलगालन-जीवानी डालना अनिवार्य है। आप सब चले जा रहे हैं, कहाँ भाग रहे हैं पता नहीं है। भगवान को याद रखेंगे तो सब व्यवस्थित हो जायेंगे। ज्यादा न कहकर जो कुछ भी सुरक्षित रखना था वह रख लिया परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है, और भी अभी रखना है। प्रातःकाल हमने कार्यकर्ताओं के सामने सब रखा था। बात समझ में आ गयी। क्यों? हओ। ऊपर-ऊपर से तो नहीं। बुन्देलखण्ड के हओ में काफी शक्ति है। अहिंसा परमो धर्म की जय।

नेरयावली
२५-१-१9 " हओ कहलवा ही लेता है भक्त " प्रातः

भगवान अपने आप में भगवान नहीं हुआ करते, वे मात्र स्वस्थ है। भक्त के कारण भगवान नाम जुड़ जाता है। क्या सुना? आत्मा परमात्मा बन जाती है यहाँ तक तो ठीक है पर ये पुरी दुनिया का हो जाये और दुनिया उसके साथ हो जाये ये कैसे? ये स्वीकारता भक्तो की रहती है। भगवान आपको नहीं बुलाते तो भी ये तो हमारे है। भगवान स्वीकारता न भी दें तो भी आप स्वीकारते है। क्यों कि भगवान के पास तो राग है नहीं। भगवान को भक्त के निमित्त से ही हओ कहना पड़ता है। क्यों कि उसको जरूरत है कि भक्त भी भगवान बन जाये।

आप भगवान बनना चाहते हो कि नहीं? [हओ] तो भक्ति के माध्यम से भगवान नहीं, धीरे - धीरे चलने से बनता है। [हमें सागर में दीक्षा दे देना - एक भक्त] सागर लगाकर क्यों दीक्षा की बात करते हो। दीक्षा तो लेना है पर सागर में रहना है, ऐसे में रहना कहाँ हुआ? बहुत अच्छा। भगवान को देखने से भगवान में परिवर्तन नहीं होता। भक्त आकर अपने आप लेने लग जाता है। धीरे-धीरे संसार-शरीर-भोगो से उदासिन होता जाता है।

भगवान बोल नही रहे फिर भी भक्त साथ हो जाता है क्यों की वह भी सौभाग्य प्राप्त करना चाहता है। आप लोग प्रतिदिन एकत्र हो जाते हैं। कहाँ से आते है और कब वापस चले जाते है पता नहीं चलता। विद्याधर

को फिर भी विलम्ब हो जायें, आप कौन गलियों से आ जाते हैं पता नहीं।

इतना अवश्य है हमें मोह को कम करना है। त्यागने से ही मोह घट रहा है पता लगता है। यह आकर्षण का केन्द्र है अतः इन्हें एक-एक करके कम करते चले जायें। दूसरों के नाम करते जायें। [हथकरघा की साड़ी में हैं- वहाँ कॉलोनी महिलायें] हाँ यह अहिंसा का प्रतीक है। बड़े-बड़े सेठ-साहूकार भी इसी का उद्योग खोलने में हैं। यह उद्योग नहीं अहिंसक वस्त्रों का उत्पादन कर अहिंसा धर्म का विस्तार है। इसी अहिंसा के माध्यम से हम आगे बढ़ेंगे।

अहिंसा ही देवता है। इसी पथ से वे आगे बढ़े- हम भी उसी पथ पर चलें। चलना कठिन होता है और चलाना आसान। (हंसी) आप सब चलकर के ही आयें हैं। काहे से? गाड़ी से। फिर कहते हैं चलो ना। आप चलते तो है ही नहीं चलाना जानते है फिर संघ को भी चलायेंगे। ऐसे का विश्वास कैसे हो। [हम साथ चलेंगे] भरोसा नहीं है। [पीछे-पीछे चलेंगे] फिर थोड़ी देर में रोने लग जाओगे अथवा आवाज लगाने लग जाओगे।

एक दिन विहार से कुछ नहीं होगा। सागर के बाद में देखेंगे। धीरे-धीरे तैयारी हो रही है, हम भी धीरे-धीरे ही चल रहे हैं। भले ही सुबह का भूला शाम को घर लौट आये तो भूला नहीं कहलाता। कहो- अपने घरें प्रभु के द्वार पर आ जाये हो..। इस प्रकार शरीर-ध्यान भोगों से

उदासिन होना है।

बच्चों जैसे अब कूदें नहीं - खेलें नहीं - फिर सो जाते है, प्रौढ़ बनकर एक-एक काम करना होता है। यहाँ के लोगो ने प्रार्थना के रूप में अपनी बात रखी। आज ही नहीं वर्षो से रखते आ रहे हैं। हम भी पहले भी एक-दो बार नरयावली होकर गये हैं। वर्णी कॉलोनी में रहने लगे थे क्या गरीब कॉलोनी थी क्या? सबने मिलकर भाग्योदय को खड़ा कर दिया। धीरे-धीरे चलने लगा फिर भागने लगा अब तो भाग नहीं उड़ रहा है।

आपने जो त्याग किया उस त्याग का ही ये फल है कि सागर को भाग्योदय के नाम से जाना जाता है। हमारा नाम बाद में जुड़ गया। अच्छा हम स्वीकार कर लेते हैं। काम आप कर रहे हैं, नाम हमारा हो रहा है। बच्चों में विशेष रूप से संस्कार डालो। वे संकल्प लेवें कि इसमें इतना हिस्सा हमारा नहीं है, बाद में ये पूरा ही हमारा नहीं जानने लग जायेंगे। इतना ही पर्याप्त है। खुरई में बताया अभी 3-4 दिन में तुफान आने वाला है। हमने धीरे से पिच्छी उठाई और विहार कर दिया। अंत-अंत में यहाँ नरयावली में परिचय दे ही दिया। पेट्रोल तो लेना होता है। बीच में सागर आने वाला है, बताते हैं। कितनी बार सागर, ये नहीं बता रहे। पास ही है, एक-आध मुकाम है। अतिथी के लिये हमेशा सागर तैयार ही रहता है। बहुत सारी बातें हुयी। भावना रखो। देखो-देखो। अहिंसा परमो धर्म की जय हो।

जरारा

२८-१-१९ "कमाल सागर के श्रीफल का" प्रातः

एक बार की बात है और वह सागर की है, पुरानी बात है। पुरानी बात याद करने से नयी उमंग और उत्साह बढ़ जाता है। पूर्वजो के प्रति हमारी दृष्टि चली जाती है। "विज्ञान सदैव भविष्य की ओर ले जाता है तो सम्यग्ज्ञान अतीत की ओर दृष्टिपात कराता है। अतीत की ओर जाने से मोक्षमार्ग का ज्ञान होता है, इससे वर्तमान का ध्यान सुधर जाता है। सुधारना चाहते हो कि नहीं। [हाँ] अतित को याद करो। किन परिस्थितियों में उन्होंने मार्ग बनाया। हम सबके लिए संस्कार डाले।

युगो-युगो तक आगे की पीढ़ी के लिए उन्होंने अनुग्रह किया। अपना कर्त्तव्य किया। तो सागर की बात है। एक व्यक्ति-महावीर जयन्ती तो महाराज सागर में हो गयी अब महावीर भगवान का निर्वाण कल्याणक और सागर में हो जाये। उन्होंने छोटा सा नारीयल चढ़ाया और बड़ा फल माँग लिया। अब दीवाली सागर की करना है तो चातुर्मास सागर में ही करना होगा। हल्दी लगे न फिटकरी और बैलो रंग चोखा आय। सागर की बात है न? किसी से कहियो नहीं।

(अहिंसा परमो धर्म की जय)

अतिथी की महत्ता

"आ० श्री को जैसे ही मालुम पड़ा कि किसी तारीख की पहले से ही घोषणा हो चुकी है तब उन्होंने कहा - चातुर्मास - पंचकल्याणक या अन्य कार्यक्रम की घोषणा पहले से होने से अतिथी बंध जाता है यह ठीक नहीं। वचन भंग होने का भी भय है।"

जरारी
ईर्यापथ में - संस्मरण

दो चीजें हैं एक वीर्य दूसरा सत्व। वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से वीर्य शक्ति प्राप्त होती है। किन्तु सत्व शरीर नाम कर्म के कारण प्राप्त होता है। कुछ व्यक्ति देखने में मोटे होते हैं किन्तु काम कुछ भी नहीं कर पाते, आलसी भी हो सकते हैं। कुछ पतले-दुबले होते हैं पर फुर्ति रहती है जोश रहता है। आ० श्री का कहना है वीर्य एवं सत्व दोनों को पहचानकर कार्य करो /साधना करो। आप बाहरी ढाँचे पर मत जाओ भीतरी आपकी ऊर्जा कितनी है इसे देखो और कूद जाओ।

खुरई से विपरित परिस्थिति /अस्वस्थता में भी विहार हुआ। मौसम विभाग ने भी चेतावनी दे रखी थी किन्तु कुछ नहीं मध्याह्न-मध्याह्न में विहार करते हुये सहज आ गये। मात्र बाहर से 56 इंच की छाती दिखाने से कुछ नहीं होगा भीतर से भी 56 इंच की छाती होना चाहिए। इसी प्रकार Weight एवं Energy दोनों में अंतर है। वेट नापने की मशीन अलग और एनर्जी नापने की मशीन अलग होती है। वेट उतना महत्वपूर्ण नहीं एनर्जी महत्वपूर्ण है। उसे पहचानो।

आ० श्री का ये भी कहना है कि आत्म-विश्वास के साथ सुविचार करके जो भी निर्णय कर लिया जाता वह पूरा होता है यूं कहें उसे होना पड़ता है। ऐसे ही समीकरण बनते चले जाते हैं कार्य सिद्ध हो जाता है।

भाग्योदय तीर्थ-सागर

26-1-19 "विवेक जरूरी श्रद्धा-भक्ति के साथ" प्रात:

आज इस अवसर पर सागर में आने का यह कौनसे नम्बर का आना है, हमें तो मालुम नहीं है, आप ही जानो। सागर हमारा है तो फिर आप कहाँ रहते हैं। सुनो! श्रद्धा-भक्ति एवं विवेक के साथ कोई भी क्रिया-अनुष्ठान होता है। इन दिनों में आप लोगों ने शिलान्यास के साथ अनेक कार्यक्रम किए। आप लोगों को तो ज्ञात है ही हमारे भी कानों तक बात आ जाती है तब लगता है- सागर तो लगा हुआ ही है। ये बहुत बड़ा काम है (मन्दिर का), अच्छा भी है। है कि नहीं? सागर भी बड़ा है।

तो श्रद्धा-भक्ति के साथ विवेक को रखकर काम करना चाहिए। जैसे- अभिषेक (प्रक्षाल) करके गंधोदक को कटोरे में रखते हैं। कटोरे चाँदी आदि किसी के भी हो सकते हैं। अब विवेक रखना चाहिए। श्रद्धा भी है- भक्ति भी है तभी तो आप गंधोदक को माथे पर लगाने आये किन्तु गन्धोदक से तो हाथ धो लिया और हाथ धोने के कटोरे से ... का होगा बोलो। सागर वालो! आपमें श्रद्धा भी है- भक्ति भी है हम विवेक भी देखना चाहते हैं, तभी कार्य पूर्ण होगा।

"विवेक आपकी असावधानी को दूर करने वाला होता है। जहाँ जिसका जितना आवश्यक है उतना ही करना होता है। दो बार कर लेंगे तो डबल नम्बर मिलेंगे, ऐसा नहीं है। वह एक Attemp में पास नहीं 2 Attemp में पास माना जायेगा। इसलिए एक ही बार में आगे बढ़ना है। अभी तो आप कीड़ी की चाल से चल रहे हैं, हम तो भागकर

आये हैं।

आप हर कार्य में तो भागते रहते हैं, अब इसमें भी भाग लें। [बैट्री चार्ज करने आये हो] पहले अपनी बैट्री भी देख लो वह चार्ज योग्य है कि नहीं। जब तक अवधी रहती है उसी में काम करना ठीक माना जाता है, अवधी के बाद ठीक नहीं रहता। आपको भी अवधी के भीतर काम करना है। बहुत बड़ा काम है। काल तो अपने हाथ में नहीं है, काल विजयी बनो।

कालविजयी वही बनता है जो समय से काम करता है, नहीं तो....। इसलिये कहना है कि थोड़ा सा समय देने का प्रयास करेंगे। मन्दिर बन रहा है- मन्दिर बन रहा है यह दिनों तक- महिनों तक कहें तो ठीक यदि वर्षों तक कहते रहो तो ठीक नहीं। फिर तो पंचवर्षीय योजना जैसा/काम-चलाऊ जैसा हो जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

"संकल्प का काल एक क्षण"

"आ० श्री एक सज्जन को समझा रहे थे कि हम अपनी मातृभाषा के द्वारा ही राष्ट्र का एवं व्यक्तिगत उत्थान कर सकते हैं। उनका काफी बड़ा विद्यालय था। वे भी आ० श्री की हाँ में हाँ मिलाते जा रहे थे। ये तो होना ही चाहिए। हम लोगों ने कहा - अब करो नहीं करो। उन्होंने कहा- करने में... समय तो लगेगा। आ० श्री तुरंत बोले- संकल्प में समय नहीं लगता वह तो एक क्षण में कर सकते हैं। अब जो भी करेंगे उसी संकल्प के लिए करेंगे।"

रविवार

27-1-19 चलने वाला कौन? प्रातः

यहाँ कौन चल रहा है, गति किसमें है? बताओ, यह प्रश्न है। सूर्य के बारे में कई लोग कह देते हैं। वो तो छोड़ दो। काल के बारे में पूछना है? कालचक्र है महाराज! चक्र तो कोई न कोई है। गाड़ी में भी चक्र लगा है। काल चक्र को किसने देखा? चल कौन रहा है ये ज्ञात नहीं तब तक जो कुछ भी संचालित हो रहा है वह सब अनुमान में आयेगा। तो बताओ काल को किसने देखा? फिर कहते क्यों हो?

वर्तना लक्षण तो हम भी स्वीकार करते हैं। चल कौन रहा है, चल नहीं सकता ये बात अलग है। आप चल रहे हैं या काल चल रहा है। जो चलने वाला है वह महत्त्व का होता है। जो चल नहीं रहा, चला रहा है उसकी ओर दृष्टि ज्यादा जाती है। घड़ी देखो कितना बजा है? मतलब इसे काल मानते हैं। कांटा भाग रहा है, वह तो हमारे ऊपर आधारित है। चाबी भर दे तो कांटा भागने लग जाता है। वास्तव में भाग कौन रहा है? देखना किसको है?

काल को देखने वाला धड़ाम से गिरेगा। चक्का है, अभी समझ में नहीं आया। उस काल की Size (आकार-प्रकार) क्या है? आता कब है? जाता कब है। आप आ गये। काल आ गया। शास्त्रों में लिखा है काल आ गया मतलब जिन्दगी पूर्ण हो गयी। हम इसी के आधार पर थे। संकेत के

अनुसार चलो।

समय उस कांटे को लग रहा है, जो कार्य निर्धारित किया उसे लग रहा है। जिसके काम को देखने की आवश्यकता नहीं है। कई लोग कहते हैं घड़ी आ गयी। कौनसी घड़ी? वह व्यक्ति आ गया पक्का है 10 बज गया। घड़ी को कोई नहीं बांधता। "घड़ी को मिलाना पड़ता है उस व्यक्ति से जो चलने वाला होता है। चल नहीं रहा बस हाथ में घड़ी बांधे है। [आपकी ऐसी ही चर्या है]

जब कहते हो तो फिर चर्या बनाओ। जिन्दगी तो जिन्दगी है। गुरुजी कालस्तु हेय कहकर प्रेरित किया। कार्य निर्धारण अपने आप हो जाता है। before time आपका तो Late time चलता है। लेट क्यों हो गये? लेट गये होंगे। उठो जवानो उठो। उत्थान भी साथ हो जाता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

"रविवार मध्याह्न प्रवचन का सार"

"प्रकृति की हर वस्तु शिक्षा देती है। कमल को सूर्यबन्धु कहा जाता है। सूर्य का प्रकाश एवं प्रताप हो तो वह खिलता है अन्यथा नहीं। सूर्य अस्त कमल भी सब क्रियायें समेट लेता है। रात में खाना - पीना - चलना - फिरना - बोलना नहीं चाहिए। पक्षी कभी भी रात में घूमते - फिरते नहीं, बोलते नहीं इनसे शिक्षा लेना चाहिए।"

२8-1-19 "कैसे निकालें मोह का कांटा" प्रात:

आपने पैरों में चलते समय असावधानी के कारण अथवा न दिखने से कांटा गढ़ गया। ये बोध हो जाता है। उसकी चुभन के विषय में आप ही अनुभव कर सकते हैं। वह कांटा पाँव में एक ही दिशा में भीतर तीर की भांति प्रविष्ट हो गया। चुंकि तनाव में इतना था कि पैरों ने भी स्थान दे दिया। पैर के पास जितने प्रदेश थे उतने ही है। अब धीरे-धीरे वह पैर तनता गया। वेदना असह्य होने से सूई से निकालने का प्रयास विफल हो गया।

एक पैर से ही चला जाता है पर एक पैर का आदमी तो है नहीं। दोनो पैर रखे बगैर नहीं चल सकता। सुन रहे हो? (हाँ जी) ये सब बातें मैं इसलिए पूछ रहा हूँ कि क्रम के अनुसार ही काम होता है। एक साथ दोनो पैर रखे बिना चल नहीं सकते। अब वह काँटा ऐसा गढ़ गया कि चलने को तैयार ही नहीं। जैसे कोई आपकी अनुपस्थिति में घुस गया हो। अब नहीं जाऊँगा। कई बार आपही ने तो कहा भी है- ये आपका ही समझो। रहने के लिए कहा है तो रह सकते हो।

रास्ता सीधा भी है। सभी पुरुषार्थ करने पर भी कांटा नहीं निकला तो नाई को बुलाया गया। नाई पैर की रोशनी देखकर समझ गया कि अभी तेजी में है- तन गया है। बार-बार छेड़ाछाड़ी का यह परिणाम है। उस कांटे की दशा भीतर और आपकी बाहर की ओर है। उसका सिर आपकी ओर तथा मुख भीतर की ओर है। आप ज्यादा क्रुद्ध करेंगे तो

वह टूट सकता है।

मुख नीचे एवं गहराई की ओर है। थोड़ा सा भी तनाव नहीं दे सकते, न ही एक कदम रख सकते हैं। दूसरे नाई को बुलाओ। नाई तो नाई ही है। यह भी कहने लगा हमारे भी बस की बात नहीं है। फिर एक और अनुभवी नाई को बुलाया गया। उसने कहा- मैं निकाल दूंगा। सामने वाला भी कह रहा है मैं तैयार हूँ लेकिन हाथ नहीं लगाना। हाथ लगाने पर दर्द होता है। तो आप दर्द ज्यादा करना चाहते हो या कम करना चाहते हो। तनाव को कम कैसे किया जावे?

उसने कहा इसे गोद में दे दो। आप संज्ञी हैं असंज्ञी तो हैं नहीं। आप सच में चाहते ही नहीं निकालना। कांटा तो गढ़ा ही है- दूसरा उसमें साथ दे रहा है। कौन है वह? [मन] उस ओर मन मत ले जाओ। जो कांटा पैर में गढ़ा है- आँख भी उसी ओर चली जाती है। आँख में तो कांटा गढ़ा नहीं फिर आँख में पानी क्यों? पैर में गढ़ा है। "जिस दर्द को दूर करना चाहते हो उस दर्द को भूलने का प्रयास करो।"

भूलता कौन है और याद कौन करता है? [मन] मन में तो कांटा गढ़ा नहीं। पैर में कांटा गढ़ा पैर ही सड़ता है। मन को उस ओर मत ले जाओ। ध्यान मत ले जाओ। ये कहना चाह रहा हूँ। इधर बोली भी चल रही है उधर ध्यान अन्यत्र भी जा रहा है। ऐसे में काम खराब होगा। मन के कारण ज्यादा होता है। हाथ अपने आप नहीं

दबता है। दबाने पर पता चला यहाँ है कांटा।

कांटा निकालने हेतु थोड़ी सी जगह बनाना है, काम हो जायेगा। फंसा हुआ था थोड़ी सी जगह दे दी। उसमें घासलेट का तेल इत्यादि डाल दिया। अब धीरे-धीरे दुं दोनों अंगुली/अंगुठे से दबाना प्रारम्भ किया। इधर मत देखो- कांटा बाहर निकल रहा है। एकदम दबा देता है। तेल के द्वारा वह ऊपर आ जाता है। ये पद्धति है काँटा निकालने की। आप एक साथ कर देते हैं, इससे वह दोबारा आता ही नहीं। दानदाता को भी ऐसे ही बताना चाहिए।

मोह का शल्य गढ़ा हुआ है। थोड़ा सा निकाल दिया फिर वह बार-बार आयेगा। निशल्य होना चाहते हो। सम्यक्‍दर्शन को दृढ़ करना चाहते हो तो निशल्य बनो। इसीलिये निःशल्य व्रती का लक्षण कहा। शल्य से फल नहीं मिलेगा। निशल्य होकर कर दोगे तो फिर स्वयं कहोगे- ये मेरा नहीं है। बस ये ध्यान होते ही मन में स्थिरता आ जायेगी। मन में ही स्थिरता एवं मन में ही अस्थिरता होती है। ज्ञान तो आपका लम्बा-चौड़ा है ध्यान भी तो हो।

मन स्थिर हो जाये फिर तन और धन की बात ही क्या? "आप मन वाले हैं, मतवाले मत बनो। मनमाना भी मत करो। हाँ! मन को मनाओ।" जो मन को मना लेता है वह संसार को जीत लेता है, जो मनमाना करता है वह कुछ नहीं कर सकता। ज्यादा ताली मत बजाओ। अब आपकी ताली का प्रभाव रहा नहीं। मन सुनता ही नहीं - सुनाता रहता है। आप मन को कह दो- ये तुम्हारे अधिकार

का क्षेत्र नहीं है।

तुम्हें तो मात्र आत्मा के बारे में सोचना चाहिए। तन को भी खुराक मिल जायेगी, दोनों का काम हो जायेगा। तो सूत्र याद रखना - "निःशल्यो व्रती" सम्यग्दर्शन को तो प्राप्त कर लिया इससे सम्यग्चारित्र को भी प्राप्त करना है। मन को शल्य रहित करने का प्रयास करो। धन्य है वे लोग जो अपने कांटे को तो बाहर निकाल दिये अड़ोस-पड़ोस के कांटे को भी बाहर निकालने में लगे है।

ऐसा करने से उनकी आमदनी और बढ़ेगी। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी का मोह का कांटा दूर हो। आप ही देर करते हैं, आपसे ही मोक्षमार्ग होता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

"संस्मरण"

"सागर के प्रसिद्ध समाजसेवी वर्ष 2007 में पथरिया आर्यिका के दर्शनार्थ पंचकल्याणक में गये। लौटते समय उन पर कुछ लोगों ने हमला कर दिया। इन्हें 6 चाकू लग गये। बस उन्होंने गुरुजी का ही ध्यान किया, उन्हें कुछ नहीं हुआ।

वर्ष 2019 में अभी जब हम सागर आये इन्होंने मंच से ये बात सुनाई और कहा जिसके सिर पर गुरु का हाथ होता है उसका बाल भी बांका नहीं हो सकता। पप्पू तिवारी भी उन्हीं में से एक है।" (शिवसेना प्रमुख)

29-1-19 "शिक्षा सतर्क होने की" प्रातः

आपके पास दो-दो आँखे हैं और उसके साथ ही दो-दो कान भी हैं। दुकान नहीं दो कान है। इसके उपरान्त भी सामने वाली वस्तु के ऊपर आपका विश्वास नहीं होता। अब तीसरा साधन ढूंढना पड़ेगा। कान एवं आंख दोनों समीपवर्ती (पास-पास) है। दो आंखे होकर भी अचूक होकर कोई वस्तु को ढूंढकर नहीं निकाल पाती। कान का भी यही हाल है। सुनकर भी हमने कितनी बार कहा पता नहीं। महाराज! एक बार और सुना दो।

कोई बात नहीं। हम भी इसीलिए बैठे हैं। ग्राहकों को छोड़कर जाये कहाँ? हमारी दुकान के अलावा यह माल कहीं मिलेगा भी नहीं। यह देखी और सुनी बात नहीं दिल की बात है। किस कोने में बैठा है वह दिल। उस दिल को आँखो से देख नहीं सकते और कानों से सुन नहीं सकते। हाँ छाती पर हाथ रखकर वह कहता है ये दिल की बात है। इसमें बीच में कोई तीसरा व्यक्ति आ ही नहीं सकता। हम इससे ज्यादा नहीं समझते। हमने आंख-कान और दिल का परिचय तो दे दिया क्योंकि इससे ज्यादा हम भी नहीं समझते।

सोचने-समझने से विश्वास हो जाता है। सब दुकान छोड़कर आखिर आना इते ही पड़ता है। वह आ रहा है तो हम भाव में परिवर्तन कर दें- ऐसा नहीं है। हमारे यहाँ एक ही माल और एक ही भाव है। विश्वास करना ही पड़ेगा। अब इनसे हटकर आपके सामने एक व्यक्ति और रखा है। उसकी परीक्षा है-आपकी भी परीक्षा है। एक पहेली का

अर्थात Board सामने हैं।

आप उस सामने वाले व्यक्ति को देख रहे हैं, सामने वाला व्यक्ति आपको देख रहा है किन्तु जो तीसरा व्यक्ति है वह देख नहीं सकता। उसकी आँखों पर पट्टी बंधी है। Board पर कुछ शब्द अथवा अंक लिखे हैं, उन पर निशाना साधना है। आवरण - कवच कुछ नहीं पहने एक व्यक्ति बीच में खड़ा है। वह भाले से सीधा निशाना लगाता है। गर्दन के पास से भाला जाकर उसी शब्द / अंक पर लग जाता है। तब सबको विश्वास हो जाता है, तालियाँ बज जाती हैं।

इससे सिद्ध है बिना विद्यालय भी शिक्षा ली जा सकती है। कहना ये है कि पेड़ के नीचे बैठकर भी शिक्षा दी जा सकती है। आप बच्चों को भेजते थे। आज माहौल ही ऐसा हो गया है। खैर ये आपका विषय है। 10-20 बार भाला फेंकता है तो ऐसा हो जाता है। विश्वास कैसे करें। आँखों पर पट्टी बांध दी। इस प्रकार आँख से परे भी सम्बन्ध रहता है। जब भाला फेंकता है - तो लोग ताली बजाते हैं। लेकिन उसे भाला फेंकते समय बहुत सतर्क रहना होता है।

"तेरी दो आँखें - तेरी ओर हजार - सतर्क रहो" तर्क कहाँ से आ गया। आँखों - कानों में तर्क नहीं, आप सतर्क हो जाते हैं। आँखों एवं कानों पर भी जब भरोसा नहीं रहता तब जाकर भाव का मूल्य समझ में आता है। आप द्वारा लिखे भाव कृत्रिम (आर्टिफिशियल) - बनावटी हैं, भीतरी भाव नहीं हैं।

ग्राहक तो भाव देता ही है।

लेलो हमारे बारे में धोखा नहीं पायेंगे "अभोक्ता भाव को समझता है- दुकानदार नहीं।" दुकानदार भी खाना-पीना है ही नहीं बेचना है। इसीलिए तो ग्राहक दूर से भी चले आते हैं। पुरुषार्थ तो उसका है, आपका तो इतना ही पुरुषार्थ है- कमाना है। 50-60 वर्ष हो गये लुटते आये हैं। इतना कहना है आप आज हर पहलु से लुट रहे हैं। चौपाल (चौराहे) पे खड़े हो गये। सर्वस्व उस व्यक्ति के हाथ में दे रहे हैं।

उसके पास आँखे नहीं है फिर भी करता है, किताब की जरूरत नहीं बस सतर्क होने की जरूरत है। समय तो आपका हो गया है। ध्यान रखना! आप दो आँख- दो कान वाले हो साथ ही दिल वाले भी हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

30-1-19 "आओ लायें पंचमकाल में चतुर्थ काल" प्रातः

एक किसान है और वह हमेशा-हमेशा अपनी किसानियत में व्यस्त रहता है, मानो उसके पास कषाय है ही नहीं। फिर भी मानव को मूल का पुतला कहा जाता है। सामान्य जीवन में कषाय का अभाव नहीं रहता है। जिसका अभाव रहता है उसको आगे-पीछे से खोदा-खोदी करके ले आते हैं। उसके खेत में कुँआ नहीं था। वह सोचता कि यहाँ कुँआ खोदने पर पानी निकल आयेगा तो अड़ोस-पड़ोस के साथ खूब उपयोग करूंगा। पानी खूब आ गया। इसे देखकर दूसरे ने जो पड़ोस में था उसने भी कुँआ खुदवाया। उसमें भी भरपूर पानी आ गया। हवन

मैं यह सोचने लगा।

ऐसे-ऐसे मैं करूंगा। बेच भी दूंगा। सब सुभिक्ष हो जायेगा। अरे! पानी को बेचने वाला-युग सेकर रहा हूँ। राष्ट्र की उन्नति सद्विचार/सद्भावना से हुआ करती है। भारत में भी विदेश की हवा ऐसी पड़ी बोतल-बोतल बिक रही है। पहले सुनते थे यन्त्र से पानी नहीं निकलता था ताकि उतना ही खर्च हो जितना जरूरी। आज मनुष्य के लिए कितना खर्च हो रहा है पता ही नहीं। जब हम छोटे थे, मेले-ठेले में जाते तो बहुत मांगने पर चवन्नी मिलती थी और आज क्या हो गया?

अब बोलो उस समय चवन्नी का प्रभाव था, आज करोड़ों का भी प्रभाव नहीं। भारत में मुद्रा की कीमत बहुत गिर गयी। अब सौ रु. की कीमत 100 नहीं रही। फिर कहते हो हमारी बहुत उन्नति हो गयी। इस अवनति का कारण आपको जानना होगा। आपको अर्थव्यवस्था समझना है। मैं कहना नहीं चाहता, परन्तु यदि कहूँगा नहीं तो आप और नीचे जा सकते हैं। भीतर उतरोगे नहीं तो अतीत के उस स्वरूप को कैसे पाओगे?

छहढालाकार पं. दौलतराम जी ने लिखा है-जल-मृतिका. . . . . गहे न अदत्ता। इन दोनों को हाथ लगाते समय सावधान। इन दोनों पर सबका समान अधिकार है। आपने अपने अधिकार में रखा तो आज भारत की क्या दशा है। शिक्षा-पद्धति को समझना चाहिए। जैसे-जैसे लोभ-लालच बढ़ा वैसे-वैसे पानी

का स्तर नीचे चला गया।

स्वप्न में भी आपने गलत सोचा तो उसका प्रभाव पड़ता है। पानी के स्तर से भी नीचे भावों का स्तर जा रहा है। यहाँ कभी दूध नहीं बिकता था, आज पानी बिक रहा है। आप इसे विकास मान रहे हो। ज्यादा तो नहीं कह सकता नहीं तो कल इतनी भीड़ यहाँ नहीं आयेगी। दूध-घी की नदियाँ बहने वाले भारत में आज शुद्ध ऑक्सीजन नहीं मिल रही है। हाँ, मिलती है तो अस्पताल में। यह बाहर की प्राणवायु नहीं भाग्योदय की प्राणवायु है।

वह दवाई/एक्सरसाइज के रूप में प्राप्त हो रही है। तो वह किसान भावों की ओर नहीं देख पा रहा था इसी कारण पानी का स्तर नीचे चला गया। उसी के बराबर में विशाल कुंआ है किन्तु लबालब भरा हुआ है। पैसों का लोभ स्वप्न में भी नहीं आया। बस एक ही भावना रहती इसका पानी सबको दें दूं। ये पंचम काल का दौर है फिर भी मैंने जाग्रत कर दिया कि कहीं भावों में लोभ न आ जाये। सुबह कुछ लोग आये थे- बोले महाराज! आपके आशीर्वाद से गौशाला जहाँ कभी पानी नहीं निकला कल पानी-पानी हो गया। (आ.श्री के गंधोदक का चमत्कार)

प्राणी है तो पानी क्यों नहीं होगा। सुभिक्ष का वातावरण बनाये रखो। ये दोनों व्यक्ति (किसान) याद रखना। एक पंचम काल का है तो दूसरा चतुर्थकाल का।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हो

३१-१-१९ भावना हो - आग्रह नहीं प्रातः

अभी आप लोगों के बीच में से एक सम्पन्न व्यक्ति ने ऐसी भावना की - ऐसी भावना की (१ करोड़ का दान/पाद प्रक्षालन भी) अब क्या करें? [चातुर्मास] भावना तो बहुत अच्छी है। भावना के माध्यम से ही संसार तट से उस तट तक पहुँच सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। मैं कई बार सोचता भी हूँ भगवान इनकी भावना पूर्ण हो। भावना भाने में तो कोई तकलीफ है भी नहीं। और हमारे हाथ में है क्या? [सब] फिर तो सारी रेखायें हमारे हाथ में आ जायें।

मैं भी सोचता रहता हूँ कि ऐसी ऋद्धि प्राप्त हो इन लोगों की भावना पूर्ण हो जाये। आकुलता इनकी नष्ट हो जाये। पर ध्यान रखो - ऋद्धियों का उपयोग किया नहीं जाता है। आगम के अनुकूल ही ऋद्धियों का प्रयोग किया जाता है। आनन्द का वातावरण हो/सुभिक्ष हो इस दृष्टि से प्रयोग बताया। ध्यान का प्रयोग एवं ऋद्धियों का प्रयोग अलग-अलग है। मात्र सागर वालों पर ही क्यों? प्रत्येक व्यक्ति कहीं का भी हो उसके प्रति भावना करने में बुराई क्या है?

फिर मान लो यदि ऋद्धि का प्रयोग कर लिया और एक चौके में अन्तराय हो गया तो अन्य सभी जगह भी अन्तराय होगा। आगे-पीछे तो कर नहीं सकते। भावना रखने में बाधा नहीं किन्तु आपूर्ति करना सम्भव नहीं। इसमें भगवान भी हाँ-हूँ नहीं कह सकते फिर हमसे क्यों हाँ-हूँ कहलवा रहे हो। उनसे पूछ लो। अपने यहाँ ऐसा है ही नहीं। भावना को

भावना तक ही रखीये।

लम्बा प्रवास है। जिनवाणी की ऐसी आज्ञा नहीं है।

हे भगवान ! कब इनका क्षुधा रोग निवारणार्थ होगा। भावना-पूजन तो करीये इससे आगे तो बहुत कठिन होगा। एक फिर भगवान से पूछ ले, किसी एक व्यक्ति को ऐसी लब्धि प्राप्त हो जाये कि वह प्रत्येक घर में चला जावे। आदिनाथ को ही ले लो। दीक्षा के दिन रोना-धोना ज्यादा हो गया था। सोच लेते ना भिराय-मरुदेवी अन्य परिवार जन किसी की ओर भी नहीं देखा। हमारी ओर देखो- हम तो कितने कृपालु हैं। ऐसी कठोरता अपना लें तो एक-आध को तो हार्ट-अटैक हो जायेगा।

हम बड़ी सौम्यता के साथ दवाइयों का प्रयोग करते हैं। आदिनाथ तो हाँ-हूँ भी नहीं, 6 महिने बाद उठे पर पसीना तक भी नहीं आया। 6 माह में 1 बार तो लगभग 2000 बार आहार पर उठे होंगे किन्तु किसी भी ग्रन्थ में उनके परिवार के यहाँ आहार (मरुदेवी, चक्रवर्ती, ब्राह्मी-सुन्दरी) हुये हो नहीं आता। हम बहुत अच्छे हैं दो-2, तीन-3 बार हो जाता है। ये भी मत कहना महाराज तो देखते तक नहीं- नीचे देखकर तो चलते हैं। हाँ तो कहो। नीचे देखने पर ऊपर कुछ नहीं दिखता। इसमें किसी का भरोसा नहीं - भगवान भरोसे ही इस तरह के भाव प्रभु हो सकते हैं। उस व्यक्ति ने सबको गद्गद् कर दिया पर गदगद् तक ही सीमित रहे। भावना अच्छी रखो - दरिद्रता न लाओ। महापुरुषों का संबंध अलौकिक हुआ करता है, मेरा-तेरा सब कुछ नहीं होता। यह अद्वितीय पुण्य का ही परिणाम है। इसीलिये वे संसारी प्राणियों को भी तारने का काम करते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो।

1-2-19 "हस्ताक्षर हो - हस्तक्षेप नहीं" प्रातः

अपनी पहचान कई बिन्दुओं की अपेक्षा सोचने से भिन्न-भिन्न होती है। "आपकी पहचान मेरे काम तो आ सकती है, लेकिन स्वयं की आपकी पहचान स्वयं के कोई काम की नहीं।" समझे? इसलिए जिस पहचान पर आप इतना गर्व किये हो उसे भगवान के चरणों में चढ़ा देना। ये अवश्य ध्यान रखना एक बार जो चरणों में चढ़ा दी जाती है वह अब मेरे काम की नहीं, वह निर्माल्य हो गयी। इसलिए आपकी पहचान आपके काम नहीं आयेगी। अब बोलो!

आपने कन्या को पाला-पोषा बड़ा किया और योग्य वर देखकर कन्या दान कर दिया। क्यों कि वह देने योग्य चीज है, योग्य स्थान पर दे दिया। अब जब कभी भी पिता अपनी कन्या के घर जाता है तो कुछ लेकर जाता है। जब कन्या को ही दे दिया तो कुछ ले ले, नहीं ले सकता। कन्या ही भेली जायेगी। सोने की भी चाह है तो भी पिता नहीं लेगा। जिसके लिए दिया उसकी समृद्धि में ही हमारी पहचान है। जब कभी भी बात होगी- किसकी बेटी है ये? उसके द्वारा आपकी पहचान हो रही है, स्वयं द्वारा नहीं।

इसलिए पहले ही कह दिया स्वयं की पहचान आपके काम की नहीं। "हस्ताक्षर के माध्यम से जो कुछ भी चढ़ाना था चढ़ा दिया अब उसमें हस्तक्षेप नहीं चलेगा।" अब हमारा व्रत है लेना नहीं है। इसलिए रत्तीभर भी अपने पास नहीं रखना। महाराज ने तो हमारी छुड़वा दई। ऐसा हम सुनना नहीं चाहते।

बुन्देलखण्ड में "छुड़वा दई" ऐसा कहते हैं।

इसलिए कि हम लेते नहीं, छुड़वा देते हैं। दे देते हैं। कहीं लोभ न हो जाये इसलिए अभी नहीं मिलेगा हाँ Fix में मिलेगा। आपही को मिलेगा उसी देश की मुद्रा में मिलेगा। एक-एक पाई आपको आपके ही हस्ताक्षर से मिलेगी। अब ध्यान रखना - कन्या की भाँति त्याग कर दिया उस पर कभी लोभ नहीं करना। सुन रहे हो कि नहीं? हओ तो कह रहे हो। पराये धन को कोई भी लाडुकार नहीं रखना चाहते।

कन्या अब आपकी नहीं रही अब उसे न ही सोर लगेगी न ही सूतक। वह कन्या उस परिवार का कोई Address नहीं रखती। कुछ भी नहीं रख सकते। जिस कन्या को आज तक पाला-पोसा अब वह सूतक भी नहीं मानती किन्तु यह जानकर आपकी आँखों में पानी नहीं आता। बल्कि सोती और है, उसी से आपकी पहचान होगी, आपका नाम भर रहता है, काम सब उनका है। "एक बार हस्ताक्षर कर दिया, हस्तक्षेप नहीं करेंगे।" अनादि से परद्रव्य को ही लेने में लगे हैं।

अपना शब्द जो है वह अपने आपके न आपके लिए है वह अपने में है, सपने नहीं देखना चाहिए। छुड़वा दे सकते हैं पर छुड़वा ले नहीं सकते। इसलिए जिसका है उसे दे दो। अन्यथा जो भी है वह सरकारी हो जायेगा। हमारी सरकार तो प्रभु है। पहले के लोग ऐसा ही करते थे, जितना आवश्यक है रख लिया शेष सरकार के नाम कर

दिया।

आप नहीं देंगे तो जनता सरकार (लोग) दिलवा देगी। अखबार कभी गलत बात नहीं करती। इस प्रकार अपने से देकर दाता कहलाओ। पाई-पाई जोड़कर भी यदि कंजुस समझे जानेवाला उदारमना बन सकता है। कन्यादान का उदाहरण याद रखो। Government सर्वप्रथम लेती है। दामाद की तरह नहीं बनना। कब तक दामाद ससुराल में आये हो ब्याज सहित दे दो। काहे में? सहहकूर में।

अहिंसा परमोधर्म की जय।

"बाजरा नहीं ये वज्र है"

"पूज्य गुरुवर ने इन दिनों बाजरा के बारें में हम लोगों एवं डॉक्टरों को बताया। वे कहते है यह पौष्टिक-सुपाच्य एवं भारतीय अन्न है। गेहूँ भारतीय बीज नहीं है। बाजरा-ज्वार-मक्का मूल रूप से यहीं के हैं। बाजरा में वे सभी तत्त्व मौजूद है जो स्वस्थ होने/रहने के लिए आवश्यक है। यह लगभग सभी तरह की छोटी-बडी बीमारीयों के लिए कवच समान है। माइग्रेन, हार्ट, बी.पी. डायबीटीज, मोटापा जो बिमारीयों की जड़ है उन सबको उखाड़कर फेंक देता है बाजरा। इसको खाने वाले की हड्डीयाँ वज्र के समान बन जाती है। महिलाओं की बिमारीयाँ (यथा-मासिक धर्म, गर्भवती) सभी में बाजरा लाभप्रद है। इसीलिए कई क्षेत्रों में बाजरा आज भी मुख्य भोजन है।"

2-2-19 "Fast Food है अजानफल" प्रातः

अपने यहाँ रोगों से दूर रहने के लिए काफी संदेश, लेख, पुस्तकें आदि दिये हैं। इससे शरीर को निरोग रख सकते हैं। शरीर निरोग रहेगा तभी बुद्धि भी स्वस्थ (अच्छी) रहेगी। क्यों ऐसा ही कहा है न? जबरदस्ती ऐसो नहीं कहना। सुनो! दो मित्र घूमने के लिए निकले। घूमते-घूमते वे काफी आगे (दूर) निकल गये। रास्ता भी घुमावदार आ गया, वे जंगल में चले गये। जंगल में अच्छा भी लगने लगा। थोड़ी ही देर में उन्हें भूख-प्यास की वेदना होने लगी। जंगल में खोजना शुरू किया कि कुछ मिल जाये पर जंगल में क्या मिलेगा शेर-चीता के अलावा।

फिर भी एक वृक्ष हरा-भरा फलों से युक्त उन्हें दिखा। वे उसके पास गये और छाया में सर्वप्रथम दोनों बैठ गये। एक ने कहा- ऐसे सुन्दर फल तो कभी मैंने देखे ही नहीं, स्वप्न में भी नहीं देखा। गंध भी ऐसी कि दोनों मोहित हो गये। चलो अब तोड़कर तृप्त हो जाये। दूसरे मित्र ने कहा- ये फल देखने में बहुत सुन्दर, सूंघने में भी अच्छी गंध से युक्त है और रस भी मीठा होगा आदि-आदि अनुमान से बोलने लगा पर उसने पूछा इसका नाम तो बताओ। जब नाम नहीं बताया तो मित्र से कहा-

जब मैं छोटा था तब माता-पिता ने मुझे अजान फल को न खाने का व्रत (संकल्प) दिलाया था। दिख रहा है तो वह जान लिया ऐसा नहीं उसका फल क्या है, प्रयोजन भूत है या नहीं, आरोग्यवर्धक है या नहीं आदि। इसलिए कुछ भी खाना हो खाओ पर अजान फल का तो त्याग कर दो। क्या ये फल कभी

तुमने खाया। वह बोला - मैं इसका नाम नहीं जानता। औरंग ही खाया परन्तु मुझे भूख लगी है - इसे छोड़ूंगा नहीं।

इस मित्र ने समझाया क्यों कि मित्र वही है जो संकट में बचायें। उसने खा लिया, कहा - मीठा भी है परन्तु एक ही मिनिट में उसके प्राणों का अवसान हो गया। हम भी जो भोजन लेते हैं वह रोते हुये नहीं, मुस्कान के साथ ही भोजन लेना चाहिए। उसने थोड़ी सी भी सहनशीलता नहीं रखी इसी कारण दुनिया से ही चला गया। माता-पिता गर्भावस्था में ही ऐसे संस्कार डालते हैं। मैं अभिभावकों से यह पूछना चाहता हूँ कि फास्टफूड अजानकल में आता है या जानकल में आता है?

कहाँ से आया? क्या है? कुछ पता नहीं। ऐसी मिठाई आती है, जितनी भी खाओ तृप्ति ही नहीं होगी। बम्बई की हवा मिठाई की तरह। यहाँ ऐसे-ऐसे बच्चे (बड़े नहीं) आते हैं फास्टफूड का आजीवन त्याग कर देते हैं। अच्छा किया। जो भी है घर का शुद्ध बनाकर खा लेंगे। इसमें क्या-क्या आता है? कल ही क्षुल्लक धैर्यसागर जी महाराज ने एक किताब भेजी। वे इस तरह के लेखों का संकलन करते रहते हैं और भेजते रहते हैं।

प्रसादसागर जी के पास प्राप्त कर सकते हैं। आपको अपने स्वयं का / घर का / समाज / अड़ोस-पड़ोस का संरक्षण करना है तो इसका त्याग करें। ये आपका कर्तव्य है। बार-बार आप कहते हो, महाराज आप तो हमारे ही हो। इसमें क्या बात है।

किन्तु ध्यान रखो हम परिग्रह नहीं रखते।

"धर्म का संहार हो - जीवन का उपसंहार नहीं" वह जीवन तो बहता ही रहे। खूब शान्ति हो। ऐसा जीवन हो जिसका संवर्धन एवं संशोधन होता जाये। आज रसोई घरों में पॉलिश के पॉलिश झूल रहे हैं। कैंसर है ये। ऐसी भविष्यवाणी हो चुकी 2025 तक प्रत्येक घर में एक सदस्य इस महाबिमारी से ग्रसित होगा। ऐसे में कैसे संरक्षण होगा। आँखे बंद करके मत सोचिये। हम कह ही सकते हैं, जबरदस्ती तो हम करते नहीं क्यों कि बंधे हैं।

बोली लगाते हैं, सरकारी बोली होती है। ऐसे ही प्रभावित करना है, उद्देश्य मोह कम करने का है। मोह को कम करना है या नहीं? हओ तो बोलो। हम और कुछ नहीं हओ बुलवाते रहते हैं ताकि रात 12 बजे भी नींद खुले तो वह हओ कहा था याद रहे। सही मित्र भी वही है। ये मनुष्य पर्याय मिली है इसका सदुपयोग कर लो। कुछ लोग अभी प्रतीक्षा में हैं बाद में कहेंगे हमारा नाम नहीं आया। दाम नहीं दिये तो नाम नहीं आया। ऐसा भी कर सकते हैं 5-6 व्यक्ति मिलकर एक आप दान दे सकते हैं। युक्ति से काम किया करो। सबसे ज्यादा मूर्ति हमारी है। हम इसी प्रकार करते हैं। एक कौड़ी पास नहीं है वैसे भी बड़ी रकम पास नहीं रखी जाती है और फिर हमारा बैंक भी ऐसा है जो कभी दिवालिया नहीं होगा और आपका भरोसा ही नहीं। बेचने के तरीके होते हैं, आपके तरीके से बिल्कुल अलग हैं। इस तरह भी कला को अपनाना चाहिए, हल्दी लगे न फिटकरी---।

। अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

3-2-19 "धर्म दिखाने योग्य नहीं, देखने योग्य" प्रातः

यह आपको ज्ञात होगा धर्म प्रायः करके देखने में नहीं आता और दिखाने में तो कहीं आता ही नहीं। प्रायःकरके सब लोगों की धारणा है हम धर्म की प्रभावना करके दिखायें। "जो दिखाने योग्य है ही नहीं देखने योग्य है, वह भी दूसरों की आँखों से नहीं।" जब आपकी ही दांयी आँख का नं. अलग बांयी आँख का अलग, नीचे का अलग, ऊपर का नम्बर अलग रहते हैं तथा वे नम्बर भी बदलते रहते हैं। (उनकी ज्योति आपस में मेल (समानता) नहीं खाती फिर दूसरे के चश्मे का नम्बर कैसे लगा सकते हैं?

आज तो दुकान खूब खुल गयी है। पहले धुंधला-धुंधला दिखता है, वस्त्र से साफ करो दिखने लगेगा। वह जब कॉच (I-Glass) को पोंछा तो दिखने लगा किन्तु बाद में ज्ञात हुआ दोनों कॉंच वस्त्र के साथ नीचे गिर गये थे। बात समझ में आयी? इसलिए दूसरे के नम्बर को मत देखो अपने नम्बर से देखो। पोंछ-पोंछ कर भी।

आज तो रविवार है। सुबह का नाश्ता नहीं होने पर बैठ ही गये हैं तो...। मध्याह्न में देखो लोग प्रबन्ध कर देंगे तो वैसे हमने तो अपना काम कर ही दिया है। आज आदिनाथ भगवान का मोक्षकल्याणक भी है। अभी कह रहे थे- आज पूरी मूर्तियाँ (लड्डू) करा लेंगे। आप नहीं लेंगे तो स्वयं ले लेंगे। पहले अच्छे ढंग से खा-पीकर के आ जाओ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

3-2-19 रविवारीय प्रवचनांश मध्याह्न

- रविवार का दूसरा नाम प्रियवार है।
- छोटी पंचायत हेतु छोटा पाण्डाल एवं बड़ी पंचायत हेतु बड़ा सभा-गृह बनाया है।
- लघुपथ से ही गुरु बनने की इच्छा बनी रहती है। लघु बनो गुरु बनने हेतु।
- रघुकुल का होना एवं गुरुकुल का होना दोनों अलग है। राम दोनों थे।
- कद सरहद तक ही रहता है मंजिल पर ये सब नहीं रहते। आरोग्य धाम हेतु स्वयं को रोग धाम मानना होगा।
- कद बाहरी है कोठी में आती होगी - स्तम्भ में नहीं।
- "भाग्योदय में कोठी (छविगृह) नहीं भीतरी स्तम्भ होता है"
- हम अपने को गुरु बनकर नहीं जान सकते, हां! गुरुकुल में रहकर जान सकते हो।
- आयुर्वेद भीतरी चिकित्सा करता है। आयु को जो जाने वह है आयुर्वेद। आधुनिक चिकित्सा के पास उसे जानने का कोई यंत्र नहीं। नाड़ी का भी ज्ञान नहीं है आज।
- भोपाल संस्मरण - चिरायु नहीं पूर्ण आयु वाले बनो। आयु पर विजय प्राप्त करना ही पूर्णायु है।
- गुरु-शिष्य के संबंध में कोई अनुबन्ध नहीं होता है।
- "अर्धरोग हरी निद्रा - पूर्ण रोग हरे क्षुधा"
- समयसार का उदाहरण - सोना बनाने की विधी। गुरु ने शिष्य को बतायी किन्तु समय अनुसार ही ज्ञान दिया जाता है।
- भारत को नहीं समझ पाना ही सबसे बड़ी बिमारी है। ▫▫▫

5-2-19 "करधनी पानी में न डूबे" प्रातः

नदी में आकस्मिक पूर आ गया और नदी को पार करने वाले लाखो की जनता होती है। क्या करें? पार करने वाली लाखो की जनता नदी तक तो अपने-अपने वाहनो से आये थे। अब ये वाहन तो छोड़ना पड़ेगा। नाविक ने कहा आपकी सेवा में हम बैठे है, आपको उस पार ले जायेंगे। एक-एक करके बैठते गये। कुछ देर में ही नाविक ने कहा अब रुकिये। नाव में भी एक करधनी होती है, उस करधनी के माध्यम से नाविक समझते है कि ये संतुलित नाव है।

नाविक ने देखा करधनी पानी में चली गयी है। उसने कहा- सुनो यात्रिको सुनो! करधनी डूब गयी है, नाव बीच में ही डूब जायेगी तट तक नहीं पहुँच पायेगी, अब उतरना नहीं उतरना आप सोचिये। हम वायदा करते हैं दो-तीन फेरा करके उस पार पहुँचा देंगे। फटाक से आधे से ज्यादा उतर गये। करधनी के ऊपर पानी होने पर एक भी पार नहीं हो पाता।

"नदी को नाव बिना पार करना संभव नहीं किन्तु नाव हो चुनाव न हो।" विवेक से ही काम होना चाहिए। जो विवेकशील थे वे तुरन्त उतर गये। इसी प्रकार हर क्षेत्र में संयम की आवश्यकता है। जब हर काम मे संयम चाहिए तो धार्मिक कार्य मे तो और अधिक संयम रखना

चाहिए।

प्राणी संयम एवं इन्द्रिय संयम दोनों प्रकार का संयम परम आवश्यक है। पांच इन्द्रियाँ होती है परन्तु ये अपना काम मन के द्वारा करती हैं। मन को इन्द्रिय नहीं कहा क्यों कि इसका कोई नियत स्थान नहीं है और न ही इसका कोई नियत विषय ही है जब कि इन्द्रियों के (पांचो) स्थान भी नियत हैं एवं विषय भी नियत है। मन का कोई ठीकाना नहीं हैं। मन रहता नहीं, आता-जाता रहता है।

कब उपस्थित और कब अनुपस्थित हो जाता है, पता नहीं। अभी तक कोई मोबाइल नहीं आया जो उसे पकड़ सके। आपको चाहिए तो मेरे पास उसका नम्बर है। इतना जो खिमदार है उसे बांधा है। फिर तीन लोक में कहीं भी जाओ उसे नियन्त्रण में रख सकते हो। सर्वप्रथम मन को पूछ लो बाद में हम बतायेंगे। मोक्ष मार्ग में आप थोड़ा भी प्रवेश करना चाहते हो तो पहले उसे पूछ लो। वह हाँ-हाँ कहता-कहता भी ना-ना कहने लगता है।

वही कभी भी लौट सकता है। मोक्ष मार्ग में लौटने की बात नहीं। यहाँ बोलियों से आप लाभ करते है परन्तु हमारे यहाँ त्याग की बात करते हैं। इसलिये त्यागने की बात करो। महाराज हम क्या करें? आपके दर्शन को आते हैं-तुरंत हटा देते हैं। हम कहते हैं अभी मन भरा ही नहीं। तो उसे Line में लगा दो पीछे-

पानी हेतु घड़े को line में भरने हेतु लगाते हैं। फिर दूसरा यह तय करो कि मन भरा है क्या?

आपको मन का गुलाम बनना है या राजा। मन के साथ रहकर राजा कभी बन ही नहीं सकते। मन अपने आप में राजा है। त्याग करने वाला ही मन को काबू में कर सकता है। सागर वाले अभी तक बोलियों में आगे रहे, अब त्याग में भी आगे आओ। मन को under में रखे बिना संयम ग्रहण नहीं कर सकते। ऐसे वाहन पर बैठे हैं जिसपर से उतरकर घर जाना कठिन है। भगवान से प्रार्थना करता हूँ आप लोग दान के साथ-साथ त्याग भी करें।

त्याग करने के बाद राग नहीं करना है। हरेक व्यक्ति अपने को टटोले। मन-वचन-काय से त्याग कर देने पर उस ओर ध्यान ही नहीं जाता है। आचार्यों ने इसीलिए उसे महाव्रती के समान माना। उतने समय तक उसने संकल्पपूर्वक पूर्ण त्याग कर दिया इसलिए वह महाव्रती के समान हो गया। त्याग सर्वस्व का किया जाता है। जैसे ही त्याग हो जाता है बिल्कुल हल्कापन महसूस होने लगता है। जितना विलम्ब करोगे उतना ही वजनदारी का अनुभव होगा। त्याग तो त्याग है, त्याग के बाद उसे हाथ भी नहीं लगाना याद भी नहीं करना। इसी से आपको लाभ होगा आगे चलकर श्रमण बन सकोगे। इसप्रकार मन को ठीकाना बना दो अन्यथा मन के अन्दर में तो रहना ही है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

5-2-19 "विज्ञान की कमजोरी" प्रातः

विज्ञान में खोज करते समय सारभूत पदार्थ की ओर दृष्टि रखी। ऐसी-ऐसी खोज विज्ञान ने की, हम भी मानते हैं किन्तु विज्ञान की उसी दशा को स्पष्ट करना चाहते हैं। विज्ञान ने खोज की पर ये भूल जाती है कि ये सब किसके आधार पर हो रहा है। वह जड़ की माया बोलती है, आप भी उसका समर्थन करने लग जाते हैं। जड़ की माया कहने से जड़ कहाँ-कहाँ रहता है? इमारतों में तो रहता ही है, इमारतों में भी वहाँ तक चला जाता है, जहाँ आप लोग नहीं जा पाते।

आज रत्नों के नग झूलते रहते हैं आप भी लट्टू हो जाते हैं। इस प्रकार नकली को ही असली मान बैठते हो। नकली हीरा बनाने में श्रम एवं धन ज्यादा लगता है, असली अपनी शुक्लता स्वयं लिए हुये रहता है। यह बनाना पड़ा, वह बना बनाया है। परिणमन हो सकता है - ये सब बातें हैं - जड़ की माया है। विज्ञान का थोड़ा भी प्रवेश इस आत्मा तक नहीं हो पाया। आत्मा को भीतर में तो माना है। पुद्गल को matter कहा एवं आत्मा को soul कहकर पुकारा। जब दोनों को स्वीकारा तो हमारा कहना है ये दोनों एक क्यों हुए। विज्ञान मौन है क्योंकि समझ में ही नहीं आया।

"शरीर से आत्मा को भिन्न करने की विधि विज्ञान के पास नहीं और जिनवाणी में सर्वत्र मिलती है।" तालियाँ भी आपकी माया है। बजाने वाले की ओर दृष्टि ही नहीं गयी। आत्मा का शरीर के साथ सम्बन्ध कैसे हुआ? यह अनादि से है जिसका आदि है ही नहीं उसकी खोज करना व्यर्थ है। विज्ञान इसी में

लगा है।

विज्ञान ने पुरुषार्थ द्वारा उस आत्मा के weight (भार) को ~~निकाल~~ [unclear] बताया। एक मरणासन्न को संदूक में बंद कर दिया। कुछ ही समय में संदूक फाड़कर आत्मा निकल गयी। [ग्राम] कौनसे तराजु से तोला पता नहीं। एक बार आत्मा शरीर से निकलकर ऊपर गयी तो गयी। आप देखते रह जायेंगे। इस सम्मिश्रण को अलग कर सकते हैं। जो व्यक्ति कष्ट से बचना चाहता है, बंधन को दूर करना चाहता है उसे उपाय सोचना चाहिए, हेय मानकर निकालने का प्रयास करना चाहिए।

जैसे - चूना और हल्दी दोनों पाउडर हैं। एक पीली दूसरा सफेद है दोनों को मिला दिया तीसरा ही रंग लाल आ गया। अब कोई भी रसायन प्रक्रिया हो पृथक नहीं होगा किन्तु आत्मा को शरीर से पृथक करने की विधी मोक्षमार्ग में आती है। आप सब मार्ग तो ढूंढ रहे हैं पर सम्मिश्रण के साथ चल रहे हैं। संसार इस अज्ञान में डूबा हुआ है। थोड़ा बहुत नहीं आमूल-चूल डूबा है। अन्तर्जगत की बात है ही नहीं। जो बाहर है वही भीतर मान रखा है।

इसे अलग करने का संकल्प लेना है, मोक्षमार्ग में चलना है। आगे से निर्णय करना है "यह है सो मैं नहीं हूँ।" इससे सस्ता भेद-विज्ञान का साधन नहीं। इसे घर साथ रख सकते हो। खरीदने - बेचने की बात है ही नहीं। वितराग विज्ञान पर श्रद्धान करो। भाग्योदय में आकर जो भगवान (नया model) है उन्हें देख स्वरूप का चिन्तन करो। शरीर से भी

दूर हो गये पर शरीर अभी साथ है।

कोई भी ऐसा रसायन नहीं जिससे शरीर-आत्मा पृथक हो सके। जिन्होंने पृथक कर दिया ऐसा वह शोध छात्र कौन होगा सोचो। दूध से घी पृथक करने में तो समय लगता ही लग सकता है किन्तु शरीर से आत्मा को पृथक करने में मात्र अन्तर्मुहूर्त लगता है। कितनी भी तपस्या करो जब भी मुक्ति होगी इतने काल में होगी। यह आपके सामने रखा। जिसमें राग नहीं होना था उसी से अनुराग हो गया। अविनश्वर को नश्वर मान बैठे हो। इसीलिए बार-बार आना जाना लगा हुआ है।

भेदज्ञान बेचने-खरीदने की वस्तु नहीं, ध्यान नहीं तो श्रद्धान तो करें। जहाँ पर हो वहीं कर सकते हो। जितनी भी क्रिया हो रही है उनका ड्राइवर कौन? कैसा वैचित्र्य है उस ड्राइवर की ओर किसी का ध्यान नहीं। इसलिए आत्मा पर ऐसे संस्कार डालते रहना है "मैं शरीर से पृथक हूँ।" दुकान पर भी बैठे-बैठे कर सकते हैं। यही भेदविज्ञान शरीर से राग समाप्त कर देगा। भीतरी स्फूर्ति आयेगी। कमजोर शरीर वाला भी भागने लग जाता है। आत्मा का इशारा पाकर चलते जायें शरीर अपना काम करता रहे।

इसे वेतन दिया है काम लिया करो। इतना बड़ा काम कैसे होगा? (मन्दिर) देखते रहियो, सागर है। कुछ पाना है तो नीचे तक गोता लगाना पड़ता है। सबके पास है बस उसे निकालने की जरूरत है। खोदना पड़ता है तब निकलता है। आपका भेदज्ञान सम्यग्ज्ञान में परिवर्तित हो इसी भावना से। अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

सागर जेल

5-2-19 "कारागार में हुआ करामात" मध्याह्न

यहाँ दो-तीन वर्ष पूर्व आना हुआ था। यहाँ के परिसर में घुमकर मुझे अवगत कराया गया। कुछ ये कार्य पूर्व से ही यहाँ चल रहा था। प्राचीन रूप से चल रहा था। युग के अनुरूप परिवर्तन आवश्यक होता है। अभी आकर देख रहे हैं काफी अन्तर आ गया है। प्रत्येक वस्तु का अपना मूल्य हुआ करता है। धारणा को बदला तो आज ये बहुमूल्य -विविधता) एवं उपयोगिता को लिए हुये आपके सामने है।

हाथ से बने वस्त्र का पूर्णतः अभाव जैसा हो गया था, अब विकास का क्रम चालु हो गया है। "हाथ से बने वस्त्र एवं मशीन (यंत्र) से बने वस्त्र में उतना ही अन्तर है जितना डब्बे के दूध एवं माई (माँ) के दूध में अन्तर है।" इसमें श्रम के साथ भाव झलक रहे हैं। यहाँ तक प्रभावित हो रहे हैं कि मैं अलग दुनिया मे जा रहा हूँ। मन लग रहा है? और लगाना है। आपके कार्य को देखने के लिए देव लोग भी तरसेन्गे।

वे भी सोचेन्गे चलो धरती पर हम भी थोड़ा समय घुमकर आये जहाँ साक्षात स्वर्ग है। श्रम के बिना विद्या एवं अन्य साधनों से जो मिलता है उसकी किमत नहीं। अपना स्वाभिमान जाग्रत होना चाहिए। श्रम के द्वारा ही मोक्ष एवं स्वर्ग दोनो (स्वर्गापवर्ग) का मार्ग प्रशस्त होता है। पुरुषार्थ करने पर ही आपको सफलता मिलेगी। देव लोग भी आपके पैर चुमेन्गे। इसमें कोई संदेह

नहीं करना है।

"देवा वितस्स पणमन्ति जस्स धम्मे सया मणो"

जिसके मन में रात-दिन स्वाधीन बनने की ही पीड़ा जैसी होती हैं देव लोग ढूंढकर ऐसे व्यक्ति को नमोस्तु करते हैं। इसके बिना संसार में शरण नहीं। असावधानी, नासमझी अथवा उम्र के तकाजे के कारण ऐसी गलती हो गयी जो यहाँ तक आये। व्यक्ति गिर जाता है- हाथ-पाँव टूट जाते हैं पर कुछ ही समय में पुनः खड़ा होकर चल सकता है। पश्चाताप से आप भी ऐसा ही कर सकते हैं।

अभी आप लोगों के मुख से प्रार्थना एक स्वर में सुनी। अच्छे-अच्छे लोग भी सोचेंगे ये क्या हो गया! राजधानी से, जेलों से, राजनेता एवं राष्ट्र को समर्पित व्यक्तित्व आप लोगों के काम को देखने आने वाले हैं। सब कार्य तो एक-साथ नहीं हो सकता था (मेरा-उनका साथ आना)। यहाँ 108 हथकरघा का प्रबन्ध होना है। आना तो था पर पहले से कुछ भी कह नहीं सकता अतः सामायिक जैसे ही पूर्ण हुयी चल पड़े। कहने से गड़बड़ हो जाता।

अच्छे से आ गये। आप लोगों के समूह को देखा और अच्छा लगा। इसी बीच स्थान का चयन भी बहुत व्यवस्थित हुआ। झुग्गी-झोपड़ी जैसे नहीं बना। अभी इसे और विस्तार करना है। इसीका प्रभाव सभी राज्यों एवं केन्द्र पर भी पड़ने वाला है। आप लोगों को अच्छे नम्बर से पास होना है। ऐसे नम्बर लेना है जिसके बाद कोई नम्बर ही न हो। सभी

व्यवस्था हो जायेगी।

सुधार की अपेक्षा जो भी आवश्यक है वह करें। ये लोग भी (कैदी) अवकाश प्राप्त होने के बाद भी जीवन व्यवस्थित चले इस प्रकार से करना है। सरकार एवं जनता को भी सोचना पड़ेगा। जो व्यक्ति परिश्रम करता है उसे दूसरों से मांगने की जरूरत नहीं बल्कि दुनिया ऐसे व्यक्ति की मांग करती है। उचित पदार्थ को उचित दाम पर लेने को आतुर है। भारत के पास इतनी बड़ी युवा-शक्ति है जो विश्व को भी दिशा दे सकती है, बस स्वाभिमान जागृत करने की जरूरत है।

जैसा भजन अभी बोला उसका आधा भी कर लें तो बहुत कुछ हो जायेगा। प्रभु से प्रार्थना करता हूं आपकी यह यात्रा जल्दी पूर्ण हो। आप लोगों ने जो शाकाहार का संकल्प लिया वह भी आदर्श है। 10-20 लोग नहीं पूरा का पूरा जेल ही शाकाहारी होना चमत्कार सा लगता है। सभी व्यसनों से दूर हो गये हैं। आप तो परिवार को भूल गये होंगे पर परिवार आपको याद करता होगा। आप भी कह दें- चिंता मत करो। हम परिश्रम से कमाकर यहीं से भेजते रहेंगे।

आप सभी का पुण्य है जो ऐसे जेलर मिले। जेलर जैसे लगते ही नहीं। माता-पिता की भांति जंगल में भी आपकी सेवा कर रहे हैं। बहुत ही कर्मठता से लगे हैं, अभी और आगे भी बढ़ाना चाहते हैं। इस कार्य को देखकर

देहली आदि के IAS अफसर लोग भी चमत्कृत हैं।

सर्वप्रथम जो कार्य होना होता है प्रशिक्षण देने एवं लेने का वह प्रारम्भ हो गया। अब उत्पादन भी शुरु हो गया। आपको बेचने की चिंता नहीं करना है। सबसे पहले आपकी जो भी आवश्यकता होगी इसकी पूर्ति की जायेगी, दूसरे नम्बर पर दूसरे की। हरेक व्यक्ति को इससे लाभ मिलेगा। आप जो यह कार्य कर रहे हैं अन्य सभी राज्यों के बन्दी भी इसका अनुकरण करेंगे। सारा श्रेय आपही को जाना है। किसी को देखकर जो पहले शराब का सेवन करता था अब छोड़ दी उसका अनुकरण यदि कोई करता है तो उसको भी लाभ मिलता है।

विश्व पर इसका प्रभाव पड़ेगा। सबके आरोग्य के बारे में सोचा जाता है। बुद्धि भी इससे सही दिशा में काम करती है। यहाँ एक चित्र देखा- दो चाँबी का, एक से काम नहीं चलता। यह चाँबी ऐसी है जिससे सब समस्याओं का ताला खुल जाता है। आप पर ही आधारित है, काम करेंगे दुनिया देखेगी। प्रभु से प्रार्थना करता हूँ ऐसी ही बुद्धि - चित्त - मति बनी रहे। सुना है राष्ट्र चिंतक अन्ना हजारे भी इधर आ रहे हैं। यहाँ राजनीति नहीं, प्रेरणा का केन्द्र है।

जो गलती हो गयी अब संकल्प करें आगे नहीं करेंगे। सभी स्त्रियाँ माँ-बहन - बेटी समान हैं। बड़ों को बहुमान छोटो को वात्सल्य देना चाहिए। इसी का नाम तो

स्वर्ग है।

जहाँ अन्याय / अत्याचार नहीं हो, अच्छाइयाँ हो वही स्वर्ग है। आचरण एवं दृष्टि दोनों में अच्छाई हो। ऐसे में जहाँ भी बैठेंगे अच्छी श्वास आयेगी। निश्चित रहने वालों को ही नींद अच्छी आती है। उन्माद व्यवस्था से भी दिमाग बिगड़ जाता है। पेट्रोल लो और काम करना शुरू कर दें। शरीर से काम लेना होता है। आपलोगों की बहुत माँग थी खजुराहो में भी आये थे। 15-16 को सब आ रहे हैं। अमंगल का वातावरण दूर होकर मंगल का वातावरण बन रहा है।

इसी से भारत का स्वरूप पुनः लौटेगा। जनता भी चाहती है- स्वर्ग का वातावरण बने। प्रभु को भूलो नहीं। जो दलित वर्ग है उसे भी ऊपर उठायें। अहिंसा एवं सत्य का यह वातावरण देख करके बहुत अच्छा लगा। सत्यमेव जयते कहा है। ये वर्तमान के ही क्षण उस उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर रहे हैं। इसमें ऐसे कार्यकर्ता लगे हैं जिससे भविष्य अवश्य ही स्वर्णमयी होगा।

एक व्यक्ति को सुधारना तो बहुत कठिन होता है, यहाँ तो हजारों व्यक्तियों का एक साथ सुधार हो रहा है। ये सभी रात-दिन आपके हित चिंतक बने हैं। ये वरदान सिद्ध हो गया। अन्यत्र यदि ये अधिकारी चले जाते तो ये वातावरण नहीं बन पाता। अब परिवार से कह

दो आप चिंता न करें।

रात-दिन एक करके आपलोगों ने इस कार्य को यहाँ तक पहुँचाया। पसीना बहाया तब ये रोड़ तैयार हुआ। यहाँ पहले कीचड़ था, गड्ढा था भरना था, भर दिया तब इस ऊँचाई पर आये। निश्चित समय में समतल करके भवन बना दिया। आपका जीवन उन्नति की ओर ही बढ़े। सही सोच रखें ताकि दिशा-बोध बन सकें। अभी यहाँ आया यदि पथ नहीं होता तो कैसे आ पाते। आप भी पथ बनायें।

पूर्वजों ने वही पथ बनाया। अच्छा-बुरा, अपना-पराया क्या है उसे समझें। पर से हानि हटा स्व की ओर लौट आओ। बुराइयों से स्वयं बचो एवं जो अनभिज्ञ है हमारा कर्तव्य है उन्हें भी बचायें। स्वार्थ एवं लोभ को छोड़कर सभी से स्नेह करते हुये प्रेम-वात्सल्य को बढ़ावा देवें। जैसे अच्छा खाना पीना चाहते हो वैसे ही व्यवहार भी अच्छा रखना चाहिए। सात्विक भावों का ही चमत्कार है। इतना ही कहना पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

संस्मरण - निवारी गांव (मालथौन से 7 किमी. पहले) 2 कमरों में 32 महाराज को रुकना था। प्रसादसागर जी ने आशंकित हो कुछ महाराज मालथौन चले जायें। जवाब लाजवाब था - जब एक कुरव में 28 महाराज रह सकते हैं तो 2 कमरों में 32 महाराज क्यों नहीं रह सकते? तब वहीं रहे। (सर्दी तेज थी)

6-2-19 "सूत्र परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन का" प्रातः

बहुत सारी वस्तुओं के सम्मिश्रण से उन सब वस्तुओं के जो अपने-अपने गुण धर्म हैं वे सब परिवर्तित हो जाते हैं। ऐसे परिवर्तन तक हो जाते हैं कि बुद्धि काम तक नहीं करती। वस्तु के धर्म के बारे में ही नहीं जानते, सिद्धान्त तो सिद्धान्त रहता है। कुछ सम्मिश्रण के परिणाम भयंकर हो जाते हैं। इन सबको जानने वाले सर्वज्ञ प्रभु होते हैं क्योंकि उनका सम्यग्दर्शन परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन होता है। हम लोगों के पास भी सम्यग्दर्शन है किन्तु वह अवगाढ़ अथवा परमावगाढ़ नहीं हैं।

एक क्षण के उपरान्त जिसको नरक जाने का भाव है उसे भी सर्वज्ञ उसी प्रकार जानते हैं। अभी यदि आयु का बंध तो नरकायु का बंध हो सकता है किन्तु नरकायु का बंध तभी जब ऐसा कारण हो। यदि पुत्र की दार्शनिकता को पहचानते तो देर नहीं लगेगी। भावों में परिवर्तन देखा। गर्दन मोड़ने में देर भले ही इसमें देर नहीं लगती। हुआ भी ऐसा ही नरक न जाकर वे मुक्त हो गये।

आपको ये जानना पहले आवश्यक है कि किसके साथ किसका सम्मिश्रण करना है। दुनिया के सम्मिश्रण में तो लगे हो, अपने सम्यग्दर्शन के सम्मिश्रण को और अधिक पौष्टिक बनाइये। इसके लिए आयाम करना होता है। एक भारतीय शब्द है- मधुमेह। आप लोग डायबीटीज कहते हो। (हिओ) शक्कर की बिमारी। "अब शक्कर के चक्कर में क्यों पड़ गये, गुड़ की पूजा करो" सब

ठीक-ठाक हो जायेगा।

शक्कर बनी गुड़ से ही है, पर उसे इतना परिष्कृत कर दिया कि गुण धर्म ही बदल दिये। सम्मिश्रण का यही परिणाम है। युक्ति से काम नहीं चलता साधन से काम होता है। देखने में भले ही अच्छी हो पर बिमारी का घर है। अपने ही हाथ से इंसुलिन के इंजेक्शन लगाये जा रहे हैं। छोटे बच्चे भी इसकी चपेट में आ गये हैं। सोचो ऐसा क्यों हो रहा है। किस पदार्थ का किस रूप में रहना आवश्यक है। यह जानकारी न होने से बिमारी ही हाथ लग रही है।

शक्कर अब नहीं खा सकते, जितनी खानी थी उससे चौगुनी खा ली जो श्मसान की ओर ले जा रही है। रसायन प्रक्रिया ने उस अमृत स्वरूप गुड़ को विष बना दिया। खुल्लम-खुल्ला सफेद जहर ही कह दिया। इस जहर को कोई भी छोड़ने को तैयार नहीं है। सिद्धान्त तो स्वीकार करना ही होगा। किसको किस अनुपात में मिलाना ये भी महत्वपूर्ण है। इन तीनों को समान रूप से मिला दिया जाये तो जहर बन जाता है और असमान रूप से मिलाया जाये तो अमृतधारा बन जाती है। भारत में प्राचीनकाल से ही इस पर बहुत ध्यान दिया गया और निकटता से अनुभव किया गया।

सर्वज्ञ के पास सब जानकारी है पर वे इस सबके पचड़े में नहीं पड़ते। आपने जो ठान लिया उसी रूप में परिणमन होगा अतः भावों का सम्मिश्रण सोचसमझकर कीजिये। शक्कर के अंश समाप्त हो जायें, गुड़ के अंश भावों में आ जाये। गुड़ के लिए

तालियाँ कम बजी।

भावों में इतनी करंट है, उसे उद्घाटित करने की आवश्यकता है। इसी से हम दर-दर भटक रहे हैं, सम्यग्दर्शन को परमावगाढ़ बनाइये। रात के 12 बजे भी आपकी शक्ति बढ़ जायेगी। लघु बनकर भक्ति कीजिये। अभिमान कोसों दूर हो। दोनों हाथ जोड़कर भक्ति करो, लकवा लग जाये तो क्या करोगे? आते हैं महाराज! हाथ उठता ही नहीं क्या करें? एक हाथ उठता है एक उठाओ। आहार देने से वंचित हो जायेंगे। भाव तो कर ही सकते हो, भाव करो। बाजार में माहौल भाव का ही होता है।

कार्यकर्ता समय भी नहीं बताते। उनकी दुकान अच्छी चल रही है। बनिया है न इसलिए हमेशा दृष्टि इसी पर रहती है। भगवान से प्रार्थना है इससे भी आगे बढ़ जायें परन्तु कहीं तो ब्रेक लग जाये। बिना ब्रेक की गाड़ी चलाना ठीक नहीं। ऐसे व्यक्ति की गाड़ी से दूर ही रहियो। इसलिए Horn please लिखा रहता है। दया कीजिए हमारे ऊपर आप, Horn please का यही अर्थ होता है न। साइड क्यों कह रहे हो अगल-बगल भी कह सकते हो। आज यही गड़बड़ है न ही हिन्दी सही से आती है न ही English। हमने स्कूल खोला है, हमने कहा विद्यालय नहीं कह सकते क्या? महाराज विद्यालय तो मोराजी संस्कृत विद्यालय कहलाता है। ऐसी परदेशी भावों से ऊपर उठना तीन काल में संभव नहीं।

एक आध शब्द रट गया बस बोलना शुरु हम भी ऐसा करते थे। कई लोग खुश नहीं मालूम है। हमारी

भी खुशी में धीरे - धीरे असर हो रहा है। जो पहले से सेवन किया उस दवाई का तो असर पड़ेगा। विद्यालय शब्द अब जेल वाले भी कहरहे हैं।

स्कूल (School) का मतलब क्या होता है बताओ? रूढ़ीवाद में नहीं बोलना चाहिए। आज सोच - विचार ही समाप्त हो गया। हम अपने सम्यग्दर्शन को परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन की यात्रा पर नहीं ले जा रहे हैं। इतना ही पर्याप्त है। विद्यालय पर एक लेख पढ़ा उसमें विद्यालय की जगह स्कूल (School) शब्द गिनना प्रारम्भ किया तो एक माला ही पूर्ण होने वाली थी। लेख तो अच्छा था पर आपके Course से विद्यालय ही गायब हो गया।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

7-2-19 "पर पीड़ा - अपनी पीड़ा" प्रातः

आज तो व्यस्तता सी लग रही है। महिलाओं को अवसर मिल गया आगे आने का। मुनिमहाराज आते हैं तो पुरुष वर्ग आगे रहता है और माताजी (आर्यिकायें) आयी तो महिलायें। पहले से कहकर तो कुछ भी नहीं कर सकते अन्यथा सागर में बाढ़ आ जाये। कल नहीं परसों बिना कहे ही निकला था पर कुछ थोड़ा सा भी नहीं चले होंगे पूरी सड़क भर गयी। ये बात अलग है कि आम लोगों का जेल में प्रवेश नहीं हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं कि कोई भी धार्मिक कार्य होता है तो महोत्सव जैसा उल्लास आ जाता है। त्योहार में

ही उल्लास हो ऐसा नहीं धार्मिक अनुष्ठान में तो और अधिक उल्लास का वातावरण होता है।

धर्म तो एक ही है उसी से सबके मन प्रफुल्लित होते रहते हैं। ज्यों ही सूर्य का उदय होता है कितनी भी लम्बी रात क्यों न हो अंधकार छंट जाता है। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को देखने का अवसर प्राप्त होता है। आपका जो छोटा सा लड़का है उसे भी उल्लास होता है, वह भी अभिव्यक्ति करता है। धर्म का प्रसंग हो तो सभी लोगों में शांति का संचार होने लगता है।

सम्यग्दृष्टि सदैव यही भावना भाता है कि सभी की दुःख की घड़िया समाप्त हो जाये। वह अपने दुःख की चिंता नहीं करता, दूसरे के दुःख को दूर कैसे करूं यही सोचता रहता है। दुसरों का दुःख भी इसकी आँखो में मणियों की भांति चमकता रहता है। जो सुख में भी दुसरो के दुःख दूर करने की माला जपता रहता है वह जल्दी ही मुक्त हो जाता है। आपका नम्बर कब आयेगा भगवान को ही पूछना पड़ेगा।

भगवान ने जो कहा उसे याद रखकर अमल में लाने का प्रयास करना चाहिए। मोक्षमार्ग भी तभी चलता है। भगवान से प्रार्थना है दोनो (सुख-दुःख) प्रकार की घड़ियों को अनुभव अपना कम दूसरों का ज्यादा होता रहे। अपने लिए नहीं रोना। दुसरों के दुःखो से तुलना करोगे तो अपना दुःख बहुत छोटा नजर आने लगेगा। साक्षात की जरूरत नहीं देखकर भी अनुभव किया जा सकता है/अनुमान लगाया जा सकता है।

सम्यग्दृष्टि का अनुमान भी परिष्कृत होता है। पवित्र होता है वह प्रमाण से कम नहीं होता।

इतना ही पर्याप्त है। अभी थालुमौल तो नहीं चल रहा न? (शीतकालीन) ये तो आपकी समस्या है। कहाँ होना है और कहाँ नहीं? कहीं न कहीं तो हो ही जायेगा। (सागर में) सागर हमेशा एक ही स्थान पर रहता है। पैर होना चाहिए, बहना आना चाहिए, नदियों की पूजा करो तो समझ में आ जायेगा। यहाँ परिग्रह को ढीला करने में आगे रहते हैं। मैं सागर से बचना चाहता हूँ फिर भी आना पड़ता है। किन्तु सागर मात्र अपनी ही नहीं दूसरों की भी चिंता करें। "स्वयं की चिंता नहीं स्वयं का तो चिंतन करें।"

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष प्रवचन
7-2-19 "निवेदन पंचकल्याणक का" मध्याह्न

आप लोगों ने जो मन्दिर (क्षेत्र) बनाये वे हजारों-हजारों वर्ष तक के लिए परम्परा को सुरक्षित करने वाले हो गये। (अमरकंटक एवं बीना बारह से जन समुदाय) सारा श्रेय वहाँ के कार्यकर्ताओं को जाता है। हम चाहते हैं जनता को भी संतुष्ट करें, वह भी पंचकल्याणक हेतु फूल-पाँखुड़ी लेकर तैयार है।

ज्यादा नहीं माँगियो, हम तो आशीर्वाद बाद में देने वाले हैं, पहले तो जनता ही देने वाली है। जल्दी में स्वरूप नहीं ले पायेगा। देख लो स्वतंत्र है। अब जो कार्य होगा वह अलग रूप का है। आसपास पंचकल्याणक भी हुये हैं, जनता तो टूटेगी। व्यवस्था

महत्त्वपूर्ण है, कौनसी कमेटी बनेगी।

मैं समय देना नहीं चाहता फिर भी ले लेते हैं। वहाँ (अमरकंटक) का वातावरण प्राकृतिक सौन्दर्य को लेकर अलग रूप से है, सुनामी भी आती रहती है। सब चलता रहता है, उसी अनुरूप ही व्यवस्था हो। कम समय में जो अच्छा हो सके उसी को कुशलता पूर्वक कर सकते हैं। आजकल तो सुविधा इतनी है, इन्द्रलोक भी अपनी कोचिंग व्यवस्था ला सकते हैं।

आप लेकर आइये। बीना के लिए तो जरूरी नहीं। अमरकंटक यदि कमरकस ले तो प्राकृतिक वातावरण को भी साथ देना होगा। वैसे भी थोड़ी सी प्रकृति का.. जनता को अच्छा लगेगा। राजस्थान वाले को पानी देखकर नाचेंगे। सोचेंगे अच्छे स्थान पर आ गये। बोला अच्छे अच्छों को भी अच्छा लगता है। वहाँ कितने चातुर्मास, शीतकाल, ग्रीष्मकाल हो गये ये भी याद रखो।

संयुक्त रूप से होने पर ही ये सब कार्य हो पाते हैं। जनता का विश्वसनीय दिल जीतना आवश्यक है। वह तो सहयोग हेतु खड़ी ही है। ऐसा काम करो नई पीढ़ी को भी समझ में आ सके। वे भी सहयोग कर सकें इन्हीं भावनाओं के साथ। अब आ गये हो तो मना तो हम करते ही नहीं पर इसको कहलवाना बहुत कठिन है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। मुँ

8-2-19 "नरकाया को सुरपति तरसे" प्रातः

आज आप लोगों को ज्ञात तो होगा ही भारतीय संस्कृति में ही यह संस्कृति जीवन्त है। इधर से बाहर जाना तो बहुत ही कठिन है किन्तु यहाँ भी ये हमेशा अल्पसंख्यक के रूप में ही पाये जाते हैं बल्कि अल्पसंख्यक के रूप में ही अपने को घोषित करवाना चाहते है। ध्यान रखो जो चीज दुर्लभ होती है उसकी संख्या बढ़ नहीं सकती, उतनी ही रहेगी बल्कि कम ही होती जायेगी।

सागर वाले याद रखें मुनिमहाराज सागर में तो हो सकते हैं पर सागर के नहीं। अनंत नहीं हो सकते। ये भी याद रखो अनन्त असंयम में ही होते हैं संयम के साथ तो संख्यात ही होंगे। उसकी संख्या बढ़ा-चढ़ाकर तो कह सकते हो पर संख्यात ही रहेंगे। असंख्य देवों में होते हैं, पर वे मुनि नहीं बन सकते। उन्हें बहुत खलता होगा कि वे भगवान के इतने निकट रहते हैं पर संयम ग्रहण नहीं कर सकते।

महाराज हाथ यूं (आहारअंगुली) कर दें तो भी वे नहीं देंगे। क्या देंगे? रत्न देंगे क्या? उनके यहाँ भोजन भी नहीं रहता, कण्ठ में अमृत रहता है बस दबाया भर गया। देव मानसिक भोजन करने वाले होते हैं। मनुष्य में तो कवलाहार होता है। कवल का मतलब ग्रास होता है। ऐसा भी नहीं कि महाराज स्वयं आ लें। इशारा भी नहीं कर सकते। हाथ यूं करना भी तो मांगना ही है। ये मर्यादित मांग है।

सबको सुविधा हो इस प्रकार करते हैं।

आप भक्तिपूर्वक देंगे तभी स्वीकार करेंगे अन्यथा (नहीं तो) कर के देख लो पता चल जायेगा। नियम का पालन तो नियम का पालन है। देवों द्वारा पंचाश्चर्य तो होते हैं परन्तु उनके हाथों से आहार दान का सौभाग्य नहीं। कितना कष्ट होता होगा। सागरोपम आयु है पर उनके नसीब में ही नहीं हैं। हाँ नृत्य भर कर सकते हैं। आचार्यों ने उल्लेख किया ये मुनि के लिए भी कठिन परीक्षा होती है। मान लो राजा-महाराजा मुनि बन गये। अब अपने घर में ही जाये जरूरी नहीं। जायेंगे तो विधिवत ही जा सकते हैं। सामान्य श्रावक को भी लाभ दे सकते हैं। देते हैं।

मैं तो चक्रवर्ती हूँ, हओ धरे रहो। हमने पाला-पोषा... कुछ नहीं। वे तो कहीं पर भी लेंगे, ले तप बढ़ावन... ये महत्वपूर्ण होता है। सामान्य श्रमण हैं, वे एक प्रकार से बालकवत् चर्या वाले हैं। आपके यहाँ सौभाग्य से आये हैं। आप भक्तिभाव से दे रहे हैं। जवान मुनि महाराज हैं, दादा जी दे रहे हैं। ये नहीं कि बेटा ले ले। अब बेटा-बेटा नहीं चलेगा, अन्यथा कान पकड़ेंगे।

दाता देता है पर लेने वाले भी अपने आप को समझे। दोनों के मेल से ही यह आहार विधी सम्पन्न होती है। इसीलिए सौधर्म इन्द्र भी इस दृश्य को देखकर ताण्डव नृत्य करता है। उसे उल्लास

होता है, इसी की प्रतिक्षा थी।

इतने वैभव का स्वामी, देवों में प्रथम स्थान जैसा है। सबकी दृष्टि उस पर रहती है, पर यहाँ तो सामान्य व्यक्ति की तरह खड़ा रहता है। अनुभव करता है कि ये निकाचित कर्म का फल जैसा है और अपनी आगे होने वाली पर्याय को याद करता है। भावना करता है जल्दी-जल्दी ये पर्याय समाप्त हो जाये। आप लोग पूछते रहते हो महाराज क्या तपस्या करें कि हम सौधर्म इन्द्र बन जाये। तपस्या कुछ नहीं... नरकाया को सुरपति तरसे और आप उसके लिए तरस रहे हो।

इन सब चटक-मटक का आनंद भी उस सौधर्म इन्द्र को फीका लगता है। मिठाई का आनंद कब तक? पूर्व जन्म में तपस्या विशेष की थी फलस्वरूप सौधर्म इन्द्र बना। "सौधर्म इन्द्र भक्त तो है पर दानदाता नहीं कहलायेगा।" अन्य सब कर लेगा पर नवधा भक्ति नहीं कर पायेगा। 10 भक्ति के पास ही पहुँच गया। ध्यान रखो 10 भक्ति श्रावकों की नहीं, श्रावक नवधा भक्ति करते हैं और श्रमण 10 भक्ति। नवधा भक्ति श्रमणों एवं देवों में नहीं होती।

स्वर्ण के पात्र लेकर खड़े हैं, महाराज देखते तक नहीं। ये सब पुण्य के फल से हैं, सब क्षणभंगुर है। हेय मानकर छोड़ दिया। अब अभिमान भी नहीं करना। चर्या के समय जो नियमावली है उसका

तो पालन करना ही है।

ऐसे श्रमणो के योग जब मिलते हैं तो श्रावक भी गदगद हो जाते है। सोचसमझकर ही श्रावकों को आना-जाना पड़ता है किन्तु मुनि महाराज को ज्यादा नहीं सोचना पड़ता। महाराज जी (समयसागर जी) तो आ गये बड़ा उल्लास हो रहा है। महाराज कहीं ऐसा न हो। क्या न हो? जाना नहीं। आगमन तो हर्ष का पार नहीं गमन होता है तो का होत है बताओ?

पर इन सब समागमों से ही आत्मा पर ऐसे संस्कार डालते हैं। आप अपनी भूमिका बना लिजिये। कोई रोक-टोक नहीं है, जिससे अधुरी पर्याय पुरी हो जाए। इस जन्म में मुक्त हो ये कोई जरुरी नहीं पर जब भी मुक्ति होगी इसी लिंग से होगी। इन्हीं भावों से असंख्यात गुणी कर्म की निर्जरा होती है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

"सहयोग"

"वैय्यावृत्ति चल रही थी। नये मुनिराजों को चर्या के विषय में गुरुजी बुध रहे थे। एक महाराज ने प्रश्न किया कभी-कभी चौके से लौटना पड़ता है। आचार्यश्री ने कहा यदि जीवआदि वहाँ मरा है तो ठीक परन्तु कई बार श्रावक घबराहट में कुछ गलती कर देता है उस समय हमें सहयोग देना चाहिए, उसे इशारे से बतादो पादप्रक्षालन, उच्चासन आदि के बारे में।"

9-2-19 "आओ करें आत्म कथा की बात" प्रातः

अभी आपको कथा सुनायी जा रही थी। ये तो गड़बड़ है हमारी कथा तो कैसे सुनायेंगे। दूसरे की कथा आप कैसे सुना सकोगे। इसलिए आत्म कथा की बात करो। अपनी आत्म कथा सबके पास है। हमारी कथा आपके पास और आपकी कथा हमारे पास नहीं है। ये ही दोनों की व्यथा है। इसलिये आत्म कथा करो। सही है न? हओ तो कहो। आत्म कथा में कोई व्यथा नहीं। उदाहरण से समझाना चाहता हूँ।

एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए शरीर में रक्त का होना अनिवार्य है। सुन रहे हो कि नहीं? [हओ] चाहे बड़ा हो या बिल्कुल छोटा नवजात शिशु भी क्यों न हो। कानों में भी रक्त संचार हो तो सुन सकोगे अन्यथा रख दो। आत्मा का अस्तित्व को समझना परम आवश्यक है। शरीर के माध्यम से ही जान सकोगे। रक्त में संचार होना आवश्यक है। यदि वह बैठ गया तो - बैठ नहीं सकता। वह घुमता रहता है तभी श्वास लेने के स्थान पर लेना छोड़ने के स्थान पर छोड़ना, सब क्रियायें ठीकठाक चलती रहती है।

आपके पास दो प्रकार का धन रहता है। एक धन तो घुमता रहता है. दूसरा स्थिर रहता है। दुकान ठीक चल रही है? हां, घर पर है तो चल रही है। खुन संचालित हो परिधी में घुमता रहे। रुकने की बात आ गयी तो ले कर चलो भाग्योदय में। खुन रुकना नहीं चाहिए। खुन का संचार कम अथवा ज्यादा भी नहीं चलेगा, अनुपात से

से ही संचार होना चाहिए।

अनुपात से न होने पर हायहोगा या हाय-हाय होगा। दोनों बातें हैं। आभरण आदि में भी आग है न? चन्दा-सूरज हाय। इसकी भी बोलियाँ पंचकल्याणक में होती हैं। अधिक तेज रक्त के चलने से चक्कर आ जायेगा, मंद होने से एक जगह रुकना हो जायेगा। जम जायेगा बर्फ की तरह। इस प्रकार सूरज-चंदा के माध्यम से बाहर निकालना प्रारम्भ कर दो। आज बाहर से तो स्वस्थ दिखते हैं पर भीतर से मंदी बनी रहती है। महाराज! दुकान तो खूब चलती है पर रुकता ही नहीं। आपही ने तो वहीये लगा दिये हैं।

महाराज! सबसे ज्यादा सागर में रबड़ी दुकान चलती है। बताओ ना वो क्या है? अपना प्रभुत्व बनाये रखने के लिए दान करना आवश्यक है। ताली अच्छे से बजायेंगे तो गर्मी आ जायेगी। धर्मध्यान करना चाहते हो तो स्थान निर्धारित कर लिया, यहाँ का वहाँ करते जाओ। जैसे रक्त संचार अनुपात से जरूरी है वैसे ही जो रखे हो वह भी अनुपात से ही हो।" आत्मकथा तभी कर पायेंगे व्यथा की बात ही नहीं। शरीर में आत्मा रह रही है, शरीर आत्मा नहीं है। शरीर साथ नहीं दे रहा है तो आत्मा कहती है मेरे पास तो पंख है, अब तुम्हारे पैर किसी काम के नहीं। आप शरीर के नहीं आत्मा के दास बनें। दूसरों के नियन्त्रण से नहीं, अपने नियन्त्रण से चलें। इतना ही कहना है। इतनी सर्दी में भी सुन रहे हो। भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ आत्मकथा की बात करो पराई (दूसरों) की कथा की नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

10-2-19 "रहे सदा सत्संग" प्रातः

आज तो रविवार है। रविवार देखने की जरूरत नहीं, यहाँ नजर आ रहा है। आप लोगो ने पूजन कर लई बुन्देलखण्ड का परिचय दे दिया। एक छोटी सी परात में सैंकड़ो नारीयल चढ़ गये। ये बुन्देलखण्ड का ट्रेडमार्क है। परवल जितने परवल भी छोटी उसके बराबर नारीयल होता है। हम तो समझ लेते है। सागर का परिचय देने की जरूरत नहीं होती। जहाँ भी मेले-ठेले में यदि परवल जितना नारीयल चढ़ा दिख गया समझ लेते है, जरूर बुन्देलखण्ड का कोई न कोई व्यक्ति आया है।

अब यह सत्समागम के बारे में सुनो। युग के आदि की घटना है यद्यपि आपको याद हो फिर भी अच्छी बात को दोहराते रहना चाहिए। जब वृषभनाथ भगवान को निर्वाण हुआ तो देवों ने आकर जो कुछ भी करना था वह कार्य कर लिया। चक्रवर्ती भी उस स्थान पर पहुँच जाता है। वह फूटफूटकर रोने लगता है, अब हमारे जीवन काल में ये अवसर कैसे प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य है फिर भी रो रहा है, चक्रवर्ती है वह रो रहा है।

रोने में कहीं न कहीं इष्ट का वियोग अथवा अनिष्ट का संयोग रहता ही है। क्या करें? पूछा गया क्या है ये? मांगलिक कार्य है ये। जिस जीव को अब अनंतकाल के लिए मुक्ति की प्राप्ति हो गयी। फिर तो खुशी मनाना चाहिए। आप ठीक कह रहे है परन्तु अपने जीवन में अब तीर्थंकर

का दर्शन नहीं होगा।

असंख्य देवी-देवता एवं मनुष्य-तिर्यञ्च (पशु-पक्षी) सभी को समोशरण में उन प्रभु का दर्शन मिल रहा था। चारों ओर वैराग्य का ही वातावरण कैसा रहता है, सब फीका-फीका लग रहा है। आपने अभी पंचकल्याणक किया था फिर दमोह में हुआ अब जबलपुर में होना है, थोड़ा सा खिसक जाओ तो बड़े बाबा मिल जाते हैं। जो बहुत दुर्लभ है, आप सभी के पुण्य से इस काल में भी आपको मिल रहा है।

चक्रवर्ती रो रहा है। यह अभूतपूर्व अवसर अब इस जीवन काल में नहीं मिलेगा। इष्ट का वियोग हो गया। ऐसी भूमिका बनाओ वह वैभव जीवन में देखने को उपलब्ध होता रहे। कुछ पुण्य कम था सो वहाँ न जन्म लेकर (विदेह) यहाँ आ गये लेकिन ऐसे भी स्थान है जहाँ कभी मुनि महाराज जा ही नहीं पाते। तब लगता है ये ही ठीक है। इसी से संतोष करके आगे की भूमिका बनाते रहना है। ऐसा भी नहीं कि एक ही दिन में सब हो जायेगा। इसके लिए योजना बनानी पड़ती है, प्रतिदिन करना होता है।

आगे आने वाली पीढ़ी के लिए भी कुछ कर जाओ। कुछ ऐसा कार्य करो। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। चक्रवर्ती के रोने को याद रखना। सबको यह सत् समागम प्राप्त होता रहे, ऐसे शुभ भाव सबको रखना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

11-2-19 "चलो अपनी चाल से पर नयी बनाओ नहीं" प्रातः

भावप्रधान है जैन धर्म। श्रावक और श्रमण दोनों उसमें उपासक है। श्रमण के पास हाथ आदि के अतिरिक्त आलम्बन नहीं होता। श्रावकों के पास आलम्बन होता है। तिर्यञ्चों के पास भी आलम्बन नहीं होता पर तिर्यञ्च भी पूजा करता है। गृहस्थ श्रावक पूजा करता है पर आलम्बन के साथ करता है। आलम्बन के लिए परिचय की आवश्यकता नहीं, वह अष्ट द्रव्य का आलम्बन लेता है। द्रव्य का आलम्बन क्यों लेता है? इसलिए कि भावों को सुधार सके।

जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा और जल की धारा छोड़ दी। मान लो जल की धारा नहीं है तो क्या करेंगे? शान्तिधारा छोड़ेगा। वह शान्ति के साथ गुणों की आराधना करता है। इसलिए आप आलम्बन में ही उलझ जाते हैं तो भावधारा बिगड़ जाती है। भावधारा बिगड़ते ही स्वरूप से दूर हो जाते हैं। ध्यान रखें! किसी भी वस्तु के स्वरूप के अभाव में कुछ नहीं बचता।

आप लोग कहते हो युग बदल गया है। मैं कहता हूँ भगवान महावीर अथवा ऋषभनाथ से लेकर अभी वही युग चल रहा है। सिद्धान्त तो सिद्धान्त होते हैं, वे कभी बदलते नहीं। जब तक तीर्थंकर नहीं होंगे तब तक वही युग रहेगा। इसे हमेशा ध्यान रखना। जो भीतरी है उसी के परिणाम निकलते हैं उसी को मुख्य मानते हैं, बाहरी कोई परिणाम नहीं निकलते। यह श्रीमान्, धीमान् लक्ष्मी के लिए अनिवार्य है,

इसलिये अपने भावों को सुधारिये।

हाँ! भावों के सुधार में कम-बढ़ती भी हो सकता है। एक-एक पग रखकर ही यात्रा करना है। विश्राम की बात नहीं, वह आज होगा ही नहीं। भले ही धीरे चले पर चलते रहें। "हम अपनी चाल से चलें, अपनी चाल न बनायें।" समझ में आया? हओ? अपनी चाल न बनायें का मतलब पहले जो गये हैं उसी पगडंडी पर चलो। अपनी चाल से नई पगडंडी न बनायें।

आप लोग राजमार्ग से चलने लगे हो। इस कारण पगडंडी पर दूब उग जाती है। दूब का मतलब घास उग जाती है, चलने वाला कोई नहीं रहता तो ऐसी स्थिति हो जाती है। पहले जो चलकर गये उसी पर कदम-कदम रखते चले जाओ तो कभी भी दूब नहीं उगेगी। पिछले वालों ने भी अपनों का अनुकरण किया तो आज तक यह पथ सुरक्षित बना रहा। भले ही संख्या कम भी क्यों न हो। मन्दिर में गये तो श्रीजी ही हैं ऐसा नहीं श्री मान जी भी हैं। समझ रहे हैं? हओ!

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन"

"द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन केवल श्रेणी के अभिमुख जीव के ही होता है इस धारणा को बदल दो। श्रेणी जब (उपशम) भी चढ़ेगा द्वितीयोपशम सम्यग्दर्शन बिना नहीं चढ़ेगा। किन्तु द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि श्रेणी चढ़े ही ये आवश्यक नहीं। उसकी उत्पत्ति के 4, 5, 6, 7 ये चार गुणस्थान हैं। - आ.श्री"

१२-२-१९ "ध्यान कार्य पर हो" प्रातः

देखो कभी-कभी औषध के रूप में या और कोई रूप में जो चीज खाने में भयंकर कड़वी रहती है जैसे मेथी को ही लें तो इसमें किशमिश डाल देते हैं। किशमिश डालने का क्या प्रयोजन? इससे वह मेथी उल्टी नहीं करायेगी बल्कि भीतर जाकर दवाई का काम करेगी। मुख में स्वाद और आगे का भोजन भी इससे रुचेगा। इसी प्रकार जब आप पूजन करते हैं तो ऐसा ही क्यों चढ़ायें? ऐसा क्यों करें?

भिन्न-भिन्न उपायों से परिणामों में भी भिन्नता आती है। इसी तरह फोटोग्राफर कई तरह से फोटो लेता है तब कहीं एक-आध ठीक आती है। इन्हीं परिणामों को बदलने हेतु दर्शन, पूजन, जाप आदि करते हैं। विधान-संविधान बहुत सारे बताये गये हैं। कहना इतना ही चाहता हूँ कि ये सब सावद्य आदि का कारण है फिर भी औषध का काम करता है। जिस तरह मेथी उल्टी का कारण फिर भी किशमिश आदि मिलाने से औषध का काम करती है।

धार्मिक कार्यों में साधुओं को लिए उपदेश आदि कार्य बताये हैं। उसकी सार्थकता है। मीठी चीज तभी अच्छी जब कड़वी भी खाते हैं। इसमें भी मेथी है। चिकित्सा भिन्न-भिन्न रूप से की जाती है। जिसको जो अच्छा लगे वह करें। उपायों को ढूँढना पड़ेगा ही कार्य करने हेतु उपाय जरूरी है। पूजन आदि का आचार्यों ने उपदेश इसीलिए दिया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

13-8-19 "आओ सीखें पूजन" प्रातः

रविवार को तो आपको ½-½ घण्टे अथवा 1-1 घण्टे देते ही हैं। अभी बहुत संक्षेप में आपको बताना चाहते हैं। आपका समय जो बहुत व्यस्त है उसमें से भी बच जाये। व्यस्तता में भी चाहें तो बहुत कुछ काम किया जा सकता है। जो समय को बचाकर काम करता है उसे अपव्यय का महादोष नहीं लगता। समय को बचाकर ही काम करना चाहिए। तो एक व्यक्ति जो बैठे हैं वह मेंढक हुआ। मेंढक हुआ वह समुद्र में नहीं हुआ कुयें में हुआ। पानी जो भरने आते थे वे बातें करते कि यहाँ भगवान आये हैं।

मेंढक ने सुना तो उसके भी भाव हुये और वह भी निकल पड़ा। अब भीड़-भाड़ तो होती ही है जैसे आपके यहाँ सागर में कितनी भीड़ है। इसलिए नीचे भी देखकर चलना चाहिए। वाहनों को भी देखना चाहिए, कहाँ चला रहे हैं? पैदल आये तो हमारा और अधिक समर्थन है। भागकर नहीं आना, हम शंका करेंगे कि ये भागकर क्यों आया।

भगाकर आया होगा तभी भागकर आ रहा है। तो उस मेंढक की यात्रा प्रारम्भ हो गयी। उधर से एक हाथी भी चला जा रहा था वह मेंढक उसके पैर तले आ गया। अब ऐसा नहीं कि उसका अस्तित्व ही नहीं रहा। कर्म का अस्तित्व बचा रहता है। जैसे ऊपर का कपड़ा बदलते हैं वैसे ही शरीर भर

बदल गया।

हुआ वैसा ही वह मेंढक देवगति में पहुँचा। पूर्वभव के संस्कार वशात् सीधे समोशरण में चला गया। जो पहले से आरक्षित स्थान था। ये यहाँ पहले से ही कैसे? कौन है ये? क्या आप सबने पढ़ी है रत्नकरण्ड श्रावकाचार में, नहीं पढ़ी तो पढ़ीयो। स्वामी समन्तभद्र महाराज ने किसी सेठ-साहुकार को याद नहीं किया, उन्हे बड़ा प्यारा लगा मेंढक। यदि आपको भी ग्रन्थो के पृष्ठो पर आना है तो भक्ति कैसे करना है? द्रव्य कैसे चढ़ाना है? क्या चढ़ाना है? ये सीखलो। नहीं तो चावल की जगह धूप एवं धूप की जगह चावल चढ़ाओगे तो फिर धुंआ तो उठेगा ही।

विवेक से करोगे तो निर्जरा होगी। असावधानी करोगे तो सेठ से मेंढक बना, सावधानी/विवेक से किया तो मेंढक से देव बन गया। उदाहरण याद रखना। क्रोध मिनिट और सूंगा। आप पूजन तो करते हो पर विवेक नहीं रख पाते। उस मेंढक से सीख ले लो। हम प्रतिदिन देखते हैं, उपवास के दिन तो नहीं जाते। वहाँ बिखराते हैं गली-गली, महाराज नहीं बिखराते, आप बिखराते हैं।

एक भी चावल नीचे गिरेगा तो माइनस मार्किंग होगी पक्का है। हम तो दया कर देते हैं, वहाँ पर तो कटौती ही होगी। फेल हो जाओगे। इसलिए आप सब पूजन कर रहे हो, सीख लो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

15-2-19 "मेहनत का फल" प्रातः

आप लोगो को कुछ बातों के ऊपर विश्वास नहीं होता अथवा कारण नहीं समझ पाने से कार्य देखकर कहने लगते हो ये तो देवकृत चमत्कार है अथवा कोई जादू टोना है या फिर यूं कह दो आंखो में धूल झोंक रहे हैं। शंका तो होती है। (आगरा से बैग बनाना सीख कर आये स्कोश के बच्चो द्वारा लाये सामान पर) आप लोगो को वस्तुस्थिति का निर्णय नहीं हो पाता। हमें उसी वस्तुस्थिति को स्वीकार कर लेना चाहिए। उस पर दृढ़ श्रद्धान करके आज से ही अपना लेना चाहिए।

वस्तुस्थिति की जानकारी होने पर लोगो का भ्रम टूट जाता है। दो महिलायें बैठी थी एक कर्म-सिद्धान्त पर विश्वास करती थी और दूसरी थोड़ी यूं ही, पर श्रद्धा तो उसकी भी थी। उधर एक राजा पहले हाथी पर चढ़ा फिर घोड़े पर चढ़ा फिर पालकी से आकर सिंहासन पर बैठ गये। ज्यों ही बैठा दो-चार लोग पांव दबाने लग जाते है।

अब वह दूसरी सखी पहली सखी से प्रश्न करती है। हंसती है ये क्या नाटक है। पाँव तो उनके दबाने चाहिए जिन्होने पालकी उठायी। ये कब थके? ये चले ही कहाँ जो थकेगो? आप सब के मन में भी ये जिज्ञासा उत्पन्न तो हो रही होगी। उसने पहली सखी के सामने बात यूं रखी -

हाथी चढ़ घोड़ा चढ़यो, बैठ पालकी मांय।
कब के थाके हे सखी !, जो अबे दबावत पांव॥

दूसरी जो कर्म सिद्धान्त को जानती थी वह कहती है-

भू सूतो भूखो मरयो, किन्हो उग्र विहार।
तब के थाके है सखी, अबे दबावत पांव।

पूर्व भव में ये मुनि महाराज थे उस समय इन्होंने कठीन तप किया। भूमी पर शयन किया, उपवास किये उसके बाद भी गाड़ी में नहीं चार हाथ जमीन देखकर पैदल ही उग्र विहार किया। इस प्रकार जो तत्व-ज्ञान रखता है, उसे समझने में थोड़ी भी कठनाई नहीं आयी।

उस सहेली ने दूसरी को बताया, उसे भी समझ में आ गया। यहाँ से स्वर्ग में जाते हैं, वहाँ थकना आदि कुछ नहीं है फिर भी एक-एक देव के अनेक सेवक होते हैं जो रात-दिन सेवा ही करते रहते हैं। किन्तु सम्यग्दृष्टि उन सबमें कभी रुचि नहीं लेता है। "जैसे-जैसे अध्यात्म के निकट पहुँचते हैं वैसे-वैसे भोग विलास पैर चूमने आयेगी।" किन्तु उधर देखना नहीं। यदि नजर जा रही हो तो बंद कर दो।

सागर बुन्देलखण्ड का केन्द्र कहलाता है, यहाँ से (केन्द्र से) जो भी सूचना, प्रचार-सामग्री जाये वह इसी प्रकार की हो, शेष नहीं जाना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

१६-२-१९ "सहस्त्रकूट शिलान्यास प्रवचनांश" महाराज

- बिना आयास ही अनायास आ गये आपके यहाँ महाराज, आपका काम हो गया।
- जब पुण्य बढ़ता है तभी कुवत आती है।
- कुवत मतलब ज्ञानावरणी के नाश से अनंत ज्ञान और दर्शनावरण के नाश से अनंत दर्शन होता है किन्तु ये दोनों तभी काम के हैं जब वीर्यान्तराय कर्म के क्षय से अनन्त वीर्य प्राप्त हो।
- इस प्रकार ज्ञान बढ़ा है तो वीर्य (शक्ति) भी बढ़ी है, इस शक्ति का उपयोग करो।
- बोलना आता है या नहीं ये महत्त्वपूर्ण नहीं बोलना प्रारम्भ कर दो, बिना माइक भी बोलने लग जाओगे।
- वेट मत करो इनवेटर करो।
- आजकल गाड़ियाँ बढ़ गयी (चाल) इसलिये जल्दी-जल्दी कार्य को पूरा कर लो।
- प्रतिदिन धरती पर आकाश पर (अवनीतलगतानां ....) जहाँ भी चैत्यालय है उनको नमस्कार करता हूँ।
- घुंघुरु की आवाज आयेगी इस चतुर्मुखी सर्वतोभद्र जिनालय में आप घबराना नहीं।
- युद्ध स्तर पर इस कार्य को करें। युद्ध नहीं करना युद्ध-स्तर पर काम करना है।
- इसे देखकर सबको आनंद आयेगा।

▢ ▢ ▢

15-2-19 "भाव बदलो - प्रभाव पड़ेगा" प्रातः

प्रतिदिन की भांति आप लोग पूजन इत्यादि के माध्यम से समय का उपयोग किया करते हो। समय ज्यादा हो रहा है तो भी 5 मीनिट इधर - उधर हलक ही जाता है। तो थोड़े समय में महत्त्वपूर्ण भाव समझने का प्रयास करेंगे। एक ख्याती है, सुना है, पढ़ा भी है कि एक मणी होती है। उसके प्रभाव क्या - क्या होते हैं वह बताते हैं। मणी तो चमकीली वस्तु है। उसके लिए आलोक / सूर्य प्रकाश न मिले तो भी वह अपनी दिप्ति से सबको प्रकाशित करती रहती है।

इस प्रकार की वह मणी जब चन्द्रमा आसमान में आ जाता है, तारायें दिखने लग जाती है वे चन्द्रमा की शोभा और बढ़ा देती है। बहुत दूर भले ही हो पर धरती पर प्रभाव दिखाई पड़ता है। जैसे सूर्य का प्रकाश पूरे धरती को प्रकाशित कर देता है इसी तरह चन्द्रमा की कान्ति से नीचे सफेदी बिछ जाती है। धरती पर इससे आगे और कुछ नहीं पर धरती पर ही रहने वाली मणिका पर क्या प्रभाव पड़ता है देख लिजिये।

उस मणी पर चन्द्रमा की कान्ति पड़ी तो उसमें से शुद्ध जल का स्राव होना शुरु हो गया। पानी टपकने लगा। इसी को चन्द्रकान्त मणी बोलते है। चन्द्रमा के कारण उस मणी के भीतर से यह जलधारा बहने लगी। धरती से पानी नही, अन्य और कोई

मणी से भी पानी नहीं, इसी मणी पर प्रभाव पड़ा यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

आगम के अनुसार उस मणी में किसी जीव-जन्तु नहीं अन्य मणी में वायुमण्डल के स्पर्श से जीव आ जाते हैं। हमारा कहना है उस मणी की भांति जो शक्तियाँ रहती हैं (भीतर) उन्हें उद्‌घाटित करें। ये शक्तियाँ कैसी हैं हम कह नहीं सकते। बिम्ब के दर्शन करने से ऐसा ही घटित होता है। जो न भूतो न भविष्यति होता है। आप लोगों के भीतर जो किट्टकालिमा है बिम्ब की कान्ति वहाँ पहुँच कर उसे दूर कर देगी।

आत्म प्रदेशों तक उसका प्रभाव पड़ता है। भाव जाग्रत होते ही सम्यक्‌दर्शन की भूमिका बन गयी। आस्था की वर्षा अपने आप होने लगी। ये सभी जीवमात्र में नहीं होता। संज्ञी पंचेन्द्रिय, जाग्रत अवस्था हो सोयाभ रहे, विशुद्ध परिणाम हो - संक्लेश नहीं। अतः अपने परिणामों को मांजो। बुलाना चाहो तो बुला सकते हो, आना चाहे तो आ सकती है वह आस्था। स्वतंत्र है वो भी आप भी। बस ढंग बदलो। ढंग बदलने से सब बदल जाता है। चेतन का परिणाम है पर बिम्ब जड़ माना जाता है। हम भी जड़ मतलब अज्ञानी हो गये। थोड़ी ठेस लगे तभी जाग्रत होगे। जाग्रति का केन्द्र आत्म तत्त्व है। पुरुषार्थ करोगे तभी होगा। विलम्ब तो हो गया पर अभी भी कुछ नहीं हुआ। पुरुषार्थ प्रारम्भ करोगे तो वह अमृत कुण्ड ताजा बना रहेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय

दो दिवसीय (16-17 फरवरी) राष्ट्रीय हथकरघा संगोष्ठी

16-2-19 प्रथम सत्र प्रवचनांश प्रातः

- जीवन को पाना जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही महत्त्वपूर्ण उसे उत्थान की ओर ले जाना है।
- शिक्षा किसकी? जीवनोपयोगी शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है।
- ईंट-गारो से बनाये गये भवन मात्र को शिक्षा का केन्द्र मानना भूल है। आज यही हो रहा है दीवार खड़ी कर दी, उद्घाटन करा दिया बस विद्यालय खुल गया, जबकि ऐसा है ही नहीं।
- आज की शिक्षा अपने उद्देश्य से बहुत दूर होने के कारण लगता है यह एक जीवन में खेल जैसी हो गयी।
- अच्छे प्रशासक I.P.S. ने बताया - वर्तमान शिक्षा की क्या हालत हो गयी? आज 80% इंजीनियर कोई काम के नहीं रहे (डिफाल्टर) बल्कि 90% कह दो तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मात्र 10-20% हैं वे विदेशी हो जा जाते हैं। भारत की दशा क्या हो गयी।
- जब बिहार कर रहा था (डिण्डोरी के पास) अनेकों विद्यालयों वालों ने कहा - महाराज! ये बड़े-बड़े भवन बने हैं आप प्रतिभास्थली खोल दें। हमने कहा - हम संस्कार धाम की बात करते हैं ये तो बड़े-बड़े गोदाम बने हैं। हम वहाँ बीजाक्षर सीखाते हैं यहाँ तो बीज ही चौपट हो जायेगा।
- जीवन मूल्यों की शिक्षा, चार पुरुषार्थों की शिक्षा ही नहीं दी जा रही। मात्र नौकरी का उद्देश्य लेकर पढ़ाया जा रहा है। मतलब नौकर तैयार किए जा रहे हैं।
- ऐसे अभिशाप हेतु आप सब मेहनत कर रहे हो।

- कहाँ से धन कहाँ जा रहा है? सोचो तो? ऐसे में आप अहिंसक कैसे सिद्ध होगे।
- भारत की संस्कृति श्रम की एवं आश्रम की संस्कृति रही है। जीवनोपयोगी उत्पादनों की जानकारी होना आवश्यक है।
- पॉवर लूम / यांत्रिक मशीनों ने व्यक्तियों के रोजगार ही छीन लिए उन्हें बेरोजगार बना दिया गया।
- अभिभावक भी अभी भावुक हो रहे हैं। ऐसे माता-पिता की धारणा ही गलत है
- धर्म पुरुषार्थ के अभाव में अर्थ-काम पुरुषार्थ चौपट हो गया है। धर्म पुरुषार्थ जहाँ होगा वह मोक्षपुरुषार्थ तक ले जायेगा। हाँ बीच में स्वर्ग का स्टेशन भी पड़ेगा किन्तु उससे हमारा क्या प्रयोजन हमारा गन्तव्य तो मोक्ष है।
- युवक एवं युवतियों को श्रम करना सीखा दिजिए। फिर यह एक ऐसा बीज पड़ जायेगा जो भविष्य में अंकुरित होकर फलदायी होगा।
- भारत विश्व गुरु था - है - रहेगा जो शरव जम गयी उसे हटाना भर है। हमें मांगना नहीं, पसीना बहाना है। पसीना नहीं तो सीना धोखे में ही रहेगा।
- श्रम द्वारा पगडंडी बनती चली जायेगी। आप हाइवे से चलना चाहते पर ध्यान रखना हाइवे केवल वाहनों के लिए है-व्यक्तियों के लिए नहीं। पगडंडी केवल आपके लिए है, उस पर चलते रहीयो।
- "कौटिल्य के अर्थ विचार" - आज की जरूरत है।

० आप जिसको सम्पदा समझते हो वह सम्पदा नहीं आपदा है।
० जिनके पास स्वाभिमान है, श्रद्धान है, श्रम है तो मानो सब कुछ है और यदि विलासिता में लिप्त है तो वह सम्पदा नहीं आपदा हो जायेगा। आज यही हो रहा है।
० गुरुजी - मारवाड़ी मिश्रित हिन्दी में - यहाँ का रीवाज है मतलब परम्परा/प्रचलन है चाहे लखपति - करोड़पति - अरबपति भी क्यों न हो वह अपनी संतान को दूसरे के यहाँ काम करायेगा। क्यों? पिता कभी भी लाड़-प्यार में सीखा ही नहीं पायेगा।
० आज खान-पान, ऐशोराम के सब साधन दे देते हैं, बेटा कुछ भी काम न करे बस पढ़े पता चलता है ऐसा बेटा कोई काम का ही नहीं रहता।
० कुबेर साब को भी 1-2 दिन आरती फिर तो वही काम करो अन्यथा हम तो चले काम पर। वे घर के सदस्य तो है नहीं बल्कि एक सदस्य और ले गया इधर से। उनका इस घर से क्या संबंध। न सूतक न पातक।
० संतान आपकी स्वाश्रित हो पराश्रित नहीं अन्यथा आपही को सिर दर्द होगा।
० आज प्रभाकर नहीं आया हमने सोचा चलो हम चलते है बाद में उनको भी तो आना ही पड़ेगा। (धना कोहरा)
० अति के बिना इति नहीं और इति के बिना अथ नहीं। (मू.मा.)
अब India की इति होना ही भारत का अथ है।
० हथकरघा मात्र निर्वाह नहीं निर्माण है निर्माण।

○ तीन पुरुषार्थ यदि आपके पास है तो चौथा तो आ ही जायेगा।

○ पक्ष एवं विपक्ष अथवा प्रतिपक्षी न बनो पक्षी बनो। पक्षी जैसे दोनो पंख से उड़ता है वैसे ही दोनो पक्ष से अर्थात राष्ट्रीय पक्ष से ही ऊपर उठा जा सकता है।

○ एक हाथ, एक पाँव अथवा एक आँख वाला फिर भी काम कर सकता है पर एक पंख वाला कोई काम नहीं कर सकता। अतः दोनों पंख चलाओ।

○ सुनते है एक विमान से भी अधिक शक्ति होती है एक पक्षी में।

○ विद्यालय पे विद्यालय खड़े हैं। जो गर्मी एवं सर्दी भी फेंकते है और वर्षा को गायब कर देते हैं।

○ विदेशी लोगो ने भारत को जाना/पहचाना पर भारत के लोगो ने अपने ही इतिहास को नहीं जाना।

○ हिंसक वस्त्रो से नहीं अहिंसक वस्त्रो से ही लोहा (16) टीकेगा अन्यथा 17 बाते होगी।

○ शील/मर्यादा का पालन भी विदेशी वस्त्रो से सम्भव नहीं हथकरघा से ही पालन कर सकते है। इसी में स्वास्थ्य रहेगा, इसी में परमार्थ है। आप आश्वस्त होकर जीवन में स्थान दें।

○ आज्ञाकारी एक लड़का अच्छा है आज्ञा देने वाले कई लड़को से।

○ मनोरंजन की सामग्री ने भारत को श्रम से ही दूर कर दिया।

○ अन्तर्जगत में जीने वाला भारत था किन्तु कालचक्र ऐसा आया और परिवर्तन हुआ। परिवर्तन संसार का नियम है। अतः अब परिवर्तन लाना ही होगा (वही टिक रहा है। जो जीवनोपयोगी हो उसे अपनावे)

○ ○ ○

16-2-19 "द्वितीय सत्र प्रवचनांश" मध्याह्न

- श्रेणिक - कुणिक - चेलना की कथा ( Super hit प्रवचन) आचार्यश्री ने उस कथा को जेल के बन्दीयों से जोड़कर सुनाया।
- सांसारिक प्राणी तात्कालिक के चक्कर में त्रैकालिक को भूल जाता है, इसी कारण यह दशा बनी हुई है।
- "दिल को शान्ति स्वाभिमान से ही हुआ करती है। प्रतिशोध में तो अशान्ति [ तिलमिलाहट ] ही हाथ लगती है।"
- एक बार वैर हो जाता है तो गाँठ बंधती (बढ़ती) ही चली जाती है।
- जो स्वाभिमान नहीं रखता वह करोड़पति भी है तो भीख मांगने जैसा (भिखारी) है।
- "अर्थ का संग्रह सदैव उद्देश्य से विमुख कर देता है।" जेलर साब अर्थ का नहीं अच्छाई का संग्रह कर रहे हैं, यह तो महाचोरी है। किन्तु इस चोर संग्रह में मुक्ति से कोई रोक नहीं सकता।
- "जैनत्व एक कोम नहीं, यह तो प्रयोग है।" समग्र जीवन खचित होकर आ जाता है।
- सम्यग्दर्शन के बिना कोई भी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में कार्य नहीं कर सकता है।
- "सम्यग्दर्शन की परीक्षा स्वयं भी कर सकते हैं, उसके आठ अंगों द्वारा।"
- धर्म की प्रभावना होना चाहिए, धर्म से अपनी प्रभावना नहीं। भावना होना चाहिए।
- वहाँ एक जेल और एक व्यक्ति था, यहाँ कितने जेल और कितने बंदी हैं - कौन सोचेगा?

o तिहाड़ जेल में जहाँ खुंकार दहाड़ने वाले शेर की तरह कैदी हैं, उन सबको अपने कन्ट्रोल में करने वाला शेर (जेलर) भी आज इस मुक्त शेर को निवेदन देने आया है।

o पिंजरे में जो दहाड़ता है, वह यदि पिंजरे के बाहर आ जाये तो क्या होगा?

o योग की शान्ति उपयोग की शान्ति से ही हुआ करती है।

o अशान्ति के साथ शान्ति का आह्वान संभव नहीं।

o विलम्ब होने से एवं दूसरों के प्रवचन सुनने पर करने वाले का हाल कुणिक की तरह ही होता है। अब पछताये क्या होत, जब चिड़िया चुग गई खेत।

o आकस्मिक सागर जेल गया। सीखना चाहिए कैदियों से क्रूर प्रवृति वाले भी भगवान की पूजन-प्रार्थना-वंदना करते हैं।

o ठोकर खाने से अक्ल (ज्ञान) आती है। नीचे देखकर चले पर नीचे के साथ अन्य कोई है उसे भी देखें अन्यथा टकरा सकते हैं।

o क्रूर प्रवृति को मंद करने का सबसे अच्छा उपाय है जैसे अग्नि को यदि ईंधन न मिलें तो वह कभी भी बढ़ नहीं सकती मंद पड़ेगी ही ऐसा ही कर सकते हैं।

o माँ अपने बेटे को भोजन कराती है, पति को भी उस समय इधर-उधर भेज देती है। बेटे को माँ पर विश्वास हो जाता है इसी तरह कैदीयों को जेलर पर विश्वास होता है। वह दोहरी भूमिका निभाता हुआ हृदय परिवर्तन कर उन कैदियों के उत्थान के बारे में सदैव सोचता रहता है।

o सारा प्रबन्ध जेलरो के लिए हो रहा है, कैदियों के लिए कम हो रहा है। (मतलब कैदीयों का उत्थान होगा तो सारा पुण्य जेलरों को ही मिलेगा।)

o जेलर अपने लिए कठोर हो सकता पर कैदीयों के लिए तो नवनीत का गोला होता है।

o जिस प्रकार कैदी का आचरण देखकर उसकी सजा 5 वर्ष, 10 वर्ष आदि कम हो जाती है अर्थात समय से मुक्त हो जाता है इसी प्रकार मोक्षमार्ग में भी यदि सही पुरुषार्थ करो तो समय से पूर्व मुक्ति मिलती है।

o पश्चाताप द्वारा दोष दूर होकर कर्मों की निर्जरा भी होती है।

o विचार मात्र से संक्रमण होता है, अतः सदैव भावों को शुद्ध बनाना चाहिए।

o प्रेम/आत्मीयता से दूसरे के विकास के बारे में सोचना ही भाव सम्यग्दृष्टि है बाकी तो दिखावा है।

o हाँ-हाँ इसमें दो भाव है। मैं जानता हूँ, 2. बेटा! आ जाओ। एक नेगेटीव है दूसरा पोजेटीव।

o टार्चरिंग से विश्वास घटता है, जेलर Torching नहीं करते अतः विश्वास बढ़ता ही जाता है।

o मुझे राजी करने के लिए पसीना भी आ जाये, सीना भी धक-धक करने लग जाये, हमें कछु नहीं होता। इसी प्रकार की सिंह-वृत्ति हेतु कहा है।

o बाहर में तो स्वच्छता अभियान चला रखा है, भीतरी स्वच्छता का भी तो ध्यान रखो।

0 मानसिक प्रदुषण से डरीये। दूसरो का अहित सोचना ही मानसिक प्रदुषण है।

0 मत दिखाओ, विश्वास लौट आता, व्यवहार/आचरण से सम्यग्दर्शन से नहीं - सक्रिय सम्यग्दर्शन से विश्वास लौट सकता है।

0 बोली बुलती है 101, या 1001 इसका मतलब क्या? मतलब ये है 100 अथवा 1000 तो सरकारी बोली है एक उसमें पहले बोलनेवाला अपना मिलाता है। इसी प्रकार पहले अपनी चवन्नी डालो यदि दूसरे से कुछ चाहते हो तो। हां! मन को साफ करके डालो।

0 श्रेणिक राजा से भी ज्यादा पाठ/सीख इन कैदीयों द्वारा ले सकते हो। संकल्प लेने वाले जेलर ही है।

0 मात्र स्वीकारता ही पर्याप्त नहीं उतरना चाहिए। जितने अंशो में उतर जाये उतने में तर जायेंगे।

0 संसार शरीर भोगो से जो उदासीन होगा ऐसे सम्यग्दृष्टि से तुम चारित्र धारण करो कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

0 संकल्प लेने से उद्धार होता ही है।

0 श्रम करना सीखाओ। श्रम का शोषण न हो पोषण हो।

0 पढ़े-लिखो में ही सम्यग्ज्ञान होता है ऐसी मेरी धारणा नहीं; यह कटु सत्य है। रुग्णता ज्यादा दिनों की हो तो कड़वी दवाई ही ठीक कर पायेगी।

0 यंत्र से बने कपड़ो से चर्म रोग होता है, जबकि हथकरघा कपड़ों से धर्म योग सीखा जाता है। 0 0 0

17-2-19 राष्ट्रीय संगोष्ठी - तृतीय सत्र" प्रातः

० सुनने के साथ देखने से और भाव आत्मसात् हो जाते हैं।

० शिक्षा एवं शैक्ष्य क्या? महत्त्वपूर्ण है। मनुष्य भी कवलाहारी एवं जानवर भी कवलाहारी है परन्तु मनुष्य जानवर की भांति पूरी (साबूत) रोटी नहीं खाता क्योंकि संशोधन एवं चर्वण नहीं होगा। इससे स्पष्ट है कवल (ग्रास) करके ही खाने से वह अन्न-रस मे परिवर्तित और रस रक्त आदि वीर्य तक सात धातु में परिवर्तित होता चला जाता है। निरस भी सरस हो जाता है।

० भोजन को पैट्रोल की संज्ञा दी है तभी जब उसके खाने से स्फूर्ति/नयी चेतना का विकास हो।

० बहुत सारी साधन सामग्री जुटाने से काम हो ये कोई नियम नहीं क्योंकि -

"किसी वेग में, पढ़े हो या अपढ़, सब एक हैं/समान"

० माथा को मथानी बनाओ तभी नवनीत की प्राप्ति कर सकोगे।

० ताली आनंद का प्रतीक है किन्तु वह स्व स्फूर्त हो नहीं तो ढोलक स्व लो बजता ही रहेगा।

० वीर्य बनने पर वह अन्न वर्षों तक विद्युत प्रवाहित करता रहा है।

० किसी वेग मतलब आवेग/उद्वेग हो या फिर संवेग हो अर्थात क्रोध/गुस्से का भाव हो या क्षमा का भाव हो उसमें दोनो (पढ़ा-अपढ़) एक है। फोटो लेकर देख सकते है।

० मनुष्य जन्म मात्र से महान नहीं त्याग (छोड़ने) से ही महान बनता है।

o ब्रह्म नाद को सुनो, आप तो अभी भ्रम में पड़े हो। ब्रह्म नाद यानि आत्मा का नाद।

o जिस समय घण्टा बजे उसी समय सुन लिया तो काम का अन्यथा कोई काम का नहीं।

o गुरु, वचन से संकल्प ले लेता है और अन्तिम समय तक पालन करते है। इसी को प्राण-प्रतिज्ञा कहते हैं। कान में मंत्र सुनाना/ऐसा लगता है आज ही बिल्कुल ताजा है। क्योंकि सूत्र कभी बासा होता ही नहीं।

o संतोष देवता की आराधना सबसे पहले गांवो में होती है, शहरों में नहीं।

o बिना भूख - बिना चर्वण के जो खायेगा वह बीमार पड़ेगा और बाद में रोयेगा।

o रोगी की चिकित्सा हो सकती है, मानसिक रोगी की क्या चिकित्सा होगी। आचार्यों ने परिणाम प्रत्ययेन कहा।

o प्राणखाऊ मत बनो प्राणनाथ बनो।

o सर्प एवं कौआ की उम्र समझना बहुत कठिन है। मच्छर (धन का लोभी) उसी भण्डार में पैदा होता है।

o अमर बनना चाहते हो तो अमर कौआ के पास जाओ।

o किसान केवल अपने ही बारे में नहीं सोचता। वर्षा हो-सर्वत्र हो। दूसरे का नहीं सोचा तो क्या किया?

o सात्विक भोजन, सात्विक विचार, सात्विक समागम, सात्विक वस्त्र हो तभी दूसरों के लिए कुछ कर पाओगे।

o बहुत दूर का प्रमाद है, अतः संकल्प भी दूर तक हो।

o o o

रविवार

17-2-19 राष्ट्रीय संगोष्ठी - चतुर्थ सत्र मध्याह्न

- दूध में घृत है पर देखना से दिखता नहीं, छूने में नहीं आता, सूंघने से भी ज्ञान नहीं, चखने से भी पता नहीं चलता फिर भी इसमें घृत है ये विश्वास होना आवश्यक है।
- दूध के त्याग से ही घृत की प्राप्ति संभव है। दही नहीं जमाया जाता दूध को जमाया जाता है। दही जम जाता है। आप लोग उल्टा चलते हैं।
- जब मथानी चलती है तभी नवनीत के कण ऊपर आते हैं। वह गोला अब डूबेगा नहीं। उसे ऋद्धि प्राप्त हो गयी। अब वह सभी इन्द्रियों का विषय बनेगा घृत रूप में - छूकर, चखकर, सूंघकर, देखने से भी ज्ञात हो जाता है। नीचे भी बैठा है ऊपर से दूध पानी डाल दो अपने आप ही शीर्ष पर आ जायेगा। नेतागिरी नहीं करता।
- आप नीचे गिरे तो गिरते ही रहते हैं, वह कभी नीचे गिरता ही नहीं ऐसी ऋद्धि प्राप्त हो गयी।
- घृत में प्रकाश प्रदान करने की शक्ति है आपके भीतर भी प्रकाश तभी आयेगा।
- मथानी बिना डंडे के नहीं चलती। डंडे का बहुत महत्व है। मारपीट का साधन नहीं डंडा सहयोग करने वाला है। झंडा तभी फहरायेगा/लहरायेगा जब डंडा हो।
- मोक्षमार्ग में भी डंडा बहुत काम का है। खुद एवं खुदा में कितना अन्तर है? खुद पर एक डंडा लगा दो खुदा बन जाओगे और कोई दूसरा आपको खुदा बनाने नहीं आयेगा।

- अन्तर्जगत की यात्रा के लिए यदि आप बाह्य संसार को हेय मानकर त्याग करते है तो राग-द्वेष सूखना प्रारम्भ हो जाते है।
- पांच इन्द्रिय और मन पर डंडा चलाइये, दूसरो पर डंडा मत चलाओ।
- दूसरे को तो अधीन रखना चाहते है, पर मन को कोई अधीन नहीं करना चाहता। संसार को जीतने का प्रयास पर मन को जीतने का प्रयास नहीं करते हो।
- जो परिणामों को उठाता है वह मनुष्य से मानव एवं मानव से महात्मा बन जाता है।
- दूबे है तो दबा क्यों? ब्राह्मणों मे बड़ा प्यारा नाम है दूबे। दो वेद को जो आत्मसात् कर ले वह दूबे है। जो दूसरे को दबाये नहीं वह दूबे है।
- डरना-डराना असंयमी का काम है- संयमी का नहीं।
- मैं असंयमी से नहीं असंयम से डरता हूँ।
- होनहार वही है जो असंयम को हरा दें।
- कला बहत्तर पुरुष की..... जीवन का उपसंहार उद्धार करने में ही है, धारण करने में नहीं।
- जो जीवनोपयोगी है उसका उत्पादन करो। वृत्ति/प्रयोग/कला परम आवश्यक है।
- स्वयं पाक एक कला है। भोजन बनाना केवल महिलाओं का ही काम नहीं, पुरुषों का काम भी है। दक्षिण में तो विशेषकर पुरुष सभी प्रकार के व्यंजन बनाते है।

- मन को मारना नहीं, मन को समझाना है।
- जेलर की आंखो से देखेगो तभी बन्दी को भाई बोल पाओगे।
- २ आंखे ।२हाथ - होश था तब छविग्रह में देखा था। क्यो? ।२सींग तो होते है पर ।२ हाथ, चलो देखते हैं।
- जो विषयों के चक्कर में पड़ता है उसकी दशा ।२सींगा जैसी ही होती है। फंस जाता है - प्राण गंवाता है।
- भले ही गरम पानी पी लो पर होटल मत जाओ। होटल जायेगा वह ।6 को टाल देगा।
- बीमार पडोगे - मरोगे पर मरने पर कौन आयेगा? मरने के बाद बैठना होता है न।
- जो जीवन को संयम में Invest कर दे - vest न करे, उसे आगे कोई यातना नहीं होगी।
- बेटा विदेश जाने से पूर्व यदि अपने हाथ से भोजन बनाना सीख ले तो कभी बाजार की गंदी वस्तुयें नहीं खायेगा। एक दम्पती - बेटा विदेश जा रहा है - आर्शीवाद दे दो। हमने कहा - भोजन (रोटी) बनाना आता है। उसने कहा - सभी व्यंजन स्वर युक्त आ गये हैं। आज वापस आ गया। ऐसा ही व्यक्ति आ सकता है।
- जो स्वयं पाक कला को जानता है वही अतिथी संविभाग कर सकता है।
- जीवन की दो मुलभूत आवश्यकता है पहला भोजन दूसरा वस्त्र, आज दोनों ही विकृत हो गयी है।

- अभी तक दूसरे के जीवन में हस्तक्षेप किया, आज हस्तशिल्प की बात कर रहे हैं।
- हस्तशिल्प में हस्तक्षेप करोगे तभी वात्सल्य अंग सामने आ जाता है।
- अपने को स्वामी मत समझो, आभार मानो ~~कि~~ उसके कारण मैं जीन्दा (जीवीत) हूँ।
- हथकड़ीयों में जीने वाले हथकरघा सीखो।
- हमारे भगवान एक हाथ पर दूसरा हाथ रखकर बैठते हैं, ऐसी मुद्रा किसी को भय नहीं लगता / वे भी - मैं किसी को मारूँगा नहीं।
- हस्तक्षेप समाप्त होते ही हथकड़ीयाँ भी कुछ नहीं कर सकती / हथकड़ीयाँ पहने हुये भी सामायिक कर सकते हैं! किन्तु हस्तक्षेप करने वाले के मन में सामायिक के भाव ही नहीं होते।
- एक जेलर जो हथकड़ी से हाथों को निकालकर हथकरघा तक ले जा सकता है / ले करके गये।
- भोजन करते समय भी ऐसे पवित्र भाव कर सकते हैं। (राकेश बांगरे (जेलअधीक्षक) सागर / गाय का पालन, हमेशा साथ रखना (ट्रांसफर होने पर भी) रोटी + गुड़ खिलाने के बाद ही भोजन करना (सुबह-शाम)
- वस्त्र की आवश्यकता वासना पर नियन्त्रण रखने के लिए होती है। न कि ऐसे वस्त्र जो वासना को ही बढ़ा दे। शील / संयम को नष्ट कर दें।

o हस्तक्षेप से हस्तशिल्प की ओर आयें। इसमें आमदनी भले ही कम हो सकती है पर आदमी बहुत होंगे। बेरोजगारी का नामोनिशान मिट जायेगा।

o देह को आपा मानने वाला आत्मा से दूर है, परमात्मा तक कैसे पहुँच सकता है? नहीं पहुँच सकता।

o दुनियादारी की शिक्षा तो बहुत दी जा रही है पर दुनिया समझने की शिक्षा कोई नहीं देता।

o मातृभाषा में अभिव्यक्ति सहज होती है। अन्य भाषा को सीखना पड़ता है और मातृभाषा कोई प्रयास नहीं करना पड़ता। चिंतन बढ़ता चला जायेगा।

o जिस शिक्षा ने सब कुछ छीन लिया। यदि आपकी धारणा ही बन बैठी है कि अंग्रेजी बिना कुछ नहीं होगा तो कोई भी भाषा 10-12 वर्ष की उम्र के बाद एक-दो माह में सीखी जा सकती है। पूरा जीवन ही उसमें लगा देना क्या मूर्खता नहीं है? सोचो?

o हिन्दी बोलने पर दण्डित करने का प्रावधान हो गया। आपने भी सुना है। ऐसे विद्यालयों से क्या मिलेगा।

o जो पढ़ा-लिखा हो वह समझदार भी हो आवश्यक नहीं। पढ़ा-लिखा नहीं है तो भी समझदार हो सकता है।

o अभिभावक जो अभी भावुक हैं, आपको बड़े पुण्य से मिले हैं (व्यंग्य) मनुष्य जीवन को पाप का फल तो नहीं कह सकता।

o कम पढ़ा लिखा भी है तो उद्योगपति बन गया कई C.A उसके Under में काम करते हैं। होता है कि नहीं? बोलो ना? (हओ)

- श्रम करो - बच्चों को श्रम सीखाओ, श्रमदान इसीलिए कहा गया/नाम दिया।
- आश्रय दान/अभय दान परम आवश्यक है। श्रमणों को भी आशीर्वाद हेतु इसीलिए कहा। भूलकर भी मैले (थप्पड़ मारने जैसे) हाथ नहीं उठाना। ये हस्तक्षेप है और आशीर्वाद मुद्रा ये हस्तशिल्प है।
- हथकड़ी नहीं हथकरघा अपनाओ।
- पुरुष महिलाओं को भोजन कराना शुरू कर दें, एक दिन भी होटल जाने की नौबत नहीं आयेगी।
- दक्षिण में रसोइन नहीं होती रसोइया होता है। पुरुष का हाथ बड़ा होता है सबको खिला सकता है। बड़ी रसोई में उन्हें ही बुलाते हैं।
- "दाम्पत्य भावं इति दम्पति" एक-दूसरे को जो सहयोग दे, वे ही दम्पति कहलाते हैं। गुरुजी कहते थे।
- भारत को भी नजर लग गयी। काला लगाने के उपरान्त भी माँ की नजर लग जाती है अथवा अपनी स्वयं की भी नजर लग जाती है। अच्छी मिर्च-नमक-नीबू से उतारना पड़ेगा।
- जेल गये थे तो बहुत सारे लोग साथ गये पर वहाँ केवल महाराज ही अन्दर जा सकते है। आप खुलवा नहीं सकते थे और मैं कह नहीं सकता/कहूँगा नहीं। आप चाहे तो आ जाये। स्वयं समझें अन्यों भी समझायें जिनको मित्र मानते हैं।

ㅇ ㅇ ㅇ

18-2-19 "डॉट लगाओ - सोच समझकर" प्रातः

औषध की शीशी हाथ में है उस शीशी में औषध भरा है। औषध लेने को कहा गया है। जिसको कहा उसने एक कटोरा हाथ में लेकर औषध निकालनी चाही पर बाहर नहीं आ पा रही है। क्या बात हो गयी? इधर-उधर देखने पर ज्ञात होता है इसके गले में कुछ अटका है। जब झुकाता हूँ तो डॉट पहले ही आकर अटक जाती है। डॉट जानते हो? ढक्कन नहीं। कण्ठ में रहती है वह डॉट। असावधानी से थोड़ा ज्यादा दबा दिया गया। अब वह औषध को भी बाहर नहीं आने देगा, स्वयं कण्ठ पर आकर बैठ जाता है।

उसे सुई से सावधानी पूर्वक बाहर निकाला। युक्तिपूर्वक बाहर निकाल लिया गया। इसी से ये ज्ञात होता है जो साधन होता है वह साधन भी असावधानी से बाधक बन जाता है। प्रमाद के कारण ऐसा होता है। डॉट न लगाये तो यदि शीशी लुढ़क जाये तो दवाई बाहर आ जायेगी लेने योग्य ही नहीं रह पायेगी और डॉट लगाने से यदि गले में अटक जाये तो भी दवाई बाहर नहीं आ पायेगी। कैसे करें? परीधी में ही जितना कहा उतना ही करो।

थोड़ा डॉट तो चाहिए, ज्यादा नहीं चाहिए। ज्यादा कसने से गड़बड़ हो जायेगा। गुरुजी ने कहा था - शिष्य और शीशी को डॉट होना चाहिए। यह बात अभिभावकों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं को ज्ञात होना चाहिए कि डॉट कितना लगायें? ऐसा कर लो प्रतिभा-

स्थली में 12वीं बाद जहाँ कहीं भी शिक्षा लेकर फिर बाद में जो छात्रायें होंगी उन्हें डॉटा करो।

आपकी डॉट को सहन करेगा या नहीं करेगा ये सोच लेना। उनका भी भविष्य सुरक्षित हो। स्व-पर कल्याण का कारण बने, इसी लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ाया जाता है। इसी डॉट से जीवन में वह स्वर्णिम अवसर आ सकता है। बार-बार सोचते हैं, पर जो वातावरण बन रहा है उसका क्या कहना? अकेले के बूते पर कुछ नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपनी परिधी (सीमा) में करते रहें।

परिणाम अच्छे आते ही काम पुरा हो गया, ऐसा नहीं, अभी तो कार्य प्रारम्भ हुआ है। आप जिसे उपसंहार समझते हैं वह आरम्भ है। अभिभावक यदि जागृत रहे तो भविष्य आगे भी इसी प्रकार सुचारु काम करता रहेगा। यदि हमसे पुछेगा तो हम आपसे पुछेंगे, क्या किया? समय पर डॉट लगाया पर ऐसा लगाया कि फँस गया। अब तो वह सुई चुभोकर ही निकलेगा। कुछ लकड़ी की डॉट ऐसी भी होती है, जो थोड़ी-थोड़ी टूटकर ही निकल पाती है।

आज की स्थिति ऐसी हो चुकी है कि यदि संतान को डॉट दो तो पश्चाताप करना होगा। बहुत विवेक के साथ करना होता है। उसको महसूस हो जाए। माता-पिता को बहुत धैर्य रखना होता है, धैर्य खो जाते हैं,

परिणाम गलत हो जाते हैं।

इसलिए करणीय ही करें। कब तक करना। "जीवन को पाना ही सब कुछ नहीं, जीवन को पाकर उसे खपाना भी पड़ता है।" अच्छाई की प्राप्ति हेतु बुराई को खपाना पड़ता है। चंदन से सुगन्धी चाहते हो तो उसे घिसना ही पड़ेगा। सुगन्धी जरूर आयेगी, नाक बंद भी हो तो भी खुल जायेगी। नासिका तृप्त हो जाती है। इसलिए सुगन्धी आयेगी या नहीं इसकी चिंता न करें।

सुगन्धी नहीं आ रही है तो जागृत होने की। घिसने की जरूरत है। उसके भीतर सुगन्ध भरी है। हाँ अपनी नासिका को भी साफ करना जरूरी है। आपका तो चक्का जाम ही रहता है। इस प्रकार होने से फिर मुख से श्वांस लेना पड़ता है, श्वांस ही नहीं आता। हम भी कहते हैं, भैया बहुत विलम्ब कर गये इसीलिए चक्का-जाम हो गया है।

रेल में कितना भी हड़ताल करो, लोग रास्ता बदलकर भी पहुँच जाते हैं। रास्ता चलने वालों के लिए होता है। अब हाइवे का चक्कर छोड़ दो और पगडंडी से चलना प्रारम्भ कर दो। उस पगडंडी पर आपके वाहन भर नहीं चल पायेंगे। इसलिए अपने वाहने को भीतर रख दो जब सरकार बनायेगी (Road) तो देख लेंगे।

रात्रि - चितौरा                                   अहिंसा परमो धर्म की जय।

सुरखी

19-2-19 "फार्मूला नम्बर होने का" प्रातः

हमने सुना था दक्षिण में, यहाँ क्या कहते हैं बता देते हैं। छोटे-छोटे बच्चों हेतु झबला पहनाया जाता है। उसमें कॉच वगैरह नहीं होते, उसे तो सुरखी.... यूं ही पहन लेते हैं। बटन की कोई व्यवस्था नहीं (एक डोरी होती है उसी से ढीला अथवा टाइट कर देते हैं। ठीक उसी प्रकार जिस बोली के लिए सागर में ½ घण्टा ले लेते थे, यहाँ 2 मीनिट में निर्णय हो गया। इसका मतलब ये सुरखी की बात है। गाँव वाले मोह नहीं रखते।

यहाँ पर कितनी बार आना-जाना हुआ पता नहीं। [5 बार] तो यह निश्चित है मोह को दूर करने के लिए ही ये सभी धार्मिक अनुष्ठान विभिन्न प्रकार से सम्पन्न होते हैं/किये जाते हैं। आप छोड़ें या न छोड़ें, जिसका भाव छोड़ने का हो जाता है वह विलम्ब नहीं करता है। वह तो यही सोचता है - करे जाओ, करे जाओ। ग्रामीण लोग धीरे-धीरे इकट्ठा करते जाते हैं और एक ही बार में बोल देते हैं। आप लोगों का ध्यान संस्था की ओर होने से व्यापारी दृष्टि बनी रहती है/इससे मोह जागृत हो जाता है।

ग्रामीण लोग वस्तु को (वस्तु को नहीं कहेंगे) (पुण्य) देखता है - मुद्रा को नहीं देखता। वह संतोष देवता का ध्यान, उसी की स्तुति करता है। इसीलिए जल्दी नम्बर पा लेता है। जो असंतोष अथवा आकुलता करता है वह नम्बर नहीं ले पाता। आकुलता का कारण ही बंध

का कारण होता है।

करते रहो। जो होशियार होते हैं वे ऊपर से नहीं डालते, निकालते रहते हैं। बीच-बीच में भांजते भी रहते हैं। शहरों में भांजना होता ही नहीं। बोरी वगैरह को भांजा करो। किन्तु आपके यहाँ तो -- हवा भी नहीं लग रही है। हवा लगे या न लगे देव लोग खिसका देते हैं फिर अपने आप ही वह हवा में आ जायेगा पता तक नहीं लगेगा।

वह तो खिसकेगा, खिसकने से पूर्व ही गाँव के लोग स्वयं खिसका देते हैं। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। यहाँ के लोग संतोषी हैं, छोटे प्रवचन में भी पूरा समझ जाते हैं।

रात्रि विश्राम- बरकोटी                अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

२०-२-१९ [गोरखामर]        "विशेष होता बलवान"        प्रातः

एक कोई फल है, कोई भी मान लो। बाहर से विविधता दिखती है, भीतर से सबमें अस्तित्व रहता है। हम लोगों की दृष्टि में नहीं आता। इसीलिए कोई आकर्षण भी नहीं दिखता, विविधता में सब दिखता है। किसान की बात है। वह कहता है कोई छोटा-बड़ा, लम्बा-चौड़ा, गोल-चपटा है वह चीभरी है। चीभरी जानते हो? [हाँ] खाने-पीने की चीज बहुत जल्दी पहचान लेते हो।

वह सोचता है बाजार का दिन है, जो पकने वाला है उसे भी लेना है। सामान्य क्या, विशेष क्या? इससे समझ लो। जो विशेष पकी हुयी चीभरी थी बड़ी मीठी थी, सुगन्ध भी फूट रही थी उसके आजु-बाजु में जो पका

कोथी वे छोटी थी उन्हे भी कर दिया, इससे सारी की सारी पककर, सुगंधदार हो गयी।

बाजार में ले गया। उसकी चीमरी सबसे ज्यादा बिकी। एक ने कहा कहा तो ऐसी नहीं दिख रही थी। ऐसा है सामान्य से तो सब एक ही दिखती है किन्तु भीतर से ऐसे परिणाम एक का रंग देखकर दूसरी भी पक जाती है। इसी प्रकार एक के दान के भाव तो दूसरी चीमरियां भी पक जाती है।

हमारे बैठने से यदि पक जाती है तो क्या बाधा? धर्म की ही बात है। यहाँ जो बैठा है सब भव्य है, हम अभव्य क्यों मानें? सबका मन प्रफुल्लित हो जाता है। हम छोटे थे इस समय से तुलना करते हैं। आज का छोटा बच्चा जिसे अभी बोलना भी नहीं आता वह हमारा नाम लेकर जयकारा लगाता है। उसका कितना पुण्य है। मुझे भी जाना है, जिद करने लग जाता है।

चिल्लर पार्टी से ही काम होता है। आप बड़े है वह क्या जानता है? इन्हीं से तो काम होना है। आप तो महक चुके, ये महकने वाले हैं। इनमें संस्कार डालो, वो ही काम आयेंगे। अभी-अभी चातुर्मास हुआ पेट काफी भरा हुआ है। इतना ही पर्याप्त है।

रात्रि= गोपालपुरा अहिंसा परमो धर्म की जय॥

देवरी

श-2-19 तनाव ही नहीं तन को भी दूर करता है दान ग्राल:

ज्यादा परिचय देने की कोई आवश्यकता है ही नहीं, आप सब तो परिचित ही हैं। अभी-अभी चर्चा चल रही थी, एक लड़के ने कहा जब से अध्यक्ष बने इतना काम हुआ हमने कहा "अध्यक्ष बने हैं तो इतना काम यदि सेवक बन जाओगे तो इससे भी दुगना काम होगा।" बात समझ में आ गयी? उस बच्चे को तो आ गयी। आपको आयी या न आयी? आप केवल देहरी पर ही रह रहे हो, भीतर की बात नहीं समझ में आयेगी।

मन्दिर के पास तो रहते हो पर बाहर ही रह रहे हो। देहरी पार करके भीतर भगवान से परिचय करो। ये भी ठीक है देहरी के बिना मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकते। हम भी शान्तिनाथ भगवान के पास देहरी के बिना कैसे जाते। महाराज तो रहते ही हैं। आप बाहर देहरी पर ही रहो हमें तो भीतर जाना है। यहाँ तो इसलिए रुकना पड़ा कि गाड़ियों में पट्रोल भी तो चाहिए। आप लोगों को भी इसे से भीतर जाना है, मात्र बोलियों से कुछ नहीं होगा।

वो तो तनाव को दूर करने हेतु दे देते हैं। टेंशन अंग्रेजी शब्द है। सुनो! "तनाव को दूर करने के लिए दान नहीं तन को दूर करने के लिए दान होता है।" इतना ही पर्याप्त है।

रात्रि - बीना बारहा

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

दीक्षास्थली
बीना बारहा
23-2-19 "सबका सारा दुःख दर्द हरो" प्रातः

आप लोगों ने अभी-अभी अर्घ्य चढ़ाया "मेरा सारा दुःख दर्द हरो" हमने सोचा - भैय्या अनंतकाल का दर्द आज तक हरा नहीं। फिर अर्घ्य चढ़ाकर यह मांग कर रहे हैं, यह तो सौदा कर रहे हैं। जीवन बहुत कम है। यदि सौदा ही करना चाहते हो तो मेरे की जगह "सबका सारा दुःख दर्द हरो" यह कह दो फिर तो थोक में काम हो जायेगा।

सबमें हम भी आ जायेंगे। धर्म इसी का नाम है। ऐसा काम करो कि सबका काम हो जाये। केवल अपना ही चाहोगे तो काम नहीं होगा। मेरा-तेरा करोगे, कुछ नहीं होगा। मैं सोच रहा था आज तो खाली रहेगा। न जाने आप लोग कहाँ से आ जाते हैं। पगडंडीयों से यह क्षेत्र सबतरफ से जुड़ा है। जल्दी से आ भी जाते हैं और चले भी जाते हैं। ध्यान रखना:- बिल्कुल पास से दर्शन कर रहे हो, अब शिकायत नहीं करना।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष → "दर्शन विशुद्धि भावना का होना एवं सम्यग्दर्शन का होना दोनों में महान अन्तर है। सम्यग्दर्शन में मात्र श्रद्धा है जबकि दर्शनविशुद्धि में प्रयोग है। स. द. के होने पर तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं पर दर्शन विशुद्धि है तो अवश्य ती. प्र. का बंध होगा।"

२५-२-१९

प्रातः

आज रविवार है, मध्याह्न में प्रवचन रखा है। सुबह दर्शन कर लिये, पूजन भी कर ली। इस माध्यम से आप लोगों का धर्म ध्यान / आराधना और परोपकार में धर्म को भी कैसे दिया जाता है, यह ज्ञात हो जाता है। क्षेत्र आपके सामने है। यहाँ आप भी कई बार आ गये होंगे किन्तु जब कभी भी आते हैं पुराना नहीं, नया-नया ही मिलता है, ऐसा हमें लगता है। आप लोगों को कैसा लगता है? यह पुराणों में / ग्रन्थों में आचार्यों का जो भाव मिलता है, प्रभावना में जनता के लिए हमेशा मिलता रहेगा।

जो नश्वर तन-धन है इससे वह फल मिलता रहेगा। ये कुछ क्रियायें ऐसी हैं जिससे संसार बढ़ने की बजाय घटता ही चला जाता है। आपको संसार घटाना है या बढ़ाना है? बोलो? पूरा घट जायेगा तो क्या करोगे? ज्ञात हो जायेगा जो घट गया वह हमारा नहीं था। अभी मोह के कारण ऐसा हो रहा है। आप लोगों ने नवीन वेदियाँ बनायी, प्राचीनकाल के श्री जी यहाँ विराजमान हैं ही, उन्हें अब नयी वेदी में बैठाना है।

आप सभी भव्य आत्मा हैं जो दूर-दूर से आ रहे हैं/आते हैं। मन्दिर में प्रवेश करते ही सारा अभिमान चूर हो जाता है और झुककर के चरणों में नतमस्तक हो जाते हैं। आप लोगों ने नया रूप दिया अपने धन को सार्थक किया, मोक्षमार्ग को प्रशस्त किया। जो कुछ भी इकट्ठा किया है, पुराना माल

साथ में एक कौड़ी भी नहीं जायेगी।

जो भी रखा है/चाबी रखी है सुरक्षा के लिए वह भी यही पर रखी रहेगी। घर वाले तलाशी लेंगे, कुछ लेकर तो नहीं जा रहा है/सब उतार कर रख लेंगे। अन्तिम यात्रा में कफन मात्र रहेगा। श्मसान में जाने के उपरान्त अर्थी से चिता पर लेटाते समय कफन भी उतार लिया जायेगा। बता देंगे जैसे आये थे वैसे ही जा रहे हो। हाँ! यदि आपने धर्म-कर्म किया है तो वहाँ परेशानी नही होगी।

आपके द्वारा जो किया है उसका फल आपही को मिलेगा। जिनेन्द्र भगवान की आराधना का फल परोपकार आदि कार्यों का फल अवश्य मिलेगा। मिले इन्ही भावो के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय,

उदाहरण→

"जिस प्रकार ड्राइवर गाड़ी चलाता है रास्ते में कई गांव-शहर पड़ते है, हजारो लोग/गाड़ीयाँ दिखती है उसे कोई मतलब नहीं मात्र मुझे कहाँ जाना उसी से प्रयोजन होता है इसी प्रकार मुनि का जीवन होता है, लक्ष्य की ओर ही सदैव ध्यान रखता है।"

इसी प्रकार सैनिक के जीवन से एवं किसान के जीवन से भी आचार्यश्री ने तुलना की।"

25-2-19 "दाना ही नहीं पानी भी" प्रातः

जीवन जीते हैं और जीवन को सुखमय बनाकर जीते हैं दोनों में बहुत अन्तर है। आयु कर्म का उदय, मनुष्य गति का उदय से जीवन जीने का अवसर मिल गया किन्तु इसे सुखमय बनाने के लिए और पुरुषार्थ की आवश्यकता है। यह आप पर आधारित है। जैसे जीवन जीने के लिए भोजन लेते है, आवश्यक है किन्तु आपने सोचा होगा मात्र भोजन से काम नहीं चलता। दाना तो मिल गया।

अकेले दाना से काम नहीं आगे पानी भी चाहिए। पेट भरने के लिए जैसे दाना चाहिए वैसे ही उसे पचाने के लिए पानी चाहिए। केवल पानी-पानी ले लोगे तो फिर पचाओगे किसको? समझ में आ रहा है? मतलब की बात जल्दी समझ में आ जाती है। अतः दोनों (दाना भी-पानी भी) चाहिए। युं कहे दिन भर भोजन नहीं होता पर पानी तो हर एक-एक घण्टे में डालते रहते हो। इसी से खाया हुआ भोजन पच जाता है।

इसी प्रकार जीवन तो जी रहे हैं, इसे परिष्कृत बनाकर जीयें। इससे आगे आने वाली पीढ़ी को भी याद रहेगा। अपने आचार-विचार के माध्यम से जो योग्य दाना-पानी है वही सेवन करें "जीने के लिए दाना-पानी की जरूरत होती है भोजन के लिए दाना-पानी की जरूरत नहीं।" इसी के माध्यम से जीवन भी सुरक्षित

रख सकेंगे।

दाना-पानी साफ सुथरा एवं योग्य होना चाहिए। "विचारों में जब परिष्कृत होता है वो हमें अच्छाई की ओर ले जाता है।" संयत होकर लेना अनिवार्य है। अन्यथा- चिड़िया चुग गई खेत...। इसमें भी चिड़िया अकेले दाना ही नहीं चुगती, वो यहाँ एक मटकी में पानी भी रख देता है और आवाज लगाता है। एक आवाज में ही सब पीकर चले जायेंगे। पूर्वजों ने ये बना दिया, जहाँ पर कई आकर चले जाते हैं।

दाना - पानी तो सबको लेना होता है लेकर दर्शन करके चले गये। उन पूर्वजों ने अपना जीवन तो बनाया ही इतने विशाल मन्दिरों का निर्माण करके दूसरों का जीवन भी बनाया। यहाँ बैठे हैं (मंत्रीजी) [देवरी से विधायक - यश यादव] सुनते हैं यहाँ महोत्सव होने वाला है। हम आदेश क्या दें। हमें तो आपने बुलाया है, मेला देखकर चले जायेंगे। आप सब एकत्रित होंगे तभी महोत्सव होगा नहीं तो कैसे होगा?

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

गुरुवाणी -

- "मर्यादा में रहोगे प्रभावना हुये बिना नहीं रहेगी"
- "सिद्धान्त ग्रन्थ षट्खण्डागम जैसे महान ग्रन्थ को कोर्स में रखना गलत है। बच्चों से परीक्षा ली जा रही है- क्या होगा।"

## संस्मरण

### आप क्या चाहते हैं?

"खुरई से सागर के लिए बिहार हुआ। आ०श्री का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं फिर भी मध्याह्न में एक ही बार बिहार करते-करते संघ भाग्योदय से 9 कि०मी० दूर यादव जी के कॉलेज में रुका था। मौसम विभाग ने 22 जनवरी से 25 जनवरी तक बादल-वर्षा होना बताया किन्तु गुरुजी के पुण्य के आगे वह भी नतमस्तक हो गया 22 से 24 तक कुछ नहीं हुआ। 25 जनवरी- मंजिल पास किन्तु प्रातः से ही उसने (मौसम) उग्र रूप ले लिया। मध्याह्न में बूंदाबांदी भी (मावठ) होना शुरु हो गयी।

गुरुजी को शीत से बचाना भी जरूरी था। हम 8-10 महाराज 1½ बजे आ० श्री के कक्ष में पहुंचे। उनसे बहुत अनुनय-विनय-निवेदन किया कि आज न चलकर कल चलेंगे तो ठीक होगा। यहीं पर रुके रहें। आ० श्री पहले तो सुनते रहे। जब अति होने लगी तो कहा- तुम लोग चाहते ही नहीं कि मौसम ठीक हो जाये। मैं कह रहा हूँ अभी एक-आध घण्टे में देख लेना। जाओ अपना काम करो। वही हुआ जो गुरुजी चाहते थे। इन्द्र देव भी हार मानते हैं उनकी धारणाशक्ति के आगे। पानी बन्द हो गया। हम सभी (पूरा संघ) धूमधाम से चलकर भाग्योदय तीर्थ में प्रवेश कर गया।"

"नियम की महिमा"

बीना बारहा क्षेत्र के वर्तमान अध्यक्ष महेन्द्र सोधिया ने बताया कि मैं एवं अलकेश जी (कार्यकर्ता) दोनों मकराना पत्थर लेने गये। वहाँ 2 दिन हेतु गये थे किन्तु 8-10 दिन लग गये। बाजार का कुछ खाते-पीते नहीं, इसलिए अब अपरिचित स्थान पर कैसे होगा? घबराये नहीं। कुयें पर जाकर पानी छानकर पीलेंगे फल खालेंगे यही सोचकर पानी छान रहे थे। अचानक एक महिला ने देखा ये पानी छानकर पी रहे है तो भोजन कहाँ करेंगे?

उसने उनसे पूछा तो कहा 2 दिन का कुछ ले आये थे अब व्यवस्था नहीं है. पानी एवं फल खाकर अपना काम चला लेंगे। तुरन्त महिला जो जैन थी कहने लगी आप हमारे यहाँ भोजन करेंगे। हमें साधर्मी का अतिथी संविभाग प्राप्त होगा। इस प्रकार पानी छानकर पीने का नियम और बाजार का न खाने का संकल्प उनके लिए सारी व्यवस्था लेकर आया।" देवता भी ऐसे लोगों की मदद हेतु खड़े रहते है। विश्वास करो।

गुरु मुख से-

"प्रतिमा विज्ञान बहुत विस्तृत है, आ० श्री का कहना है कि हरेक व्यक्ति प्रतिमाओं का पालन कर सकता है, अपनी-अपनी भूमिका के अनुसार।"

26-2-19 "बैर नहीं इनवैर करो" प्रातः

आप लोगो को ज्ञात होगा सुनने, पढ़ने अथवा देखने के माध्यम से भी यह ज्ञात हो गया कि कहीं भी सुगन्धी (फूलों की) हो तो भ्रमर दूर से उस ओर चले आते है। दूर स्पर्शी अथवा दूरघ्राण के माध्यम से भ्रमरो में वैसी क्षमता रहती है। दिन उगते ही दसो दिशाओ से वे भ्रमर अपनी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने के लिए उड़ जाते हैं और उस गन्ध को खोजकर पराग को ग्रहण करते हैं।

थोड़े शब्दो में ही हम कह रहे हैं। उसी प्रकार भ्रमर की भांति आप सब भी इस क्षेत्र की ओर खींचे चले आते हैं। उसमें हम भी शामिल हैं। ये बात अलग है कि आप लोग दोनो (क्षेत्र एवं आचार्य) के लिए चले आते हैं। भविष्य सभी का उज्जवल प्रतीत हो रहा है। अपने ज्ञान से, दृष्टि से परलोक की विवक्षा से सबको प्रशस्त कर रहे हैं। हम ये ही चाहते है। आपका तन-मन-धन इसी में व्यय नहीं Invest हो। पूंजी लगा दो। हम विश्वास दिलाते है कि कितने गुणित क्रम से बढ़ेगी।

ये व्यापार प्रतिशत में नहीं गुणित क्रम से बढ़ता है। गुणित क्रम यानि कितना मिलने वाला है पता नहीं। संख्यात, असंख्यात नहीं अनंतगुणा फलने वाला है। आप विश्वास करके निदान के बिना अपनी पूंजी लगाने की सोच लेना यदि विश्वास हो तो।"

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

27-2-19 "बारह भावना रूपी वैतरणी" प्रातः

दुनिया में कई प्रकार की नदियाँ बहती है। सुनते है देवगति में भी एक नदी बहती है, जिसको सुरगंगा (स्वर्गन्गा) बोलते है। वहाँ से गंगा का यहाँ बहकर आना ऐसी लोकख्याति है। स्वर्गन्गा कहने का कारण ये ही है। बड़े-बड़े तालाब से यह निकलती है और पूर्व दिशा की ओर मुड़कर समुद्र में मिलती है। इसके बीच यह जो यात्रा करती है उसका वर्णन बड़ा मनमोहक तिलोयपण्णत्ति ग्रन्थ में किया है।

जब यह पहाड़ से गिरती है, जैसे वर्षा होती है छत पर पानी एकत्रित हो एक पनाल से गिरता है वह कुछ आगे की ओर गिरता है यही स्थिति गंगा की होती है जब पर्वत से यह छलांग लेकर आसमान से गिरती है तो वह पर्वत पूर्ण ढक जाता है। ये ही स्वर्गगंगा है। शास्त्रों में बड़े-बड़े 6 पर्वत बताये इनपर बड़े-बड़े तालाब हैं। उन्हीं से स्वर्गन्गा निकलती है।

जहाँ पर स्वर्गन्गा गिरती है, वहाँ पर एक अकृत्रिम जिन बिम्ब है। अब देखो अनादि से लगातार प्रतिदिन यह गिर रही है। आप सब यहीं से वन्दना कर लो। उस प्रतिमा की नींव (फाउण्डेशन) कब का होगा। वह तो अकृत्रिम बिम्ब है। उस पर

गंगा पड़ती है। पड़ रही है।

वह बहकर जाती है। लोकोक्ति है वह पुरा का पुरा जल गंधोदक रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसीलिए गंगा को इतना पवित्र माना जाता है। महानदी है इसके साथ 14000 सहायक नदियों का समूह रहता है। अभी भजन में एक पंक्ति आयी थी - इस राग-द्वेष की वैतरणी से अब तक पार नहीं पाया। हम रास्ता बताते है। वैतरणी को याद रखना चाहिए। उसको छोड़ देंगे तो संसार का ही विस्तार हो जायेगा।

वैतरणी नदी नरकों में बहती है। जब नारकी जीव प्यास से व्याकुल रहता है दूर से यह वैतरणी देखने में आती है। प्यास बुझाने को जैसे ही पानी अंजुली में लेता है पूरी अंगुलियाँ जल जाती है। ऐसी विषाक्त नदी है। रोता-चिल्लाता है। साथी-सनाथी उसको पूर्व वैर के कारण उसमें और डूबाते हैं वह डूबता चला जाता है। ये चित्रण है नरकों का। किन्तु हमें वैतरणी पार करना है और इस वैतरणी से बचना भी है। वैतरणी का दूसरा अर्थ भी है।

वै यानि नाव ऐसी नाव जो संसार सागर से पार लगा दे। बारह भावना को वैतरणी कहा है। यहाँ का जल पिया जाता है, वहाँ का तो एक बूंद भी नहीं नहीं सकते। संसारी प्राणी पंचेन्द्रियों के विषयों को

विष नहीं मानता।

"विष तो एक जीवन में एक ही बार मारता है किन्तु पंचेन्द्रिय के ये विषय रूपी विष उसे बार-बार संसार में दुःख देते रहते हैं।" वह जानता भी है, बचने के लिए भगवान की भक्ति भी करता है किन्तु जिससे बचना चाहता है उसके कारण को छोड़ता नहीं। कैसे बच पायेगा? पंचेन्द्रिय के विषय संसार में चारों ओर भरे पड़े हैं। तत्वज्ञान के कारण वह इस वैतरणी से बच सकता है, पंचेन्द्रिय के विषय तो उसे डूबा देंगे।

"तत्वज्ञान के द्वारा असंख्यात गुणी निर्जरा होती है और पंचेन्द्रिय विषयों के द्वारा असंख्यात गुणा बंध।" निर्जरा की तो बात ही नहीं बल्कि "पुण्य की गठरी घटकर पाप की गठरी बढ़ जाती है।" स्वर्गों में (हेतु) सीढ़ियों की व्यवस्था है नरकों में सीढ़ी नहीं वहाँ तो लुढ़कते जाओ। उपपाद शय्या ऊपर भी है, नीचे भी है पर नीचे का हाल सब जानते हैं।

महाराज अच्छी बात सुनाओ कहते हैं। तो अच्छी बात करो। बुरा करोगे तो अच्छा कैसे मिलेगा। तो बारह भावना को वैतरणी की संज्ञा दी है। जो भी मुक्त हुये हैं अथवा होंगे वे इसी बारह भावना के भाने से हुये हैं। घर से बाहर निकलने का कारण यही

बारह भावना रूपी वैतरणी है।"

अच्छी पंक्ति जोड़ी है पूजन में। हाँ! राग-द्वेष तो उस वैतरणी में बहने में कारण बनते है। संसार समुद्र को पार कर सकते हैं राग-द्वेष को छोड़ना आवश्यक है। नारकी आज तक उस वैतरणी को पार नहीं कर पाये बल्कि हाथ-पैर सब गल गये। पुद्गल का परिणमन, यह कितना भयावह हो गया। "ज्ञानी को भय के कारण दिखते हैं इसलिये भय नहीं होता।" क्योंकि उसे ज्ञात हैं कि ये राग-द्वेष ही इस संसार रूपी वैतरणी के कारण है।

इस प्रकार वैतरणी संसार का कारण भी है तो पार होने का भी कारण है। वै यानि निश्चित रूप से पार होने का कारण ये बारह भावना ही है। आप बारह भावना तो भाते हो पर रोते हुये भाते हो। जो असंख्यात गुणी निर्जरा का कारण है वह रोने के लिए है क्या? इसलिए मोक्षमार्ग में बारह भावना को ध्यान से पूर्व बताया। ध्यान नहीं लग पा रहा कोई बात नहीं बैठे-बैठे बारह भावना का पाठ करो।

राजा राणा छत्रपति ... किन्तु ये ध्यान रखना छत्र के नीचे बैठकर राजा राणा छत्रपति का पाठ नहीं करना। आज प्रत्येक कमरे में देखते हैं छत है या नहीं। लाईट चली जाये तो क्या होता है बोलो? यहाँ धर्मशाला में मिले या न मिले - गुस्सा नहीं करना है। कमेटीवाले

भी कहाँ तक प्रबन्ध करेंगे।
ऐसा करो दो पंखे का पैसा जमा करा दो एक का प्रबन्ध कर देंगे। कल के लिये भी चाहिये ना। यहाँ छत्रपति की जरूरत ही नहीं क्योंकि यहाँ तो कहीं भी बैठो वेदियाँ इतनी बन गयी। ऐसा बताते है यहाँ पंचकल्याणक होना है लेकिन वो पंचो के अधीन है। अभी तो पंचायत बैठ रही है। हमे नही बताओ सामने (जनता) बताओ। हम तो बाद मे आशीर्वाद देंगे।

हम तो अच्छे ढंग से भावना भा रहे है। भगवान/श्रीजी भी आ गये। इन्हे भी अच्छे ढंग से कमल पर रखेंगे। उसके भी पैसे लेंगे आपसे। 3-4 दिन बीच मे है। पहले नमोऽस्तु करलो हम तो आशीर्वाद का सोचेंगे। आपका नमोऽस्तु सस्ता हो सकता है, हमारा आशीर्वाद तो.. बोलो। महंगी वस्तु के लिए यु ही मिल जायेगा? उसके लिए बहुत बड़ा मोल चुकाना पड़ेगा। यहाँ दया नही करते। आप लोगो को स्वयं को ~~भी~~ बारह भावना/तत्वज्ञान करना होगा।

दृढ़ता रखनी होगी तभी सही फल मिल पाता है। मनुष्य भव को सार्थक करना है तो स्थिरता रखनी होगी। तो वे यानि नाव, वैतरणी को याद रखना।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

24-2-19 "मंदाग्नि से बचें" प्रातः

कभी-कभी आप लोगों के घर में घटना तो घटती ही होगी। नहीं घटी तो सुन लो घटी हो तो ढूंढ कर लो। घटना क्या है? खेलकूद करके लड़का आया। आते ही माँ से बोला हमें प्यास लगी है- हमें प्यास लगी है। पानी मांगने लगा। माँ ने उसे गुड़ दिया और कहा पहले इसे खा ले। वह बोली पानी चाहिए। पर उसके पूर्व गुड़ एकदम तो नहीं धीरे-धीरे खाने लगा। उसे खाने में 2-3-5 मीनिट तो लग ही गये, फिर पानी लाने में भी चलाकर 2-3 मिनिट लगा दिये।

क्यों कि उसे तुरन्त पानी नहीं पिलाना चाहती थी इसलिए बेटा पहले गुड़ खा ले बाद में पानी मिलेगा। ऐसा क्यों? वह लड़का हॉफी ले रहा था। ऐसे में पानी पीना ठीक नहीं होता। समझ में आया? समझदार होंगे तो समझेंगे अन्यथा ऐसे ही ले आयेंगे। बच्चों का पालन करना ऐसे ही नहीं होता, बहुत ध्यान रखना पड़ता है। हॉफी आ रही है और पानी दे दिया तो पेट में दर्द होगा, भूख नहीं लगेगी (मंदाग्नि) अनेक रोग होंगे।

इस प्रकार स्वयं को दण्ड मिलेगा पर पालक/अभिभावक भी मीठा दण्ड देते हैं। उसे खिलाकर भेज दिया। वह भी खेलने भग गया। सब पच जायेगा। इसी प्रकार हम लोगों को आचार्यों ने दिया है। गरिष्ठ है विलम्ब से ही पचेगा। किन्तु रास्ता ये ही है। मोक्षमार्ग में शुद्ध भी आराम के साथ

नहीं मिलेगा।" आराम तो है ही नहीं।

बैठे-बैठे मिलने वाला नहीं। "बैठो लेकिन सामायिक में बैठो।" सामायिक में भी ऊँघने लगो तो खड़े हो जाओ ऊँट की भाँति। खड़े-खड़े भी सामायिक में बैठे रह सकते हैं। सामायिक में तो बैठो शरीर को खड़ा रखो। निद्रा देवी उतनी समय तो नहीं आयेगी, आये तो उसकी क्या गति होगी सब जानते हैं। मोक्षमार्ग में संयम भी खूब भी है तो आराम भी है।

उत्कृष्ट सामायिक हेतु २५ घण्टे भी बैठ सकते हो। उपवास में कोई काम तो करना है ही नहीं। कर्म निर्जरा भी होगी संयम में उत्कर्षण भी होगा। ऐसे ही आगे बढ़ते हैं। आप लोगों को भी अपनी भूख धीरे-धीरे बढ़ाना है और संयम की ओर अग्रसर होना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"संयमासंयम संयम नहीं"

"जिस प्रकार शुक्ल पक्ष की चांदनी को ही चांदनी कहा जाता है कृष्ण पक्ष की चांदनी को कोई भी चांदनी नहीं कहता उसी प्रकार संयमासंयम को मैं असंयम ही कहता हूँ संयम नहीं। संयमलब्धिस्थान का अंश मात्र भी नहीं है यहाँ।"

"जिस प्रकार "णमो ओहिजिणाणं" कहने से रत्नत्रयधारी अवधीज्ञानियों को ही लेते हैं सब अवधीज्ञानी को नहीं उसी प्रकार संयमासंयम की स्थिति है। वह असंयम की कोटि में ही आता है।"

संस्मरण

बात आ० श्री के बचपन की है। उस समय वे बहुत छोटे थे। रात्रि में गांधी जी का स्टेच्यु बैलगाड़ी पर ले जाया जा रहा था। ढोल-धमाके के साथ जुलुस जा रहा था। ये तो सो रहे थे, अचानक आवाज आयी तो रात में ही ये भी उठकर जुलुस के साथ हो लिये। रात्रिभर कार्यक्रम का आनंद लेते रहे।

यह घटना गांधी जी के मृत्यु के बिल्कुल बाद की है। उस समय ब्राह्मणों के घरों को जलाया जा रहा था क्योंकि नाथुराम गोड़से जिसने गांधी जी को मारा वह ब्राह्मण था। आ० श्री ने कहा - लगभग ३-४ वर्ष तक इसी तरह आग लगाते रहे। इससे आ० श्री का जन्म जो विद्यालय की अंकतालिका में लिखा है वह सही माना जा सकता है क्योंकि २-३ वर्ष के बालक को घटना याद रहे यह जरूरी नहीं। वर्ष बढ़ाकर लिखवाया था १९५२ इससे ६-७ वर्ष के होने से घटना स्पष्ट सी बतायी जा सकती है।

आ० श्री ने एक और विशेष बात बतायी सदलगा में पीछे ही मजार (पीर की दरगाह) थी। वहाँ पर सर्वधर्म समन्वय था। जब मोहर्रम का त्यौहार आता था तो उनके ताजिये के जुलुस में जैन लोग भी शामिल होते थे। वे बैण्ड के साथ ताजीये को भी खेंचते थे। ये धर्म सहिष्णुता का बहुत बड़ा उदाहरण है।

पात्रचयन

24-2-19 "शान्तिधारा को गति देगा पंचकल्याणक महोत्सव"

इस क्षेत्र का अपना अतिशय अलग ही है। यहाँ पर कहाँ से जनता आती है और कैसे चली जाती है, कोई पता नहीं लगता। यहाँ पर आने के लिए हमारे वास्ते भी 8-9 रास्ते है। कहीं से भी आ सकते है और कहीं से भी जा सकते है, पता तक नहीं चलेगा। चारो तरफ से रास्ते है जो पगडंडीयो से जुड़े है एवं जंगल में चले जाते है उसके बाद ढूंढो तो भी मिलना कठीन। हम भी भटक चुके है।

तारा देही एवं नेवरा देही के जंगलो में भटकना स्वभाविक है। ऐसा होता है। एक बात और है क्षेत्र प्राचीन है सारे मन्दिर नये पाषाण के बन चुके है। पहले यहाँ के भगवान मिट्टी-चुने के बड़ादेव कहलाते है, पपडीयाँ निकलती थी हमने कहा-पहले मन्दिर का निर्माण हो जाये तब तक कुछ नहीं करना है। जो पूर्व में मिट्टी के भगवान थे इन्ही सौधर्म इन्द्र (अजय-पारस परिवार) ने पाषाण के विशाल भगवान की स्थापना की है।

ये पुराना होकर भी नयाक्षेत्र बन गया। शान्तिनाथ भगवान की स्थिति भी यही थी, दोनो पैरो-नाक-दोनो हाथो में जीर्णोद्धार किया था। फिर सांगोपांग बनाने की योजना बन गयी। ये तो इधर हुआ उधर उत्तंग मन्दिर में भी चार खड्गासन में प्रतिमा होगी।

इन दोनो शिखर में भी [आदिनाथ-शान्तिनाथ] ऊपर वेदी में प्रतिमाओं की स्थापना होगी।

इस प्रकार क्षेत्र में तो ये हुआ ही इसके साथ ही यहाँ बहुत सारी प्राचीन प्रतिमायें थी जिनका पहले लघु पंचकल्याणक करके सही किया था किन्तु वेदी सही नही थी। कल से ही जो नवीन वेदीयाँ बनायी गयी है उनकी शुद्धि का कार्यक्रम रखा है, जिससे वे नमस्कार वंदना के योग्य हो जायेगी। कल ही इतने यात्री आयेन्गे उनके लिए व्यवस्था करने जा रही है।

एक और सुना है, ये पक्का है या नहीं? देवरी में भी एक पत्थर का मन्दिर जो पुराना मन्दिर था उसकी जगह बना है। अब वह भी इसी के अन्तर्गत आने वाला है। अल्प समय में यह सुयोग मिला है इसका पूर्ण लाभ ले लें। मुख्य पात्रों का चयन तो हो गया है। कुछ शेष रह गये है उनको भी पूर्ण कर लेन्गे। जनता कल भी आयेगी। एक बात और मण्डप जो बना है उसमे 63 ईंच की धातु की प्रतिमा एवं डोम-वेदी आदि सूरत के श्रावक श्रेष्ठी ने बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस प्रकार कल से ये प्राचीन प्रतिमायें पाषाण की वेदीयों में विराजमान होने जा रही है। इस क्षेत्र की जनता यह दुर्लभ कार्य करने जा रही है। हमारे भी यहाँ पर 3 चातुर्मास हो गये। आप तो बोल नहीं रहे हमें ही याद रखने पड़ते है। यहाँ कितने शीतकाल एवं ग्रीष्मकाल बीते उनकी तो

गिनती ही नही है।

उसका भी हिसाब पाई-पाई का होना चाहिए ना। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसे क्षेत्र का योग मिलना साधना में बहुत उपयोगी है। संक्षेप में इतना ही कहना है, समय भी ज्यादा हो रहा है। इन सबके अलावा इस क्षेत्र पर हथकरघा केन्द्र का संचालन भी ब्रह्मचारी भाइयों द्वारा हो रहा है। जिसने क्षेत्र के चारों ओर तहलका मचा रखा है।

इतना ही नहीं क्षेत्र के समीप ही 100-125 एकड़ में शान्तिधारा की स्थापना की गयी। सुबह उठते ही हम लोगों को भी सुनाई देता है। चौका वालों के लिए दूध ही नहीं मिलेगा मावा - रबड़ी- दही भी मिलेगा। इस क्षेत्र की स्थापना इसलिये की थी कि यहाँ 500 गायें को आसपास के क्षेत्रवासियों को देने का विचार किया था, उसमें कुछ अवरोध आ रहा था किन्तु आज उसका सूत्रपात हो गया है। अब उसमें सक्रियता लानी है। इसीलिए युवाओं को जोड़ने का प्रयास किया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

नोट - "मात्र पिच्छी-कमण्डल से कल्याण नहीं, आचार-संहिता का संरक्षण करना अति आवश्यक है, तभी कर्मों की निर्जरा होगी।"

"ध्यान की अपेक्षा मैं अनुशासन (मर्यादा) के पालन को अच्छा समझता हूँ।"

1-3-19 "प्रतिबिम्ब बनो - छाया नहीं" प्रातः

आप लोगों ने इस बारे में कभी चिंतन किया होगा। बहुत कम लोग चिंतन कर पाते हैं। नहीं भी करते तो कोई अन्योक्ति नहीं होगी। "केवल जानना ही आवश्यक नहीं बार-बार उस सुने हुये विषय को दोहराना भी आवश्यक है" इसी को चिंतन बोलते हैं। चिंतन ऐसा होता है कि जो दृश्यमान है वह दृष्टि में आ जाता है। नवनीत को देखा? ऐसे ही नहीं दिखता। मंथन के बाद नवनीत दिखने लगता है। इसी प्रकार जो चिंतन दिख रहा था वह देखने में आ जाता है। अब विषय पर आते हैं।

प्रतिलिपी को दो अर्थ में लेते है। एक तो छाया दुसरा प्रतिबिम्ब रूप में। पर की छाया इतना ही ध्यान रखे। छाया देखने पर यह आपकी छाया है इतना तो ज्ञान हो गया किन्तु नाक - कान आदि - आदि कुछ भी नहीं दिख पा रहा है। आप लोग जाते है सीमा पर, ये परदेश है। देख लिया ये परदेश है। जाना है ही नहीं फिर भी हाँ हमने जान लिया / देख लिया। क्या देखा? ऐसी आप लोगो गत हो रही है। गति नहीं गत हो रही है।

गत के भी दो अर्थ है एक अतीत को बताता है दुसरा अवगत ऐसा भी कहा जाता है। इस प्रकार ये तो छाया हो गयी, दुसरा भी देखते है। एक भगोनी है उसमें कुछ तरल पदार्थ भरा है। आप देखते हैं तो उसमें छाया तो है पर वह छाया प्रतिबिम्ब रूप में है। प्रतिबिम्ब एवं छाया में अन्तर है,

इसे समझना है।

इस छाया में दृश्य के साथ अनुभूत भी हो रहा है। अनुभूत नहीं तो कुछ नहीं। आप भी धर्म-धर्म तो कहते करते हैं पर उसे अनुभूत भी करना चाहिए। चारित्र की ओर आपका कदम होना चाहिए। महाराज हमारा तो रवी में ही काम हो रहा है। ऐसे में आप ही जानो। आगे कदम बढ़ाओ। बच्चों को भी तभी कुछ आपसे मिलेगा। किन्तु दद्दा घर के बाहर नहीं निकलना चाहते। बस नाति को गोद में अवश्य ले लेते हैं।

बाहर निकलोगे तभी महक का अनुभव होगा। धर्म अनुभव की वस्तु है। स्वाद तभी आयेगा नहीं तो देखादेखी में कर रहे हो कुछ फायदा होने वाला नहीं। देखादेखी शब्द स्वयं बता रहा है। संधि निकालकर देख लो। देखा-अदेखी मतलब देखकर भी नहीं देखा। आप सोच लें, आप क्या चाहते हैं? देखा अच्छा है, अदेखा अच्छा नहीं। ऐसी-वैसी धर्म करोगे तो हम संतुष्ट नहीं होते। भले ही आप बुरा मानो हमें तो कछु नहीं होत।

ऐसा जीवन मात्र चल रहा होता है। अतीत-अनागत के द्वारा समग्रता से तुलना करके देखे तो स्पष्ट पता चल जायेगा छाया, चाँदनी एवं परछाई (प्रतिबिम्ब) कितना/क्या है। ये जरूरी है। आज लड़के के लड़का = लड़के के लड़का होने पर भी उसी चाल से चल रहे हैं, यह अच्छा नहीं। दद्दा की चाल में अन्तर तो

हो ही जाता है।

बालक में तो उछाल होता है आप में वो उछाल भी नहीं हैं। उछाल होना जरूरी है। तालाब की भांति वहीं की वहीं हो। अब तालाब ऐसा जो कुछ ही दिनों में सूख जाता है। वर्षा समय तो 1-2 माह पानी बाद में उसी में से गाड़ियाँ चलने लगती है। काहे को बनाया था? "आपके पास न ही उछाल है और ना ही गहराई।" नदी ऐसी होती है उसे साइकिल से भी पार नहीं कर सकते, नाव चलती है। साइकल रेत पर चलती है।

वृद्धावस्था में तो न ही रेत है न ही पानी होता है। क्या करेंगे? साइकल-नाव दोनों ही नहीं मात्र देखते रहो। ये उदाहरण दिया है। छाया हो या प्रतिबिम्ब हो दोनो ही परोक्ष है। छाया में पहचान नहीं परछाई में पहचान लेते है। चेहरे पर लगी किट्टी-कालिमा को देख पाते है और देखकर उतार लेते है। छाया में ऐसा नहीं होता। छाया जैसा जीवन ठीक नहीं। है दोनो परोक्ष किन्तु प्रतिबिम्ब में दिखता है और उससे अपने कदम आगे बढ़ाते है। चलने पर ही चारित्र का पालन होगा किन्तु अनुभव के साथ चलने पर ही यह होता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

Note- "आर्यिका द्वारा आर्यिका दीक्षा अथवा सामान्य मुनि/आचार्य द्वारा आर्यिका दीक्षा आगम एवं परम्परा के अनुकूल नहीं, विशेष आचार्य ही इसको कर सकते हैं।"

1-3-19 "आओ चलना सीखें" मध्याह्न

अभी यहाँ बुलाया नहीं, पंचकल्याणक में हम दोनों आये हैं। [योगसागर जी एवं गुरुजी]। जैसा चाहता था वैसा ही उतने समय में सब व्यवस्थित हो गया क्योंकि समय सर्दी का था और घुमना बहुत था। सबको देना भी था। हम ललीतपुर और इनको कहा रवर करना है। व्यवस्थित कार्य दोनो ओर से होते चले गये। ये देखना भी आवश्यक होता है।

जब छोटा था उस समय एक व्यक्ति दूसरे को साइकिल चलाना सीखा रहा था। जो बैठा था वह कहता है ऐसा न हो कि गिरा दो। वह कहता है टाइट पकड़ लो, हओ। ऐसा ही 5-7 दिन तक चला। एक दिन वह हाँ पकड़ लेता हूँ और पकड़ते-पकड़ते सामने आकर खड़ा हो गया। कहता है अच्छे से पकड़ो। वो कब आ गया पता ही नहीं चला। धीरे-धीरे कब छोड़ देते हैं, ये बताकर नहीं कर सकते। धीरे-धीरे सीख जाते हैं।

ऐसे ही खजुराहो में हमने सोचा, ऐसे छोड़ दिया जाये। अपने आप ही सीख जायेंगे। हाथ-पैर को स्वयं ही चलाते जायेंगे। अच्छे ढंग से चलाओ। सामने भी देखो, सड़क भी देखो, पांव भी चलाओ। बाते नहीं करना है, बातों से काम नहीं होगा, काम तो करने से होगा। बीच में ब्रह्मचारी जी भी सबका

साथ दे रहे थे। ये तो स्वार्थ है।

अनपेक्षितार्थ वृत्ति हो। जैसे रत्नकरण्ड श्रावकाचार में आया कि राजा की सेवा क्यों करेगा? पंचायत करने से थोड़े ही होगा। संरक्षणी सभा को भी कहा - यह जबलपुर का पंचकल्याणक है न ही लार्डगंज का है न ही, मढ़िया जी का है और न ही गुरुकुल का है। जबलपुर [संस्कारधानी] से मतलब रहे, सब मिलकर करें। अनुभव को याद करो और कार्य करो। संकल्प करने से ही ऐसा होता है। इधर-उधर की बातें करने से कार्य नहीं होता।

जब कार्य में मन लग जाता है तो समय भी कम पड़ जाता है। सोना भी कम हो जाता है। सोने के समय में भी उसी की संयोजना करता रहता है। ये सब प्रयोग के बिना संभव नहीं। प्रयोग अपने मन से नहीं करो - आशीर्वाद के रूप में संयोजना करके करते हैं। हरेक के पास आत्मा है, चैतन्य स्वभाव है। इस दृष्टि से समानता है। हम असमानता के साथ जीना चाहते हैं, इसी कारण खटपट हो जाती है।

समानता के साथ चलेंगे तो 10-20 पंचकल्याणक भी हो जायेंगे पता तक नहीं चलेगा। बस लक्ष्य वीतरागता का होना चाहिए। क्या-क्या कमियाँ आ सकती हैं उनका ध्यान रखते हुये चलें। कार्यकर्ता अपने महत्त्व को देखता है तो

फेल हो जाता है।

कार्यकर्ता भी अपनी कमी पर नजर रखें। दूसरा कह रहा है तो उसे सुने। कमी है तो सुधार लें, नहीं है तो आगे के लिए ध्यान रखें। ऊपर-ऊपर से नहीं भीतर से स्वीकार करें। आँखें खुलना चाहिए। कानों से आलोचना सुनने पर आँखे खुल जाती है। बस मुख को बंद रखो। अपने पास बहुत दोष है गुण तो एक-आध ही है। अपने दोष देखो एवं दूसरे के गुण। "तद् गुण लब्धये अहं" उन्हीं के समान हमारे भी गुण हो।

"दोषों का निकलना ही गुणों का आना है।" एक की उत्पत्ति है, दूसरे का अभाव ही होती है। तम मिटेगा तो उजाला होगा। दीपक जले तो उजाला अवश्य होगा। "हमेशा पूर्वजों को याद कर अपूर्व कार्य करते रहो।" पश्चिम का कार्य नहीं पूर्व का कार्य हो। योजनाबद्ध कार्यक्रम होना चाहिए। सहयोग एवं स्मरण भी काम करता है। अपने आप ही बुद्धि काम (सक्रिय) करने लग जाती है। पहले भी हमने देखा था।

सुबह भी कहा था- देखा करो। देखादेखी मत करो। स्मरण करो तो प्रत्यभिज्ञान आ जायेगा। इससे स्वयं को बल मिलेगा। अनागत की इच्छा अतीत की स्मृति में ही दुनिया का जीवन समाप्त हो रहा है। जो अतीत की घटना से वर्तमान में संकल्प करता है उसका अनागत स्वर्णिम होता है।" फिर अनागत को देखने

की भी जरूरत नहीं है।

वह अपने आप ही आगे बढ़ जाता है। उसका जो उद्देश्य अथवा प्रयोजन है वह भविष्य में घटित होने वाला है। जो प्रयोजन अतीत में नहीं रखता उसका संकल्प भी नहीं भविष्य तो क्या होगा? इसलिए "स्मृति अथवा उद्देश्य को सामने रखें वर्तमान निखर जाता है - परिष्कृत हो जाता है।" तालियाँ अपने आप ही बजने लगती हैं कहने की जरूरत नहीं पड़ती। "जो गर्दन से समर्थन करता है वह वृद्ध कहलाता है।"

वाह-वाह करने लग जाता है। ये योजना बहुत अच्छी है। स्मृति-उद्देश्य में एकरूपता होना प्रत्यभिज्ञान है। इसमें बुद्धिमानों की बुद्धि भी कुछ काम करती है। जब हम नीचे दृष्टिपात करते हैं और एक ही रंग दिखता है तो यह गलत है। डमर अथवा चमक में चींटी नहीं दिखेगी। इसलिए कोण (Angle) के साथ देखा जाता है। प्रत्यभिज्ञान स्मृति के साथ वर्तमान को भी जोड़ता है। उद्देश्य को नहीं भूलना चाहिए।

हां! अनपेक्षितार्थ वृत्ति होना/रहना चाहिए। सुबह तो दिया ही था। आप तो हर समय थाली लेकर ही बैठे रहते हो। अब बिना कहे ही जबलपुर वालों को समझ में आ रहा होगा। महाराज! चार चांद लग जाते, एक ही चाँद रहने दो। सीर पर कवच (टोपी) नहीं रहेगा तो बुद्धि ठीक काम नहीं करेगी। सीर को गर्म

नहीं होने देगी।

पैरों को गर्म रखो एवं सिर को ठण्डा। तौलिया भी बांध सकते हैं और उस पर पानी का छिड़काव करते रहो। इससे सूचना सही मिलती रहेगी। माथे को कभी गर्म न करें। आप बोल रहे हैं, सामने वाला उत्तेजित कर रहा है तो आप सुन लेना। आप को उत्तेजना नहीं लाना है। पारा गर्म नहीं करना है। पारा चढ़ जाये तो फिर हाथी को भी समझ में आ जाता है। तापमान उतारना बहुत कठिन हो जाता है।

पारे जैसे भारी पदार्थ को भी ऊपर पहुँचा देता है। इतना तापमान आपमें है। वही तापमान (ड० को छू रहा है) आप चलना चाहते हैं तो चला देते हैं। पारे को भी कह देता है, हमने वह खाया है तुम बढ़ नहीं सकते हो। क्या खाया? सत्तु खाया। उसकी सत्ता है। ड० भी है तुम रहे आओ। कितनी भी गर्मी क्यों न हो, 98 ही रहता है। ये ही संयम है। इसलिए माथे को हमेशा-हमेशा ठण्डा ही रखना।

आप गरम करवाना भी चाहो तो भी गरम नहीं। गरम पदार्थ (बर्तन) को कैसे उठाते हो? किनारे से कपड़े से पकड़कर उठाते हो। सड़क तप जाती है तो किनारे से चला करो। "बुद्धि को तपाना नहीं-तन को तपाओ - ऋद्धि अवश्य आ जायेगी।" आज सभी ऋद्धि-सिद्धि तो चाहते हैं पर शुद्धि को नहीं

चाहते। शुद्धि एवं विशुद्धि रखना चाहिए।

हमें ज्ञान की वृद्धि नहीं चाहिए, ज्ञान की विशुद्धि चाहिए।" ज्ञान को संयत बनाना अनिवार्य है। हम वही कर रहे हैं। ज्ञान का यद्वा-तद्वा उपयोग करोगे तो अवश्य ही खड्डे में पहुँचायेगा। ज्ञान इधर-उधर की बात करे तो उसे ठण्डे बस्ते में रख दो। मौन धारण कर लो। बुद्धि अपने आप ही ठिकाने पर लग जायेगी। बोलना ही नहीं है। एक गूंगा सौ को हराता है। सुना रहा है तो सुनते जाओ-सुनते जाओ। चोटी के विद्वान भी हार जायेंगे, वह हूँ करे तब तो।

न हूँ न हाँ। "कुछ नहीं। कंवर साहब होते हैं दामाद। बच्ची भी ले लेता है और दाम भी ले लेता है इसलिये उसका नाम दामाद है। आप तो भेजते रहो, ये हाल है। इसलिये कहना है आप बोलो नहीं, आपका महत्त्व बढ़ता ही चला जायेगा। आप बोलते जाते हैं इसीलिये महत्त्व घटता जाता है। अर्थहीन कहलायेगा तो लोग कहते हैं- वे तो बोलते ही रहते हैं। क्या बोलते हैं? स्वयं के भी समझ में नहीं आयेगा। कुछ लोग ऐसे लिखते हैं कि स्वयं को भी नहीं मालुम क्या लिखा है?

गुस्से में तो शांत ही रहना है। उस समय बोलना अशान्त ही करने वाला है। आज रविवार तो था नहीं फिर भी हम तो रविवार को

भूलही गये हैं।

एक दिन भी यदि रवि (सूर्य) न आये तो देख लो क्या हाल होगा। चाहे खजुराहो हो या सागर हो या जबलपुर हो हमें तो आशीर्वाद देना ही होगा। यह प्रभावना महाराज जी ने नहीं की यदि आप सब एक न होते तो यह प्रभावना नहीं हो पाती। हमने पहले ही कह दिया था। जनता एक होगी तो प्रभावना जरूर होगी।

साइकिल के उदाहरण से समझ में आ गया होगा। जो साइकिल को अच्छे से सीख लेता है वह मोटर साइकिल को भी चलाने में सक्षम हो जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"विद्यालय हो - स्कूल नहीं"

सागर के प्रतिष्ठित समाजसेवा करने वाले योगेश जैन के यहाँ गुरुजी के आहार हुये। अच्छी दानराशि की घोषणा हुई। सबके यहाँ होता है पर विशेष बात यह थी कि जब गुरुजी को पता लगा कि इनकी स्कूल है जिसमें 700 विद्यार्थी पढ़ते हैं - साईं पब्लिक स्कूल। गुरुजी बोले स्कूल ठीक नहीं। उनको निवेदन किया हमें नाम भी परिवर्तन करना है आप ही बतायें क्या नाम रखें। आचार्य श्री के मुख से निकला - "भारतीय विद्या पीठ" अंग्रेजी माध्यम से बदलकर हिन्दी माध्यम कर दिया। ये है स्वाभिमान का उदाहरण,

२-३-19 "सोना बनो - पितल नहीं" प्रातः

एक व्यक्ति को स्वर्ण खरीदना था। वह बाजार गया, उसे वहां अनेक प्रकार के सोने के आभूषण रखे हुये दिखे किन्तु उसके साथ ढीलापन नहीं था वैसे तो सबके साथ ढीलापन था (पहनने की अपेक्षा)। सभी पीलापन लिये हुये थे, किन्तु इतना ही आवश्यक नहीं। एक कसौटी का पाषाण था उस पर कुछ तोड़-तोड़ करके डाली मोड़ आ गया तो समझ लो सोना है। सीधे रह गया तो (कड़ा) पीतल है। कड़ा तो पीतल का कड़ा होता है।

अंत में एक अग्नि परीक्षा में पास होना होता है। पीतल को भी एवं और सोने को भी तपाओ। दोनों (सोने एवं पीतल) के रस में बहुत अन्तर होता है। बाद में ज्ञात हुआ पीतल के वर्ण एवं स्वर्ण के वर्ण में बहुत अन्तर है, दोनों अलग-अलग है। पीतल ऐसी धातु है जो तांबा एवं जस्ता इन दो के सम्मिश्रण और भी हो सकती है, वह पीतल कहलाता है।

कभी-कभी हम देखते हैं अंगुष्ठ में सोने का भी एवं कुछ लोग तांबे का भी पहने रहते हैं (धीरे से हमने पूछा कौनसा सोने का है ताकि अपमान न लगे। हमने सुना - पितल का पहनने से सिर दर्द - पेट दर्द दूर हो जाता है। महंगा है सोना तो लाभ ही करे ऐसा नहीं, भिन्न भिन्न प्रसंग होता है। इस विषय में और भी सोचा है वह कहाँ तक ठीक है, पता

नहीं।

आप लोग स्वर्ण की भी मूर्ति ढालते हो एवं पितल की भी मूर्ति ढालते हो। सोना जो होता है वह आँखो में चमचमाहट पैदा करता है और पितल स्वरूप को नहीं दिखाता है, उसमें कई कमियाँ रह जाती है। जिनके पास पैसा ज्यादा नहीं हैं तो सोने में पितल-चांदी मिलाकर ढाल देते हैं। ये तो समझाने के लिये हुआ, अब आपको बताते है।

द्वादशांग का ज्ञान होता है। सौधर्म इन्द्र के पास भी, लौकान्तिक देवों के पास भी द्वादशांग का ज्ञान है, एक मुनिमहाराज है उनके पास पूर्व का भी ज्ञान नहीं। तो भी देवों में असंयम ही रहता है। वहाँ सोना नही पितल ही है। पितल को असंयम मानते है। भले ही पीला हो। सुन रहे हो ? (हाँ) धर्म के क्षेत्र में कौन-कौन पितल है, इसको पहचानना बहुत कठिन है। हम आपके दिल की परीक्षा नहीं करना चाहते क्यों कि दिल तो आपका है।

ईमानदारी से बतादो, हँस भी रहे है। पितल पहनकर गुस्सा आ जायेगा, असंयमी होने से कभी गर्म-कभी ठण्डा हो जाता है। कड़ा होता रहता है। इसलिए धर्मात्मा धर्म के स्वरूप को समझे। अविरत धर्म की सही पहचान नहीं कर सकता। उसको धर्म के सही स्वरूप को समझने हेतु ही भगवान की मूर्ति को

देखना चाहिए।

वह मूर्ति न ही रोती है तथा न ही हँसती है। मूर्ति की आँखों से पानी आना अनिष्टकारक है। कुछ ऐसे भी प्रसंग देखने/सुनने में आये। धर्म के साथ अशुभता ठीक नहीं मानी जाती। धर्म का कभी भी उपहास नहीं होना चाहिए। प्रतिशत में धर्म करने पर उपहास की पूरी सम्भावना बनी रहती है। जैन धर्म अहिंसा धर्म है जो बहुत व्यापक है। धर्म का किसी जाति-कौम से संबंध नहीं।

धर्म तो धर्म होता है। इसलिए वह धर्म अपने दायित्व से कर्तव्य मानकर करें। मर्यादा को ध्यान में रखकर किया जाता है। कर्तव्य से बाहर करने पर धर्मात्मा को ही नहीं धर्म के अवमूल्यन की भी संभावना रहती है। इस प्रकार पितल एवं सोना का उदाहरण देकर आपको बताया। कहीं पर भूल हो जाती है तो आप परखते है कि ये सोना है या पितल।

सुनार को कहते हैं भैय्या इसे परख दो ये तो 50 रुपये। आजकल पचास में का होत है। (हँसी) प्रतिशत में दे दो। एक तोला है तो फिर भी ठीक अधीक हो तो---। वह बता देता है इसमें 20% खोट है। ऐसा होता है धर्म का अमूल्यन न हो। आप उसको चोखा रखें। आचरण में तो फिर भी कुछ बहुत

हो सकता है।

कल नहीं परसो बिस्किट वाले आये थे। बिस्किट तो बच्चे खाते है किन्तु अब तो बच्चे ही नहीं बड़े-बड़े भी खाते हैं। बताते है इसमे 100 टंच सोना रहता है। कितनी बिस्किट रखी है पता नहीं और अब तो बिस्किट का जमाना भी गया अब तो ईटे आ गयी। ईंट कहाँ रखते हो? दीवार में रखते हो ईंट। दिवार को खोदना चाहे तब ले जाओ।

इस प्रकार मूल्यवान क्या है, उसको पहचानो। मूल्यांकन करने का तरीका होता है, हर कोई नहीं कर पाता। दुर्लभता से यह अवसर प्राप्त हुआ है, इसे पहचानो।

(अहिंसा परमो धर्म की जय।)

"देश-भक्ति"

- सीमा पर जो सैनिक लड़ रहा है प्रत्येक साधक की साधना का छठवां हिस्सा उसे पुण्य में जुड़ जाता है। वो सब वहां है तब हम सब आज धर्म ध्यान कर रहे है। देश में शान्ती बनी हुयी है।
- पुराणों में भी लिखा है कि यदि कोई योद्धा रणांगण में जाता है तो एक और उसके पत्नि उसके लिए विजय का सेहरा लेकर खड़ी रहती है तो दूसरी ओर वीर गति को पाता है तो स्वर्ग की सुरांगना।

शिक्षाप्रद शायरी -

- हजारों रत्न थे उस जौहरी की झोली में,
  उसे कुछ भी न मिला जो अगर-मगर में रहा।
- मैं तो छोटा हूँ कहीं भी अपना सर झुका लूंगा,
  पहले सब बड़े ये तय कर लें कि बड़ा कौन है?
- कभी मैं अपने हाथ की लकीरों से नहीं उलझा,
  मुझे मालुम है किस्मत का लिखा भी बदलता है।
- सन्त लिए फिरते हैं आँखों में चमन ये बागवां,
  जिस तरफ उठी निगाहें, शौक गुलशन हो गया।
- नम्रता को कोई मार नहीं सकता,
  कपास की रुई तलवार से नहीं कटती।
- भगवान से वरदान माँगा, कि दुश्मनों से पिछा छुड़वा दो
  अचानक दोस्त कम हो गये।
- पैर की मोच और छोटी सोच,
  हमें आगे बढ़ने नहीं देती।
- किनारे पर तैरने वाली लाश को देखकर
  पता चला था, बोझ शरीर का नहीं सांसों का था।
- जितनी भीड़ बढ़ रही जमाने में,
  लोग उतने ही अकेले होते जा रहे हैं
- पैसा इन्सान को ऊपर ले जा सकता है,
  लेकिन इन्सान पैसा ऊपर नहीं ले जा सकता
- कमाई छोटी या बड़ी हो सकती है.
  पर रोटी की size लगभग सब घर में एक जैसी ही होती है।

शिक्षाप्रद दोहे / मुक्तक -

- इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए।
  इस तरह न खर्च करो कि कर्ज हो जाए।
  इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाए।
  इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए।
- प्रभुता को सब कोई भजे, प्रभु को भजे न कोय।
  जो रहिम प्रभु को भजे, प्रभुता चेरी होय।
-
- इन्सान की चाहत है कि उड़ने को पर मिले,
  और परिंदे सोचते हैं कि रहने को घर मिले।
- तजुर्बा है मेरा, मिट्टी की पकड़ मजबूत होती है,
  संगमरमर पर तो हमने, पाँव फिसलते देखे हैं..
- कर्मों से ही पहचान होती है इन्सान की - -
  ..महंगे कपड़े, 'पुतले' भी पहनते हैं दुकानों में..
- एक पत्थर सिर्फ एक बार मन्दिर जाता है और भगवान बन जाता है।
  इंसान हर रोज मंदिर जाते है फिर भी पत्थर ही रहते हैं।
- सफर का मजा लेना हो तो साथ में सामान कम रखिए और
  जिंदगी का मजा लेना है तो दिल में अरमान कम रखिये।
- विचारों का बोझ भारी होता है। विचारों की वह गठरी पत्थर भी हो सकती है और हीरा भी।
- चार प्रकार का जीवन - महाजन, सुजन, जन एवं दुर्जन
- शत्रुओं से बचो पर मित्रों से सावधान रहो।
- तुम मोमबत्ती क्यों बने हो जब कि सूर्य बने हो।

रविवार — संत भवन
"विद्यासागर की लहरें" — प्रातः

कैलाश पर्वत से गंगा का उत्पन्न होना और उसका बहते-बहते जाना। वह बहते हुये जा रही ये समझ लें उतना ही सुभिक्ष हो जाता है। उसका बहना सुभिक्ष में कारण बन सकता है। बनता है। वैसे ही जल प्रबन्धन की योजना काम कर सकती है। बड़े-बड़े राजा-महाराजा लोग होते है जो विशाल नहरो का निर्माण कराये हैं। आप सुन रहे हो? [हओ]

हमारा कहना है प्रमुख नहर खेत में नहीं जाती। उसका साक्षात् कोई उपयोग होता ही नहीं। उस प्रमुख नहर के इस ओर से अथवा उस ओर से छोटी-छोटी नहरे निकाल दी जाती है जो सीधे खेत में पहुँच जाती है। जाने के उपरान्त किसान बहुत कुशल होते हैं, उस पानी का पुरा उपयोग कर लेते है। धीरे-धीरे सिंचन से वह भीतर तक पहुँच जाता है। उस किसान का साफा भी पताका की भांति उड़ने लग जाता है।

उसके माध्यम से 3-4-5 महिने में ही दाना-पानी आप लोगों तक आता है। आप अपने जीवन में उल्लास पूर्वक उसका सेवन करते रहते है। इसलिए मैं यह कह रहा हूँ क्योंकि आचार्यों ने / युग चिंतको ने भी इसी तरह हम तक पहुँचाया। प्रमुख नहर से निकली अन्य नहरें इस प्रकार का काम कर पाती है। इसी प्रकार ये सब नहरे निकली है। महिलाओं के लिए आर्यिका संघ बनाकर

मेजा तथा पुरुषों के लिए महाराज जी का संघ है।

आज वो नहरे घुमकरके पुनः बीना बारहा में एकत्रित हुयी हैं। जब नहर बनायी जाती है तो शुरुआत में दरवाजा रखा जाता है। उससे पानी बाहर निकाला जाता है। वो 20-25 दरवाजे भी हो सकते हैं। सभी दरवाजे एक साथ नहीं खोले जाते, मतलब एक साथ पानी नहीं छोड़ा जाता। बर्गी डेम जबलपुर में देखा होगा। नही देखा तो देख लेना। बहुत सारे दरवाजे (गेट) बने हैं।

मेले - ठेले - महोत्सव में सारे दरवाजे खोल देते हैं किन्तु ज्यादा नहीं खोल सकते। हमने भी 4-5 दिन खोल दिया। पानी का उपयोग ज्यादा होना चाहिए इन लोगों को पानी का सही उपयोग करना आया ही नहीं, किसान से सीख लो। किसान कितना परिश्रम करता है। नहर आ जायेगी या नल आ जायेगा। पहले से ही घड़े लेकर बैठे रहते हैं। हमारे पास भी मांग बनी रहती है।

महाराज इस ओर नहर आ ही नहीं रही है। नहर निकलना ही न चाहे तो कैसे होगा। समय पर नहर निकलती रहे और ये भी ध्यान रखना, नहर कभी सूखना भी नहीं चाहिए। बहुत बड़ा खर्च हुआ है इस नहर को बनाने में। किसान यहाँ नहीं आ सकते ज्यादा तो नहीं कह सकते। मेरे से ही ज्यादा निवेदन करते

हो, नहरो से भी निवेदन/प्रार्थना किया करो।

इनको लगेगा कि हाँ ये लोग लालायित है। इसलिए इनसे भी प्रार्थना करना चाहि जो पानी छोड़ा जाये उसका पुरा उपयोग होना चाहिए। हम यहाँ "उपयोगो लक्षणम्" कहा। इससे आप लोगो को भी सीख लेना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

पूज्य समयसागर जी→ अभी हम आये हैं किन्तु प्रभु भक्ति एवं गुरु भक्ति का प्रसंग है। प्रभु भक्ति परोक्ष में करते है क्योंकि साक्षात् दर्शन नही स्थापना निक्षेप की अपेक्षा कर सकते है/करते हैं। किन्तु गुरु की भक्ति - स्तुति - आराधना प्रत्यक्ष रूप से भी करते हैं। कॉफीसमय हुआ है गुरुदेव के चरणो मे किन्तु भक्ति की अपेक्षा से दिया जा रहा है और भक्ति के समय शब्द गौण हो जाते हैं। भक्ति का स्वरूप क्या यह गुरुदेव के मुख से ही समझ सकेंगे। इतना ही पर्याप्त है। प्रभु का स्वरूप, आगम का स्वरूप बिना गुरु के ज्ञान पाना संभव नहीं। आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य समन्तभद्र आदि ने हमें जो दिया उस आगम का स्वाद गुरु के माध्यम से ही स्वबर हुआ है। गुरु का दर्शन प्रभु से कम नहीं। इसलिए स्वरूप को पहचाने। इन्द्रियों के माध्यम से स्वरूप बोध नहीं होता। धर्म का मर्म/गहराई है वहाँ तक पहुँचाने के लिये आस्था की बहुत आवश्यकता है। आज अभी आप आस्था के साथ बैठे है एवं गुरुदेव के दर्शन भी कर रहे हैं। समय भी हो रहा है। गुरु वचनो से बोध होगा, बोध ही इस पवित्र भावना के साथ...।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | दिनांक | विषय | स्थान | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|---|---|
| 1. | 25/11/2018 | रवि नहीं मनाता रविवार (प्रातः) | ललीतपुर | 3 |
| 2 | 25/11/2018 | गर्भकल्याणक (पूर्व) प्रवचनांश (मध्याह्न) | | 6 |
| 3. | 26/11/2018 | श्रीफल नहीं भावना छोटी-बड़ी होती है (प्रातः) | | 11 |
| 4. | 26/11/2018 | पूत का लक्षण-आज्ञा पालने में (मध्याह्न) | | 13 |
| 5. | 27/11/2018 | गौशाला में चलेंगे हथकरघे (प्रातः) | | 16 |
| 6. | 27/11/2018 | जन्मकल्याणक : प्रवचनांश (मध्याह्न) | | 17 |
| 7. | 28/11/2018 | आग में चिराग से मिलता विराग (प्रातः) | | 20 |
| 8. | 28/11/2018 | प्राचीन परम्परा है निर्यापक श्रमण की (मध्याह्न) | | 24 |
| 9. | 29/11/2018 | केवलज्ञान : आहार-चर्या (प्रातः) | | 27 |
| 10. | 29/11/2018 | समवशरण-देशनांश (मध्याह्न) | | 29 |
| 11. | 30/11/2018 | पा लिया शुद्धस्वरूप (प्रातः) | | 31 |
| 12. | 30/11/2018 | दंगल दूर हो मंगल आता दया से (मध्याह्न) | | 32 |
| 13. | 01/12/2018 | दुर्लभ योग-भगवद् प्राप्ति | | 35 |
| 14. | 03/12/2018 | हर पत्थर बन जाता है देव-देवगढ़ में | देवगढ़(उ.प्र.) | 36 |
| 15. | 04/12/2018 | आ ही गये राम | किरोलाबाग (म.प्र.) | 37 |
| 16. | 05/12/2018 | पंचमकाल में आ गया चतुर्थकाल | मूंगावली | 38 |
| 17. | 06/12/2018 | सबसे बड़ी बिमारी-गलती को गलती नहीं मानना | | 41 |
| 18. | 07/12/2018 | कीजे कूबत प्रमाण | | 44 |
| 19. | 08/12/2018 | नाचता कौन? जीव या कर्म | | 47 |
| 20. | 09/12/2018 | महेरी खाकर खीर की ड़कार कैसे? | | 51 |
| 21. | 10/12/2018 | आपत्तिकाल (मीसा) हमेशा रहे | | 53 |
| 22. | 11/12/2018 | परिगृही के पीछे लगा, ग्रहों का भूत | | 56 |
| 23. | 12/12/2018 | गरीबों को नहीं- गरीबी को दूर करो | | 61 |
| 24. | 13/12/2018 | शुद्ध लोकतंत्र है- निगोद | | 64 |
| 25. | 14/12/2018 | जबरदस्ती नहीं, कार्य करो जबरदस्त | | 68 |
| 26. | 15/12/2018 | दीपक बुझने न पाए | | 69 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 27. | 16/12/2018 | बादल कहाँ बरसते है? | भानगढ़ | 72 |
| 28. | 17/12/2018 | भान भी नहीं देते भानगढ़ वाले | भानगढ़ | 74 |
| 29. | 18/12/2018 | लालसा कम हो खिमलासा की | खिमलासा | 75 |
| 30. | 19/12/2018 | तीन तरह के आम | | 76 |
| 31. | 20/12/2018 | आओं जाने वीतरागता के गुणों को | खुरई | 77 |
| 32. | 21/12/2018 | भावों का कमाल | | 79 |
| 33. | 22/12/2018 | पोषण हो- कुपोषण नहीं (प्रातः) | | 82 |
| 34. | 22/12/2018 | भावाभिव्यक्ति हो तात्कालिक एवं तलस्पर्शी (प्रातः) | | 83 |
| 35. | 23/12/2018 | विकृति से बचाता पित्त | | 86 |
| 36. | 24/12/2018 | उदरपात्री बनें | | 89 |
| 37. | 25/12/2018 | पंचांग मानो- कलेण्डर नहीं | | 92 |
| 38. | 26/12/2018 | नमोऽस्तु जैसा- आशीर्वाद वैसा | | 96 |
| 39. | 27/12/2018 | बंद करो, खरीदना-बेचना | | 99 |
| 40. | 28/12/2018 | कैसे सुने ढोल-धमाके में बांसुरी | | 100 |
| 41. | 29/12/2018 | सोने को पहचानो | | 103 |
| 42. | 30/12/2018 | मांगलिक है- प्रसन्नता का वाइपर | | 107 |
| 43. | 31/12/2018 | संघर्ष कैसे समाप्त करें? | | 109 |
| 44. | 01/01/2019 | अशुभ से बचाता खगोलशास्त्र (प्रातः) | | 113 |
| 45. | 01/01/2019 | गतिशील कौन? काल या आप (मध्याह्न) | | 117 |
| 46. | 02/01/2019 | धरती घूमती नहीं | | 119 |
| 47. | 03/01/2019 | कोई छोटा-बड़ा नहीं | | 123 |
| 48. | 04/01/2019 | उत्साह में होता आनन्द | | 126 |
| 49. | 05/01/2019 | चंचल कौन? | | 130 |
| 50. | 06/01/2019 | रविवारीय प्रवचनांश (प्रातः) | | 134 |
| 51. | 07/01/2019 | रहस्य जानें अर्थ बोध का | | 137 |
| 52. | 08/01/2019 | अहित का विसर्जन करता हित का सर्जन | | 140 |
| 53. | 09/01/2019 | अस्तित्व आत्मा का | | 143 |
| 54. | 10/01/2019 | तपस्या का फल है धन का सदुपयोग | | 146 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 55. | 11/01/2019 | रास्ता आनंद धाम का | | 150 |
| 56. | 12/01/2019 | ज्ञान हो रत्नदीपक जैसा | | 156 |
| 57. | 13/01/2019 | मारक को बना दो तारक | | 159 |
| 58. | 14/01/2019 | हम ने किया अहं का सफाया | | 162 |
| 59. | 15/01/2019 | तरण नहीं वितरण हो | | 168 |
| 60. | 16/01/2019 | आनन्द सहज का | | 170 |
| 61. | 17/01/2019 | वजनदारी शब्दो की | | 171 |
| 62. | 21/01/2019 | मूल सुधारो - चूल सुधरेगा | जरुआखेड़ा | 176 |
| 63. | 22/01/2019 | देहरी की बात है देहली वालों | | 180 |
| 64. | 23/01/2019 | अभी बहुत कुछ बचाना है | ईशुरवारा | 183 |
| 65. | 24/01/2019 | हओ कहलवा ही लेता है भक्त | नरयावली | 184 |
| 66. | 25/01/2019 | कमाल सागर के श्रीफल का | जरारा | 187 |
| 67. | 26/01/2019 | विवेक जरूरी श्रद्धा-भक्ति के साथ | भाग्योदय तीर्थ, सागर | 189 |
| 68. | 27/01/2019 | चलने वाला कौन? | | 191 |
| 69. | 28/01/2019 | कैसे निकालें मोह का कांटा | | 193 |
| 70. | 29/01/2019 | शिक्षा सतर्क होने की | | 197 |
| 71. | 30/01/2019 | आओं लायें पंचमकाल में चतुर्थकाल | | 199 |
| 72. | 31/01/2019 | भावना हो- आग्रह नहीं | | 202 |
| 73. | 01/02/2019 | हस्ताक्षर हो- हस्तक्षेप नहीं | | 204 |
| 74. | 02/02/2019 | Fast Food है अजानफल | | 207 |
| 75. | 03/02/2019 | धर्म दिखाने योग्य नहीं, देखने योग्य (प्रातः) | | 210 |
| 76. | 03/02/2019 | रविवारीय प्रवचनांश (मध्याह्न) | | 211 |
| 77. | 04/02/2019 | करधनी पानी में न डूबे | | 212 |
| 78. | 05/02/2019 | विज्ञान की कमजोरी (प्रातः) | | 215 |
| 79. | 05/02/2019 | कारागार में हुआ करामात (मध्याह्न) | सागर जेल | 218 |
| 80. | 06/02/2019 | सूत्र परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन का | भाग्योदय तीर्थ, सागर | 224 |
| 81. | 07/02/2019 | पर पीड़ा-अपनी पीड़ा (प्रातः) | | 227 |
| 82. | 07/02/2019 | निवेदन पंचकल्याणक का (मध्याह्न) | | 229 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 83. | 08/02/2019 | नरकाया को सुरपति तरसे | | 231 |
| 84. | 09/02/2019 | आओं करें आत्म कथा की बात | | 235 |
| 85. | 10/02/2019 | रहे सदा सत्संग | | 237 |
| 86. | 11/02/2019 | चलो अपनी चाल से पर नयी बनाओ नहीं | | 239 |
| 87. | 12/02/2019 | ध्यान कार्य पर हो | | 241 |
| 88. | 13/02/2019 | आओ सीखें पूजन | | 242 |
| 89. | 14/02/2019 | मेहनत का फल (प्रातः) | | 244 |
| 90. | 14/02/2019 | सहस्त्रकूट शिलान्यास प्रवचनांश (मध्याह्न) | | 246 |
| 91. | 15/02/2019 | भाव बदलो-प्रभाव पड़ेगा (प्रातः) | | 247 |
| 92. | 16/02/2019 | दो दिवसीय (16-17 फरवरी) राष्ट्रीय हथकरघा संगोष्ठी (प्रातः) प्रथम सत्र प्रवचनांश | | 249 |
| 93. | 16/02/2019 | द्वितीय सत्र प्रवचनांश (मध्याह्न) | | 253 |
| 94. | 17/02/2019 | राष्ट्रीय संगोष्ठी- तृतीय सत्र (प्रातः) | | 257 |
| 95. | 17/02/2019 | राष्ट्रीय संगोष्ठी- चतुर्थ सत्र (मध्याह्न) | | 259 |
| 96. | 18/02/2019 | डाँट लगाओ- सोच समझकर | | 265 |
| 97. | 19/02/2019 | फार्मूला नम्बर लेने का | सुरखी | 268 |
| 98. | 20/02/2019 | विशेष होता बलवान | गौरझामर | 269 |
| 99. | 21/02/2019 | तनाव ही नहीं तन को भी दूर करता है दान | देवरी | 271 |
| 100. | 23/02/2019 | सबका सारा दुःख दर्द हरो | बीना बारहा | 272 |
| 101. | 24/02/2019 | जाएगा जब यहाँ से | | 273 |
| 102. | 25/02/2019 | दाना ही नहीं पानी भी | | 275 |
| 103. | 26/02/2019 | वेस्ट नहीं इनवेस्ट करो | | 279 |
| 104. | 27/02/2019 | बारह भावना रूपी वैतरणी | | 280 |
| 105. | 28/02/2019 | मंदाग्नि से बचें (प्रातः) | | 285 |
| 106. | 28/02/2019 | शान्तिधारा को गति देगा पंचकल्याणक (मध्याह्न) | | 288 |
| 107. | 01/03/2019 | प्रतिबिम्ब बनो- छाया नहीं (प्रातः) | | 291 |
| 108. | 01/03/2019 | आओ चलना सीखें (मध्याह्न) | | 294 |
| 109. | 02/03/2019 | सोना बनो- पितल नहीं (प्रातः) | | 301 |
| 110. | 03/03/2019 | विद्यासागर की नहरें | | 307 |